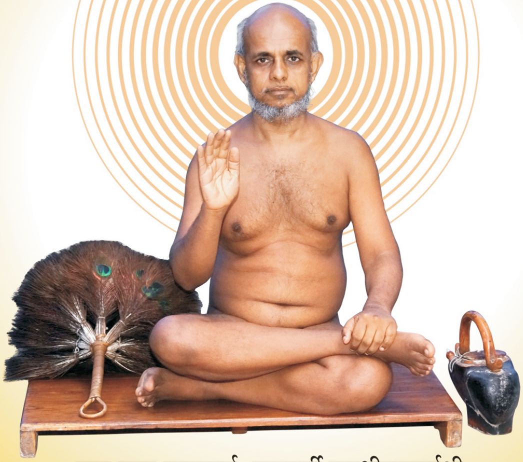

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

(भाग 1)

नयनसुखविलास

लेखक

कविवर नयनानन्द यति

प्रकाशक

दिगम्बर जैन पुस्तकालय

सूरत (गुजरात)

(परम्परानायक)

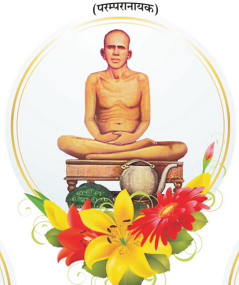

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

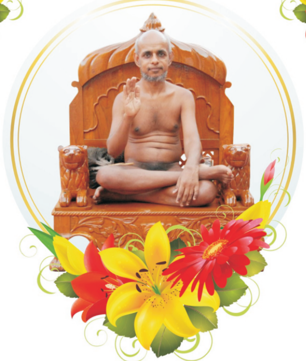

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

कविवर श्री नयनानन्द यति विरचित--

नयनसुख विलास

भाग प्रथम

प्राप्तकर्ता—

श्री पन्नालाल जैन अग्रवाल-देहली।

प्रकाशकः—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

दिगम्बर जैन पुस्तकालय-सूरत।

प्रथमवार]

स्व० ब्र० सीतलप्रसादजी स्मारक मालाकी ओरसे 'जैनमित्र' के ७ वर्षके ग्राहकोंको भेंट

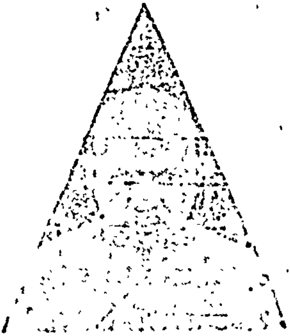

स्वर्गीय ब्र० सीतलप्रसादजी स्मारक ग्रन्थमाला पुष्प ३३ का निवेदन

करीब ७० ग्रन्थोंके सम्पादक, अनुवादक, टीकाकार तथा 'जैनमित्र' और 'वीर' के सम्पादक तथा रातदिन जैन धर्मके प्रचारके लिये भ्रमण करनेवाले श्री जैन धर्मभूषण ब्र० सीतल-प्रसादजीका स्वर्गवास लखनऊमें ६५ वर्षकी आयुमें आजसे ३० वर्ष पर अर्थात् वीरसं. २४६८ में हो गया तब हमने आपकी धर्मसेवा, जाति सेवाकी याद कायम रखनेको आपके नामका स्मारक फण्ड खोला था जिसमें सिर्फ ६०००) आये थे तौ भी हमने जैसे तैसे प्रबन्ध करके आपके नामकी यह ग्रन्थमाला आजसे २८ वर्ष पर प्रारम्भ की और इससे प्रकाशित ग्रन्थ 'जैनमित्र' के ग्राहकोंको भेंट देनेकी योजना की थी जो बराबर चल रही है व इस ग्रन्थमालासे आज तक निम्न २२ ग्रन्थ प्रकट कर 'जैनमित्र' के ग्राहकोंको भेंट कर चुके हैं—

ग्रन्थमालाके प्रकट हुए ग्रन्थ—

१. स्वतंत्रताका सोपान
२ आदिपुराण छन्दबद्ध
३. चन्द्रप्रभपुराण संग्रह
४. यशोधर चरित्र
५. सुभौम चरित्र
६. नेमिनाथ पुराण
७. परमार्थ वचनिका
८. धन्यकुमार चरित्र
९. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार
१०. अमितगति श्रावकाचार
११. श्रीपाल चरित्र छन्दबद्ध
१२. हीरक जयन्ती अङ्क
१३. धर्म परीक्षा
१४. हनुमान चरित्र
१५. चन्द्रप्रभ चरित्र
१६. महावीर चरित्र
१७. बाबू कामताप्रसादजी
१८. नियमसार
१९. जैन सिद्धांत दर्पण
२०. दहेजके परिणाम
२१. जैन लॉ हिन्दी
२२. आराधना कथाकोष १

और अब २३ वाँ ग्रन्थराज

श्री नयनसुख विलास भाग १

प्रथम बार प्रकट कर व 'मित्र' के ७२ वें वर्षके ग्राहकोंको भेंट कर रहे हैं जो कि २२० पृष्ठोंका व साड़े तीन रु० के मूल्यका है।

यह ग्रन्थराज कूचा सेठ दि० जैन मन्दिर देहलीका हस्तलिखित ग्रन्थराज है जिसकी खोज नयेर साहित्यके खोजी वयोवृद्ध विद्वान् श्री पन्नालाल अग्रवाल देहलीने करके हमको लिखा था कि यह नयनसुख विलास ग्रन्थ भेजते हैं जो उत्तम व प्रकट करनेयोग्य है। तो यह पद्य ग्रन्थ होनेसे व

बड़ा होनेसे हमने पहले तो इन्कार किया था लेकिन इसके स्वाध्याय करनेसे हमें मालूम हुआ कि यह तो बहुत उपयोगी व प्रकट करनेयोग्य है अतः बड़ा होने पर भी दो वर्षमें प्रकट करके 'मित्र' के ग्राहकोंको भेंटमें बांटेंगे।

इस ग्रन्थके कर्ता कविवर नयनानन्द यतिवीर कांधला (मुजफरनगर) नि० थे लेकिन आप देहली, सहारनपुर, हस्तनापुर आदिमें बहुत रहे थे। व आप करीब ७५ वर्ष पर ही हो गये हैं।

इस पद्य ग्रन्थराजमें आपने धार्मिक व आध्यात्मिक पद्य रचना ऐसी उत्तम की है कि यह ग्रन्थ स्वाध्याय करने व संग्रह करनेयोग्य है और इससे 'मित्र' के हजारों पाठकोंको लाभ होगा।

कविश्री कवित्वशक्तिके ऐसे विद्वान थे कि आपने इस ग्रन्थमें ३०-४० रागनियोंमें पद्य रचना, रचना समय सहित की है। कुछ रागनियोंके नाम ये हैं—

दोहा, ठुमरी, झंझोटी, हजुरी, धनासरी, मल्हार, ढोलकी, झन्कार, गझल, गीता, कालंगडी, खमाच, ड्योंडी, जंगला, होवरी, काफी, रेखता, अशाधरी, भैरवी, सारंग, सोरठ, रजवाडी, जोगीया, आल्टा, गौड, पंचाल, पीलु, धानी, सवैया ३१ आदि।

इस प्रकार कविश्री अनेकानेक राग रागनियोंके बड़े विद्वान थे। ग्रन्थ बडा होनेसे यह प्रथम भाग बडा हुआ है तथा दूसरा भाग भी बडा होगा (४० अध्याय तकका है) जो आगामी वर्षमें प्रकट कर भेंट किया जायगा।

इस प्रकार 'जैनमित्र' अपने ग्राहकोंको आज तक करीब १५०) के ग्रन्थ भेंट कर चुका है उसमें ब्र० सीतलप्रसादजीकी सेवा अपूर्व है और हम प्रकट करनेवाले तो उनके दास हैं।

इस ग्रन्थराजकी कुछ प्रतियां चिकने कागज पर जिल्द सहित भी विक्रयार्थ तैयार की हैं।

आशा है इसका शीघ्र प्रचार हो जायगा।

सूरत
सं० २४२८ कार्तिक
सुदी १५ ता.२-११-७१

निवेदक—
मूलचन्द किसनदास कापडिया,
प्रकाशक।

विषय-सूची

अध्याय पहिला—	
१-आर्य खण्ड वर्णन, ग्रंथोत्पत्तिके कारण	१
अध्याय दूसरा—	
२-मंगलाचरणके ३४ दोहे, १३ ध्रुपद आदि	७
अध्याय तीसरा—	
३-चौवीसी अखाडा आदि	२७
अध्याय चौथा—	
४-गुरु भजनाष्टकके ८ पद	४०
अध्याय पांचवां—	
५-जिन धर्म स्तुति भजन	४६
अध्याय छट्ठा—	
६-समुच्चय जिन स्तुति गजल	५८
अध्याय सातवां—	
७-प्रत्येक जिनके पदोंका संग्रह	७४
अध्याय आठवां—	
८-सती राजेमती नेमिनाथ वियोग शोकके पद	७९
अध्याय नौवां—	
९-ज्ञानोपदेश पद संग्रह	९९
अध्याय दशवां—	
१०-अनुपमात्मक अध्यात्मपदसंग्रह	१०८
अध्याय ग्यारहवां—	
११-हथनापुर क्षेत्र पर बनाये पद	११०
अध्याय बारहवां—	
१२-जलयात्राके पदोंका संग्रह	११४

अध्याय तेरहवां—
१३–रामचन्द्र लक्ष्मण सीता सम्बन्धी पद ११७
अध्याय चौदहवां—
१४–विसंसात्मक पद संग्रह १२१
अध्याय पन्द्रहवां—
१५–अपने रोग मुक्त होनेपर भजन १२३
अध्याय सोलहवां—
१६–हिन्दी भजन मंजरियां १२५
अध्याय सत्रहवां—
१७–हिन्दी प्रतिष्ठा मंजरियां १४७
अध्याय अठारहवां—
१८–अनेक रथयात्राओंके पद १६१
अध्याय उन्नीसवां—
१९–सुरेन्द्रभटके ३६ पदोंका सं०.. १६६
अध्याय बीसवां—
२०–विलास सम्बन्धी संग्रह १९३
अध्याय इक्कीसवां—
२१–लब्धिसार सम्बन्धी अध्यात्म पद २६४
अध्याय बाबीसवां—
२२–तत्वार्थ प्रथम अध्याय पर पदसंग्रह २८९ से ३१२ तक

(२३ से ४० अध्यायोंके पदोंका संग्रह दूसरे भागमें छपेगा)

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः, श्री वीतरागाय नमः ॥

कविश्री–नयनानंद यति विरचित–

नयन सुख विलास

अथ पीठिका तीर्थ भाग १ लिखैं हैं। वचनिका–

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र विषैं कुरुजांगल देश है। तहां श्री हस्तनापुरकी पश्चिम दिशामें कांधला नामक नगर है। वर्तमानकालमें मलके विक्टोरिया बादशाह जाकी जो मुल्क इंगलिस्तानमें लंडन नगरकी बादशाह है। ईशामसी पूर्वेशके मतकी धरनहारी अंग्रेजवंशी है। ताका निःकंटक राज्य प्रवर्तै है। ताकी छत्रछायाका आश्रय पाय हम भी शत्रुके भीत सैं निर्भय हैं। इस ग्रन्थके रचनेका उद्यम किया।

इस कांधला नगरमें दो जिन मंदिर हैं। तहां एक सूवरदासजी नामकरि जैन जती भये हैं। यद्यपि जैन जती बाह्य अभ्यंतर ग्रंथके त्यागी निर्ग्रंथ मुनिनको कहिये हैं। तथापि नैगमनयके आश्रय शीलवंतनिकूं भी जती पद है। तातैं उनका जती उपांक प्रसिद्ध था। सो बडे गुणवान पुरुष थे। तिनने उनका अनेक देश देखा हुआ था। श्वेतांबरी न थे दिगम्बर जिन धर्मके यथार्थ पंथकी जिनकै दृढ़ श्रद्धा था। मैं उनका भ्रात पुत्र हुं। ब्रह्म पोरसेरी निज जाति है। जब मैं उनकी गोदमें पड़ा तब मेरी दश वर्षकी अवस्था थी। उन्होंने बडे बडे कठिन कष्ट अपने शरीर पर उठाय मोकूं अक्षराभ्यास कराया। उनहीके अनुग्रहसे मोहि जिन मतका परम लाभ हुआ।

वे मेरे विद्यागुरु मेरा परम उपगारकरि सम्वत १९१५ ज्येष्ठ शुक्ला ३ शनिवारको पर्याय पूरीकर परभवकूं प्राप्त भये। तब मैं अनाश्रय छिन्न उदासवत् अति खेदखिन्न भया। उनका संस्कार करि कैं अब निवर्त हुवा तौ तीन वर्ष उनके स्थानपर बैठा रहा। कोई प्रकारका सत्संग न था कि जिससे काल विक्षेप होय। कुछ कुछ जिन धर्मको जानता चला था अचानक एक पत्र बागप्रस्थनगरके जैनी पंचनका मेरे नाम आया। तामें यह लिखा था कि जो तुम भूधरदासजीके शिष्य हो। भूधरदासजीके उपगारका कुछ फल चाहो तो इहां आवो। कुछ उपगारमैंसैं उपगार औरनकूं भी बांटो।

भावार्थ—तुम भी इहां आय करिकै चार लड़कनकूं पढाय जावो। उनके लाइक पत्र पर मैं वहां संवत् १९१८ में चला गया। और संवत् १९२३ तक पांच वर्ष वहां रहा। इन पांच वर्षके अंतरगतकी व्यवस्था यों है कि वहां एक निश्चलरायजी श्रावक बड़े गुणवान और अध्यात्म ज्ञाना न्याय वेत्ता पंडित थे। वृद्ध अवस्थाके कारण मन्दिरजीका शास्त्र पूजन नहीं कर सकते थे।

उन्होंने मोसैं कही हम तुमकूं सिद्धांतनको स्वाध्याय करावेंगे। तुम हमारा कहना करो। हमनै तुमकूं इस वास्ते बुलाये हैं जो इस बस्ती में सेठ शादीराम अर उनका भानजा शुगनचन्द जैनियोंमें प्रधान पुरुष हैं। इनके घरमें मन्दिरजीके कारखानेका उपगार होता है। शुगनचन्दके चन्दनलाल एक ही लड़का है। सो कुसंग में बैठता है। अभी तो बालक है। पढने योग्य है। जो तुम्हारे उपगारसै यह कुछ जिनमतका मर्म ? हो जाय तो इसके कारण और भी दो चार लड़के भाईयोंके पढ जांयगे। सत्संग बना रहेगा।

धर्मका उपगार थोड़ा बहुत चला जायगा। नहीं तो सब

काम बिगड़ जायगा। मैं उसके हालमैं भेदी न था। मैंने प्रमाण किया। तब पंचोंने चन्दनलालकूं और चार लड़कों समेत मेरे पास पढनेकूं बै गये। वो कुबुद्धि कुसंगका बैठने वाला माता पिताका लाडला मेरे पास जिस दिन पढने बैठा मैंनें प्रथम ही उसकूं ॐ नमः सिद्धेभ्यः लिख कर दिया।

और कह्या कि बोल ॐ वह बोल्या कि तू ही बोल। मैं कही तू क्या कहै है। वह बोल्या तू क्या बक है। मैं कहूं तू पढ़ वो कह तू पढ। मैं कही मन्दिरमें चल तुझे पढाऊंगा।

वह कहै तुम चलो मैं आऊंगा। मैं मन्दिरमेंसे बुलावा भेजूं। वह उसके बदले मन्दिरमें ईंट पत्थर आकाश मार्ग करि भेजै। किसीका शिर फूट जाय। किसीका हाथ टूट जाय। एक संकटमें सो था। चित्तमें अनेक प्रकारकी तरंग उठै थी। सोचमें था कि अछा विद्यार्थी मिला। जो छोड कर देशकूं चला जाऊं तो उपहास होगा। और यहां रहूं और यह ऊत ही रहा वो पंचोंमें लज्जा आवेगी। यह अति कष्ट है क्या करूं। फिर यह सोचा भला थोड़े काल देखो तो क्या भावी है। परतु उसी दिनसैं उसकूं पढने वास्ते फिर नहीं कहा।

यह सोचता रहा कि देखूं इसकूं कौन वातका व्यसन है। जब इसका व्यसन मालूम होगा उस ही व्यसन में तू भी पडैगा तब यह तेरे अनुकूल होगा। जो इसका संस्कार अच्छा है तो सुधर भी जाय। जीवनके कर्मकी विचित्र गति है। देश कालके योग तैं भले तो बुरे हो जांय हैं। बुरे भले हो जांय हैं। सो मैंने चार मास तक उसकूं टोक्या नहीं। तब उसके चित्तकी भ्रांति मिटी। और जाना कि अब तो मुझे चेटोकते ही नहीं हैं। सो अब वह निश्शंक मेरे मकानके आगेकूं होता हुवा अपने घर आया जाया करे। परंतु मैं

देखता कया हूं कि जब उधरकूं निकसै तब कुछ न कुछ राग अछा अलापता अपनी धुनिमें गिट गिट भरता निकसै।

एक दिन पहर भर रात्रि गये खम्मांच। कान्हाडा देशके स्वरोंमें एक मलहारको अलापता निकला। न जाने सरस्वती मूर्ति मान भई थी। न जाने उसके काल उन्होंने प्रेरणा करी थी। गंधर्व किन्नरोंको मोहित करै था। मैं उसकी ध्वनि सुन बैठकमें बाहार निकस रस्ते पर खडा हो रहा। वह मुझे देख बोला बाबाजी खडे हो। हां भाई खडे हैं। मैं कही आवो चन्दनलाल बैठो तुम्हारा स्वर मुझकूं बहुत प्रिय मालूम हुवा। तुम तो बडे गुणी हो। तुमकूं कोई जिन मतका भी भजन आवे है तब वह बोल्या मुझे तो जिनमतके भजन अच्छे नहीं लगते। न तो समझमें आवे हैं।

न उनकी चाल ढाल प्रिय है। बुद्धिरांडों कैसे गीत मुझे तो पसंद नहीं। मैं तो वैराग रागनो गाता हूं। जो दिल्ली, लखनऊ, पंजाब, बुन्देलखंडके बड़ाबड लोगोंने नई नई तर्ज काढ काढ टप्पे। ठुमरी, गजल, धुरपद। वर्गने नौटंकी। सरवण। सांगा। मरहटो बुर्ज। कलंगी। चौबोला इत्यादि जारी किये हैं सो मेरी पसंद हैं। मैं शब्द अर्थकूं नहीं जानता, मैं तो लय धुनिकूं समझूं हूँ। तब मैंने यह कही, आछा, जो तुम्हारी मरजी माफिक जौनसी लय ध्वनि तुम्हें पसन्द होय उस ही ध्वनि में जिन मतके पद बन जांय तब तो तुम मन्दिरमें जावोगे तब वो अति प्रसन्न हूं आयह बोला कि जा तुम मेरी फर्माईश माफिक पद बनावता मेरे याद करातें रहोगे तो मैं तुम्हारे पास ही पडा रहूंगा। और नित्य मन्दिरजी में भजन करा करूंगा।

घणी कहांताई कहूँ उसहीके कारण मैं तो सितार सीखा। और यह भजन समूह ग्रन्थ उसही की फर्माईश माफिक अनेक

प्रकारकी राग रागिनियों में बनाया। कितेक पद उनहीके नामसें अंकित किये। फेर पद पढ भी गया। पूजन पाठ स्वाध्याय भी करने लगा। चारों अनुयोगकी कथनीमें प्रवेश पाय।

चन्दनजीकी महिमाकूं धारि शीतल परिणाम करि प्रतिबुद्ध हुवा। सर्व कुव्यसन छोड जिन भजनके उपयोग लगाया। यहांतहां तत्त्वभावनामें जाने लगा। दिल्लीमें प्रभावना अंग भया। श्री हस्तनापुरजीमें प्रभावना अंग भया। पटौदीमें जिन यज्ञका प्रभावना अंग भया। किरचनेमें प्रभावना अंग भया। कांधलेमें प्रभावना अंग भया। तिनमें हासन जैनो भाई सैंकडांकोशनके मेले भये। तहां चन्दनलालकी सैली जाया करै थी। धर्मकी बडी महिमा होय थी।

चन्दनलाल १। कुंजलाल २। सौदागरमल ३ प्रतापसिंह ४ निहालसिंह ५। नवलसिंह ६। चिरंजीलाल ७। दिलसुखराय ८। तथा मेरा लघु भ्रात बलदेवसहाय ९। ये नवजने या नव रत्न शैलीमें गान विद्यामें प्रवीण हैं। तिन सबनमें चन्दनलाल ही लाल था। कर्मनकी विचित्र गति है। माता पिताके वंशका यह अंकूर था। बड़े कष्टसे पाला था। जब यह वृक्ष बड़ा हुवा गुणरूप शाखा प्रति शाखा निकरि यवनताकूं प्राप्त गया। एक ही फल लगने पाया था। नोचानकरकाल रूप ब्यालने ऐसा धका दिया।—

—जो संवत १९२९ में मूलतें उडाय दिया। यद्यपि यह दिन सबकों है। याका कौन सोच है। परन्तु जैसे वृक्षकी छाया वृक्षकी साथ ही जाय है। तैसें या सैलीकीको भाराके साथ गई। वाही दिनतैं चित्त सब सैलीके उचित हैं। जिन धर्म तो सदैव भुवनत्रयमें जयवंत है। परन्तु हमकूं या मर्में चित्तावलंबन नहीं रहा यह महाखेद है। खेर जो भई सो

भई । अब हम ऐसा सोचे है । जो इन पदोंके बनावनेमें बड़ा परिश्रम भया था ।

और जहां तहांतैं इनकी मांग आवे है । और लड़केवालोंके यामें चित्त विशेष लगे है । और इन चाल ढालोंमें कोई भजनोंका समूह ग्रन्थ है भी नाहीं । और प्रभावना अंगका कारण भी है । और ये पद ऐसे भी हैं जो ग्वाल बाल भी कार्य छोडि सुना चाहे हैं । अपनी अपनी रुचि माफिक सुनि चित्त प्रसन्न करे हैं । याके मिस मन्दिर धर्मशालानिमें सैकड़ां मनुष्य मेले हो जा हैं ।

जब मेले होय हैं तो अवश्य कुछ ना कुछ धर्मकथा भी चले है । तब कोई ना कोई धर्मात्मा पठन पाठनका भी उद्यम करे हैं । पूजा प्रभावना जिन भजन जिन न्हवन जलयात्रा रथयात्रादिकमें प्रवर्तै हैं । तब जिन धर्मके प्रभावतैं जिन धर्मिनके विभव और दयादान वात्सल्यादि गुणकूं देखि अन्य मती भी जिन धर्मकी महिमा देख श्रद्धा रुचि करै हैं । यातैं जिन भजन और सैली समाजकूं चितावलंब हेतु शुभोपयोगका कारण जानि मेरै ऐसी रुचि उपजी जो तैनें अनेक चीजनके बनावनेमें श्रम किया है । अब जो उन सब प्रबन्धोंका एक जगह संग्रह न करैगा तौए पिछे सब तेरातोन हो जांयगे ।

अरु थोड़े कालमें नष्ट हो जांयगे अरु आयु पूर्ण हो जायगा तो तेरातोच वर्षका परिश्रम भ्रष्ट हो जायगा । अरु काहूके काम न आवेंगे । यातैं सबका संग्रह करि जुदे जुदे अधिकार रूप यह नयनानन्द विलास नामांकित ग्रन्थ लिख्या है सो जानोगे । पुनः विदित हो कि इस विलासके दो भाग मुख्य हैं तिनमें एक पूर्व भाग है ताके अध्याय २८ हैं । दूजा उत्तर भाग है ताके अध्याय १२ हैं । दोनूं भागोंके कुछ

अध्याय ४० है। तिनमें पूर्व भागके २८ अध्यायोंकी सूचना इस भांति है—

अर्थात् इस पूर्व भागमें १७ अध्यायतक तो मैंने अपने शिष्य चन्दनलाल सेठ नागपरथ निवासीकी फर्मायशो राग-रागनियोंके अन्दाजपर रचे थे तिनमें बहुधा रागनियोंमें चन्दनलालजीका नाम मैंने भोगकी जगह लिखा है। और ११ अध्याय अपनी इच्छासे सर्व साधर्मीजनोंके धर्म ध्यान योग्य रचिकर पूर्व भागकूं पूरा किया है सो जानोगे। आगे उत्तर भागके १२ अध्याय हैं तिनकी सूचना उत्तर भागके प्रारम्भमें लिखेंगे तहां देखा लेना।

अथ पूर्व भागके २८ अध्यायोंकी पृथक् पृथक् सूचना लिखये हैं।

वर्णन अध्याय

प्रथम अध्यायमें ग्रन्थोत्पत्ति कारण पूर्वक पीठि। और गायन शिक्षा है तो: गवैयाके। दशदोषोंका वर्णन है। दूजे अध्यायमें मंगलाचरणके ३४ दोहे तेरह ध्रुपद। दो चवरंग। दो तराने। तीन प्रकारकी तालके तीन पद। तीजे अध्यायमें चौबीसी अषाडा अर्थात् चौबीसों महाराजके २४ पद इस क्रमसे हैं कि अहोरात्रिकी सात घडी होती हैं कोई चौबीस ठाम सात ही होते हैं। अर्थात् एक एक महाराजके पदके गानेका ढई ढई घडीका काल बांधा है। जैसे आदिनाथजीका पद कालंगडेमें है तो अजितनाथजीका पद भैरवीमें हैं। ऐसे तीर्थंकरका नाम रागका नाम। रागका समय। सुबहसे लेय स्याम तक। स्यामसे प्रभात तक। समय समयके रागोंमें बदलता चला गया है। पुनः चौथे अध्यायमें गुरु भजनाष्टक

है तिसके आठ पद हैं। पांचवें अध्यायमें जैन कवीके भजनोंका समुदाय है ताके पद हैं ॥५॥

छट्टे अध्यायमें समुच्चय जिन स्तुतिके पदोंका संग्रह है ॥६॥ सप्तम अध्यायमें प्रत्येक जिनके नामके पदोंका संग्रह है ॥७॥ अष्टम अध्यायमें श्रीमान राजमती सतीके तथा नेमजीके पद है ॥८॥ नवमें अध्यायमें ज्ञानोपदेशके पदोंका संग्रह है ॥९॥ दशवें अध्यायमें अनुभवात्मक पदोंका संग्रह है ॥१०॥

ग्यारवें अध्यायमें हस्तनापुर क्षेत्र सम्बन्धी पद हैं ॥११॥ बारवें अध्यायमें जलयात्रा सम्बन्धी पद हैं ॥१२॥ तेरवें अध्यायमें राम लक्ष्मण सीता सम्बन्धी पद है ॥१३॥ चौदवें अध्यायमें विसंवादात्मक अन्य मत खण्डनके पद हैं ॥१४॥ पन्द्रहवें अध्यायमें शंकट हरन महाप्रभाविक पद हैं ॥१५॥

सोलवें अध्यायमें दिल्लीकी मंदिर मंजरी जैनोपकार मंजरी वा जैन स्तम्भ मंजरी है ॥१६॥ सत्रवें अध्यायमें दिल्लीकी महिमा मंजरीके पद हैं ॥१७॥ अठारवें अध्यायमें अनेक नगरोंकी जैन जात्राओंके पदों सहित अनेक पदोंका संग्रह है ॥१८॥ उन्नीसवें अध्यायमें सुरेन्द्र नाटकके ३६ पद अद्भुत हैं ॥१९॥ बीसवें अध्यायमें छोटी छोटी रागरागनियोंमें अति अद्भुत पदोंका सर्वप्रकार संग्रह है ॥२०॥

इक्कीसवें अध्यायमें पंचकल्याणके ख्यालोंसे गर्भित है ॥२१॥ बाईसवें अध्यायमें तत्त्वार्थ अधिगम सूत्रके प्रथमोध्यायके पाठ है ॥२२॥ तेईसवें अध्यायमें रामका बनोवास सम्बन्धी जैन मतका व्याहला है ॥२३॥ चौबीसवें अध्यायमें सीताका बनोवास अरु शील प्रभाव सम्बन्धी बारहमासा है ॥२४॥ पच्चीसवें अध्यायमें पुष्पदंत चक्रवर्तीका वा रागासा प्रश्नोत्तररूप है ॥२५॥

छब्बीसवें अध्यायमें राजमती सतीका बारहमासा ऊडोवंध है ॥२६॥ सताईसवें अध्यायमें राजमती अरु नेमीश्वरके प्रश्नोत्तर

रूप उद्बारासाका है ॥२७॥ अट्ठाईसवें अध्यायमें द्वादशानुप्रेक्षा सिद्धांत स्वरूप परमार्थ उपदेश है ॥२८॥

पुनः उत्तर भागके १२ अध्यायोंकी सूचना उत्तर भागके आदिमें देख लेना।

धर्मात्मा पुरुषोंसे मेरी यह विनती है कि यह गान विद्याके समाजका जिकर है। और गान कमालहीका शास्त्र है। या मैं जो पद भजन हैं, जो उन राग रागिनियोंमें बनाये गये हैं। तो इस वार इस कालमें दिल्ली लखनऊ मुरसदाबाद सहारनपुर हैदराबादके मध्य देशोंके गन्धर्व लोगोंने नई नई ताललय धुनि चाढ काढ जारी किये हैं। और वे बहुत सुन्दर चाल हैं। परन्तु तालसम उनके बड़ी मरोड रखते हैं।

तातैं यह प्रार्थना है कि अक्षर मात्रा अनेक यथा ये पद जैसैं मैंने बनाये हैं। और जिस चढावको लाग दिये हैं। तैसैं ही उनके त्यौं समटेकके विश्राम जैसैं या मैं हैं तैसे ही लिखो पढोगे। और याद करो करावोगे तो जिस सभामें गावोगे अति शोभा पावोगे। और अक्षर मात्रा भंग करिके लिखा पढोगे तौ मोकूं भी दूषण दिवावोगे और जिस सभामें गावोगे तहां तालकी चालसैं चूकि ऐसे लज्जित होवोगे।

जैसे सूरमा युद्धमैं घोड़ेसैं गिरकै फोड़ा होय है। तालसुर स्वर साथ भगवत भजनका आभूषण है। जिस गन्धर्व देवता भी यद्यपि महानिपुणमती स्वतः स्वभावतैं होवै हैं तथापि भगवन्तोंके गुणानुवाद गावै तो अन्यमती भी जिनवचनमैं अनुराग करि सभामें आय बैठै हैं। और बेताल बेसुर भयंकर स्वरसैं गावै तो जगतमें हांसी करावै। और श्रोता [illegible] उठि जाय। जिन भजनकी अवज्ञा होय। तातैं शुद्ध प्रति लिखना। जाके जुदे जुदे पद छेद होय। रागका नाम ठीक ठीक होय सो जानोगे।

पुनः उत्तम पुरुषनकूं मालूम हो कि प्रथम तो जो पद जिस रागके स्वरोंमें अलापा जायगा। उस रागके अलापका नाम हरएक पदके साथमें लिखा है। बुद्धिवान तो अलापका नाम जानिके ही उस पदकूं गावेंगे। और जो अलापमें भी चाल नहीं पावें तो जिस जिस प्रसिद्ध रागनीकी चालमें ये पद बने हैं। उन उन रागनियोंकी भी एक एक टेक। एक एक कड़ी। इस पुस्तकमें भिन्न सूचिपत्रमें लंबरवार लिखी हैं।

प्रथम लंबरके पदको। प्रथम लंबरकी रागनीसे। मिलाय चाल जान लेना। दूजे लंबरका पद दूजे लंबरकी रागनीकी चालमें जानना। ऐसें ही लंबरसे लबर मिलाय सूचिपत्रमें चालका पता लगा लेना। यद्यपि मेरी अति मूढता है कि मैंने मिथ्यातकी रागनी इस धर्म ग्रन्थके शास्त्रमें जुदी भी क्यों लिखी तथापि स्वार्थ जान लिखी हैं। कि वे प्रत्यक्ष रागनी हैं बाल गोपाल और गंधर्व कलावंत हुमभाट नृत्यकी प्रमुख उनको सब गावे हैं। और चाल ढाल बहुत प्यारी है।

उसकी एक कड़ीको बांचते ही उसलबरके पदकी चाल पालेंगे। तातें भिन्न लिख दई हैं। लंबरसे लबरकी समस्या जानचाल कड ठीज्यो। और कछू उनसे प्रयोजन नाही है। यद्यपि पहले हमारा ऐसा अभिप्राय था कि प्रसिद्ध रागिनियोंका सूचिपत्र जुदा लिखें परन्तु वे मिथ्यातकी वाहीयात थी इस वास्ते टाल कर गये हैं।

॥ इति अथ गंधर्वके दशदोष लिख्यते। और गायन शिक्षा लिख्यते ॥

भावार्थ—गानेवाला ये दश दोष टाल गावे तो सभामें सोभा पावै। और इनकूं नहीं त्यागे तो बहुत जल्दी हथेली पिटवावे। प्रथम सारंगी, तंबूरा, मृदंग, कंसालकूं आदि देके संगीतके बाज बीणादि होय तिनकूं खूब स्वरमें मिलवावैं। और आपमें

गावने बैठैं ता समयके रागरूपमें उनकी गति सुनैं। और आप ताल देता रहै बिना स्वर मिले साजके संग न गावै ॥१॥

और गावने बैठे तब दोनूं गोडोमोड सिंहकी भांति प्रसन्नचित्त मनका भय लज्जा छोडि सिंह आसन बैठे। और आसन बैठे नहीं। काहेसैं जो धुनि और उपजा संपूर्ण स्वासनाभि सैं निकसै है। नाभि सूधी रहै तो स्वास टूटै नहीं। अन्य आसन बैठै तो पूरी ध्वनि नहीं निकसै ॥२॥

और गावनेसे प्रथम जो राग गाया चाहै, उस रागका रूपकूं स्वरसें मिला हुवा तीन प्रकार मंद मध्य और तार ग्रामभरकै दो च्यार बार समताकी साथ अलापै। घबराय कर अथवा एक ही बार उच्च स्वरसें न अलापै ॥३॥

और बहुत मुख न फाडै ॥४॥

और ऐसा न चिल्लावैं जो कंठकी रग फूल जाय वा माथा दमकने लग जाय वा कि नछने लग जाय वा मुखकी चेष्टा बिगड जाय। पछेवमें भर जाय सो न करै ॥५॥

औरगावती बरियां स्वरतालसे अपनेकूं बिगडा जानै तो तत्काल थम जाय। साजबाजके स्वरमें तालमें अपना ध्यान लगाय लयकूं बिचारै। जर साजमें एक समा चूकै तब फिर उस कलीकूं गावै। एकबार ही बेस्वर बेताल न दौडै ॥६॥

और हरबार एकबार कलीकूं गाय सम पूरा करि बिश्राम ले। दूसरीबार उस कलीकी उपज और नई रंगतकूं बाजमें सुनै। जब साजका समा आ चुकै तब दूसरी कलीकूं वा वाहीकूं गावै। इस बातका आवश्यक ध्यान रखना चाहिये। कि एकबार आप गावै एकबार साजको सुनै ऐसा किये तैं नई नई लय और उपजका लाभ होता है। गुन बधे है और आप हारे नहीं बिश्राम मिलता है ॥७॥

और यो भौंके बहुत मटके नहीं। मंदमुसकान मंदहास्य-भाव-विनय सहित ध्यान लगाय नमस्कार करांजुलि जोड जैसा पद विनतीका भाव हो तैसा अपने हाथ पाव नेत्र मुखका भाव दरसाय भक्ति प्रगट करै ॥८॥

और देवविंबकूं वा गुरुधर्मकूं पीठ न दे। और सर्व सभाकी तरफ फेरी लेता गति भरता रहै ॥९॥

सास्त्राभमें मूंड लहावे नहीं। ज्ञान साज स्वरमें राखे। ध्यान ताल और भावमें राखे। और बिना देवगुरु धर्मकूं मनायें और पूज्य पुरुषनकूं मनायें और पूज्य पुरुषनिका मंगलाचरण करे बिना गावे नहीं। काहे तैं जो अभिमानी रूपकुल धन आदिकके गर्व करि कंठ स्वरके भरोसे पर बहुत भये इष्टकूं नाहीं मनावे हैं। बहुत भये देवगुरुकी अवज्ञा करे है। तिनके कंठमें भगवती सरस्वती माताका निवास नहीं होता है। ते दुराचारी मार्ग-भ्रष्ट हैं सभामें निंदा पाय निकासे जांय हैं। और जो देवगुरु सरस्वतीकी विनय करे हैं ते विनयवान भगवानके भक्त परभवमें इंद्र धरणेंद्रनिके अखाडेनिका नृत्यु देखें हैं। पूज्यनके पूज्य होय परंपरा मोक्षकूं पावै हैं। या भांति इस ग्रंथकी उत्पत्तिका कारण आदि गन्धर्व शिक्षा पर्यंत पीठिकाका वर्णन किया जो कोई या ग्रंथकूं लिखैं सो अति सावधानी सूं अक्षर मात्रा संयुक्त जैसा यह लिखा है तैसा ही पीठका सुविचित्र राग अलाप और टेक समेत लिखैं कमती बढ़ती अक्षर न करैं यह कविताकी प्रार्थना है। याकूं पढै लिखैगा पढ़ाय लिखाय प्रसिद्ध करैगा। ते धर्मात्मा धर्मानुरागका फल कर्ता पुण्य पावैंगे। यह बालकनके चित्तका अवलंबन मैंने बालबुद्धि कर बनाया है। भूलचूक होय सो गुणीजन शोध लीज्यो मैं अति ही अल्पश्रुत हूं।

इति श्री नयनानन्दयतिकृत विलास संग्रह ग्रंथोत्पत्ति कारण

तथा कवि प्रार्थना गंधर्वके दश दोष गायन शिक्षा प्रमुख भूमिका वर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

अथ अध्याय दूजा यामें मंगलाचरणके दोहे २४। ध्रुपद १४। चतरंग २। तर्राने २। तीन प्रकारकी तालके पद तीन लिख्यते। अथ मंगलाचरण हेतोः चतुर्विंशति दोहा लिख्यते। तत्रादौ देवगुरु धर्म एकीभावकरण मंगल चौबीसी समाचरेत्।

दोहा।

ज्ञानानन्द अनंत शिव, अर्हन् मंगल मूल।
कलित कुलाचल तोरकर, हरो नाथ भवशूल ॥१॥
तुम शिवमग नेता रह्यो, भेत्ता कर्म पहार।
विश्व तत्व ज्ञाता परम, लयो बुधि वेग हमार ॥२॥

तुम त्रिभुवनके भानु हो, मैं खद्योत समान।
कैसैं तुम गुण वर्णऊं, अल्पमतिनको ज्ञान ॥३॥
उदय भक्ति प्रेरक भई, लजहरि पकरि प्रान।
लम्पट कयो पदकमल हिय, लखहु अगद गुरु ध्यान ॥४॥

तुम अनंतगुण आगरे, पट तर अवरन कोय।
तुम वाणी तैं जानिये, जो कछु जगतें होय ॥५॥
भूत भविष्यत कालकी, षट द्रव्यन पर जाय।
वर्तमान सम तुम लखो, हस्ता मलक सुभाय ॥६॥

सकल चराचर जगत चित, ज्ञान मुकर रह्यो सूर।
तातैं तुम अर्हत हो, सकल जगत करि पूज ॥७॥

तुमतैं गणधरनै सुन्यो, कहूं गति जब संसार।
तातैं तुम हो परम गुरु, पतित उधारन हार ॥८॥

वीतराग सर्वज्ञ तुम, तारन तरन महान।
तातैं तुमरे वचन प्रभु, हैं पट मत परमान ॥९॥

धर्म अहिंसा तुम कहो, जहां हिंसा वहां पाप।
दयावंत भव जल तिरैं, पापी लग संताप ॥१०॥
जीव दयागुण वेलको, बोई ऋषभ जिनेश।
षट दर्शन मण्डप चढो, सींची भरथ नृपेश ॥११॥
मिथ्या वचन अनादरे, तुमने हे जगदेव।
तातैं झूंठनकी झरत, जहां तहां विरकी रेव ॥१२॥
सत्य धर्म तैं होत है, त्रिभुवनमें परतीव।
सत्य तैं गोला ओहका, होय तुषार प्रतीत ॥१३॥
चोरी तुम वर्जन करी, परम पाप लख धीर।
त्यागी पद पद पूजिये, चोरस हैं भव पीर ॥१४॥
अनाचार वर्णन कियो, ग्रहण करन कहो शील।
जिन धारयो सो जगतरे, जिन छारयो कहा कील ॥१५॥
शील शिरोमण जगतमें, या सम धर्म न और।
अग्नि होय जल परणवे, विष हो अमृत कौर ॥१६॥
मृदग माळकै परणवै, शूल सेज मख तूल।
आधि व्याधि आवै नहीं, शीलवंत ढिग मूल ॥१७॥
भव तृष्णा दुःख दायनी, भाखो तुम भगवान।
त्यागी त्रिभुवन पति भये, रागी नर्क निदान ॥१८॥
देव धर्म गुरु हो तुम हो, ज्ञान ज्ञेय ज्ञातार।
ध्यान ध्येय ध्याता तुम हो, हेयाहेय विचार ॥१९॥
कारण हो शिव पंथके, उद्धारण भव कूप।
कारन तारण जीवके, हो तुम हो शिव भूप ॥२०॥
उत्तम जन बहु जगतमैं, तारे तुम भगवान।
अधमनता खोय कही, तारो हे जगवान ॥२१॥
आयो तुम पद पूजने, भजन करनके चाव।
राखो भव भव भजनमैं, जबलग जग भरमाव ॥२२॥

भजन करत संसार सुख, भजन करत निर्वाण।
भजन बिना नर जगतमें, है तिरजंच समान ॥२३॥

भजन करत जग उद्धरे, सिंह नकुल कपिसूर।
गणधर हो वृषभेशके, मुक्ति भये अघचूर ॥२४॥

निरअंजन अंजन भये, गज कि रात भये सिद्ध।
श्वान जटी पन्नगति रे, तिनकी कथा प्रसिद्ध ॥२५॥

कहां पशुपर आय नर, कहां मुक्तिको धाम।
तू भी मूरख भजन कर, सुखमें भलो न घाम ॥२६।

या जग विषम विदेशमें, बन्धु भजन भगवान।
सार्थ वाह निवृत्तिको, लखि निश्चै उर आन ॥२७॥

भजनबाद जिन भक्ति बिन, भक्तिबाद बिन भाव।
भावबाद अब गाढ बिन, गाढबाद बिन चाव ॥२८॥

धन्य महूरत धन घडी, धन्य दिवस गिन जाउ।
तरस तरस करण जुडो, श्री जिन भजन समान ॥२९॥
रहो सदा सैठी सुखी, रहो सदा सतसंग।
जातैं श्री जिन भजनमें, प्रतिदिन होय उमंग ॥३०॥

धन्य पुरुष सज्जन मिले, भये सहायक धर्म।
भजन करूं भगवंतका, राख सरस्वती सम ॥३१॥
तू कैवल्य उद्योतको, परम ज्योति तम हार।
नयनानंद गरीबकी, यह विनती उर धार ॥३२॥

मोह महातम दूर करि, शुद्ध ज्ञान परकाश।
ज्यों जब सांचे देवका, गाऊं भजन विकाश ॥३३॥

यह विधि मंगल मानिके, कहूं भजन हो चार।
भाखूं नयनानंदके, कृत विलास अनुसार ॥३४॥

॥ इति मंगल चौवीसी समाप्तम् ॥

अर्थ—प्रत्येक मंगलाचरण हेत चौदह धुरपद लिखें हैं। ये धुरपद, भैरवी, बिलावल, सारंग, गौड़, भीमपलाश, बरवा, धनासरी, गौरी, येमन, स्याम कल्याण, परमाव, कान्हड़ा, देश, सोरठ, बिहाग जैजैवंती, मेघ, वसंत, ललित, विभास, नट, पट, परज, कालगड़ा, प्रमुख, अनेक रागोंमें समय अनुकूल गाये जाते हैं। चाहो जौनसा धुर पद इन रागोंमेंसे चाहो जौन से रागमें गावयो निःसंदेह गाया जायगा। यातैं प्रति धुर पद रागकी मुख्यताका नेम नहीं किया, गंधर्वकी इच्छा प्रधान है।

अर्थ—वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरके नाम गुण समेत नमस्कार करनेका उपदेशात्मक धुर पद लिख्यते। ऋषभोजित संभवंद अभिनंदन सुमतिकन्द पद्मप्रभ पार्श्वंदि भगवत गुण गावरे टेक।

सेवो शुभ पाद संत चंद्रप्रभ पुष्पदंत शीतल श्रेयांसकेत जीधे मन ध्यावरे, वासवनुत वासुपूज्य भजिकर निर्मल अनन्त मार्ग भव अनंत धूप सद्धर्म प्रभावरे। धार ले मन शांति कुंथवरि के चरम जिनपद वरिके मुन्ना नंत नमि नेमीशपावरे, कर ले पारस भेट रु सन्मति ना्हि भर्मभेट पंथ्यो चिरकाल कयों न वाकी सुर लावरे॥१॥

अथ-पूर्वोक्त चौबीस जिन जगतपिता हैं तिनके पितानके नाम गुणपूर्वक नमस्कार करनेका उपदेशात्मक धुरपद प्रारम्भः।

वंदू जगताघ तातना मित जितशत्रुनाथ धरिके जुग हाथमाल मन घन अठधारी॥टेक॥

जय तार सुवोर मेव धारण सुरलिष्टने धर्मइखेन सु फत वेग दढरथ सुखकारो। विमलेश्वर वासुदेव जय वृष सिवसेन पद मानव विसुखेन सेव सूरम सुखकारो। सुन्दर दर्शन नरेशकुंभल श्री समंतेश विजयोजय। अश्वसेश पुण्यातम मारो।

भजरे मन अश्वसेन सिद्धारथ सिद्ध दैन ये जिन चौबीस तात एका भवतारी ॥२॥

अथ वृषभादि चौबीस जिन जगत चूडामणि देव हैं तिनकी मातानिके नाम गुण सहित वर्णनपूर्वक नमस्कार करनेका उपदेशरूप धुरपद प्रारम्भः।

सुनरे मन मेरी बात जाए जिन जगत तात देखो जिन मात ताहि बन्दन नित करनी ॥टेक॥

मरुदेवि विजयामतीय श्रीयुत षेणामतीय सिधअर्था मंगलीय सीमा सुख भरनी। प्रथवी शुभ लक्षणीय रामारु सुनंदनीय विमला जयदेवि रमा सूर्या दुख हरनी। सुभ व्रत धरणी सतिय एलाअरु श्रामनीय मित्राअरु रक्ताय श्यामा अघ तरनी। त्रिशिषा शिवदेवि माय वामा त्रिशलादि ध्याय बंदू सह कोष जगत चूड मणि धरनी ॥३॥

अथ—चतुर्विंशति वृषभादि जिन जन्म नगर इंद्रन करि पूज्य षोडशपुरी तीर्थस्थान हैं तिनके नाम और तिनकूं नमस्कार आज्ञा करनेका उपदेश रूप धुरपद प्रारम्भः।

कौशल सावतिय धाम शाशो कौशंबि ठाम। तीर्थंकर जन्म ग्राम तीरथकर प्यारे ॥टेक॥

चंपापुर चंद्रपूर भद्रलपूर सिंहपूर मिथुलापूर रत्नपूर गजपुर नित जारे। काकंदी कपिलादि सूरजपुर दाधि यार काकर कुश अग्रपूर मुनि सुव्रत ध्यारे। कुण्डलपुर चोर देव षोडश हैं नगर एव जन्मे भगवन्त जहां आशासुर आरे। घरवर भई रत्न वृष्टि धर्मातम भई सृष्टि सोभा बरनी न जाय नरभव फल पारे ॥४॥

अथ—चतुर्विंशति ऋषभादि जिनेंद्राणं चरण चिह्न लिख्यते।

॥ धुरु पद ॥

भापूं जिन चरण चिह्न प्रभुके तन तैं दमिल मुनि के चित्त हो मदन शंशय सब टारिये ॥टेक॥

वृष गजघोटक कपीश क्रौं चरु अंभोजधीश स्वस्तिक निशिईश मछ औ बरस विचारिये। खगपग महि आवरा इवाबर बज्रायुधादि मृग बाक धनुर्गिनादि कलशा वर धारिये। कछय वर कमल शंख सर्प रुके हरि निशंक लखि के जिन अंक नाम निश्चय चित्त धारिये। धरियें उर ध्यान देव करिये प्रभु चरण सेव जातैं भवसिंधु खेव शिव मैं ले तारिये। भावूं जिन चरण चिह्न ॥५॥

अथ—निर्ग्रंथ वीतराग गुरुनिकूं नमस्कार ॥ धुर पद ॥

वंदू निर्ग्रन्थ साधु त्यागी जिन जग उपाधि आतम अनुभव अराधि पर परण तिछारी ॥टेक॥

तजि तजि पद चक्रवति मन वचतन हो निरते पाय न प्रथिवी जिनतें जिन दिक्षा धारी। समदम संवर संभारि निर्जर करि कर्म टारि सटत न प्राणी उधार करुणा विस्तारी। जीते त्रयशल्य दुक्षुर गिर सम भये अचल रत्नत्रय धरण मल्ल कष्ट सहें भारी। जयजय महिमा निधान जंगम तीरथ समान मेरे उर सो आन वंदूं जग तारी ॥५॥

अथ—जिन सरस्वतीकूं नमस्कारका धुर ॥पद॥

निकसी गिर वर्द्धमानसेती गंगा समान गोतम मुख परी आन शारद जग माता ॥टेक॥

तोरत भ्रम गज सुदंत जडता तप करि प्रशांत-रत्नाकर ज्ञान अंत पहुंचो भवत्राता जा मैं सप्तांग भंग उठे निर्मल तरंग अमृतकी छोर-मोक्ष मारगको दाता। आदिरु मध्यान्त सान निर्मल किरपानिधान-धारा पर वाहवान त्रिभुवन विख्याता। वंदे हग सुखदास मेरे उर कर निवास गाऊं जिन गुण विलास कीजे सुखसाता ॥६॥

अथ—रत्नत्रय धर्मकूं नमस्कार धुरपद उपदेश रूप। जागरे

तू मोक्षमगा रत्नत्रय मांहिपगा मोरे मत नाहि डगा पहुँचै शिव धामरे ॥टेक॥

सम्यक मई दृष्टि ठान हित अरु अनहित पिछान शंसे भ्रम भान-ज्ञान चिंतामणि धामरे पूंजी परभौकी जान सम्यक् चारित्र आन टूटैं अघ जाके मुक्ति पावै बिन दामरे। तन धन आशा बिहाय कृषि करि काया कषाय-कोई न करि हैं सहाय अब के अघका मरे। नैनानंद कहत मीत शास्त्रो सतगुरुनें नीत बोवै बवूल तौन लागेंगे आम रे ॥७॥

अथ—दर्शनविशुद्धादि षोडशकारण भावनांकूं भावनेका उपदेश रूप धुर ॥पद॥

भारे दर्शन विशुद्ध-तजि करि परणति विरुद्ध प्रवचन वत्सल सुबुद्धि आदिक अब फुरि कै ॥टेक॥

तीर्थंकर प्रकृत सार-ताकी पद देनहार आराधन युत संभारि अपनी उर कुरिकै। जिन पद अरविंद सेव सतगुरुकी सरण लेय, आगमभोचत्तदेय, टूटैंअघचुरिकैं। भरम्यो चऊंगति संसार, नैनानंद सुनलेयार, ज्ञानधनकी देहटार, भागेमति उरकें। भागैंकु छसिद्धनांहि, देनूभव बिगरजांय, भरमेंगोफेरफेर, रोरोझुरिझुरिकै ॥८॥

अथ—पंच परम इष्ट नवकार मंत्रकूं निरंतर ध्यावनेका उपदेश और पंच पद गर्भित धुर पद।

चेतरे अचेत मीत, खोनों चिरकाल बीत, तजिकैं परनाद रीति, अब तो तू जागरे ॥टेक॥

भजले परब्रह्म रूप, अर्हंनू सर्वज्ञ भूप, सिद्धनके गुण अनूप चितवनमें लागरे। आचारज उवझाय साधुन पदवीस न्याय, वेको छुड़वाय, उष्ट विषयन सूं भागरे। हिंसा अरझूंठनापि, मत कर चोरी मिलाप, मैथुन विरकारिषाप, तृष्णा अग त्यागरे।

पांचों पद ध्याय, पंच पापतैं पलाय, अबपूरी करि नींद, नांहि आवैंगे कागरे ॥९॥

अथ—उपदेश निमित्त संसारिक स्वांग व्यवस्थाका निरूपण। धुर ॥पद॥

देखरे अज्ञान मौन, तेरो जगमांहि कौन, कीने सब स्वांग तौन, तोमन अपनायो ॥टेक॥

देय कैनि गोद जाय, प्रभिकी अप तेजकाय, तर वर थिर थिर भ्रमाय, चऊं गति भरिआयो। सुर नर पशु नर्क थान, कद ऊद लिषाये बिमान, कब ऊका नरपति प्रधान, कट क्रम कहलायो। कब ऊ स्वंयधि थंभ ठाठ, तनको उपराय खाठ, कब ऊठ पंखाठ, पसल भक्षणकूं पायो अब ता नर चेति चेति, विषयन बिरदारि रेत, पीठर परकाश, तूहै धिहूनीको आयो ॥१०॥

अथ—सम्यक दृष्टि पुरुषनिकी निर्द्वंद अवस्था रूप निर्विकल्प महिमाकूं नमस्कारका धुर पद ॥प्रारंभ॥

वंदूं समकित निधान, जिनपतिके नंद जान, नंदन वनकी समान, सबकूं सुखकारी ॥टेक॥

जिनके घटमांहि राज, समकयोवन ज्ञान गाज, समर समई वृष्टि तृपा नव टारी। अनुभव अंकूर फूटि, शांसे गुणकी प्रटूटि, चारित रुपि ब्रह्मभाव, शाखा विस्तारी। सुव्रत पुष्पोन्माव, करिकैं जिन नप प्रतीत, शिव फलमें धारिनीत, पर परणति छारी। करुणा छायापसार, भोगी जोगी अपार, ठाडे भव वन मंझार, निर्भय अधिकारी ॥११॥

पुनःसम्यग्दृष्टिनके निर्विकल्प विचारका वर्णन धुरपद ॥

वंदो नम क्षोठ गोठ, दर्शनके हैं झकोठ, मेरी महिमां अडोठ, चेतन अविनाशी ॥टेक॥

लघु गुरु मम रूप नांहि, मृदु कठिन सरूप नांहि, हिम उष्ण सरूप नांहि, रूक्षनचिक नांही। खट रस अन मिष्ट खार,

चर्चेतन कषायसार, कटुकन दुर्गंधगंध, श्यामन पीताखी। हरितन आरक्त खेत, धूपन तम ज्योति देत, शब्दन सुर नर परेत, नर्क नभ नवासी। जल थल बिल नभ चरीन, त्रिय पुंसन-पुंसकीन, सम्यक्दृष्टि भाखी ॥१२॥ पुनः

सम्यग्दृष्टिनके निरवीकल्प सम्यक्तको नमस्कारका धुर पद। ताका आशय ऐसा है जो मैं पंच जड द्रव्यनितैं भिन्न एक अखण्ड स्वरूप चैतन्य चिद्रूपस्वरूप न्यारा जीव द्रव्य हू इन पंच द्रव्यनिका भेषी हूं ये मेरेतैं भिन्न हैं ॥पद॥

धर्मीन अधर्मपाल, जनमें आकाश काल, पुद्गलसें भिन्न एक चेतन चिद्धारी ॥टेक॥

पर जय गति थिति धरंत, त्रिभुवन नभ मैंभ्रमंत, त्रिपणी खोहि सब वहंत, क्रय धाव पधारी मूजल जन तम वाय, दो विध तर वरन काय, जिनके त्रय रूप नांहि, इन्द्रिय सब न्यारी। सबहैं सान मेल खेल, जैसे तिल मांहि तेल, पावक पाषाण, जेम हमरो विधि सारी। ऐसे विज्ञान भानु, दग सुख महिमा निधान, तिनकूं जुगजोरि पान, वंदन बिस्तारी ॥१३॥ अथ

अभव्य मिथ्यादृष्टीकी व्यवस्था राग चहरंग खम्मा चका ॥पद॥

षट दर्शनकी बात बनावै, बानी ग्यारह अंग सुनावै, गाढो समकित कब ऊन आवै। षट दर्शनकी बात ॥टेक॥

जीवके सरूप मद्धि दौर धूप होय, तातैं गिर गिर, गिर गिर, गिर गिर नव ग्रीवतैं आवैं॥ षट दर्शनकी बात बनावै। बानी ग्यारह अंग सुनावै, गाढो समकित कब ऊन आवै, षट दर्शनकी ॥१॥

शंसय बिमोह बिपरीत तान जाय। नैनानंद आगम विभावमें, श्रद्धावाना श्रद्धावाना। श्रद्धावाहीन पावै। षट

दर्शनको । बानी ग्यारह अंगसु० गाढो समकित, पट दर्शनको० ॥१४॥ पुनः

चतरंग खम्माचरागका जीवनकुं पंच पापके त्यागका उपदेश है । जिनोने नहीं त्यागे तिनकी कथा है ॥ और इस रागमें कट पटे बोल होते हैं सो जैसा यह राग है तैसैंही शब्द रखे गये हैं । इसमें ताळकी बारीकी गंधर्वोने रुडो मरोडसे रखी है सोजानोगे खम्माचरे मन जैन धरम ना बिसारे, पंच पाप तजि देरे प्यारे, पापिनके सुन चरित असारे, रेमन जैन धरम ना बिसारे ॥टेक॥

झूंठा तन झूंठी माया च्यारूं गतिमें तू फिर आया । उरध मध्य पताळ-गतागत-नट नाटक किये स्वांग अपारे । अरे मन जैन धरम; पंचपाप त०; पापिनके सुनिच० ॥१॥ जीवनकी हिंसा करि, ब्रह्मदत्त आदि, मरिमरि, मरिमरि, मरिमरि, मरि मरि नरक सिधारे । रे मन जैन धरम; पंचपाप; पापिनके ॥२॥ वसु झूंठ सेती फाटी नरक हग भूमि; टूट्यो आसन तत्काळ, गयो सातवीं पताळ, वेदन पाई हैं कमाळ, कर मुष भये कारे । अरे मन; पंच पापत; पापिनके ॥३॥ चोरी करी लंकपति गये नर्क घोर, धिग धिग धिग धिग धिग धिग धिग धिग जगत उचारे । अरे मन; पंचपाप; पापिनके ॥४॥ कीचकसे पर नारी कारन, भीमसेनने सांग खेळके, रेळ पेळके, धुमत काळ दे मारे । अरे मन; पंचपाप; पापिनके ॥५॥ तृष्णा करि बहुत नर्क सिधारे, कौन कहै तिनके दुःख सारे, छिन छिन पळ पळ तन धन बिनसै हगसुख अब उरझो सुरझारे । अरे मन; पंचपाप; पापिनके ॥६॥ ॥१५॥

अथ अर्हंतदेवोंकी स्तुतिमें राग बरवेका तर्जना प्रारम्भः ।

हे दादाजी जगजनतारण, शरणा तेरी आये । पकरकर

तारो मोहि भगतजनजी। हे दाताजी भगजनतारन, शरण तेरी आये ॥टेक०॥

तारोजी तारोजी तारोभवदधि अपार। अन्तरजामी काटो मोरी फन्द, मैं बहु दुख पाये। हे दाताजी पकरकर तारो मोहि। १॥

धिगतकर्म, धुवबिट बिषयन बिकार। शिवपथ गामी, कीज्यो दीनबन्धु, रहे॰र जीत्याजये। हे दाताजी, पकर-कर तारो ॥२॥

अटक तोरि, मोहि झटपट निकार, भरल्यों हामी। निरखग अदंबमा मन भावे। हे दाताजी, पकरकर तारो मोहि ॥ ३ ॥

अनघ अघ घ घ घ धुनि सुनि तुमार। भग परणामी, भाषे दग सुख तेरी सेव सुहावे। हे दाताजी, पकरकर तारो ॥४॥ ॥इति॥

पुनः अर्हंतदेवोंके सर्वोत्कृष्ट ज्ञानकी महिमा रूप स्तुतिमें अरु चेतन्यका भिनत्व निरूपन रूप करवे रागका तर्राना दूजा प्ररंभः।

परजीवऽजीव नाना बिधि बिगत बिरुधा। गोत्तमादीन निरूपैं निशदिन सुन्दर भारी बानी ॥ टेक॥

अपनू रूप चेतन निशदिन चितारना अकजाई। भापैं जैन वैन वरद ज्ञानी। परजी बाजा बनाना गौत्तमा दीननि रूपैं। गत गत गत प्यार भये जगमें अनादि, ना सुरकाई, राधी उरझेर, नाकी पमानी। जबा जीव। गोत्तमादीन ॥२॥

अपनी बिद्धि, आपापर बिचार कीया। और न कोईया-मैंने न सुख न तेरी हानी। परजीवा जीव नाना बिधि बिगत बिरुधा। गोत्तमादीन निरूपैं निशदिन सुन्दर भारी बानी ॥३॥

अथ शूल नामा तालमें शुद्धात्माका निर्देश निरूपण पद लिख्यते । यह बडी कठिन ताल है बड़े गांधर्व इसके भेद कूं जाने हैं । गोप्य विद्या है । साक्षात स्वरूप कागदपर लिखा नहीं जाता । कण्ठ स्वर और हृदयका सपायसैं श्रवण गोचर जात है ॥शूलताल॥

आतम दरबको भेद न पायो पर परणतिकर, ये नर जन्म गंवायो आतमदरबको ॥टेक॥ भरम भगलमय पंच दरबफंधि, नटवत् नवरस रूमें रचायो । आतम दरबको पर परणति कर ॥१॥

सपरस रस अर गंधवरण स्वर इनतैं पर निज क्यों न लखायो । आतम दरबको पर परणति० ॥२॥

वंश अगनि ज्योंदधिमें घृतत्यों, किन तिल तेल जतन बिन पायो । आतम दरबको-पर परणति० ॥३॥

तजि परपंचन माटी कंचन ढूंढि निरंजन सतगुरु गायो । आतम दरबको-पर परणति० ॥४॥

दृग सुख चिंघ न दाह निकन्दन अताल करि ज्ञान सुनायो । आतम दरबको पर परणति ॥५॥

लख दपाय करि अनेक मुनि नर्क गये तिनका दृष्टांत देकर भाव प्रभृत ग्रन्थानुसार शुद्ध आतमाका अनुभव करनेका उपदेश रूप राग भरमा धनाश्रीमें तिलवाड़ेकी आडीतालका वर्णन यद्यपि यह ताल भी श्रवण गोचर रहै । तथापि बहुधा गांधर्व लोग जाने हैं ।

पद-हे अनारी नरचेतनकूं सुधध्याय ॥ टेक० ॥

विपय भोग विडम्बनासैं क्षेमित मीत हटाय । हाड चावत गाल फटत स्वान समनव गाय । हे अनारी० ॥१॥ बाहु मुनिसे नर्क पहुँचे धारि तैजस काय । फूंकि दण्डक भूपकूं रहे जगतमें अटकाय । हे अनारी० ॥२॥

भ्रष्ट होय वशिष्टसे मधु कपिलसे मुनिराय। अंग्येदरि कुछ खगर बोव्यो रहे आप डूबाय। हे अनारी० ॥३॥

ऋगय जुर साम अथ वर्णाहिक भगल वेद बनाय। दिये स्वर्ग बात दिखाय जीव अनन्त दिये भरमार॥ हे अनारी ॥४॥

डूबे दिया शागसे परायण द्वारिका भरमाय। सो विरट वचन अतीत गौतम नर्कमें परे जाय। हे अनारी ॥५॥

विठलुस परिग्रह तजि तपोधन छिन स्वरूप पहिगाय। हा कष्ट तिनकी यह दशा कहां शरण है न सहाय। हे अनारी ॥६॥

मुनि कुन्दकुन्द स्वभाव प्रभृत कही सीख सुनाय। दग सुख तुख अरु माळखि शिवमूति खम सुरझाय। हे अनारी नर चेत कू बुध धाय।७॥ इति ॥१९॥

पर्वेत्रोनसे विषयभोगनकी आशातैं निराश होनेकूं शरीरका ममत्त छुड़ायनेका निर्देशकर रागधानीमें तालतें लिगको लिखया है।

अरे नर तनको मोह न कर रे तू चेतन यह जर रे।
अरे नर तनको मोह न कर रे।।टेक॥
अपर अपोषि विषैकूं चाहै सो मोरी रही पर रे।
अरे नर तनको मोह न कर रे॥ तू चेतन यह जर रे॥१॥
रसना बयान भव्यो या जगमें सब पुद्गल किये परे।
अरे नरतन०॥ तू चेतन०॥२॥
नाक फांक मत फूल धुसेरै, रही बिनक सूंभर रे।
अरे मनन रतनको मोह न कर रे॥ तू चेतन०॥३॥
जिन आंखन पर गौरी निरखै, खोडो ढौर ही हर रे॥
अरे मन०॥ तू चेतन०॥४॥
धर्मकथा सुनि मोखन चाहै, तो एवानक तर रे।
अरे मन नरतनको मोह न कर रे॥ तू चेतन०॥५॥

तू निरंजन है भय भंजन, वनको टनको धार रे।

अरे मन नर० ॥ तू चेतन० ॥६॥

दर्पिवत् मणि पटमाव निराली, भापव हैं सतगुरु रे।

अरे मन० ॥ तू चेतन० ॥७॥

दृग सुख होय चिदातम दरशन, भवसागरसूं तर रे।

अरे मन तन० ॥ तू चेतन० ॥८॥

दादरेकी तालमें राग दादरेमें पद जिनवानीका।

अरे जीवका कल्याण सदा जैन वानी रे।

जैन बानी जैन बानी जैन बानी रे ॥ अरे जीवका कल्याण। टेक॥

शंसयादि दोष हरे मोहकूं निर्मूल करे। सो पदार्थ नंदनं मनं समानी रे। अरे जीवका कल्यान सदा जैन बानी रे।

अरे जीव० ॥ जैनबानी जैन० ॥१॥

कर्मजाल भेदनी है भर्मकी उच्छेदनी। वस्तुके स्वरूपकी है लाभ दानी रे। अरे जीवका कल्याण जैन बानी रे।

जैनबानी जैन० ॥२॥

वस्तुकूं विचार जीव पार होत हैं सदेव। केवलादि ज्ञानकी कला निधानी रे। अरे जीवका कल्याण सदा जैनवानी रे।

जैनबानी० ॥३॥

नैन सुख अन्तकालमें करैं सबै निहाल। नाग नाग स्वान किये स्वर्ग बानी रे। अरे जीवका कल्याण सदा जैन बानी रे।

जैनबानी जैन० ॥४॥

इतिश्री नयनानंद यति कृत विलास संग्रह मंगलाचरण चौवीस तथा तेरह धुरपद दोय चतरंग दोय तराने और तीन प्रकार ताल तथा दादरताल प्रमुख वर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः सम्पूर्णम् ॥२॥

तीसरा अध्याय

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। अथ चौबीसी पचासा नाम तृतियोऽध्याय प्रारम्भः।

तत्रादौ श्री ऋषभावतारके वर्णनमें भजन हजूरी रागका लंगडा प्रभात ढाई घड़ी दिन चढे तक गाया जायगा।

अब तो सखी दिननीके आए आदीश्वर लीनो अवतार ॥टेक॥
सर्वारथ सिद्ध तैं चय आये मरुदेवी माता उर धार।
नाभि नृपति घर बटत बधाई आज अजुध्या नगर मझार॥
अब तो० ॥१॥

सुखम दुखममें तीन बरष अरु शेष रहे वसु मास पखार।
अब तो जाग जाग मोरी आली हिलमिल गावैं मंगलचार॥
अब तो० ॥२॥

पुन्य उदयतैं नरभव पायो अरु पायो उत्तम कुल सार।
धर्मतीर्थ करता गुरु पाये अब कटि हैं सब कर्म विकार॥
अब तो० ॥३॥

स्वयं बुद्ध पूरण परमेश्वर मोक्ष पन्थ दरसावन हार।
नैन सुख मन वचन काय कर नमूं नमूं वसु अंगप धार॥
अब तो० ॥४॥

इति भजन श्री अजितनाथ अवतारका है हजूरी रागनी भैरवोकी ढाई घड़ी दिन चढ़ेसे पांच घड़ी दिन चढ़े तक गाते हैं।

अजित कथा सुनि हरष भयोरी ॥टेक॥

विजय विमाण त्यागके प्रभुजी चजे अमावस मा निरधी।
माघ सुदी दशमी नवमीकूं जनम तथा जग त्याग कियोरी॥
अजित० ॥१॥

जित रिपु तात मात विजयादेनगर अजुध्या दरश दिया।

जाके चरणचिह्न गाज पतिको ढौंच शतक तन तुंग भयोरी ॥
अजित० ॥२॥

लाख बहत्तर पूरब आयू इन्द्रन पांच कल्याण कियो ।
पोष शुक्ल एकादशि अब सरब ज्ञचराचर बोध भयोरी ॥
अजित दशा० ॥३॥

मधु शित पांचैं कूं शिव पाई भवि अनंत उद्धार कियो ।
नैन सुख दीन ध्याउ तिऊं जगमें भो जिनवर जयवन्त भयोरी ॥
अजित० ॥४॥

इति सम्भवनाथ अवतारके वर्णनमें पद हजूरी है राग बिलावल पांच घड़ी दिन चढ़ेसे ७॥ साढ़ेसात घड़ी दिन चढ़े तक गाते हैं ।

सम्भवनाथ हरो मम आरत आप कहे प्रभु चरण तुम्हारे ॥टेक॥
तुम बिन कौन हरे मम पातिग तुम बिन कौन सहायक हमारे ।
धनुष च्यार शत मूरत तुमरी निरखत उपजत हरष अपारे ॥
सम्भवनाथ० ॥१॥

सुनियत जन्मपुरी सावत्थो सुनियत घोटक चिह्न तुम्हारे ।
पिता जितारथ सेना माता साठ लाख पूरब थित धारे ॥
नैन सुख देख दिगम्बर तुमकों और लगैं सब देव उगारे ।
सम्भवनाथ० ॥२॥

इति अभिनन्दननाथ अवतारके वर्णनमें भजन हजूरी रागनी झोठो साढ़ेसात घड़ी दिन चढ़े तक गाते है ।

जै जै जै संवर नृपनन्दन अभिनन्दन जिन जगत अधार ॥टेक॥
विजै विमाण त्याग तुम आये, सिद्ध अर्थाके गर्भ मंझार ।
जन्मे माघसुदी द्वादशी कूं, नगर अजुध्या सुखदातार ॥ जै जै०॥१
जिस दिन जन्म उसी दिन दीक्षा, ज्ञान पोष बदी चौथ अपार ।
भये सिद्ध वैशाख सुदी छट, पूरब लाखपचास उमार ॥जै जै०॥२
धनुष तीनसे साढ़े काया स्वर्ण वर्ण कपि चिन्ह तुमार ।

तुम इक्ष्वाकुवंशके भूषण सुरनर गावत, सुजस अपार ॥जै जै०॥३
नयनानंद भया अब मेरे देख दिगम्बर मुद्रा सार।
सुन सुन वचन विगत मळ तुमरे होने कुगुरु कुदेव निवार ॥
जै जै जै० ॥ ४ ॥

इति सुमतिनाथ अवतारके वर्णनमें भजन हजूरी है, रागनी जोगिया असावरी है दश घडो दिन चढ़ेसे साढ़े बारा घडो दिन चढे तक गाते हैं।

तुम कुमति विनाशन हारे, सुमति जिन कुमति विनाशन हारे ॥ टेक ॥

तात सुमेघ मंगला माता, खग पग कौंच तुम्हारे।
लीन्यो जनम अजुध्या नगरी, इक्ष्वाक मझारे ॥
सुमति जिन कुमति विनाशन हारे ॥ तुम कुमति० ॥१॥
धनुष तीनसै तुंग प्रभु तुम सब भव भोग विसारे।
कर्म घातिया तोड़ि छिनकमें, लोकालोक निहारे ॥
सुमति जिन कुमति विनाशन हारे। तुम कुमति० ॥२॥
विश्व तत्व ज्ञायक जगनायक जीव अनन्त उधारे।
तिन कारण भ्राता जगत्राता, हम सुख शरण तिहारे ॥
सुमति जिन कुमति विनाशन हारे। तुम कुमति० ॥३॥

इति पद्म प्रभु अवतारके वर्णनमें भजन हजूरी है, राग भैरुंवर साढे बारा घडी दिन चढेसे १५ घडी दिन घडी दिन चढ़े तक गाया जायगा।

चन्दनकूं प्रभु वन्दनकूं, हम आये पद्मप्रभ वन्दनकूं ॥टेक॥

जन्म लियो कौशांबी नगरी, भविजन पाप निकन्दनकूं। हम आये हैं पद्मप्रभ वन्दनकूं ॥१॥ मातसु सोमा गोद खिलाये, पूजूं धारण चन्दनकूं। हम आये हैं ॥२॥ वंश इक्ष्वाक कृतार्थ कीनो, दूर किये दुःख खण्डनकूं। हम आये हैं० ॥३॥ मैना नंदन है सुन स्वामी, काट मेरे भव फन्दनकूं। हम आये हैं

पद्मप्रभ वंदनकूं, प्रभो वंदनकूं पूजनकूं । हम आये हैं पद्मप्रभ० ॥४॥

इति श्री सुपार्श्वनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग सारंग ठीक मध्याह्नसे लेकर साढ़े ग्यारा घडी दिन चढ़े तक गाते हैं ।

देव सुपारस ध्याइये, अरे मन देव सुपारस ध्याइये ॥ टेक ॥
भव आताप निवारण कारण, घसि घनसार चढाइये । अरे०॥१॥
अक्षत ले प्रभु चरण चढाओ, तुरत अषयपद पाइये । अरे०॥२॥
भरि पुष्पांजलि पूजन कीजे, मदकंदर्प नशाइये ॥ अरे मन०॥३॥
अपनी क्षुधा हरनके कारण, उत्तम चरु धर ध्याइये । अरे०॥४॥
नाशे मोह महातम भागे, दीपग ज्योति जगाइये । अरे०॥५॥
करमबंध विध्वंस करनकूं, धूप दशांग जराइये । अरे मन०॥६॥
फलतैं फल शिवपदको पावैं, नेनानन्द गुण गाइये अरे मन०। ७॥

इति चन्द्रप्रभ अवतारका भजन हजूरी है, राग पीलू पंजाबी ठुमरी है साढ़े ग्यारा घडी दिन चढ़ेसैं २० घडी तक गाते हैं ।

दिल लागा मेंडावे, भला दिल लागा मेंडावे ।
श्री चन्दा प्रभु दे नाले, दिल लागा मेंडावे ।।टेक॥
भवि अनन्त उद्धार कियो तुम, ऐसे दीन दयाले ।
दिल लागा मेंडावे, श्री चन्दा० ॥१॥
जाके वचन सुनत भय भागैं, टूट पड़ैं अघजाले ।
दिल लागा० श्री चन्दा० ॥२॥
दरस देख मोरे नैन सुफल भये, चरण परसकै भाले ।
दिल लागा० श्री चन्दा० ॥४॥
गुण समरत भयो जनम सफल अरु पुन्य कलपतरु हाले ।
दिल लागा० श्री चन्दा० ॥४॥

कहत नैनसुख भवसागरसैं, हे प्रभु वेग निकाले।
दिल लागा मैंडावे, भला दिल लागा मैंडावे ॥ श्री० ॥५॥

इति श्री पुष्पदन्त अवतारके वर्णनमें हजूरी है, बीस घड़ी दिन चढ़ेसे २२॥ घड़ी दिन चढे तक गाया जायगा, राग खमाच चरचा है।

गावोरी अनंद बधाई मेरी आली पुष्पदन्त जिन जनम लियो है ॥टेक॥

काकन्दीपुर रामादे उर वैजयंतसेती आ तिष्ठयो है। गावोरी०॥१॥
वंश इक्ष्वाक सुफल कियो आने, कुल सुग्रीव कृतार्थ भयो है।
गावोरी० ॥२॥
सकल सुरासुर पूजन आये, सुरगिरपै अभिषेक कियो है।
गावोरी० ॥३॥
नैनानन्द धन धनवे प्राणो, जिन प्रभु भक्ति सुधांबु पियो है।
गावोरी अनन्द बधाई मेरी आली पुष्पदन्त० ॥४॥

इति श्री शीतलनाथ अवतारके वर्णनमें भजन हजूरी है, २२॥ घड़ी दिन चढ़ेसे २५ घड़ी दिन चढे तक गाया जाय है। झंझोटी है जिला है।

हे परखिके मूरति शीतलकी। मेरा शीतल ऊवा शरीर।
परखिके० ॥टेक॥
परमानन्द घटा उर छाई। बरसे आनन्द नीर ॥परखिके० ॥१॥
भागोजन मनन नमकी मेरी भवतृष्णाकी पीर।
परखिके० ॥हे मेरा० ॥२॥
मुद्रा शांति निरखि भय भागे, ज्यों घन लगत समीर। पर० ॥
हे मेरा शीतल हुवा शरीर। परखिके ॥३॥
दास नैनसुख यह वर मांगे हरो नाथ भवपीर। परखिके मूरति शीतलकी। मेरा शीतल ॥४॥

इति श्रेयांसनाथ अवतारका भजन हजूरी है रागनी झंझो-टीकी है पच्चीस घड़ी दिन चढ़ेसे साढ़े सताईस घड़ी दिन चढ़े तक गाते हैं।

श्री श्रेयांस जिनेश्वरने अग्नि सकल करमदल दरेदरे।

सजि संजम संजाहमहाभट घोर घरा पग धरे धरे। छिमा ढाल समभाव पहनले आठकरम संग अरे अरे। श्री श्रेयांस० ॥ १ ॥

देख अनन्तपदकी जगनायक च्यारों घायक टरे टरे। च्यार अघायक शक्ति बिना बिन मारे आपहि मरे मरे श्री श्रेयांस० ॥ २ ॥

निज अनुभूति परी पर साधन ता कारन अग्नि बरे बरे। सब भाई अपने करमें तब सकल मनोरथ सरे सरे श्री श्रेयांस० ॥ ३ ॥

जे जेकार भयो त्रिभुवनमें इन्द्रादिक पग परे परे। नैनानंद मन वचन काय सूं दिवकर वन्दन करे करे। श्री श्रेयांस० ॥ ४ ॥

श्री वासुपूज्यावतारका भजन हजूरी है राग जंगलेका ठुमरी है साढ़े सत्ताईस घड़ी दिन चढ़े तैंतीस घड़ी दिन चढ़े तक गाया जाता है हर वक्तका।

पूजत क्यों नहिरे मतिमन्द। वासुपूज्य जिन पद अरविन्द। पूजत क्यों ॥ टेक० ॥

बालब्रह्मचारी अविकारी परम दिगम्बर मुद्राधारी। दुविध परिग्रह संगत ज्योजित। गुण अनन्त सुख सम्पति सिंधु। पूजत क्यों ॥ १ ॥

ध्याता ध्येयं ध्यान विभासी। ज्ञाता ज्ञेयं ज्ञान प्रकाशी। पापा तिक्त विमुक्त महोधं। तारण तरण सहज निर्द्वन्द। पूजत क्यों ॥ २ ॥

महिमा वर्णत गणधर हारे। वचन अगोचर हैं गुण सारे।
र छत्र खात अनम ढग दरसें। भामण्डल अतिसे चमलंत।
पूजत क्यों ॥ ३ ॥

प्रातिहार्य व सुमंगल दर्व। सेवत सुरनर मुनिगण सर्व।
पांच बार जाहि पूजन आये। चंपापुर सुर इन्द्र फनेन्द्र।
पूजत क्यों ॥ ४ ॥

वासुदेव कुलचन्द्र उजागर। जयो जयावति सुत गुननागर।
हग सुख वीतराग लखि तुमकूं। आये शरण काटिभव फन्द।
पूजत क्यों नहिरे मतिमन्द। वासुपूज्य जिनपद अरविंद।
पूजत क्यों नहिरे मतिमन्द ॥ ५ ॥

बिमलनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग नोधनाखरी
चाल है। तीस घडी दिन चढेसे लेकर साढे बतीस घडी दिन
चढे तक गाते हैं।

अब मोहि बिमल करो। हे विमल जिन अब मोहि
विमल करो ॥ टेक० ॥

परम सुधा रस प्याय जगतगुरु विषय कलंक हरो।
वीतरागता भाव प्रकाशो शिवमग मांहि धरो। हे विमल जिन
अब मोहि विमल करो ॥ १ ॥

तुम सेवाको यह फल चाहूं क्रोध कषाय टरो, माया मान
लोभकी परणतिये जग जाल जरा। हे विमल जिन० ॥ २ ॥

जबलग जगत भ्रमण नहि छूटे ऐसो टेव परो, जबै देव
परम गुरु सेऊ नयनानंद भरो, हे विमल० ॥ ३ ॥

श्री अनंतनाथ अवतारका भजन हजुरी है, रागनाधानी गौरीके
जिलेमें गजलके तौर है। ३२ घडी दिन चढ़े पीछे ३५ घडी
दिन चढ़े तक सूर्यअस्त होने पहिले अरू पाछै भी गाते हैं।

स्वामी अनंतनाथ चरनोंके तेरे चेरे हैं ॥ टेक०

येता करोन तेरी तक मोर है ए मेरीजी, तुमको नहीं है चाह पापोंने हमको घेरे हैं। स्वामी० ॥१॥

बिभ्रम मुझे जो आया संगेने फिर भ्रमायाजी, पकड़ी कर मने बांह देशाखेंसे गेरे हैं। स्वामी० ॥२॥

करता हूँ तेरी आशा, मेटो जगतका बासाजी, तुम हो त्रलोक सहाय, संजमके माव मेरे हैं। स्वामी० ॥३॥

चरनोंमें रख लीजे आनंद नैनदीजेजी, अब तो बतादो राह, जैसे हैं तैसे तेरे हैं, स्वामी अनन्तनाथ चरनोंके तेरे चेरे हैं स्वामी अनन्तनाथ ॥ ४ ॥

इतो श्री धर्मनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राम स्याम कल्याण दिन छिपे पीछे गाया जायगा गोधुल समयसै।

तारधनी अब मोहि जगतसे, तारधनी। टेक०॥

भटकत भटकत भवसागरमें, भोगी त्रिविध बिपताधनी
अब मोहि० ॥१॥

लख चौरासी जो दुःख देखे सो बिपता नहि आयगिनी।
अब मोहि० ॥२॥

धर्मनाथ प्रभु नाम तिहारो, धरम दरो मोपै आनिबनी।
अब मोहि० ॥३॥

कर उद्धारनिकार जगतसें, दग सुलभक्ति बिधान भनी।
अब मोहि० ॥ ४ ॥

इति शांतिनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग जीयम्माचको ठुमरी है। घंटाभर रात गये पीछें पांच घड़ी रात गये तक गाते हैं।

पद–हमारी प्रभु शांतसैं लगन लागीरे, हो बिघन गये भजिके। प्रभुके पद जजिके, हमारी प्रभु शांतसैं लगन लागीरे ॥ टेक० ॥

जीव अजीव सकल दरसन कीनो, बखानी गुण परजै ।
अनघ धुनि गरजै । हमारो प्रभु शांत० ॥ १ ॥

सब भाषमय बचन प्रभुकेजी, सबोंके मन भावैं, भरम
मिटावै । हमारो० हो बिचन गये० ॥ २ ॥

बिन कारन जगजन्तु उबारे जो, नयन सुखदाता, सबोंके
जग त्राताजी । हमारो० बिचन० ॥ ३ ॥

कुन्थनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग पुनः खम्माचकी
ठुमरी ५ घडी रात गयेसे ७॥ घ० ।

आज आली श्रीमती जननि सुत जायोरी, आज आली
श्रीमती० ॥टेक॥

सोम बंश हथनापुर नगरी, सूरज नृप सुख पायोरी ।
आज आली० ॥१॥

लख ओसन गज सजिके सुरपति, उत्सवकूं उमगायोरी ।
आज आली० ॥२॥

पांडुक बन सिंहासन ऊपर, क्षीरोदधि जल न्हायोरी ।
आज आली० ॥३॥

कुन्थु कुन्थु कहि संस्तुति कीनो, तांडव निरत करायोरी ।
आज आली० ॥४॥

सखियन मिल जिन मंगल गाये, मोतियन चौक पुरायोरी ।
आज आली० ॥५॥

सौंप पिता जननि गयो सुरपति, नैनानंद गुण गायोरी ।
आज आली श्रीमती० ॥६॥

इति श्री अरहनाथ अवतारका भजन हजूरी है साढ़े सात
घडी रात गयेसैं दश घडी रात गये तक गाते हैं ।

राग देशखाम है ठोई प्रारम्भः ।

तुम सुनोरी सुहागन चतुर नार, अरहनाथ प्रभु भये वैरागी ॥टेक॥
सखि लख चौरासी गयंद तजे, जो कंचन मणियन माल सजे ।

तजि घोटक ठारा कोड़ पखो, अठ ग्रानवें पदम त्रिया त्यागी ॥
तुम सुनोरी० ॥१॥

मणि चौदह रतन विचार दिये, अरु पंचमहाव्रत धारि लिये ।
तजि वस्त्राभूषण जोग लियो, भये परम धरममें अनुरागी ॥
तुम सुनोरी० ॥२॥

सखि निरख निरख पग गमन कियो, ममता घर धरम बिपाक दह्यो । चलो परम पुरुषके वन्दनकूं, अब केवलज्ञान कला जगी ॥ तुम सुनोरी० ॥३॥

हथनापुर तीरथ प्रगट करयो, जहांपर भजन मत पखान करयो । नयनानंद पावन ध्यान परयो, बाहीके चरनसूं लौ लागी ॥ तुम सुनोरी ॥४॥

इति श्री मल्लिनाथ तथपारका भजन हजूरी है; रागनी सोरठ खास अर्द्धरात्रि मध्यमें गाते हैं।

थे देखो लाठोरी मल्लिनाथ कुमार, हे थे देखो० ॥टेक॥

माता जाकी प्रभावतीदेवी, हैजी तात कुम्भ भूपाल । त्यागो सब परिवार ॥ थे देखो० ॥१॥

तजि मिथलापुर जोग लियो, हैरी वंश इक्ष्वाक दिसार । कीनो भुवन बिहार । थे देखो० । २ ।

भोग्यो राज न ब्याह न कीनोरी, बाल ब्रह्म पद धार । कीनो कर्म उजार । थे देखो० ॥३॥

कहत नैनसुख जोग जुगतिसें, रोप ऊंचे मुक्ति मंझार । नाचो मंगलाचार । थे देखो० ॥

इति श्री मुनिसुव्रतनाथजीका राग विहाग अर्ध रात्रिके पाछी पर आधा घण्टा बजे तक गाते हैं।

अब सुध लेऊ हमारी मुनि सुव्रतस्वामी । अब० ॥टेक॥

तुमसो देव न जगमें, दूजो मैं दुखिया संसारी ।
मुनिसुव्रतस्वामी, अब सुध लेऊ हमारी ॥ १ ॥

तुम ही वैद्य धनन्तर कहियो, तुम ही मूल पसारी।
मुनिसुव्रत० अब० ॥२॥

घट घटकी सब तुम ही जानो कहा दिखाऊं नारी।
मुनिसुव्रत० अब ॥३॥

करम भरम मम रोग नसाओ, इन मोहि दुख दियो भारी।
मुनिसुव्रत० अब० ॥४॥

तुम जगजीव अनन्त उधारे, अबके पार हमारी।
मुनिसुव्रत० अद० ॥५॥

रग सुख तारन तरन निरखके, आयो शरण तिहारी।
मुनिसुव्रतस्वामी, अब सुध लेऊ हमारी। मुनिसुव्र० ॥६॥

इति नमिनाथ अवतारका भजन हजूरी है, रागनी जैजैवंती है, आधी रात पर एक बजे पीछे दो बजे तक तथा एक घण्टा गाते हैं। पद।

कर बडभागन आकुल त्यागन नमि जिनपति तेरे पुत्र भयो है ॥टेक॥

तू सुख नींद मगन भई सोवत, हम प्रभु भक्ति सुधांबु पियो है। कर बडभागन० ॥१॥

जागऊ तात विजय रथ राजा, तुम कुल चन्द्र उद्योत कियो है।
कर बडभागन० ॥२॥

बरसत रतन सुवारस घर घर, मिथुला नगर दरिद्र गयो है।
कर बडभागन० ॥३॥

बिप्रा मात उठो सुन संस्तुति, फिर प्रभु गोद पसार लियो है।
कर बड० ॥४॥

नील कमल पगमांहि बिराजत, वंश इक्ष्वाक कृतार्थ कियो है।
कर बड० ॥५॥

दृग सुखदास आस भई पूरन, सब दुःख दन्द्वटार दियो है।
कर बढ० ॥६॥

इति नेमीनाथ भगवानका भजन हजूरी है, राग जंगला की मांडकी ठुमरी है, इसकूं जिला रजवाड़ा कहते हैं आधी रात पर दो बजेसे तीन बजे तक गाते हैं।

नेमी पियाके ढिग मोहि जान दे,
मैं वारी नेमी पियाके ढिग मोहि जान दे॥ टेक॥

झूठी काया झूठी माया झूठा सब संसार, झूठी जगकी ममता। मोहि करमोंके खेल मिटान दे, मैं वारी नेमी पियाके ढिग मोहि ढिग जान दे॥१॥

भजन करूँगी जोग धरूँगी, भजन जगतमें सार।
भजन बिना मैं बहु दुख पाये, मेरी भवबाधा मिट जान दे।
मैं वारी नेमी पियाके० ॥२॥

सब जग स्वारथका सगारी, अपना सगा न कोय।
अपना साथी धरम हैरी, भवसागरसे तिर जान दे॥
मैं वारी नेमी पियाके० ॥३॥

भोग बिना निरधन दुखीरी, तृष्णावश धनवान।
नेम बिना सब जग दुखी प्यारी, नेमीसे नेम ग्रहण दे॥
मैं वारी नेमी पियाके० ॥४॥

नेम छिपे नहुं तेजन सुरझे, मेरे नेम अधार।
दृग सुख राजल कहत सखी सुन, अब मोहि नेम ग्रहण दे॥
मैं वारी नेमी० ॥५॥

इति श्री पार्श्वनाथ भगवानका भजन हजूरी है, राग परज घण्टा भर रात बाकी रहेपर गाते हैं। पद हजूरी।

भजि भजिरे मन परम सुधारस। तजि भारसंपारक भगवान। भजि भजिरे मन० ॥टेक॥

होय कुधातुक गत जिम कंचन वचन सुनत मिट जाय अज्ञान। पूजत पद व सुद्दमें विनासे होय त्रिविध संकट अवसान। भजि भजिरे० ॥१॥
मंगल होय उदंगल विघटैं प्रगटैं ऋद्धि समृद्ध असमान। नाग भये धरणेंद्र छिनकमें बहुते जीव गये निर्वाण॥
भजि भजिरे० ॥२॥

अश्वसेन वामाकुल नंदन जग वंदन वचन विघटाना। प्राणत स्वर्ग थकी चय आये बानारसिपुर जन्मे ध्यान। भजि भजिरे ॥३॥

नव कर उच्च अजल वन तन पग पन्नग वंश इक्ष्वाक प्रमान। अवधि शताब्द धरण दुखदारुग। हरण कमठ शठ विघन वितान। भजि भजिरे० ॥४॥
विषम रूप भवकूप विषैं हम पावत हैं प्रभु दुःख महान। नयनानंद विरद सुनि तुमरो गावत भजन करो कल्यान॥
भजि भजिरे० ॥५॥

इति श्रीमान वर्द्धमान अंतम तीर्थंकरके निर्वाण समयका भजन हजूरी राग परज, घड़ीभरके तड़के गाते हैं दिन निक-लेसैं पहले॥

जय श्री वीर जयति महावीरं सन्मति दातार ॥टेक॥

वर्द्धमान तुमरो जस जगमें तुम अंतम तीर्थंकर सार। पंचम काल विषैं तुम शासन करत जग जीवन उद्धार॥
जय श्री वीर० ॥१॥
षोडश स्वर्गथकी चयआए षष्ठ सुक्ल कट गर्भ मंझार। चैत्र शुक्ल त्रयोदशिके अवसर कुण्डलपुर तुमरो अवतार॥
जय श्री वीर० ॥२॥
सिद्धारथ नृप बाप तुम्हारे त्रिशलादेवी मात तिहार। जात नाथ कनतुंग तुमारो नाथ वंशके तुम सिरदार॥
जय श्री वीर० ॥३॥

सिद्ध सिद्ध तुमरे पदको हैं माघ अमित द्वादशि जग छार।
स्वामी अमित वैभाव भये तुम पकड़ दरश दरसी इकबार॥
जय श्री वीर० ॥४॥

पावापुर सरवरपै प्रभु तुम ध्यान धरयो संजोग विचार।
कातिक कृष्णा चौदशकी निशा वश प्रावरी शिवनार॥
जय श्री वीर० ॥५॥

दुःखम सुखमके तीन वरष अरु शेष रहे वसुमा सजवार।
ता दिन तुम्हें रतन दीपकने पूजे सुरनर करि त्यौहार॥
जय श्री वीर० ॥६॥

छसै पांच वरष जब बीते तब विक्रम संवत् विस्तार।
जबलग रहै धरा नम मंडलनैनानंद जपो नवकार। जै श्री वीर जयति महावीरं सन्मति दातार॥७॥

इति श्री नयनानंद यति कृत विलास संग्रह चतुर्विंशति प्रस्तावा नाम तृतियोऽध्याय समाप्तम्॥३॥

चौथा अध्याय

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। अथ गुरु भजनाष्टकका चतुर्थ अध्याय प्रारम्भः। पद गुरु स्तुतिका है। राग धरवा है।

कबधों मिलैं गुरुदेव हमारे, भरजोबन बनोवास विचारे ॥टेक॥

आतम लीन अनाकुल देखा, जाके सुमति बदे स्वयमेवा जी। कबधो० ॥१॥

परहित हेत वचन विस्तारैं, सो गुरु भव भय घरन हमारेजी। कबधौं० ॥२॥

प्रगट करैं शिव मारगनीका, बरस रह्यो मनुष मेघ अमीका। छमघौं० ॥३॥

वैरी मीत बराबर जाकै, कंचन कांच उपल समता कैसी।
छमघौं० ॥४॥

महल मसान दयाल सरीखे, जीवन मरन बराबर वीखे।
छमघौं० ॥५॥

करुणा अंगर तन अघधारी, नैयानंद वांछै धोक हमारी।
छमघो० ॥६॥

पद रौ गुरुदेवका राग भैरूं नर, चरनन मैंकी म्हारी लागी लगन। टेक।

धन्य घमंडल घरमें पीछो, मिले गुरु निरतारन तरन।
चरनन० ॥१॥

धर्में अर्थ काम इंद्रकूं, धारैं करुणा रूप लगन।
चरनन० ॥२॥

हितमित वचन धर्म उपदेशे, मानो बरसत मेघ भरन।
चरनन० ॥३॥

नैन नंदन मत है तिनकूं, जो नित आतम ध्यान मगन।
चरनन० ॥४॥

पद गुरु स्तुतिका रागनी जंगलाऊं कोठी सम्माद का किला ठुमरी पूर्वी।

हे बहनियां मेरो अंगना पावन भयोरी, हे दयाल गुरु आप कृपाल गुरु आपरी बहनिया मेरो। टेक।

मुक्तिपंथ दरसाव नहारेरी, हे रतनत्रय चार्में मयूर पिछ हाथैरी, गुन पतरर मंडल पावन भयोरी। हे बहन० ॥१।

गमन ईरजा करत पधारेरी, हे बिसारें मान माया, टारैं अटका यारी, चरन म्हारे आगम भवन भयोरी। बहन० ॥२॥

पांच प्रकार रतनकी धारारी बिबुध वृंदगेरैं, ये जै जै जै धुनि टेरैरी, सघनद्रग आनंद छावन भयोरी। महन० ॥३॥

इति पद गुरु उपगारका निर्देश रागनी बिरागारा खम्माचका जिला ठुमरी लखनऊ वालोंकी चलेकी ॥

हे भैय्या गुरुदेवन पैजा मांगियो, अजी वे तो परम दयाल, दुखित देख देंगे धरम सार, गुरु० ।टेक।

नगन भेष बनवास रहत हैं जी, देख मिटेंगे तेरे मन विकार। गुरुदेवन० ॥१॥

कंचन कांच बराबर जाके, मित्र बिरोधी जानें एक प्रकार, गुरुदेवन० ॥२॥

महल मसान समान गुरन केजो, जाप जपे हैं वे तो ॐकार। गुरुदेवन ॥३।

निगम निधान नैनसुख सागरजी क्यों न हरेंगे तेरो करम भार, गुरुदेवन पैजा मांगियो, हे भैय्या गुरुदेवन पैजा मांगियो, अजि वे तो दुखित देख देंगे धर्मसार। गुरुदेव० ॥४॥

पदगुरु कृत्य अर्थात् कर्मोंकूं कैसे जोतैं है रसोईका दृष्टांत है राग जंगला ठुमरी।

इक जोगी असन बनावे। तसु भषत असन अघन सन होत।
इकजोगी० ॥टेक॥

ज्ञान सुधारस जल भर ल्यावे, चूल्हा शील बनावे।
करम काष्टकूं चुग चुगवाले, ध्यान अगन प्रजलावेजी ॥
इकजोगी० ॥१॥

अनुभव भाजन निज गुण तंदुल, समता क्षीर मिलावे।
सोहं मिष्ट निशंकित व्यंजन, समकित छौंक लगावेजी ॥
इकजोगी० ॥ तसु भषत० ।२॥

स्याद्वाद सतभंग मसाले, गिणती पार न पावै।
निश्चयनयको चमचा फेरै, विरध भावना भावैगी॥
इकजोगी० ॥३॥
आप पकावै आप हि खावै, खावत नाहि अघावै।
तदपि मुकति पद पंकज सेवै, नयनानंद शिर न्यावैगी॥
इकजोगी० ॥४॥

इति पदगुरु स्तुतिका रागनी, धनाजरीमें अथवा देशमें अथवा सोरठमें गाया जाता है।

सतगुरु परम दयाल जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥टेक॥
सब जीवनकी संशय मेटै देत कुमत सब टाल।
दुखसागरमें डूबत जनकूं छिनमें देत निकाल॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥१॥
सुरग मुकतिको पंथ बतावैं, मेट करम भ्रम जाल।
धरम सुधारस प्याय हरैं अघ छिनमें करत निहाल॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥२॥
स्वान सिंह सतगुरुने तारे, तारे गज बिकराल।
सुगुरु प्रताप भये तीर्थंकर अरु तारे गोपाल॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥३॥
पांच शतक मुनि कोल्हू पीड़े दंडक नृप चण्डाल।
होय जटायु सु गुरु पदसे ये पायो सुरग विशाल॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥४॥
पतसे दुष्ट सु पंथ लगाए सतगुरु दिसु दयाल।
नयनानंद सु गुरु जग जगमें कौन करै प्रतिपाल॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥५॥

इति समाप्तम् पदचाल।

मैंने भेटे जग तखे सतगुरु तखे जिन दर्शनधारी ।टेक॥
मैंने जान लई पांचों दर्शन में है गड़बड़ भारी

है शिव साधक जिन लिंग और सब सांग है संसारी ॥
मैंने भेटे० ॥१॥
है संसारी और मुक्त दशा दो जानत नरनारी ।
है जिनदर्शनसे मुक्ति पावै हैं उनके अधिकारी ॥ मैंने० ॥२॥
है उनमें दर्शन पांच अमृत भव तरुवरकी डारी ।
कोई हटके भटके चढ़े गिरे कोई भरे है दुख भारी ॥ मैंने० ॥३॥
हैं पांचों वासत अनाम स्वपरके घातक दुखहारी ।
सो सत पुरुषोंने तजेमें जाऊं उनके बलहारी ॥ मैंने० ॥४॥
नहिं दर्शन पांचों पूज पूज्य हैं जिन मूरति प्यारी ।
जो त्रिभुवन मेंस द्वीजमूत हैं अकृत अविकारी ॥ मैंने० ॥५॥
शिव साधक हल सो पद धारैं सतगुर हितकारी ।
है उनहीसें मर्याद अनादी कृत्रिम उपगारी ॥ मैंने० ॥६॥
जिनदर्शन रख मुनिवर वंदूं अरु प्रतिमाधारी ।
और नमूं परजका सबी चलें जो जिनमत अनुसारी ॥ मैंने० ॥७॥
जो रतनत्रय व्रत धरैं दिगम्बर परम ब्रह्मचारी ।
सो जिनदर्शी मुनि जानने न मुखनमें दारचारी ॥
मैंने भेटे अबसें सतगुरु सबै जिन० ॥८॥

सतगुरु स्तुतिका उपदेशी महावीरजीके भीलभवमें उसकी भद्रकालिका भीलनी उस भीलकूं उपदेश करै हैं कि तू दिगंबर गुरुकूं बाणसैं मत मारै । रागनी जंगलाऊ छोटी पीलूका जिला ।

मत मारे रे वेदर्शी मत मार, ए कोई त्यागी पुरुष ॥टेक॥
मत नाहतै मिरगके घोपे, मत बांधे शिकार ।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१॥
निश्चल निर्भूषण निरदूषण, ध्यानी अरु अणगार ।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥२॥
इनके शत्रुमित्रपै समता, राव रंक इक सार ।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥३॥

कंचन कांचन पल्ले बांधे, करें स्वपर उपगार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥४॥
त्यागे महल समान करें तप, खेल खिलान बिचार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥५॥
डूबत बंश नरकमें जिनके, छिनमें देत निकार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥६॥
मंगल दान सुकृतको इनपै, सुरनर मुक्ता पसार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥७॥
तू अब इन परताण उठावत, धिग धिग जनम तुमार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥८॥
धिग यह भूख प्यास धिग यह भव, धिग तुम धिग हम नार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥९॥
जो सतगुरुकी घात करैगो, मर हों उदर बिदार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१०॥
कंप्यो भील पड्यो धरणी पर, नारि कियो उपगार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥११॥
धनुष तोरि सिर पाय झुकायो, सतगुरु चरनन मझार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१२॥
पिहिताश्रव उपदेश दियो तब, धरे अणुव्रत भार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१३॥
पुष्कल देश विदेह क्षेत्रमें, पुण्डरीकपुर सार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१४॥
भील पुरुषकुं समझायो, भद्र काळिका नार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१५॥
अवसर पाय भयो तीर्थंकर, महावीर अवतार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१६॥

केवल पाय बताय मोक्ष मग, कर गये जग उद्धार ।
ए कोई० ॥ मत मारेरे०॥१७॥
इन्द्रचन्द्र वंदित पद पंकज, दग सुख शरण तुमार ।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१८॥

इति गुरु भजनाष्टक नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पांचवां अध्याय

अथ—जिन धर्म स्तुति नाम जैनवाणी के भजनोंका पांचवां अध्याय प्रारंभः ॥

अब मुजे सुख आई जेनवानी सुन पाई । काल अनादि निगोद वेदना, मुगातो कहिय न जाई । जैनवानी सुनपाई । अब मुझे सुघ पाई । जैनवाणी सुनपाई ॥१॥

पड्यो नरक चिरकाल पिलाप्यो । कोई न शरण सहाई । जैनवानी० । अब मुजे ॥२॥

कब ऊख कंठ कुठार न चीर्यो बांव कटकाई । जैनवानी० ॥३॥
कबऊक चीर डार कोल्हूमें । तिल वत देह पिलाई ।
जैनवाणो० ॥४॥
ताते तेल भाडमें मुलस्यो, कभ ऊक शूल दिखाई ।
जैनवाणो० ॥५॥
आंख ननू न कानमें ठढे । ना खापो रघगाई । जैनवाणो ॥६॥
वैतरणी में गेर घसींड्या । गाठिकु घाव पिलाई । जैनवाणो०॥७॥
तांबा प्याय लोहको पूतली, ताती उर लिपटाई ।
जैनवानी० ॥८॥
मात पिता युवती सु बांधव, संपत काम न आई ।
जैनवानी० ॥९॥

कबऊक पशु पर जाय मरी तहां, बध बंधन अधिकाई।
जैनबानी० ॥१०॥
खन नत पन दाहन अरु धौंकन छेदन वेदन पाई।
जैन० ॥११॥
गमन अमन दोऊ भांत भरे दुःख बहुविध मरण कराई।
जैन बानी० ॥१२॥
कब ऊक मानुष देह विहंग्यो विषयनमें लपटाई। जैन० ॥१३॥
अंध पंगु अरु राव रंक भयो। रोग सोग दुख दाई।
जैनबानी० ॥१४॥
कुष्ट जलोदर और कठोदर, इष्ट वियोग बुराई। जैनबानी ॥१५॥
देव भयो पर संपति निरखत, झुर झुर देह कराई।
जैनबानी० ॥१६॥
वाहन जाति तथा भव पूरन, निरख रह्यो पछताई।
जिनबानी० ॥१७॥
यह विधि काल अनंत भज्यो हम, मिथ्या भाव कषाई।
जैनबानी० ॥१८॥
कुव्रत जोग फिरा भटकत ही, सम्यक दृष्टि न आई।
जैनबानी० ॥१९॥
अब जिन धर्म परम रस बरसे, भय तृष्णा नरहाई।
जिनबाणी० ॥२०॥
दग सुखदाय आय भई पूरण, धन जिन वैन सहाई।
जैनबानी० ॥२१॥

इति जिनबाणीका पद राग धनाश्री ॥

जिन मत परम निधान जगतमें जिनमत० ॥टेक॥

जिन मारग तैं उरझी सुरझै छूटै पाप महान, करु जिया कूं अनुभव सुधि आवे। भागै भरम वितान, जगतमें जिन मत परम निधान ॥१॥

वस्तु स्वरूप यथावत दरसे धरसे भेद विज्ञान, सब जीवन पर करुणा उपजै । जानै आप समान जगतमें० ॥२॥

शूकर सिंह नवल मर्कटको वर्णण आदि पुराण, भील भुजंग मतंग गज सुरके करयाको बरधान । जगतमें० ॥३॥

अंजन जादिग्रधम घऊ उतरे पायो सुरग बिमान, नर भव पाय मुकति पुनि पाई नयनानंद निधान । जगतमें जिन मत परम निधान ॥४॥

इति पद जिनवाणीका राग हिंडोलमें मलहार ॥

सुनोजी सुनोजी सम भावसूं, श्री जिन वचन रसाल । सुनोजी सुनोजी सम भावसूं ॥टेक॥

द्रव्य कामने तुम ठगे, भाव करम हिये डार । नो कर्मनसूं बांधियो, दीनों चऊगति डार । सुनोजी सुनोजी० ॥१॥

कब ऊठ नर्क दिखाईया, कब ऊठ पशु पर जाय । नव ग्रीवक लौं ले चढ़े, पटक्यो भाव दिगाय । सुनोजी० ॥२॥

जिनने जिन वचन हि सुने, विकथा सुनोधरट । नर भव चिंतामणी रतन, दियो सिंधुमें डार । सुनोजी० ॥३॥

पंच महा व्रत ना लिये, श्रावक व्रत दिये छार । तिनकूं नरक निगोदमें, मारया चाम उतार । सुनो० ॥४॥

मति थोडी विरता घना, कहै कहां लौं चीन । थोडोमें सऊ सीखयो, होय सुधर नर जीन । सुनोजी० ॥५॥

पायो धरम जिहाज अब, पायो नर भव सार । नैन सुख भव सिंधुमें, उतर उतर भेया पार । सुनोजी सुनोजी० । ६॥

इति पद जिनवाणीका राग काफी चाल होलोकोमें है !

जिनवानीको सार न जानी ।।टेक।।

नरक उघारण शिव सुख कारण जनम जरा मृत हानी, उदर जलोदर हरण सुधा रस काटन करम निदानी पहुच तेरे हाथ न आनी । जिनवानी० ॥१॥

कल्पवृक्ष चिंतामणि अमृत, एक जनम सुखदानी । दूजे जनम फिर होय भिखारी, वह भव भ्रमण मिटानी । तज्यो दुर-व्यसन कहानी । जिनवानी० । २॥

व्याह सुता सुत मांटलूं भाखी, हरिलूं नार बिरानी । ऐसैं सोचत जात चले दिन, होत बराबर हानो । समझ मन मूरख प्रानी । जिन० ।३॥

भव वारिध दुस्तरके तरनकूं, कारन नाव बखानी । खोल नयन आनंद रूपमैं, धर सम्यक् श्रद्धानी । मोक्ष पद मूल निशानी । जिनवानीकी सार न जानी ॥४॥

पद जिनवाणीका राग येमन कल्याण ।

जड़ता जिन राज बिना कौन हरे मेरी ।।टेक।

सुनत ही जिनेंद्र बैन, भयो मोह अतुल चैन । सम्यकके अभाव मैंने कीनी भव फेरी । जड़ता० ॥१॥

अतुल सुख अतुल ज्ञान, अतुल वीर्यको निधान । कायामें विराजमान मुक्ति मेरी चेरी । जड़ता० ॥२॥

द्रव्य कर्म विनिर्मुक्त, भाव कर्म असंयुक्त. निश्चय नय लोक मात्र परजय वपु घेरी । जड़ता० ॥३॥

जैसे दधि मांहि घीव, तैसे जड़मांहि जीव । देखो हम अपने नैन आनंदकी ढेरी । जड़ता० ॥४।

पद जिनवाणीका राग खम्माचकी ठुमरी पूर्वी कव्वाल दर्जे पर ।

रसीली जैन सारदा जियामें बसी, जो कोई ध्यावे सोई फल पावैरे ॥ जगमैं सुगम तिरै ॥टेक॥

अनघ जैन भरती संसारमें निकारती, द्विभाव बंधन टारती । जियामें बसी रसीली जैन सारदा ॥जियामें बसी ॥१॥

जो कोई ध्यावे सोई फल पावैरे, जगमें सुगम तिरै ।

कुज्ञान दैत्य काटिका सुज्ञान दीपमालिका जिनेश जाव बालिका ॥ जियामें बसी ॥रसीली० ॥२॥

जो कोई ध्यावैं सोई फल पावेरे, जगवें सुगम तिरे।
प्रथम जो जोग धनी, करण जोग बोधनी, चरण जोग सो धनी॥
जियामें बसी॥रसीली०॥३॥
जो कोई ध्यावैं सोई फल पावेरे, जगवैं सुगम तिरे।
दरब जोग रंगिका, सपत भेद भंगिका, नयन सुख संगिका॥
जियामें बसी॥रसीली०॥४॥

पद जिनवाणीका राग बानी मुलतानीकी गजल।

तेरी बानीकी भनक जो मैंने, सुन पाई दाता मैं तो शरसाद हुवा॥टेक॥
कुगुरुनकूं मैं गुरु कर माने, व देव कुदेवनमें पहचाने।
दया धरममें दूषण लाने, सो मैं ख्वार हुवा॥तेरी बानी०॥१॥
मिथ्या चक्षव जोग दवाई, मेरी बुधि च्यारों भरमाई।
चारों कु विसनमें लोठाई, सोना बिकार हुवा॥तेरी बानी०॥२॥
घटट पुरट च्यारों गति भटका, नरकोंमें घहटा लटका।
अब लागेका मुझकूं खटका, सोना दरकार हुवा॥तेरी बानी०॥३॥
अब मैं फिरता फिरता हारा, आप दया जिन चरन तुम्हारा।
करो नैनसुखका निस्तारा, हाजिर दरबार हुवा॥तेरी बानी०॥४॥

पद जिनवाणीका—राग दादरा पूरबी।

करै जीवका कल्याण सदा जैन बानीरे॥टेक॥
संशयादि दोष हरैं, मोहको निर्मूल करैं।
दोष दाय नदनं दनं समानीरे॥ करै०॥१॥
सप्तभंग भेदनी है भर्मकी उच्छेदनी।
वस्तुके स्वरूपको है लाभ दानीरे॥ करै०॥२॥
वस्तुको विचार कीय पार होत हैं कदीम।
केवलादि ज्ञानकी कला निशानीरे॥ करै०॥३॥
नैनसुख अन्तकालसैं करै सबै निहाल।
नाग, काग, स्वान, किए स्वर्ग बानीरे॥ करै जीव०॥४॥

पद जिनवानीका राग भैरू।

संसै मिटै मेरी संसै मिटै, जिनवानीके सुनै मेरी संसै मिटै ॥टेक॥
पाप पुन्यको मारग सूझै, भव भवकी मेरी व्याधि कटै।
॥ जिन०॥१॥
और ठौर मोहि विकल्प उपजै, ह्यां याके आनंद रटै।
॥ जिन० ॥२॥
निज पर भेदविज्ञान प्रकासै, विषयनकी मेरी चाह घटै।
॥ जिन० ॥३॥
वानी सुन नैनानंद उपजै, मोह तिमरको दोष हटै।
जिनवानीके सुनै मेरी संसै मिटै ॥संसै० ॥४॥

पद जिनवानीका रागनी खम्माचकी ठुमरी मल्हारकी चालपर।

जिया तैने तजा परम हितकारी, ऐसो जग जनतारक कलमलहारक अधम उधारक रतन चार, तेने तजा परम हितकारी ॥टेक॥
तेरे कर्मबंध तोरि डारे, तीनों दुखतैं उबारै।
भवतैं निकारै, अघहारी ॥ जिया तैनें० ॥१॥
नरकतैं निकारि लेय, तीर्थराज पद देय।
परमसो न कोऊ उपगारी ॥ जिया तैनें० ॥२॥
नैनसुख धर्म सेयो, आतम स्वरूप वेदो।
लागे पार खेवो ततकारी। जिया० ॥३॥

पद जिनवानीका राग धनासरी।

जिनवानी रस पी, हे जियरा जिनवानी रस पी ॥टेक॥
तुम हो अजर अमर लायक ज्ञान सुधा सरसी।
तेरो हरनहार नहि कोई क्यों मानत डरसी॥
हे जियरा जिनवानी० ॥१॥

करम छिपतकर मनतैं न्यारो केवलमैं दरसी।
ज्यों तिल तेल मैल सुवरणमैं क्यों पुद्गल परसी ॥
हे जियरा जिनवानी० ॥२॥

जबलग परकूं निज पर मानत, तब लग दुख भरसी।
छूटै नांहि कालके करसैं, मर मर फिर मरसी ॥
हे जियरा० ॥३॥

पूजा दान शील तप धारो, सब पाति गहरसी।
नयनानंद सु गुरु पद सेवो, भवसागर तरसी ॥
हे जियरा० ॥४॥

पद जिनवाणीका रागनी जंगला।

सुगुरुकी बानीजी सुगुरुकी बानीजी, तेरे दिलमें क्यों न समानी सुगुरुकी बानी। अरे अभिमानी, सुगुरुकी बानी ॥टेक॥
वीतराग हिमगिरतैं निकसी यह गंगा सुखदानी।
सप्त विभंगा अमल तरंगा भव आताप मिटानी सुगुरुकी बानी ॥
तेरे मनमें क्यों न समानी ॥ सुगुरु० ॥
अरे अभिमानी सुगुरुकी० ॥१॥

जग जननी परमारथ करनी भाषै देवदज्ञानी।
सत्य सरूप यथारथ निर्णय सो तनै विसरानी ॥ सुगुरुकी बानी ॥
तेरे दिल० ॥२॥

जामैं बंध मोक्षकी कथनी सु, निसुरके बहु प्राणी।
पशु पंछीसे पाय मनुष पद, होय रहे शिवथानी ॥ सुगुरु० ॥
तेरे मनमैं० ॥३॥

तैं मिथ्यातग देव धरम भजि, पियौ मूढ मद पानी।
कीनी मूढ उनकी सेवा, मिली न कौडी कानी ॥सुगुरु०॥
तेरे मनमैं० ॥४॥

मर्म अविद्या वस या जगमें, जा वसु तेरी छानी।
अब जिन वैन गंग तट सेवो दृग, सुख शिव सुखदानी ॥सुगुरु०॥
तेरे मन० ॥५॥

पद जिनबानीका छन्द त्रोटक व्रत सरस्वती अष्टक।

मुनि भाव तरंग विशुद्धतरे रज पाप अताप विभाव हरे।
मद मोह महादल भेद जवे, जय वीर हिमाचल चाल्हवे ॥१॥
षटनन्द तपाखरकी नगरी, लखि तोहि मिटैं भवके मयरी।
अब जीव चिन्तावन रूप नवे, जय वीर हिमाचल० ॥२॥
भव कानन कांगन भीर माथ, दऊवारकु जन्म कुयनि परथो।
अगशूल निमूल निवस्त्र दवें, जय वीर हिमा० ॥३॥
मम क्लेश करांकुर जोरि धरैं, लख कोटि सुमेरु बिलाय परैं।
दृग पात पिता जननी सुपवे। जय वीर हिमा० ॥४॥
लख सिन्धु समायन अश्रु ममं, मम सर्व हितू जन एक समं।
अति खेद भरे कर्मोद्भवे। जय वीर० ॥५॥
अब ज्ञान परथे तुमरे दरपै, अपवर्ग धरो हमरे करपै।
जग जाल विमोचन भाव नवे। जय० ॥ ६ ॥
तुम नाम हरे भव खेद घना, जिम तीव्र पोह तरांश अनाना।
पद्माधर आखर बात भवे। जय० ॥ ७ ॥
अब देव यजे मनतोष भयौ, लखि रूप कृतारथ जन्म भयौ।
लखि अमृत वारिधि मीन पीवे। जय वीर हिमा० ॥८॥

गीता छन्द

कुज्ञान छैनी मोक्ष दैनी, आतमा दरसावनी।
घट घट प्रकाशन जैन शासन संतजन मन भावनी॥
रवि नंद जुग जुग सदा बिक्रम वादतिथ तेरस शसी।
सरदाव दृग सुखदायकी सुनि नाशि भव बंधन फंसी ॥९॥

पद जिनवाणीका चाल गीत मारवाड़का राग ।

जिवरा सांचेको सांचा कर जानिये, जिवरा झूठेका झूठ पिछान । जो तू चाहै निज कल्याणकूं, जिवरा तजि हठ होय सुजान । क्यूं भटकाई नेया जानके ॥टेक॥

जिवरा जाके भई है रुचि ज्ञानकी, जिवरा ताहीकी मिटी है कुपाय । ताहीकूं जुगपत ज्ञानमें, जिवरा लोकालोक लखाय ॥
क्यों भटकाई नेया जानके० ॥१॥

जिवरा लागे हैं करम अनादिके, जिवरा ज्यों तिल तेल संजोग । ऐसैं सुनी है केवलज्ञानमें, जिवरा बन्ध बढ़ावैं भोग ॥
क्यों भटकाई० ॥२॥

जिवरा राग न कीजे इष्ट जानिके, जिवरा द्वेष अनिष्ट मंझार । परमें झूठो निजता तजो, जिवरा मैथुन भाव निवार ॥
क्यों भटकाई० ॥३॥

जिवरा काऊपै क्रोध न कीजिये, जिवरा निज परकूं दुखकार । काहूं मद बिसरायके, जिवरा तजिये मायाचार ॥ क्यों भट०॥४

जिवरा लोभ घटावै गुरुता आपनी, जिवरा हांसीसैं बंधन आय । भयसैं सम्यक ना रहै, जिवरा भारत बल विनशाय ॥
क्यों भटकाई० ॥५॥

जियरा कीजिये मन्द कषायकूं, जिवरा पार लगावन हार । नैनसुख मन रोकिये, जिवरा ज्यौं उतरै भव पार । क्यों० ॥६॥

जिवरा पर जुगुप्सा दाहै पुन्यकूं, जिवरा तजिये मूढ़ प्रमाद । यातैं चऊं गति हंडियो, जिवरा बीत्यो काल अनादि ॥
क्यों भटकाई० ॥६॥

पुनः जिन धुनिकी महिमा चाल सरवण फरीजन चाहबके तौर पर चतुर्गति दुख वर्णनम् । ताके चौक चार ।

सुन सुन जिन धुनि भयोरे अचम्भा सब संसार मार ।
जिया जाने रे सब सब संसार असार ॥टेक॥

इक संसार विषे रे होसु अनीडा, भ्रमतें पावे नहीं पार।
अब जाने रे भ्रमतें पावे नहीं पार ॥१॥
जनम मरण जरा रे हो सतावै रे, चहुँगति भ्रमण अपार।
अब जाने रे चऊ गति० ॥२॥
भयों सुरमर्में देव मिथ्यावी रे, राग उदय दुख धार।
अब जाने रे राग उदै० ॥३॥
देख पराई संपत झुरो रे, कीनो नरक तयार।
अब जाने रे कीनो नरक० ॥४॥
सुन सुन जिन धुनि भयोरे अचम्भा, सब संसार असार।
अब जाने रे सब० ॥५॥

अथ नर्क गति वेदना।

दुरगति आय खयो मुख उटक्योरे, बल सिर ऊपर पाय।
अब जाने रे बल सिर० ॥६॥
कर्मनके वश पड्यो पुकारे रे, दुखको कारन यार।
अब जाने रे दुखको० ॥७॥
कांटों पर जब पडे रे जानकर, रोवे हाहाकार।
अब जाने रे रोवे० ॥८॥
पकड नारकी चं.रें रे चले, जुदा देव घणोंके मार।
अब जाने रे देव घणोंको० ॥९॥
कोल्हूमें पीड़े ताते तेलमें बरावे रे, लोचन लेंय निकार।
अब जाने रे लोचन लेय० ॥१०॥
मदिरा पीनेवालेको सुन लीजोरे, प्यावें तांवा गाढ।
अब जाने रे प्यावें तांवो गाढ ॥११॥
ताती पुतली गलेमें लगावे रे, जिन सेई पर नार।
अब जाने रे जिन सेई प० ॥१२॥
सागर बन्ध उमर जहां पाई रे, मिलै न कण जलधार।
अब जाने रे मिले न० ॥१३॥

मात पिता सब होवेंगे बिगाने रे, तोहि नरकमें डार।
सब जाने रे तोहि नरक० ॥१४॥
जिनको तू अपने कर जाने रे, सब मतलबके यार।
सब जाने रे सब मत० ॥१५॥
सुन सुन जिन धुनि भयोरे अचम्भा, सब संसार असार।
सब जाने रे सब संसार असार॥

अथ मनुष्य गति दुख वर्णनम्।

मानुष गतिमें भयोरे विकल तन, अन्ध बधिर दुखकार।
सब जाने रे अँध बधिर दुखकार ॥१६॥
रोग सोग कर भयोरे कूबड़ो, उदर जलोदर भार।
सब जाने रे उदर ज० ॥१७॥
बात कुवात भई रे तन पायो रे, इष्ट वियोग अपार।
सब जाने रे इष्ट वियोग अपार॥१८॥
कै पाई कलहारीसी नारी रे, कै न चल्यो परिवार।
सब जाने रे ॥१९॥
कै रमरथ सुत मरोरे व्याहकर, रोवत छांड नार।
सब जाने रे रोवत छोडो नार ॥२०॥
कै जीयो तो जाति भयो रे कुबुद्धि, कुल कलंक विस्तार।
सब जाने रे कु० ॥२१॥
तीर्थंकर प्रभु बेरे दिगम्बर जिन भंडार, जिन भंडार।
सब जाने रे जिन० ॥२२॥
सुन सुन जिन धुनि भयो रे अचम्भा।

पशुगति दुख वर्णनम्।

शूकर कूकर भयोरे सपेरा, पशुगति दुःख अपार।
सब जानेरे पशुगति० ॥२३॥

महिषा बैल भयोरे, जु घोडारे दुःख पाये उद भार।
सब जानैरे दुख पाये० ॥२४॥

धर्म अधर्म नगिन्योरे अज्ञानीडा, देव कुदेवनवार।
सब जानैरे देव कुदेव ॥२५॥

दियो न उत्तम दानरे सु ज्ञानीडा, दियो नवयज्ञासार।
सब जानेरे दियोन ॥२६॥

ज्यों वधारी धनथो धरैं गांठका, बडा हाथ दे ऊ झार।
सब जानेरे ध० ॥२७॥

क्रोधमान छल लोभ इन्हींनेरे, छीनों तोहि दिगार।
सब जानैरे छीनो तोहि ॥२८॥

चेतन चिंतामणि नग तेरोरे, दियो धूरमें डार।
सब जानैरे दियो धूरमें ॥२९॥

गुरुकी ज्ञान छल अब पायोरे, चहुँ गति धूर बहार।
सब जानेरे चहुं गति धूर ॥३०॥

नैनानन्द अपनौरे नग निरमल, क्योंकि नहिं लेत निहार।
सब जानेरे क्या नहिं लेत निहार ॥३१॥

चन्दनकी आतम रस तामैं, रे क्यों नहि लेत उभार।
सब जानेरे क्यों नहि लेत उभार।
सब जानेरे क्यों नहि लेत उभार। सुनसुन ॥३२॥

दोहा—जिन शासन तेरो हितू, ताहि पूज अब सोह।
मेटै भव बाधा सकल, चहुं गति भ्रमण छोह ॥३३॥

इति उपदेश बत्तीसी समाप्तः। पंचमोऽध्याय समाप्तम्॥

छठा अध्याय

अथ षष्ठम अध्यायमें समुच्चय जिन स्तुतिका पद लिख्यते ।

पद समुच्चय जिन स्तुतिका हजूरी गजल ।

इस मन मधु व्रतका मेरे यत्र भाग जगाओ, तेरे भक्तिमें पद पंकजाश्रम मांहिय पगाओ ॥ टेक० ॥

अरविन्दसें भी सदार हैं पादारविन्द तेरे । विश्राम पाके श्रम सनातन मोरा भगाओ, इस मन० ॥ १ ॥

हे कर्म मर्म भेदने हे परम यो गिने, अब तो चरण शरणमें तेरे आ ठगाओ, इस मन० ॥ २ ॥

हे वाङ्मनसाऽगोचर चरित्र धारिने धनी । इस कर्मने भी भौंमें दा हमको दगाओ, इस मन० ॥ ३ ॥

हे भवक्षा दिभूतके भाभाव भासने । हमको कुगुरु कुदेवने बहुता ठगाओ ॥ इस मन० ४ ॥

हे सतमूलोन्मूलित अनादि क्लेश हारिणे । हग सुखका अब तेरे सिवाको है लगाओ ॥ इस मन० ५ ॥

पद हजूरी अर्हत स्तुति, राग दादरा ।

कौने करीओ थारी कौने करी समोशरणीकी रचना भारी कौन करी ॥ टेक० ॥

कौन पुन्य संपति याहि, लागो निरखत हो भव पोर टरी ।
समोसरणैकी रचना० ॥ १ ॥

तरु अशोक छवि शोक भगे, सब सकल जगतको जाने व्याधिहारी
समोसरणैकी० ॥ २ ॥

खिरे त्रिकाल दिव्य धुनि तुमरी, जाहि सुनत सारी सृष्टी तरी ।
समोसरणैकी० ॥ ३ ॥

सात जनम भामण्डल भासे, अति अचिंत्य महिमाए भरी ।
समोसरणैकी० ॥ ४ ॥

द्वादश अर्द्ध कोटि धुनि बाजै, बार तीन लागैं रतनै झरी।
समोसरणैली० ॥ ५ ॥
सिंह पीठपर अधर बिराजो, तीन छत्र मणि किरणैं खरी।
समोसरणैली० ॥ ६ ॥
त्रिभुवननाथ पाय तव सेवैं, इन्द्र नरेन्द्र गणेन्द्र हरी।
समोसरणैली० ॥ ७ ॥
अनिदक्ष बैन घनौघ अनक्ष रस, यन समरू उरमांहि धरी।
समोसरणैली० ॥ ८ ॥
जा निधिकूं जग सकल बिलस्वै, सो तुम पाय न जाय परी।
समोसरणैली० ॥ ९ ॥
धरम चक्र भगवन्त तुमारे, आधि व्याधि शत कोश टरी।
समोसरणैली० ॥ १० ॥
दृग सुख खुश भयो लखि तुमकूं, आज मनो शिवनार बरी।
समोसरणैली० ॥ ११ ॥

पद अर्हंत स्तुतिका हजूरी, राग जरवेको ठुमरी।
लगे नेनासमोसृत वारेसैं ॥लगे नेना०॥
हे वारेसैं जग प्यारेसैं ॥ लगे नेना० ॥ टेक० ॥
विश्वतत्व ग्याता जगत्राता, दरम भरम हर तारेसैं।
लगे नैना० ॥ १ ॥
तारण तरण सुभाव धर्या जिन, पार लेवा दन हारेसैं।
लगे नैना० ॥ २ ॥
बिन स्वारथ परमारथ कारण, डूबत काढन हारेसैं।
लगे नैना० ॥ ३ ॥
दृग सुख परम धरम हम पायो, स्याद्वाद मतवारेसे।
लगे नैन० ॥ ४ ॥

पद हजूरी अर्हंत स्तुतिका अति मनमोद है।
इसमें न मालूम सरस्वती कैसे समयमें दर्शक हुए थे, फिर

किसी फंदके वास्ते १०८ दफे पढ़ते हैं फांसी तकका हुकम मौकूफ हो जाता है और कुशलसे भक्तजन जीवंत होकर अपने घर जाते हैं। अवलमें यह है कि कविता लघु भ्राता पंडित भैरवानन्द पर उन्होंने मुकदमें में अति विराट वचनसे इत्याकात किया गया था, और कविता उनकी पैरवी जिले बरेलीकी अदालत फौजदारीमें करे था। जिस दिन उनकूं २ वर्षकी कैद कठिन बोली गई, और कारागारमें भेजा गया उस दिन कविताकूं अति चिताने सताया। फौरन अपील किया और पेशीसे पहले कचहरीमें ही बैठे बैठे भगवानके चरणारविंदके में अरजी गुजारी और यह पद वहां बैठे बनाया इतनेहीमें कविताकी बुलाय हुई और गुनहगारकूं कारागारसे बुलाया गया। चावन् साहिब डस्ट्रक्टूं इजलासपर नहर तहसीलदार मुद्दई हाजिर आया फौरन बंध तोडे गये और मुद्दईको हार हुई कविताका भ्राता पूर्व पदसे छुटकारा होदेपर स्थापन दिया गया, तबसे इस पदकी प्रतीत हुई तो अनेक कष्टोंमें इसने शांति करी, धर्मदास सिकंदराबादके राजबंधन टूटे इत्यादि अनेक साक्षी हैं। जो कोई जैनी श्रद्धा सहित पढेगा उसके महान कष्ट दूर हो जांयगे, कुछ संदेह नहीं है। वह पद यह है—

पद राग मांड देशकी ठुमरी।

प्रभु तारतार भवसिंधु पार, संकट मझार तुम ही अधार, दुख दे बहार, वेगी काढो मोरी नैय्या ॥टेक॥

परमाद चोर, कियो इनपे जोर, मग पोत तोर, दिये मझमें बोर। तुम सम न और, तारन तरवैय्या। प्रभु तार तार० ॥१॥

मोह दंड दंड, दियो दुख प्रचंड, कर खण्ड खण्ड, चहुं गतिमें हण्ड। तुम हो तरंड, तारो तारो मोरे सैंय्या। प्रभु तार तार० ॥२॥

दृग सुखदाय, तेरो है हिराय, मेरो काट फांस, दर भवको वास। हम परत जाय, तू है जग उब रैय्या। प्रभु तार तार० ॥३॥

पद हजूरी जिन स्तुति राग खम्माच।

सेवैं सब सुर नर मुनि तेरा द्वार, जोहै धरम अरथ काम मोक्षको दवैय्या। तोहि तजि अब जाऊं प्रभु किसके द्वार, सेवैं सब सुर नर मुनि तेरा द्वार ॥टेक॥

अतुल दरश धन, अतुल ज्ञान धन अतुल सुख धन कौन पार सेवैं। तोहि तजि० ॥१॥

खहड छतरपति कर नम नत अति, चरन परत मस्त गण धार। सेवैं। तू है०। तोहि० ॥२॥

तुमकूं नमाय माथ, कौन पैय आरूं हाथ। तुको दिवैय्या देत आखनागर, सेवैं०। तू है०। तोहि० ॥३॥

तुम बिन राग दोख, देत होम धन मोक्ष। लिये हैं पजो सुख यही प्रकार सेवैं०। तू है०। तोहि० ॥४॥

तुम सन्मुख रहै, तिन्है नैनसुख भये, तुमसे विमुख, रुले जग मंझार, सेवं० तू है०। तोहि० ॥५॥

पद हजूरी जिन स्तुति रागनो भैरवी।

भाग जग्योजी आज तो हमारो भाग जग्योजी ॥टेक॥

आज भयो मेरा जनम कृतारथ, आज भयो भवोदधि पार लग्योजी। आज हमारो० ॥१॥

मैं तुम ढिग कब हु नहिं आयो, कर्मनके वश ताप ठग्योजी। आज० ॥२॥

वैन तेय सम दर अति हारा, निरखत आज सुजंगभग्योजी। आज० ॥३॥

आज भई मेरी मनसा पूरण, आज हो नयनानंद पग्योजी। आज० ॥४॥

पद हजूरी राग जोगारा।

दर्शनके देखत भूख टरी। दर्शन० ॥टेक॥

समोसरण महावीर बिराजे, तीन छत्र सिर ऊपर छाजें।
भामण्डल सैरवि शशि लाजे, चंवर ढरत जैसें मेघ झरी।
दर्शन० ॥१॥

सुर नर मुनि जन बैठे सारे, द्वादश सभा सुगणधर ग्यारे।
सुनत धरम भये हरख अपारे, बानी प्रभुजी प्यारी प्रीत भरी।
दर्शन० ॥२॥

मुनिवर धरम और गृह वासो, दोनू रीति जिनेश्र प्रकाशी।
सुनत हटी ममता की फांसी, तृष्णा डायन आप मरी।
दर्शन० ॥३॥

तुम दाता तुम ब्रह्मा महेश, तुम ही धन तर वैद जिनेशा।
काटो नैन नंदके कलेश। तुम ईश्वर तुम राम हरी।
दर्शनके० ॥४॥

पद हजूरी, रागनी ठुमरी।

मिटाओ प्रभु दबथा हमारीजी, यजी हम आये हैं दर्शन काज। मिटाओ० ॥टेक॥

सेठ सुदर्शनको पण राख्यो सूली सेज समान। अगनसें सीता उबारीजी येजी हम आये हैं दर्शन काज। मिटाओ० ॥१॥

नाग नागनी जलत उबारे, दियो मंत्र नवकार। मरण गति उनकी सुधारीजी। येजी० ॥२॥

त्रिभुवन नाथ सुन्यो जस ऐसो, अब आयो तुम पास। करो ना प्रभु मेरी गुजारीजी, येजी हम० ॥३॥

भटकत भटकत दर्शन पायो, जनम सफल भयो आज। लखी जो मैंने मुद्रा तुमारीजी। येजी हम० ॥४॥

मैं चाहत तुम चरण शरण गत, मांगत हूं तजि काज। सुनोजी नैनानंदकी पुकारीजी। येजी० ॥५॥

पद हजूरी रागनी।

अब तेम तेरा वजानां तभीसैं आया छिहाना, जबसै तेरा० ॥टेक॥

निज पर भेद विज्ञान प्रकाश्यो, तत्व प्रकाशे नाना तभीसैं आया पिछाना। जबसैं ते राम तजाना, तभीसैं० ॥१॥

दर्शन ज्ञान चरित्र अराध्यो, धरयो जैन मतदाना। तभीसैं० ॥२॥

काल अनादि भव्यो मिथ्या मत, धरम मर्म अब जाना। तभीसैं० ॥३॥

अब टूटी ममताकी फांसी, समता डोल भाना। तभीसैं ॥४॥

अब ही मैं यह बान पिछानी, यह भव वंदीखाना। तभीसैं० ॥५॥

करम बंध जगमें दुख पाऊ, मैं त्रिभुवनको राना। तभीसैं ॥६॥

कहत नैनसुख तार वार प्रभु, तुम हो सत गुरु दाना। तभीसैं० ॥७॥

इति पद जिनरक्त लिखा हजूरी रागनी राग देश बरबा जंगला मिलकर तीनोंका लिखा है।

ठाडेजी गुसैंय्या तेडे दरबारे मैं, स्वामी म्हारावे। ठाडेजी गुसैंय्यां तेडे दरबार ॥टेक॥

करम हमारे बंध गये भारेजी, हो इनकूं दीजे निवार। ठाडेजी गुसैंय्या तेडे दरबार मैं। स्वामी म्हारावे, ठाडेजी गुसैंय्यां तेडे दरबार ॥१॥

विघन हरण तुम सब ही के दाता जी, हो अतिशी अगम अपार। ठढेजी गुसैंय्यां तेडे दरबारमें। स्वामी म्हारावे, ठाडेजी गुसैंय्यां तेडे दरबार मैं ॥२॥

निरखत रूप पुरंदर हारेजो, हो जय गावत गणधार । ठाढे सो गुसैंय्यां तेडे दरबारमें, स्वामी म्हारावे । ठढे हो गुसैंय्यां तेडे दरबार ॥३॥

मन मयूर नैनें नंद मान वसो, सुन सुन घनन विहार। ठढे भी गुसैंय्यां तेडे दरबारमें, स्वामी म्हारावे। ठढे भा गुसैंय्यां तेडे दरबार ॥४॥

पद हजूरी जिनस्तुति का दादरा रागनी पीलुकी पूरबी चालमें गाते हैं।

वारी वारी जाऊंरे, मैं वारी वारी जाऊं रे। भला मेरे स्वामी पे। मैं वारी वारी जाऊं रे॥टेक॥

अष्ट दरब ले पूजन आये, दर्शन कर सुख पाऊं रे। मैं वारी वारी जाऊं रे, भला मेरे० ॥१॥

नाच बजाय गाय गुण माला, मोतियन अरघ चढाऊं रे। मैं वारी वारी जाऊंरे। भला मेरे स्वामी पै, मैं वारी वारी जाऊं रे। वारी० ॥२॥

दृग सुख देव धरम गुरु सेवा, यह पूजा फल पाऊं रे। मैं वारी वारी जाऊंरे, भला मेरे स्वामी पे। मैं वारी वारी जाऊं रे। वारी० ॥३॥ इति।

अथ पद हजूरी जिन स्तुतिका राग खम्माचकी ठुमरी पूर्व लखनऊ वालोंकी तर्जकी।

हे देख्यामें तो पूजन जिन जूंदो लांहया भला मैं तो पूजने का चाव, मघवान आयो समोशरणसार। मैं तो पूजन।टेक।

सिरधर लाऊं छीरोदधिको गगरिया, नये ल्याऊं दरब:सार, मैं तो पूजनखिरी॥१॥

अष्ट दरबसें पूजन करिके, आरते थवाल्ं भर रतन सार, मैं तो पूजन० ॥२॥

गंधोदक ले सीस चढ़ाऊं, बढ़ेंगे अनंद घटें करम भार, मैं तो पूजन० ॥३॥

चौंसठ इंद्र चमर जहां ढारैं, पाऊं पाऊं पाऊं दृग सुख अपार, मैं तो पूजन सिरो जिन आंदियां ॥४॥

अथ पद हद हजूरी जिन स्तुतिका उगाहाओ लोर गणरत गणरते गणेश मनाया इसमें ठकी चजे पर है रागनी जंगला।

भगवान दर्शन दीजे, जी महाराज दर्शन दीजे। जि मैं तो दर्शन कारण आया, जी भगवान दर्शन दीजे। जी महाराज दर्शन दीजै॥ टेक॥

कोई तो मांगे प्रभु स्वर्ग सम्पदा, मैं आनैं पूजन आया। जी भगवान दर्शन दीजे, जी महाराज दर्शन दीजै, जी मैं तो दर्शन कारण आया, जी महाराज दर्शन दीजे ॥१॥

इन्द्र न्हुवावे तुम्हें क्षीरोदधिसैं, मैं प्रासुक जल लाया। जी भगवान० ॥२॥ इन्द्र चढावे प्रभु रतन अमोलक, मैं तन्दुल चुग लाया। जी भगवान० ॥३॥ इन्द्र करे है प्रभु तांडव नाटक, मैं जस गावन आया। जी भगवान० ॥४॥ कहै नैनसुख दरसन करिके, अब नरभौ फल पाया। जी भगवान दर्शन दीजे, जी मैं दरशन कारण आया ॥५॥

अथ पद हजूरी जिनस्तुतिका राग कालंगडा।

जो तुम हो प्रभु दीनदयाल, तो तुम निरखो मेरा हाल। जो तुम हो ॥टेक॥

नरक निगोद भरे दुःख भारी, फांसे निज भ्रमें जगजाल। जलथल पावक पवन हरोवर, घरघर जनम मरे बेहाल॥ जो तुम हो तो तुम० ॥१॥

कम विपीलिका भ्रमर भरा हम, विकलत्रयकी सीखो चाल। फिर हम भए असैनी सैनी, चढ़ि नभ प्राद गिरे तत्काल॥ जो तुम हो तो तुम० ॥२॥

कहै नैनसुख भवसागरसे, बाह पकर मोहि लेहि निकाल। असमरथ होय हमैं न उबारो, तो न कहूं फिर दीन दयाल॥ जो तुम हो तो तुम० ॥३॥

अथ पद हजूरी ठुमरी जंगला झंझोटी। इसमें कुदेवोंके अभक्षका जिकर है जिनको भेढ और बकोमें भैंसे बकरे मुरगे मांस मदिरा लोग चढाते हैं।

मैं दरशन बिना गया तरस तेरी महिमा ना जानी जो। मैं दरश० ॥टेक॥

मैं पूजे राग द्वेष गुरु सेये अभिमानीजी, हियामें माना धरम, सुनी मिथ्यामत बानीजी। मैं दरश० ॥१॥

मैं फिर पूजता भूत ऊत अरु खेढ मसानाजी, मैं जंत्र मंत्र बहु करे मनाये नाग भवानीजी। मैं दरश० ॥२॥

मैं भैंसे बकरे भेड हने बहु तेरे प्रानीजी, नहीं हुआ मनोरथ सिद्ध भए दुरगतिके दानीजी। मैं दरश० ॥३॥

मैं पढ़ लिये वेद पुराण जोग अरु भोग कहानीजी, नहीं आशा तृष्णा मरी, सुगुरुकी सीख न मानीजी। मैं दरश० ॥४॥

मैं फिरा रसायन हेत मिलो नहीं कोडी कानीजी, नहीं छूटा जनम अरु मरन खाक बहु तेरी छानीजी। मैं द० ॥५॥

कई युगत चुरासीलाख सुनी नहीं तेरी बानीजी, हुआ जनम जनममें खुवार धरमकी सार न जानीजी। मैं दरश० ॥६॥

तेरी वीतराग छवि देखि मेरे घटमांहि समानीजी, हो तुम ही तारणतरण तुमी हो मुक्ति निशानीजी। मैं दरश० ॥७॥

है दयामई उपदेश तेरा तुम हो गुरु ज्ञानीजी, हो षट मत में परधान नैनसुखदास बखानीजी। मैं दरश० ॥

अथ पद हजूरी चाल सेहरा बनेका गुन्दल्या मोरी मालना सेहरा राग खम्माचका।

जागा हमारा तोये ध्यान, दाता भवसे निकारो मैंकोजी। जागा हमारा तोसैं ध्यान ॥टेक॥

तुम सर्वज्ञ सकल जग नायकजी, केवलज्ञान निधान। हे दाता जागा० ॥१॥ जीवदयामई धरम तिहारोजी, सब मतमांहि प्रधान। हे दाता भवतें जागा० ॥२॥ तुम बिन कौन हरे भव बाधाजी, सब जगत देखा छान। हे दाता जागा० ॥३॥ दास नैनसुख कछु नहीं मांगतजी, दीजिये शिवपुर थान। हे दाता जागा० ॥४॥

अब पद हजूरी रागनी जंगला झंझौटी मारवा दादरामिलेझु हुलेकाजिका है।

किस बिध कीने करम चकचूर, थारी परम छिमापैजी अचम्भा मोहि आवे प्रभु। किसबिध कीने करम चकचूर ॥टेक॥

एक तो प्रभु तुम परम दिगम्बर, बस्त्र शस्त्र नहीं पास हजूर। दूजे जीव दयाके सागर, तीजे सन्तोषी भरपूर। थारी परम छिमापै, जी अचम्भा मोहि आवे प्रभु। किस बिध कीने करम चकचूर ॥१॥

चौथे प्रभु तुम हित उपदेशी, तारणतरण जगत मशहूर। कोमल सरल बचन सत बक्ता, निर्लोभी, संयम, तपसूर। थारी परम० ॥२॥

त्यागी, वैरागी, तुम साहिब, आकिंचन, वृतधारी सूर, कैसैं सहस अठारह दूषण, तजिके जीत्यौ काम करूर, थारी परम छिमापै० ॥३॥

कैसैं ज्ञानाबरण निवारचौ, कैसैं गेर्यौ, अदर्शन चूर, कैसैं मोह मल्ल तुम जीत्यौ, अन्तराय कैसैं कीयौ निर्मूर। थारी परम० ॥४॥

कैसैं केवलज्ञान उपायो, कैसैं किये चयारूं घातो दूर, सुरनर मुनि सेवैं चरण तुमारे, फिर भी नहि प्रभु तुमकूं गरूर, थारी परम० ॥५॥

करत जाच करदाय नयन सुख दोजे यह मोहि दान जरूर, जनम जनम पद पंकज सेऊं और न कुछ चित्त चाह जरूर, थारी परम० छिमापे ॥६॥

अथ पद हजूरी राग ज्याज देश है, राजरी मूरत प्यारो लागे छे, म्हांनें राजरी मूरत प्यारी छे ।टेक।

नाम मंत्र परताप राजरे, पाप भुजंग भागे छे। म्हानें राजरी० ॥१॥

मन नत तन मन सब दुखसे ग्यान कला उर जागे छे, म्हानें राजरी० ॥२॥

ज्यों शशि निरखि कमोदनि बिकसैं, चितचकोर पग पागे छे। म्हानें राजरी ॥३॥

द्रिग सुख ज्यों घन निरख मगन है, मन मयूर अनुरागे छे म्हानें राजरी० ॥४॥

छप्पय छन्द—अर्हंत परमेष्ठिकूं आशीर्वादका है, इसी छन्दका दूसरी पक्षमें अर्थ करिये है, तो उजागर मल श्री बख्त हजीदारकूं, आशीर्वाद निकले है, टोका सहित इस छन्दकूं लिखना, तत्रादौ उजागर मल तहसीलदार मेरठके आशीर्वादका ।

श्लोक छन्द छप्पय।

सत्य, रज, स्तम, गुणातीत केवलमय, मूरत, अविरल शब्द, धनोघ, असाधारण चिकुरध, निर्विकार, निश्चिदानन्द, गुणगनध परावण, परमारथ उपदेश। तरण तारुण्य, तारायण, भ्रम उन्मदगद, हरण गुरु त्रिजग, त्रिधार्य, व्यथा है। जिक्ष जगत उजागर नृपति कुंदगा नन्द जय उद्दरैं ॥१॥

अस्य अर्थ—प्रगट हो कि यहां हमनें दोनूं पक्षमें आशोर्वाद किया है ॥१॥

अर्हंत परमेष्ठीकूं तथा उजागरमल वहुपीवदारकूं, अहो भव्यजना: अर्हंत जगत उजागर राजा हैं। तिनकूं हम जयवंत होऊ ऐसा आशीर्वाद किया है। उसकी महिमा कैसी है। जगतमें उजागर है सो कैसे है ताहि दिखावैं हैं प्रथम तौ, सतोगुण रजोगुण तमोगुण रूपी त्रीगुणतैं व्यतिरिक्त है जुदा है। केवल-ज्ञानमय मूर्ति है ॥१॥

पुन: कैसा है जाकैं निरक्षरा कहियें वर्ण मात्राऊकी भिन्नता रहित, असाधारण कहिये स्वत: विना ही इच्छा घन समान दिव्य ध्वनिका प्रस्फुरण है ॥२॥

पुन: कैसा है जाके निर्विकार कहिये सर्वथा एकांत पक्षरूप विकारतैं रहित अनेकांतात्मक निश्चय व्यवहार नयकरि निश्चित जो वस्तु स्वभाव, ता करि प्राप्त भई जो ज्ञानी नररूप सुशीलताकूं परायण कहिये, परमार्थ निमित्त पर जानकूं बांटि दीनी है ॥३॥

भावार्थ—वस्तु स्वभावकूं विना इच्छा प्रगट कीया, अहो मोक्षमार्ग धर्म वा ताका उपदेश प्रगट करनेवाला, अर्हंत जगत उजागर राजा, जहाज तुल्य, तरणतारण देव है। अथवा दीव है, करुण शक्ति जाकी ऐसा है ॥४॥

पुन: कैसा है जैसें त्रिदोषके कोपतैं जीवन के, कपाल चेष्टाकी चैतन्य शक्तिमें विघ्न होने तैं, उन्माद रोग पैदा हो जाता है, और उसके होनेसें सुबुद्धि जाती रहती हैं। तवशद्वैद्य सुन्दर उपचार करि, वाकारोग दूर करै है।

सुगंध द्रव्य वैदाधा हरै है, तैसैं ही अर्हंत जगत उजागर वैद्य राजानैं। निश्चित, वृत जो वस्तु स्वभाव। ताके उपदेश रूप मकरंदकूं फैलाय, त्रिजग जाये कहिये। तीन लोकके भव्यात्मा जीव तिनका भ्रम रूप उन्मादकूं, दूर करि। जन्म जरा मृत्यु रूप त्रिदोषकी व्यथा दूर करी है, ऐसा जो कोई

जगतका परम गुरु जगतमें उजागर राजा है ताकूं हम जयवंत होहु। ऐसा शिष्य भाव करी आशीर्वाद करा है, सो प्रथम पक्षमें है॥२॥

पक्षांतर अर्थ, तथा पक्षांतरमें उजागरमल राजाकूं याही श्लोकमैंहैं दूसरा अर्थ करि, या भांति आशीर्वाद करैं है। कैसा है उजागरमल राजा जगत उजागर राजा है, सब जानैं हैं राज द्वीप पर आरूढ है। उक्त महाविरकूं भोगी है॥१॥

पुनः कैसा है यतन कहिये घन रज कहिये धूलता आरतम कहिये आवरण, तातैं अतीत कहिये अलग है।

भावार्थ अन्य अन्याय रूपकूं, धूलवत आनिताके कलंकके आवरण तेंदूर रहै है॥२॥

पुनः कैसा है केवल मय मूरति कहिये, केवल अपनी तनलबाहमें ही शरीरको पुष्टकरै है।

भावार्थ केवल अपने मय कहिये श्रम द्रव्यमें ही खुश है॥३॥

पुनः कैसा है असाधारण विरफुरति कहिये, ऐसा धारणा जाके फुरी है कि अविरत्न शब्द घनौवाः पदके। पद छेदका जो अर्थ है सो गुण स्वभाव ही तैं तामैं पाईये हैं॥ तातैं या पदके पद छेद करिये हैं, अविः अवगत कहिये। अवित अनुद्भावणा लागी है॥ यहां शब्दनामा शब्दके मध्यकार, पद पूर्णके अर्थ था। सो हमनें इस पक्ष मैं वकारकूं त्याग दिया, प्रयोजनके वशतैं सो जानना। पुनः अवित अनुद्भावणा लागै है यह धारना कैसैं हुई॥ यों हुई अघ ओवानः, पापूंका संचय नहीं है, तातैं भई अवधा, घनौवाः कहिये जैसैं घनके शब्द स्वभाव जन्म होता है। तैसैं स्वभाव ही रिसवत लेनेका त्याग भया है, यहा अकारका लोप जानौं जो घनसे पहली था॥६॥

पुनः कैसा है निर्विकार ताकूं निश्चै किया है।

भावार्थ—राजाकूं रिपुवत् जेता विकार है सो सब ताके त्यागसैं निर्विकार है ॥७॥

आनंद कहिये सन्तोषो है ॥८॥

गुण गन्ध परायण कहिये गुण रूप सुगन्ध जहां देखता है। तहां परायण कहिये परुंचाले भौंरेकी भांति जा लिपटे है ॥९॥

परमार्थ उपदेश तरण तारण पतराय रायण कहिये। पर जो प्रजा लोग तिनकूं मा कहिये ॥ लक्ष्मीकी पैदावारी अथवा अर्थशास्त्र कहियै। असि, मसि, कृषि, कर्मादि राजनीतिके उपदेशका देनेवाला है ॥ पुनः दुष्टकूं दंड सज्जनका पालन करनेवाला है। ऐसा तरणे जोग्य न्यायवंत राजा है ॥ महाजतुल्य है भरमोन्माद जो प्रजाको असावधानी। तिसका हरनेवाला है, जगतगुरु कहियै एको देशमैं, जगतके राजनीत धर्मका उपदेश देने तें जगतगुरु है ॥ भाजं कहिये भव्य जीव है। त्रिदोष कहिये आत्मस्तुतिः ॥ परनिंदा तथा निर्विवेकतारूप जो त्रिदोष। सोई भया रोग तिसकूं दूर किया है ॥ ऐसे गुण विशिष्ट जगतमैं। उज्जागरमल राजाकूं देखि। जगी नयनानंद, जयवान होहु अर्थात शत्रुगतिकूं विजय करो ऐसा आशीर्वाद करे है ॥ इत्यर्थ। अथ पदपंचपरमेष्टीकी स्तुतिका पूजाके वक्त पढनेका हजूरी रागनी झोझो।

जै जै जै जिन सिद्ध अचारज उवज्झाय साधव शिवकर ॥टेक॥

जै कल्याण धाम जग तीरथ पोषक सकल चराचर जंत। पूजत नित पदपंकज तुमरे नरनारायण करु सब सन्त। जै जै जै जिन० ॥१॥

शूकर सिंह नवल मर्कटको सुर्यौ सकल हमनैं विरतंत।

ऐसे अगम अपारे तुमनें अठ कीने तिनकूं अरहन्त॥ जै जै जै जिन०॥२॥

नागदघ दंडक स्थानादिक मीदभेदसे कीन अनंत। कर उद्धार पार दिए जगसैं जिन पूजे तुमकूं भगवंत॥ जै जै जै जिन०॥३॥

रावरंक सेवक अरु शत्रु निगुणगुणी निर्द्धन धनवंत। सबकों अभेदान तुम बांटो जो भवके भयसैं भयवंत॥ जै जै जै जिन०।४॥

है व्याकरण विषै तुम शास्त्रा अर्ह इति पूजायां अन्त। इत्यादि अखण्डित, पूजा मंडित पंडितजन मान्यो सब संत॥ जै जै जै जिन०॥५॥

वीतराग सर्वज्ञ भए तुम तारण सु भाव धरंत। तीरथ परम परम पुरुषोतम परम गुरु सब स्तुति कहंत॥ जै जै जै जिन०॥६॥

तातैं जल चन्दन दम अर्चें अक्षत पुष्प रुचरु दर्पंत। धूप महाफलसें तुम पूजा है, त्रिकाल त्रिभुवन जेवंत॥ जै जै जै जिन०॥७॥

सब पर दया अभीके साहिबदास नैनसुख एम भनंत। कर पुतदिष्ट भ्रष्ट मत राखो वेग हरो भव बाधा अन्त॥ जै जै जै जिन०॥८॥

अथ हजूरी रागनी खंम्माचकी।

क्यौं नाबचाते जिनराज हो मैं शरणैं आयाजी, क्यौं नाबचाते जिनराज॥टेक॥

भगनदर अकीलोजी, भस्म करै है मैंकोजी। वेग बुहुल्यो जिनराज॥ हो मैं शरनैं॥१॥ काल अहेडनें तो जी, जाल लगा दियाजी। आन फसयो मैं जिनराज॥ हो मैं०॥२॥ टूटीजी नैय्या मेरीजी, पार लगा दो जी। मझधारामें पडी आय॥ हो मैं०॥३॥

नैनानंद थारीजी हे बलिहारीजी। भवभवमें हुजियो सहाय॥ हो मैं ॥४॥

अथ पद हजूरी रागनी झ्योंझो

राजको सोच न, काजको सोच न। सोच नहीं प्रभु नर्कंगणको॥ राजको० ॥ ५ ॥टेक॥

सुरग छुटेको सोच नहीं है, सोच नहीं तिरजंच भयेको। जन्म मरणको सोच नहीं है, सोच नहीं कुल नीच गयेको॥ राजको० ॥१॥ ताडन तापनको, सोच नहीं है सोच नहीं तन अगनदहेको। सीस छितेको सोच नहीं है, सोच नहीं तृव भंग दियेको॥ राजको सोच न० ॥२॥ ज्ञान लुटेको सोच नहीं है, सोच नहीं ऊध्यांत भयेको। नयनानंद इक सोच भयो अब, जिनपद भक्ति विसार दियेको ॥राजको सोच न० ॥३॥ राजको सोच न काजको सोच न सोच नहीं प्रभु नरक गयेको। राजको सोच न० ॥४॥

अथ पद हजूरी रागनी खमाची ठुमरी।

हमें शिव दिखला दे मुक्तीके बसैयाजो ॥टेक॥

चारित तजैया, परिग्रह तजैयाजी हो मैं थारी निज-रसके रसैयाजो। हमें शिव० ॥१॥

आश्रव हरैया, निर्जरा करैयाजी। हो मैं थारो दुर्गतिके नशैयाजी ॥ हमें शिव० ॥२॥

तेरी नगरिया तेरी अटरियाजी, हो मैं थारो दुग सुखके करैयाजी। हमें शिव दिखलादे मुक्तिके बसैयाजी ॥३॥

अथ पद रागनी खाम भैरवी, तथा खास खम्माचमें यह ठुमरी हजूरी गाई जायगी।

डूबी पडो भवसागरमें मोरी नैयाकूं पार उतारो महाराज। डूबी पडो० ॥टेक॥

बीत्यो है अनन्तकाल, डूबो जन्मके जंबाल, देके अवलंबनिज तारो महाराज ॥डूबो पडो० ॥१॥

लोभ चकमांहि परो, क्रोध मान माया भरो। राग दोष मझसैं उबारो महाराज ।डूबा पडो० ॥२॥

तारे अधरमी अनेक, पापीऊ उबरो एक, वीतराग नाम है तिहारो महाराज ॥ डूबा पडो० ॥३॥

कहै दास नैनसुख, मेटो मेरा सब दुख, खैंचिकैकु घाटसैं निकारो महाराज । डूबो पडो भवसागरमैं मोरो ॥४॥

अथ पद हजूरी राग मारू। कर्मनकी गति टार हो स्वामी, कर्मनकी गति टार ॥टेक॥

दरपन तैं मैं संकट पाए, गयो नरक बहुबार। हो स्वामी· कर्मनको ॥१॥ कबहुक पशु परजाय धरी तहां, दुख पाए अरमार हो स्वामी । करमनको० ॥२॥ देव मनुष गति इष्ट वियोगी उपहो वारनपार। हो स्वामी कर्मनको० ॥३॥ आर वीतराग लखि तुमकूं राखो चरन मझार हो स्वामी । करमनको ॥४॥ नैनसुखकी अर्ज यही है, भवसागरसैं तार हो स्वामी ॥कर्मन०॥

इति समुच्चय जिनस्तुति षष्ठोऽध्याय संपूर्णम् ॥ ६ ॥

सप्तम अध्याय

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। अथ सप्तम अध्यायमें प्रत्येक जिन के पद लिख्यते। तत्रादौ आदिनाथ जी के पदोंका संग्रह आदिनाथ-जीका पद हजूरी राग खम्माच जंगला गजल ॥

सुनरी सखी इक मेरी बात, आज नगरमें बरसैं रतन। ॥टेक॥ लीनो है आज ऋषभ अवतार, नाभिराय घर हरख अपार। रतन जु बरसैं पंच प्रकार, शीतल पवन सुधाकी

भरन। सुनरी सखी इक मेरी बात, आज नगरमें बरसें रतन ॥१॥ पुष्पवृष्टि दुन्दुभि जयकार, बट तब धाई घर घर बार। आज अजुध्या नगर मंझार, पूजत इन्द्र प्रभूके चरन, सुनरी सखी इक मेरी बात, आज नगरमें बरसें रतन ॥२॥ सब बहुबा जंगल गुलजार, बन उपबन फूले इक बार। कामिनी गावैं मंगलाचार, बोलत पिक द्विज चरय बचन। सुनरी सखी इक मेरी बात। आज नगरमें बरसैं रतन ॥३॥ चन्दनसें चर्चे घरबार, छटकाये सलि दन्दनधार। है जो दृग सुखको दातार। लीजै प्रभूका चलके चरन, सुनरी सखी इक मेरी बात। आज नगरमें बरसें रतन।४॥

अथ पद आदिनाथजीका हजूरी राग ड्योंडी।

आदि पुरुष तेरी शरण गही, अब टूटीसो नाव समुद्र बिच बेड़ा ॥टेक॥ नाभि पिता मरुदेवीके नन्दन, इस जगसर कोई नहीं मेरा। अगम उदधिसैं पार लगाबो, जान पहुंचाह्यां काल लुटेरा। आदि ॥१॥ आतम गुणकी खेपलुटी सब, लूट लियो अनुभव धन मेरा। दोन बंधु इस करम भंवरकी, कठिन बिपत्तिमें पड़ा है धाराचेरा। आदि ॥२॥ क्या तो नैया उलटी ही फेरो, क्या अब पार करो यह बेड़ा। नैनानन्दकी अरज यही है, नातर बिरद जावै तेरा। आदि ॥३॥

अथ पद हजूरी आदिनाथजीका राग जंगलेकी लावनी वा ठुमरी बत्तौर बधाई।

नाभि घरले चलरी आली; जहां जन्मे आदि जिनन्द किया वेमान बिजय खाली ॥टेक॥ ऐरापति गजराज सुरगर्षे सुर सेना चाली। फूलनके गजरा गुन्दलाये लानके थाली। नाभि घर ले चलरी आली ॥१॥ नन्द हद जरत्य टेरें मोर मुकटवाली। ऊन नऊन नद्रि गद्रि गन करत सुरदे देवर

थारी। नाभि घर ले चकरी चाको ॥२॥ गंधोदककी दृष्टि रतनकी धारा सु' डाको। शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह च्यारों दिश चाको। नाभि घर ले चकरी चाको ॥३॥ जल चन्दन अक्षत सुर ल्याये फूलनको ढाको, चरु दीपक शुभ धूप फलादिक भर भर थाको नाभि घरले चल भरी चाको० ॥४॥

सुफल भयो अब जन्म हमारो, चऊं गति दुख टाको। नैनानंद भयो भविजनकूं लखि यह खुशयाली, नाभि घरले चल री चाको। जहां जन्मे आदि जिनंद हुयो यशोर्थ विद्यालो ॥५॥

अथ पद आदिनाथजीका हजूरी ठुमरी जगला झंझोटीका भिला। नाभि कंवरका देख दरस अब दूर हुआ दिलका खटका ॥टेक॥

इन्द्र वधू जिन मंगल गावैं, भेष कियें नागर नटका। मेरु शिखर पर जनम इन्द्रका जिन उःछवकूं मन भटका। नाभिक० ॥१॥

पांडुक वन सिंहासन ऊपर रतन माल मण्डप लटका, सुर गण ढालत छीर उदधिके सहस्र अठोतर भर ,मटका नाभिक० ॥२॥

तांडव नृत्य कियो सुर राईस कल अंग मटका, सुर किनर जहां बीन बजावे कर कंगण झटका झटका। नाभि कवर का० ॥३॥

कुगुरु कुदेव कुलिंगी दुर्जन देखन कूंभो नहीं फटका, धर्म सार पायो दुखदाई देश त्यागका बैंबटका। नाभि ॥४॥

पुन्य भंडार भरे भवि जीवन सरनवल्यो प्रभु पद तटका, सरधावंत भये मिथ्यातो पाप भार सिर पटका। नाभि ॥५॥

आज दिवसकूं दास नेनसुख फिरताथा भटका भटका, कौन वधू अब यही दिवस है देऊ पुन्य हमरे अटका। नाभि कवरक देख दरस अब दूर हुआ दिलका खटका।

अथ पद आदिनाथजीका हजूरी ठुमरी जंगला, लिया आज प्रभूजीनैं। जनमपुरी चलो अवधिपुरी गुन गावनकूं ॥टेक॥

तुम सुनोरी सुहागन भाग भरी, चलो मोतियन चौक पुरावनकौं। लिया आज० ॥१॥

सुबरण कलश धरो सिर ऊपर जल ल्यावैं प्रभु न्हावनकौं, लिया आज० ॥२॥

भर भरथाल दरबके लेकर चलोरी अरघ चढावनकौं, लिया आज० ॥३॥

नैनानंद कहै सुन सजनी फेर न अवसर आवनको, लिया आज प्रभूजीनै० ॥४॥

अथ अजितनाथजीका पद राग भैरवी हजूरी ठुमरी जंगला।

तुम हमें उतारो पार अजित जिन भवि दधि मांहि पडरि कैजी ॥टेक॥

हमकूं अष्ट करम वैरीनैं, लीने बांधजकरिकै जी। हमन चलेंगे उनके संग, रहैं तेरे द्वार पसरिकैजी। तुम हमें उतारो पार अजित० ॥१॥

अष्ट दरबले पूजन आयें, लेंगे दान ऊगरिकैजी। भावैं दया निमित शिव दीज्यो, भावैं दीज्यों पकरिकैजी। तुमहमैं उतारोपार० ॥२॥

जिन जिन तुमकों पूजे ध्याये, भक्ति गये वर्स सुधरिकैजी। छिन सुखके भव बन्धन तोडो, खरिहै नाहि मुकरिकैजी। तुमहमैं० ॥३॥

अथ पद पद्मप्रभुजीका रागधनासरीदादरा।

हमकूं पद्मप्रभु शरण तिहारीजी ॥टेक॥

पद्म जिनेश्वर पदमा दायक, घायक दु भवके दुख भारीजी। हमकूं पद्म० ॥१॥

तुमसो देव न जगमें दूजो, अब हमसे दुखिया संसारीजी। हमकूं पद्मप्रभु शरण० ॥२॥

अपने भाव सकल मोहि दीजे, यह तुमसे अरदास हमारीजी। हमकूं पद्म० ॥३॥

नैनसुख प्रभु तुमरी, भव दधि पार उतार न हारीजी। हमकूं पद्म० ॥४॥

अथ पद्मप्रभुजीका पद शाहपुरके मन्दिरके मूल नायक रागनी भैरवी।

जानि बिराजे जिन पद्म जिनेशा ॥टेक॥

शाननगरीमें दुखम सुखमकूं, गनिये सुखम प्रमेशा। जानि बिराजे० ॥१॥

सबवादिक आवनको तरसैं, तातैं हमरे भागबलेशा। जानि बिराजे० ॥२॥

दोहा–मनवच धनवन अंगबल, नृपबल नृपबल हीन।

जानि बिराजे शाहपुर, जानि धराबग दान जिनेशा ॥३॥

श्वेत संगमय बिंब बिहारी, ज्यों अकलङ्क निशेशा।

पाप ताप निरखत ही भागत, ज्यों अहि निरखि खगेशा। जनि० ॥४॥ ज कुमारपर करुणा उरजो, विष्टेश सुबरेशा। पंचन मिलि मंदिर चिनवायो; जै जे जै नम तेशा। जानि बिराजे जिन पदम जिनेशा ॥५॥ अबकौं नाथ तरूं भवसागर, सुगतूं करम कलेशा। भव भवमें प्रभु तुमरी सेवा; चाहत नैन सुखेशा। जानि बिराजे जिन पदम जिनेशा ॥६॥

अथ पार्श्वनाथजीका पद रागनी झ्योटी।

हमकूं आप करो अपनी सम पारस कलि अरदास करी है। हमकूं आप ॥टेक॥

नाम प्रभाव कुधातक नवहो महिमा अगम अनन्त भरी है। सकल सृष्टि उतकिष्ट सम्पदा, तुम पद पंकज आय परी है॥

हमकू० ॥१॥ जो तुम पद पद्माकर सेवें तिनतें भव आताप टरी है, जनम मरण दुःख शोक विनाशन, ऐसो तुमपे परम जरी है। हमकूं ॥२॥ कहत नैनसुख हमरी नैय्या, इस भव भंवर मंझार अड़ी है। परम असाता मेरी मेटो जगत्राता, ह्यां सुख साता नहीं एक घडी है॥ हमकूं आप करो० ॥३॥

इति सप्तमोध्याय सम्पूर्णम्।

अष्टम अध्याय

अथ श्रीमान् राजराजेश्वरी उग्रसेन राजदुलारी श्रीराजेमती सतीके नेमिनाथ अवतारके वियोग योग और वैराग्य भावके पदोंका संग्रह रूप अष्टम अध्याय बालबोधार्थ लिख्यते।

इसमें तीन तुक्क हैं। इस भांति भुजन तुक्क ॥१॥ होलीतुंग ॥२॥ चन्दन काठ नामांकित भजन तुंग ॥३॥ पद बचन राजमती ठाकुर की स्त्रियोंसे राग ठुमरी जंगला।

वंशकी पतिव्रता नारी, तुम सुनो शुद्ध अवतंश वंशकी पतिव्रता नारी ॥टेक॥

सूर्य चन्द्र हरवंशयहू, अरु नाथवंश धारी। तुम भरथ नागनोंकी आपी हो सब उत्तम डारी, तुम सुनी शुद्ध अवतंश वंशकी पतिव्रता नारी ॥१॥

सब हो रही हिलमिल एक, यदपि हो सब न्यारी न्यारी। ज्यौं एक खेतके भेद, खेतकी हों बीधों क्यारी ॥ तुम० ॥२॥

इन क्यारिनमें सतियोंने जाये तीर्थंकर प्यारी, जिन उपादेय अरु हेय बताके शुद्ध दशाधारी ॥तुम० ॥३॥

मनमें धर सन्तोष उन्होंने तृष्णा निर्वारी, अरु केवलज्ञान उपाय किया फिर मोक्ष पंथ जारी। तुम० ॥४॥

जिनको सुरनर मुनि मन्तनें आज्ञा शिर धारी । जिन संकी उनकी आन हुवा अनंत संसारी । तुम० ॥५॥

हम उनके कुलकी बनी धन्य शिवदेवी मातारी, जिन जाया मेरा कंत नेम है उसो बेना तारी । तुम सुनों० ॥६॥

मैं गूंदा उसपर सीस उसीकी चुनियां आचारी, सो तज दई उसके संग और अब न रहैं आवारी । तुम० ॥७॥

मैं हौंके वंश विभूषण दूषण फैसें ज्यूं प्यारी, ज्यों लंकपतिकूं देख कलंकी हुवा दुराचारी । तुम० ॥८॥

उन छोटे कीने भाव अवलको फांसी गलडारी, वह कुलका कर गया नाश हुव गया अठला गया गारी । तुम० ॥९॥

है जनक सुता जैवंतसु जस है अब लोंभी जारी, मैं क्यों कर गूंदूं सीस, और पै अपजस है भारी । तुम० ॥१०॥

यों करि पति बुद्ध सुबुद्ध राजमति गई बो गिरनारी, लिया नेम नवल सोहा नन सुख जावे बलिहारी । तुम० ॥११॥

राग धनासरी वचन राजमतीका सखियोंसें, येरी भैना बावरी कौन हमारा नातो, कौन हमारा नातो कौन हमारा नातो, येरी भैना बावरी कौन हमारा नातो ॥टेक॥

मोह विकल तुम, हमहिं न रोको. जियाको मोह न रातो, पूरब भव अनंत सखियन संग, खेलत रही विलछातो । येरी भैना० ॥१॥

मेघोदधि, धन, तन, करि वेळ्यं, यह भव और अघातो, पट दरशन भरपूर सदा ही, कोई न दिसू को साथी । येरी भैना० ॥२॥

मूढो पन्थ फिरूं, भव कानन, शिवपुर डगर न पातो, चऊं-गति द्रुमतल बैठि बैठिकै, रो रो नैन सुजातो । येरी भैना० ॥३॥

ऊंच नीच कुल नाम धरायो, करि करि ठारा नातो, अंतराय वश तप नहिं कीनो, दुःख सहे दिन रातो, येरी मैना बावरी कौन हमारा नातो ॥४॥

अब हमने प्रपिया ढिग सजनी, आतम हित बन आतो, नैनसुख अब मन राजुलकूं लिनरो क्यों मन हाथो, येरी मैना बावरी० ॥५॥

अथ—राग जंगला झंझोटी बरवा देश च्यारोंका बधीर ठुमरी रांजेकी, बचन राजमतीका पितासें।

मैं अब जैन जोग ल्यूंगी, हे चाचा मोहि पठा गिरनार, मैं अब जैन जोग ल्यूंगी ॥टेक॥

शोरीपुरसें व्याहन आये, नेमिनाथ भरतार, जूनागढ़में बरन लगे जब, पशु बन करी है पुकार, मैं अब जैन जोग ल्यूंगी ॥१॥

तीर्थंकरसे व्याहन आवे होत मंगला चार देखो हमकूं उग्रसेननें, दिये वंधमें डार। मैं अब० ॥२॥

इतनी सुन बैराग भये, प्रभु धिग धिग या संसार। प्रभु छुड़ाय आभूषण तारे, दिये भूमिमें डार। मैं अब० ॥३॥

नव भव राखो सरण आपने, दुशवें दई बिसार। नैनानंद जो मैं बिसरूंगी, कब उतरूंगी पार। मैं अब० ॥५॥

अथ—पद उर राजमतीका अपनी माताके राग बरवा ठुमरी॥

मेरे करमसें जोग लिखारी, मत सोग करै मेरी माय। करि एरी मत सोग करै मेरी माय, मेरे करमसें जोग लिखारी। मत सोग करै मेरी माय ॥टेक॥

भोग लगनमें करम कथा मेरी, मुनिवर दई थी बताय री। मेरे करमसे जो० ॥१॥ तेरो पिया नव भवको संगाता, दशवें जनम शिव जायरी। मेरे करमसे जो० ॥२॥ अब मैं धीर धरूं कैसे सजनी, पीव भए मुनि राख दावरी ॥मेरे०॥३॥ जाय

तपोवन भई अरबिक्षा, नैनानंद गुण गायरी। मेरे करमके भोग हिसारी, मत भोग करे मेरी माय ॥४॥

बचन राजुलजीका सखियोंसे राग पीलू दरबां जंगला मिश्रित ठुमरी ॥

बदल गए नैनारी, बदल गए नैना नेमिज पीछे बदल गए नैना। नेमिज पीछे बदल गए नैना ॥टेक॥

जिनका जनम उपगार हमने किये, नरक परतरासे भैना। बदल गए नैना, नेमिज पीछे बदल० ॥१॥ सुनरी बहनियां मैं हूं वाकी मिलनियां, हनत गुनि नयनु छैना। बदल गए नेमिज० ॥२॥ भोग दिखलाई सत गुरसे छिमाए अब तब सीखे वृत लेना, बदल गए नेमिज० ॥३॥ नव भव पहरे वाके नव कर चुरला, काईके गुदाए हिरी वैना। बदल गए। नेमिज० ॥४॥ याद दिलाय पूर चली बतियां, सुन पशुवनकी सैना। बदल गए०। नेमिज० ॥५॥ मोतियन मांडा कहा अब करनो, कहा करनो मोहि गहना। बदल० नेमिज० ॥६॥ ढैय्यां पहि मोरी वैय्यां, गहेंगे और दिसूलेनि भैना। बदल नेमिज० ॥७॥ रत्न मत कहत कहन सुन हमरे, देख छिमा कर देना। बदल० नेमिज० ॥८॥ अब हम नेम शरण बन बसि हैं, हमरे ठिख ये ही कहना। बदल०। नेमिज० ॥९॥ नैनानन्द धन धन वे प्राणी जिन सब भोग गहेना। बदल०। नेमिज० ॥

छन्द—यह वचना राजुलजीका नेमिनाथजीसे राग जंगला खास ॥

देके दरस क्यों फिर गएजी प्रभु देके दरस क्यों०। टेक॥

क्यों जूनागढ ब्याहन आये, क्यों बलिभद्र हरी संग ल्याये। क्यों सिरमें सेहरा बन्धवाये, क्यों गिरनार शिखर गयेजी ॥ प्रभु देके दरस ॥१॥ नव भवकी मैं चेरी थारी, तुम मेरे नाथ मैं हूं थारी नारी। इस भव में किस हेत बिसारी, हो कौनके

वनमें पड़ गयेजी ॥ प्रभु देखे० ॥२॥ नगन दिगम्बर मुद्रा धारी, अब चाहत हो मुक्ति पियारी। ऐसो लोभ न चहिये भारी, करुणा भाव बिसर गएजी ॥ प्रभु देखे० ॥३॥ प्रभु बनको तुम बन्ध छुटाई, राजुल चरन तुम्हारी आई। नैनानन्द यह बिनती गाई, चरन आये यो सिर गएजी ॥ प्रभु० ॥४॥

अथ बचन राजुलजीका समस्त परिवारसे।

मुक्ति रमणिसैं अटको हमारे पिया, मुक्ति रमणिसे अटक्यों रे ॥ टेक ॥

व्याह समैत पशुनको शोर सुनत अटक्यों रे, हरि बलभद्रको कह्यो न मानै। अपनी हठसैं हटक्यों रे ॥ मुक्ति रमणि० ॥१॥ नासा द्रिष्टी खड़ो गिरवर पर भेद न खोले घटको रे। समुद्रबिजै सेय पग पहारे, डाल उराबिर पटको रे ॥मु० ॥२॥

कर कंगण गल हार बिसारे, कियो न लोभ मुकटको रे। नैनानन्द उस नेम नवलके, दर्शनकूं मन भटक्यों रे ॥ मुक्ति रमणिसैं अटक्यों रे, हमारे पिया० ॥३॥

अथ बचन राजमतीजीका रागनी झँझोटी ठुमरी।

गिरनारीकी डगर बतादो रे, गिरनारीको डगर बतादो रे ॥टेक॥

हिरदेका हार बाजूबन्द दूँगी, हो पियासैं कोई, गिरनारीकी डगर बतादो रे ॥१॥ नेवर लख मेरे करकी मुन्दरी हो लो मांगे वो दिला दो रे। गिरनारीकी डगर बतादो रे ॥२॥ मेरा पिया मेरा प्राण पियारा, पकड़के कोई लादो रे ॥गिर० ॥३॥ नौ भवकी मैं चेरी उसकी, मनकी कपट मिटादो रे। गिरनारीकी डगर बतादो रे ॥४॥ पूरब भव हम सोक सौकनी, इतनो दात जितादो रे। गिरनारीका डगर बतादो रे ॥५॥ रहूँ सदा चन्दन सेवा कर, यह लिखत मैं लिखवादो रे। गिरनारीकी डगर बतादो रे ॥६॥

अथ वचन राजमतीजीका माताप्रे रागनी झंझोटीकी।

जियरा ना लागे माई, आज पियरवा गए हैं गिरनारको री जियरा ना लागे माई ॥टेक॥

तीन लोक धन पहले भोगे, वसु प्रदेश रहि ताई माई। अब तजि ताहि चल्यो, शिव सघन सम्यक शक्ति बढाई माई ॥१॥ काम दामतैं काज न कीनों, भेद खण्ड प्रगटाई माई। अब शिव राज करेंगे, निर्भय हमकूं छला छिटकाई माई। आज० ॥२॥ जगमें नाहि मिलूं फिर कासूं, ताकैं यह चित भाई माई। राजुल नयन ढिग त्रिगसुख, दिक्षा धर सुख पाई माई ।आ०॥३॥

अथ वचन राजमतीका नेमिजीसों रागनी ठुमरी खम्माचकी पूर्वी बतौरन कलकत्ताकोंके।

आछे हँसा आम त्यौं हमारी अरी बैयांजी। एजी प्रभु आम क्यौं पियारे मोरी बैयांजी ॥टेक॥

विनती करत थारे पैयां परत हूँ, बारबार समझाईयां। आछे० ॥१॥ तन सिंगार मोहि बुरा लगत है, तन संजम मन भाईयां। आछे० ॥२॥ नैननसे मोरे नीर झरत है, गमकी घटा देखो छाईयां। आछे० ॥३॥ परख देखि दृग सुख उपजत हैं, सुनियों अरज गुसांईयां। आछे० ॥४॥

अथ वचन राजमतीजीका नेमिनाथजीसे ठुमरी खम्माचकी दूसरी तरह पर लखनऊकी चलेकी।

बाईजी मैं तोपे पियरवा कहो कवन विधि राखूं जियरवा बाई० ॥टेक॥

मोहनीके भौंरे पिया आवरा तुमारा हिया, काहे त्याग दीना मेरा तांपे हिरदयवा। बाई० ॥१॥ ग्रीषम धूप भारी, पावसकी रैन कारी। सीतमें सहोगे केते भारी सियरवा। बाई० ॥२॥ पशु बन छोर दीनौं, नेमी प्रभु जोग लीनौं। राजुलने धार्यौ इक पट्टो जियरवा। बाई० ॥३॥ सील न्यारे

नैनसुख मेटो मेरा भव दुःख, जगसे निकारो आयो तोरे नियरवा। आई० ॥४॥

अथ वचन राजमतीका सखियोंसे राग भरूंन।

हुवा मगन मेरा हुवा मगन, दर्शनसे जीया हुवा मगन ॥टेक॥

कर्म दवानल शांति भई है, आनन्द बादल छाये गगन। दर्शनसे० ॥१॥ मैं तो जोग धरूंगी तुम संग, नौ भवकी मेरी लागी लगन। दर्शनसे० ॥२॥ शिवपुर पहुँचनकी वर वंछा जासूं मिटे मेरा आवागमन। दर्शनसे० ॥३॥ कहै नैनसुख दो कर जोड़े, हमकूं रखल्यो अपनी सरन। दर्शनसे० ॥४॥

अथ वचन सन्देश राजमतीका लावनी पीलूकी।

मेरे सजनसे यों जा कहियौ, क्या हमने तकसीर करी। अजी क्या हमने तकसीर करी ॥टेक॥

तुमको प्रभु कसम हमारी, किसने तुमपर टोली मारी। किस कारण तुम दीक्षा धारी, हमें उतारो पार मेरे भरतार ॥ किस उधारामें पड़ी। मेरे सजनसे० ॥१॥ पशु छुटावनको मिस कीनों, सो तन मुक्तिने वश कीनों। इस कारण तुम जग तजि दीनूं, लोग बतावें लोग मुक्तिके भोगकी तृष्णा। क्यों नमरी ॥मेरे०॥२॥ पुरी हुई फिर तुमारी इच्छा, तुम कीनी पशुवनकी रिछा। हमकूं भी प्रभु दोजे दिक्षा, तुम हो दीनदयाल करो प्रतिपाल ॥ कि मो पर बिपत पड़ी ॥मेरे०॥३॥ कहै नैनसुखदास तुमारा, करो प्रभु हमारा निस्तारा। ये वनियां हैं धुन्ध पसारा, दिया जगतको छोड़ गये मुख मोड़ ॥बिधाता कैसो करी ॥मेरे०॥४॥

अथ आज्ञा राजुलकी सखियोंसे राग नौटंकी तहजोकी चालमें।

ल्यावो मेरे पियाकूं जाके री कि उसकूं ल्यावो मनाके री। अजी तुम कहियौ हमारी अरदास जाके आज प्यारीरी ॥ल्यावो मेरे पियाकूं जाके री ॥टेक॥

प्रभु तुम कैसी बिचारीजी, कि राजुल क्यों तैं टारीजी।

कि दिक्षा क्यों तुमें भारीजी, पियां तैंनें तजी जगतकी आशकाके काज प्याराजी ॥ ल्यावो मेरे पियाकूं० ॥१॥ करी वाकूं जीउयौ दिढ धारी, कि मत कर मुक्त वणावां थारी। कि प्रभु मेरी पूरीये आधारी, प्यारे तू तो कीजियौ भोगविलास, पाके राजभाराजी ॥ ल्यावो मेरे पियाकूं आकेरी ॥२॥ करीवानैं पशू निहारेरी, तभीसे बनकूं सिरधारेरी। कि याके भूषण उतारेरी, धनीवाकूं नमें नैनसुखदास गाके आज प्यारीरी ॥ ल्यावो मेरे पियाकुं जाकेरी ॥३॥

अथ वचन राजमतीका मातासैं रागनी जंगला झंझौटी मिले हुवे।

मेरारी जिनेन्द्र देवारी, हे मेरारी जिनेन्द्र देवारी। छाडी मैय्या मेरी परतीत, हे छाडी मैय्या मेरी परतीत ॥ महाव्रत धारे, महाव्रत धारे। वानैं सब छाडीरी जगकी रीत ॥ मेरारी जिनेन्द्र देवारी। टेक॥

दिन अपराध विचार, कई हुंरी कुछ मेरे जीयाकी न जानी। हे उमरिया मेरी वारी, वानैं सब छाडा जगकी रीत ॥ हे मेरा जिनेन्द्र देवा री ॥१॥ ग्रीषमकाल शिखरके ऊपरहे, पावस तरु तले ठाडो। हे रैयनियां छाईकारी, वाने सब छाडीरी ॥ हे मेरारी जिनेन्द्र देवा री ॥२॥ शीतकाल तटनी तट पोपटहे, पीड सहै अधिकाई। नैनानंद बलिहारी, वानैं सब छांडीरी जगकी रीत ॥हे मेरा० ॥३॥

अथ वचन राजमतीका नेमजीसें राग पीलूमें, गीत औरतोंका।

बना मेरा नेमीश्वर भगवान, बना मेरा नेमीश्वर भगवान ॥टेक॥

बना मेरे तू ही पति तू ही परमेश्वर, सब जग मातपिता समान। बना मेरा नेमीश्वर भगवान ॥१॥ बना मेरे सब स्वारथके संगी, परमारथके तुम परधान ॥ बना मेरा नेमीश्वर भगवान ॥२॥ बना तेरा परगट परम बडप्पन, परदुख जानत

मेरु समान ॥ बना मेरा० ॥३॥ बना तुम बिन सुख चीज घरे दुख, पशुवनकी कई पीर पिछान ॥ बना मेरा नेमी० ॥४॥ बना मेरे व्याह समैं भये जोगी, नौ भवकी न करी कछु कान। बना मेरा नेमी० ॥५॥ बना तेरी जो मरजी सोई मरजी, यह धरजी सुन छेऊ सु जान। बना मेरा नेमी० ॥६॥ बना मैंने सर्व अवस्था भोगा। तुम संग भोग जोग सुख मान ॥ बना मेरा नेमी० ॥७॥ बना मेरो नाथ भया तीर्थंकर। चेथे इन्द्र वधू पग जानि ॥ बना मेरा नेमी० ॥८॥ बना अब तुम बिन और बर नहिं। कूकर हाड करुं न कहान, बना मेरा नेमी० ॥९॥ बना मेरे मुझको द्रिग सुख दान दी। लै चल संग नगर निर्वाण ॥ बना मेरा नेमी० ॥१०॥

इति भजन तुंग समाप्तम्।

अथ होली तुंग लिख्यते, अथ होली अध्यात्म राजमतीजीकी तरफसैं राग।

होरी खेलत राजमतीरी हे सखीरी, होरी खेलत राजमतीरी ॥टेक॥

संजम रूप बसन्त भरयौ लिर तजि भव भोगे सतीरी, श्री गिरनार विजन वन कुञ्जन। धर्मन संग हरतीरी, फंद काटे भव हैं यातीरी ॥ होरी खेल० ॥१॥ भरि सन्तोष कुण्ड रंग सोहं, टेरपंथ सुम सीरी, रत्नत्रय व्रतधारि कुतूहल। आगमसूं करतीरी, स्यांग जगसूं डरतीरी ॥ होरी खेल० ॥२॥ रोके हैं आश्रव जन मतवारे, संवर डफ धरतीरी। तीन गुपतिकी ताल बजावत भवसागर तरतीरी, मनको मद हरतीरी ॥ होरी खेलत० ॥३॥ कर्म निर्जरा बसत मंजीरा, शिवपथगनि मतीरी। द्रिगसुख धरि संन्यास छिनकमें, पाई है देव गतीरी। सुरग अच्युत मैं सतीरी ॥ होरी खेलत राजमतीरी हे सखीरी ॥४॥

इति प्रथम होरी सम्पूर्णम्।

होरी राजमतीकी राग जंगला झंझोटीका फीका जिलो।

गावोरी जिन व्याहकी होरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥टेक॥

छप्पन कोटि चढ़े जदुराय, व्याह न आये निआं नवआय। कहा बना घोरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी॥१॥ समुद्र विजै बल भद्र मुरार, व्याहेंगे राजुल नेम कंवार। माठी बनी जोरी॥ गावोरी जिन व्याहकी होरी॥२॥ ढोरत इन्द्र चंवर चहुँ ओर, दुंदुभि शब्द बजैं घनघोर। बन्दीकर होरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी॥३॥ अंग अंग आभूषण धार, सीस मुकट कुण्डल गलहार। छिपे पोरीपोरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी॥४॥ करत सुहागन आरती धार, भरभर अक्षत मोतियन थार अरघ भर जोरी॥ गावो०॥५॥

सहस अठोतर दिवला जोर, हूवत ही दरु केशर, चन्दा चिरचेरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी॥६॥ करत प्रभू तोरन व्यवहार, कलश लियें ठाढी पनहार, घुंघटपट मोरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी॥७॥ ता अवसर पशुवों नोंचोर, है त्रिभुवन पति बंधन तोर, निरखि हम तोरी, गावोरी व्याहकी होरी॥८॥ व्याह निमित पशुपीड निहार, दीन्यों भोगनकूं धिरकार। बाग प्रभु मोरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी॥९॥ पटकि आभूषण कुण्डलहार, कंकन तोर चाढ़े गिरनार। सुझीन छियोरी॥ गावोरी जिन व्याहकी होरी॥१०॥

द्रिग सुखा सकल परिगृह त्याग, परनी शिवसुन्दर बड भाग। चरनआकी त्योरी॥ गावोरी जिन व्याहकी होरी॥११॥

होरी राजमतीकी राग काफी।

चल खेलिये होरी नेमि वैराग भयोरी। चल खेलिये होरी नेमि वैराग भयोरी ॥टेक॥

केवलज्ञान क्षीरसागरमैं भाजन मन भर ल्योरी, तामैं पंच

सुमतिकी केशर घसघस रंग करोरी। ध्यानके ख्याल जगोरी॥ चल खेलिये होरी॥१॥ समकितकी पिचकारी ले ले शुभ सखी संग ल्यौरी, भव्य भाव शुभ हेरि हरिकें। निज निज भवन रंगोरी, धरम सबहीको सगोरी॥ चलके खेलिये होरी०॥२॥ सप्त तत्वके लेय कुमकुमे, नव पदार्थ भर झोरी। भिन्न भिन्न भविजन पर फैंको तृस्नामान हरोरी, वेग पनदाम पछोरी॥ चल खेलिये होरी०॥३॥ मोहदंड होरीका फूंको जा तैंदुरपन भगोरी, पंचम गतिको राह यही है। धारत चित दिपरोरी, नैन सुख जोग धरोरी॥ चल खेलिये होरी। नेमि वैराग भयोरी॥४॥

अब होरी राग कान्हड़ा तथा काफी में, सुमति सखी ज्ञान भरतार से खेले है। अर्थात् सुमति राधिका ज्ञान कान्हासें होरी खेलें है, वृजका यह भाव है।

सखी घरी में आज बसंत मनायौ, पिया ज्ञान कान्हा घर

आयौ। सखीरी में आज बसंत मनायौं॥टेक॥

कुबजा कुमति दिखोटा दीनौ, सुमति सुहाग बढायौ। शील चुनरिया प्रमुख अभूषण छह्न सिंगार बनायौ, सखीरी में आज बसंत॥ पिया ज्ञान कान्हा घर आयौ॥१॥ क्षिमा महावर हित-मित महंदी, करत सुगंध रचायौ। चुरला सत्य शीलसुख भूषण संजम सील गुंदायौ॥ सखीरी में आज बसंत मनायौ॥२॥ तप डुबई नव त्याग पकिनन वृष बटपन हटायौ, गुणगण गोप गुलाल परसरस, घट वृन्द माहिं उड़ायौ। सखीरी में आज बसंत॥ पिया ज्ञान कान्हा॥३॥ भर पिचकारी भाव दयारस, पिया संग फाग मचायौ। राधे सुमति निरखि पिया नैनन, आनन्द उर न समायौ। सखीरी में आज बसंत मनायौ॥ पिया ज्ञान कान्हा घर आयौ॥४॥

अथ होरीकी चालमें पद उपदेशी राग धमाका।

अरे कर ले सुफल जनम अपना, अब कर ले सुफल जनम अपना ॥ अब कर ले० ।टेक।

कर ले देव धरम गुरु पूजा, जीवन है निसका सुपना। अरे कर ले अरे कर ले सफल ॥१॥ विषयवनमें मत जनम गमावे, यह है स्वप्न सुखका तपना। अरे कर ले सफल ॥२॥ दानशील तप भाव नभा ले, तन जोबन सब है सपना॥ अरे कर ले अरे कर ले सफल जनम ॥३॥ द्रिग सुखपर उपगार बिना सब झूठो है जगकी थपना। अरे कर ले अरे कर ले सफल जनम ॥४॥

होरी राग काफी और कान्हड़ा राजमतीकी तरफसैं।

काहो कौन जतनसैं मनाउं, पिया नेमभये मुनि वीतरागी। मैं कौन जतनसैं मनाऊं ।टेक।

भावभला सपरस, रस त्यागे। कहु कैसैं अंग लगाऊं, रसनाके रस पीछो बंजत नाहीं॥ कहा नैवेद्य चढाऊं। सखीरीमें कौन जतनसैं मनाऊं। पिया नेमभये मुनि वीतरागी॥ मैं कौन जतनसैं मनाऊं ॥१॥ तज दिये फूल फुलेल अरगजा, किस विधि अतर सुंघाऊं। किसके लिये गूंदूं फूलनको गजरा, मैं किसपै रंग छिरकाऊं॥ सखीरी मैं०।२॥ नासाद्रिष्टि स्वरूप निहारैं किसको सिंगार दिखाऊं, किसके लिये ओढूं सुख चुनरिया। मैं किस परभात भराऊं॥ सखीरी मैं कौन० ॥३॥ पशु पुकार सुन भये हैं विरागी मैं किसको धमाल सुनाऊं, किसको सुनाऊं सखी बीन बसुरिया मैं किसपै गुलाल उड़ाऊं॥ सखी कौन०॥४॥ पलटि गए विधि अरु हमारे, मैं कुलको ना लाज लजाऊं। कह दोही आरसी मेरे मातपिताजे, मैं सबसे छिमा कराऊं॥ सखीरी मैं कौन० ॥५॥

तजि सिंगार चली राजदुलारी, हो न अरजिका पाऊं।

धारे हैं पंच महाव्रत ऊद्धर, द्रिग सुख मैं शिरनाऊं॥ चलोरी मैं कीन०॥

अथ होरीमैं पद उपदेशी राग काफी।

ऐसो नरभव पाय गंवायों, हे गंवायौं। ऐसो नरभव पाय गंवायौं॥टेक॥

धनकूं पाय दान नहि दीनू, चारित्र चित न लायौ। श्री जिनदेवकी सेवा न कीनी मानुष जन्म लजायौ, जगतमैं आयौ न आयौ, ऐसो नरभव पाय गंवायौं॥१॥ विषयकषाय बढी प्रति दिन दिन आतमबल सुघाटायौ तजि सत संगयोतू कुसंगी। मोक्ष कपाट लगायौ, नरकको राज कमायौ॥ऐसो नरभव०॥२॥ स्वान सम फिरत निरंकुश, मानत नाहि मनायौ। त्रिभुवन पति होय भयो भिखारी, यह अचरज मोहि आयौ। कहांतें कनक फल पायौ॥ऐसो नरभव०॥३॥ कंद मूल मद मांस भखनकुं नित प्रति चित लुभायौ। श्री जिन वचन सुधा सम तजिके नयनानंद पछतायौ। श्री जिन गुण नहीं गायौ॥ ऐसो नरभव०॥४॥

अथ होरी राग आसावरी उपदेश रूप।

होरीका समसैं तौ बीता जाय मतवारे जीया, होरीका समैं तौ बीता जाय॥टेक॥

ज्ञान गुलालकुं वे मत ना खोवेरे, फिर पीछे पछताय। मतवारे जीया होरीका॥१॥ मोहकुं कुमेजो मार फेंकदर वे, चूर चूर हो जाय मतवारे जीया। होरीका समैं तौ बीता जाय॥२॥

मतवा दोहा—भरि पिचकारी भक्तकी कठिन वचन मति बोल। ममता तजि समता सहित भवि जीवन चिर डोल। मतवारे जीया होरीका समैं तौ बीता जाय॥३॥ तज मनाव तो वे, आतम चितवनकी, सोहं भंग पिवाय। मतवारे जीया

होरीका धर्मैं तो बीता जाय ॥४॥ कर मनका तो जी, काला मुख करके पे रासभ ओम चढाय। मतवारे जीया होरीका धर्मैं तो बीता जाय ॥५॥

मतका दोहा—क्या जीवन है मूढमैं, काल रह्यो मुस्कवाय। श्याम धुवे में देखियों, होरीसी फुंक जाय। मतवारे जीया होरीका ॥६॥ पांच कमी तोजी, मतवारे जीया होरीका ॥७॥

अथ होरीको चाल राग काफीमें पद आध्यात्मिक।

कब आवेगी न जानें म्हारी लब्धिकाल। कब आवेगी न जानें म्हारी लब्धिकाल ॥टेक॥

मैं तो था चिद्रूप चिदानन्द, धर्मसार कब जानूंगा, केसेके छूटेगी हिंसाकी चाल, कब आवेगी ॥१॥ कब अवश्य वृत धरूं निरन्तर, कब घोर व्रत ठानूंगा। तासूंगा न जानें कब अवके जाल। कब आवेगी ॥२॥ कबकु शील तनि धरूं धीरव्रत, कब मन संमह मानुंगा। नरूंगा न जाने कब भवकी झाल ॥ कब आवेगी ॥३॥ आप ही आप धरूं अब अनुभव, तब नैनानंद मानूंगा। आवे ना हमारे फिर अशुभ काल, कब आवेगी न जानि म्हारी० ॥

इति अथ इसी अष्टप अध्यायमें कविताने अपने शागिर्द चन्दनलालका नाम रखकर जो पद उसकी बलय अवस्थाके लायक उसकी फर्मायशके माफिक चालोंमें बनाये तिनका संग्रह रूप गुंनतीवा लिख्यते ॥४॥ राग परज बचन राजुलजीका समापन ॥

जसेसे बन-बन फिरूं हुं प्यारे दिलोंसे तुमने हमको विसार। जबसे बन-बन फिरूं हुँ प्यारे दिलोंसे तुमने हमको विसारो। टेक॥

किसके लिये तुम हुये दिगम्बर समझके कहना कसम हमारी। लिपटे हो आशक नैनोंके तारे होती है कैसे गुजर

तुमारी ॥अभीसे बन बन० ॥१॥ अपने न फेकूं तुम बनकूं सिधारे, हुआ हमारा नुकसान भारी। दिलकू तुमारेमें नाहू खती; पर हूँमें बिरह न दुसहन तुमारी॥ अभीसे० ॥२॥ नौ भौकी उलफतसे ढूंढनको आई, आंसूके बादल हैं चश्मोंसे जारी। राजुलकी नालिश है चन्दनके स्वामी, कीजोगा शादीकी फिरकै तैयारी॥ अभीसे बन बन० ॥३॥

अब नयन राजुलजीकी राग जोखास भैरवी है और साथ जंगलेमें भी गाई जाती है।

बिसारी सैंय्यां हमैं अकेली रे, अरे मेरा जीवन जनम अकाज। बिसारी सैंय्या हमैं अकेलीरे ॥टेक॥

व्याह समैं वैराग लिया प्रभु, त्याग दिया राज समाज। उजड़ गई चंपा चमेलीरे॥ बिसारी० ॥१॥ बिघनहरन संकटके हरन प्रभु तारण तरण जिहाज। हमारे हियां बड़े ऊमेली रे॥ बिसारी० ॥२॥ प्रभु बिनहार सिंगार तजूँ गी, लूंगी जोग तप काज। उतारो मेरी चूड़ा पछेली रे॥ बिसारी० ॥३॥ राजुल ध्यान करणत पधार्यो, चन्दनसी सनमाय। बिसारी उन सगकी सुहेली रे॥ बिसारी० ॥४॥ अरे मेरा जी तप जनम अकाज, बिसारी सैंय्यां हमैं अकेला रे ॥५॥

अथ राग कालंगडाथा परज।

तारण तरण सिरी जिनस्वामी अपना बिरद निभाना होगा। टेक॥

सबके नाथ तुमको जग बिख्यात तुमजी। नरकोंसे भी बचाना होगा॥ तारण तरण० ॥१॥ करमोंने मारा मैंठोजी, कैदमें डारा मैंठोजी। जमराजसे बचाना होगा॥ तारण० ॥२॥ चोरी या कीनीजी, दिक्षा न लीनीजी। अब मेरा ऐब छिपाना होगा॥ तारण तरण० ॥३॥ जब लग मुक्ति न होय चन्दनको, चरणोंसे अपने लगाना होगा॥ तारण तरण सिरी० ॥४॥

अथ—राग परज मन बैरागी मोरा रे ॥ बधाईरे॥ चलके सुनावो सखि आज बधाई राना मरुदेवी सुत जायोरी ॥टेक॥

सुर गोर्धं इन्द्रादिक आयेना जिन पति सुख पायोरी, जिसका जिया है कोई चढो अब अवधिपुर श्री जिनके गुन गावोरी । चलके सुनावो० ॥१॥ मुकट बंधराजा सब आये, मांढर थान सजायोरी । नंद वृद्ध सुरराय पधारैंना धनकूं उमंगायोरी, चलके सुनावो० ॥२॥ कोई जिय पूजे पावन भावे लिनाहू चरन चढायोरी, दोनूं इन्द्र चंवरक जहां ढारैं पाति गयु जप लायोरी चलके सुनावो० ॥३॥ सफल भयो अब जन्म हमारो, जय नैनानंद छायोरी । आज प्रभुके पद परसन कारन चंदन चाकर आयोरी । चलके सुनावो सखि आज बधाई ॥४॥

अथ—राग जंगला झंझोटीको ठुमरी पद हजूरी ॥

आज दुविधा मोरी मिट गई रे, सिरी वीतरागका देखी सूरत । दुविधा मोरी मिट गई रे । आज दुविधा मोरी मिट गई रे ॥टेक॥

अष्ट दरब ले पूजन आवे वीतरागके दर्शन पाये, जिनवानी कानोसैं, सुनी दुर गति मोरी कट गई रे । आज दुविधा० ॥१॥ रसना सुफल भई अब मोरी, भक्ति उचार करी जब तोरी । अब छाई आनंदकी घटा तिसना मोरी हट गई रे, आज दुवि० ॥२॥ अब मैं जन्म कृतारथ मान्यौं, गोप दहुल्य भवो बुधि जान्यौं । अब पाई मुक्तिकी डगर, भला अब पाई मुक्ति । मल मल मोरी घट गई रे, आजदु० ।३॥ जब लग मुक्ति न आवे जावे नेडे, तब लग लग भक्ति बसो उर मेरे । तेरी छवि चंदन केहिये, तन मनसे छिपट गई रे । आज दुविधा मोरी० ॥३॥

अथ गजल रागऊं झंझोटी मैंने मजो प्रति वचन राजुला।

बुनियाद तुमकूं रंजकी ठानी नचाहिये।टेक।

भीलनोके भौयों तेरा आवरा किया, वेष बहूं परना प्राव दिल जाना चाहिये। बुनियाद० ॥१॥ यह वक्त है शादीका तुम जोगी यहो गये। दीदार बिन पिनाके जगढानी नचाहि॥ बुनियाद० ॥२॥ हैवानोंकी आवाजनैं तुमकूं मलो किया, फक्कड़में महरूप जब रखनी न चाहिये। बुनियाद० ॥३॥ है मुबतिला-दीदारके चन्दनसे खाकसार, अब दिल में कुछ हूगमाज प्रभु आनी न चाहिये०। बुनियाद० ॥४॥

अथ—राग बरवा जंगला गारा झंझोटोका जिला वचन राजमतीका॥

तजिके जग संपति सैंय्यां तपकूं बन गए गए, हे मैं वारी तपकूं बन गए गएजी। तजिके जग संपति सैंय्यां तपकूं वन गए गए॥टेक॥

व्याहनकूं जूनागढ आये, सुन पशु वनका शोर रे। हमकूं रोती छाड सजन जोगीश्वर भये भये, तजके० ॥१॥ प्रीत पारी जोकन मुक्तिसैं, हमरा चौन हवाल रे। अब ना जाऊंगी साजन बहू ते दुःख सहे सहे॥तजिके० ॥२॥ जगने यात पिनासैं तुमसौं दिलव दूंगी राजजी। जोग धमरगढ छंद दिजे तेली जो नये नये। त०।३। नेम निकट राजुल दुलहनने लिया भीर भरखोगजी, चंदसे चाकर जिनके सरणा रहे रहे। तजके जग संपति सैंय्या० ॥४॥

अथ—गजल राग जंगलेकी वचन राजुलका।

काहेकूं त्यगे सिंगार बालमूरता दी प्रभुजी, बिचार क्या है। काहेकूं० ॥टेक॥

कलीफतन पर भारे खुशकीका आलम यह भारी सफगीका इजहार क्या है। काहेकूं त्यागे ॥१॥ छप्पन कोड सैनाता तोडा, दिलोंमें भारे गुब्बार क्या है॥ काहेकूं त्यागे० ॥२॥

गजल—अब दरबश हो तकसीर मेरी दासी यह गुनहगार है, इस वेहखमें तुम सिवा न। कोई मेरा मददगार है, सफगीका बह आलम तेरा दिल मैंसे तलपार है। अब जोगका मौसुम नहीं। यह दुःख मुझे बिसियार है ॥३॥ सर्मीको बर्षो गर्मीको आतिशइन तेरे दुःखोंका सुमार क्या है। काहेकूं ॥४॥ पशु बचाये तुमें रजुलके स्वामी, चन्दन आकरसे तु में इनकार क्या है॥ काहेकूं ॥५॥

छन्द—गजल राग देशकी बचन राजमतीका।

मेरा नौमीका पिया हमसैं मनाया न गया रे। मेरा नौमीका पिया हमसैं मनाया न गया रे ॥टेक॥

हाथूसे लागी मेरे इस व्याहमें खुश गुल महंदी, यह तो आतिश दहला। हमसैं बुझाया गया रे, मेरा नौमीका० ॥१॥ तनका यह जेवर अपना दिखलाऊंगी किसकूं सखनी, मेरा जोबनका बमाउ छकूं छुडाया न गया रे। मेरा नौमीका० ॥२॥ दिलमें आती है मेरे नौभवका दागहा दानू, उसकी उलफतसे लेकिन। दिलको दुखाया न गया रे। मेरा नौमीका० ॥३॥ यह शहर जूनागढ तुमक्षोंऊ जिसो मुशाहिल आला। हम तो जंगलमें खुशी घर तौ विगाना हो गया रे॥ मेरा नौ भवका० ॥४॥ बिल्कुल अब तू मैं हमें कीजिये शामिल स्वामी, यह तो चन्दनकी अरज तुमको जिताना हो गया रे। मेरा नौ भवका पिया हमसैं बिगाना हो गया रे॥ मेरा नौ भवका० ॥५॥

राग कलावती बचन राजुलका।

पिया वैरागी हो गयारी, मैंको दूर दिलौंसे डारी। पिया वैरागी हो गयारी ॥टेक॥

मेरे मांग ना छनाओ, मेरे गीत ना गवावो, मोकूं नेमपै पठावो तप काज ॥ पिया वैरागी० ॥१॥ मैं तो खोलने न पाई, भेद खोलने न पाई। सुन तात मात भाई यदि लाख पिया० ॥२॥

दोहा—हुवा दिवाना मुक्ति पर, हमकूं दई बिसार।
नव जन्मोंकी प्रीत तज, दई छिनकमें छार ॥ पिया वै० ॥३॥ मुक्तिने मोहा मेरा घर वर खोया, परपुरुषकूं भजो या तज लाज। पिया वै० ॥४॥ मुक्ति हमारी सौत दूर है जनारी। नाहीं वरूं सौ तणारी गया भाज, पिया वै० ॥५॥ मेरा खोल लेहु कगना, वाके संग तप करना सुख काज। पिया वै० ॥६॥ पहर लोनी श्वेत साडी, दीक्षा राजुलने धारी। चन्दन बाल लछिहारी महाराज, पाप मल सबके धो गयारी ॥ मैंतो दूर दिलोंसे डारी ॥ पिया० ॥७॥

राग—देशमें गजल परदेशी।

हो भोगूंको तू छांडता क्यों नांही, छांडता क्यों नाही। हो भोगूंको तू छांडता क्यों नाही ॥टेक॥

हो तू ज्वारी ऊधावे जामिप मद किया पान। होतैं ज्ञानी वे वे सदासुखदाई ॥ हो भोगूं० ॥१॥ हो शिकारी तेने वै अपने कुलकी कान। हो बिन कारन वे, मृग पर तीर चलाई ॥ हो भोगूं० ॥२॥ हो पराई मायाको चोरा कबहू न ठान। होके तूदेगी पापनी दुखदाई ॥ हो भोगूं० ॥३॥ भाषत चन्दन वे, सतगुरु बहुत बखान। हो परनारी वे नागन सुरत दखाई हो भोगूं० ॥४॥

इति अष्टमोऽध्याय समाप्तम्।

नववाँ अध्याय

अथ ज्ञान उपदेशके पदोंका संग्रहरूप उपदेशात्मक नवमा अध्याय प्रारम्भः।

खुशीरामकी फर्मायश पर त्रिलोकमें बनाया रागरेखता कवीर गजलके उपदेशी चतुर्गति चौरासी लक्ष ८४०००० जीव योनियोंकी संख्या भेद। उनासी पशुयोनि बासठलक्ष ६२००००

जगत जंजालमें प्राणी कहो किसने क्या सुख देखा विषय अभिलाष में जियरा पड़ा उसहीमें दुख देखा ॥टेक॥

काल अनंत निगोद मधि, निकसि टरयो बहु भाय। त्रस थावर संकट भरे, बासठ लक्ष पर जाय। बिना कष्ट प्रदेशनके सकल तन जन्म दुख देखा॥ जगत जंजाल में०॥ विषय अभि०॥१॥ जल थल पावक पवन तरु शूल फूल फल धार, विकलत्रयमें तू भ्रम्यों। कष्ट विपोल अपार, छेदन तापन भ्रमन भोजन दहन पाचनका दुख देखा॥ जगत० विषय अभि०॥२॥ गमन अमन जल थल बसे, छिदेभिदे पर हाथ। शीत उष्ण पावा सही, भर भर कम्पे गात। पशुगतिमें मरे जीरन, विविध मरनेका दुख देखा॥ जगत०॥ विषय०॥३॥

मनुष्ययोनि चौदह लाख।

करत मनुष भव भवन छिय जनरथ वृन्द अपार। लोक लाज परलोक भय, कियो न कछू विचार। मनुष भव नाथ यद हुआ। विषयमें सुक न दुक देखा॥ जगत० विषय०॥४॥

दोहा—विषय कषायनतें गयो, राज तेज कुल वंश। तीनों ताका दे गये। रावण कौरव कंस, वसुबल नादवोंने भी नष्ट हो भ्रष्ट दुख देखा॥ जगत० विषय०॥५॥

दोहा—राव रंक भयो पारधो, पुत्र हीन बलहीन, कबहुक रोगी निर्द्धनी। कबहुक पायक हीन, कमू बिन नैन करजिका। कमू बिन पाय दुख देखा॥ जगत० बिषय०॥६॥

दोहा—बिना धर्म रुचि तूमरा, रुल्या जगत जंजाल, जिन बच श्रद्धा ना करी। डूब्या भ्रम जंजाल, खार उदूमिसे थकी, अबत् श्रद्धाके दुख देखा॥ जगत० बिषय०॥७॥ कोध लोभ अरु मोहबस, जिनन कियो तन खार। नरभव चिंतामणि रतन, दियो उदधिमें डार। बिषय मधुबिंदु कूप नमें, खरा नहि काज झुक देखा॥ जगत० बिषय०॥८॥ चौदह लक्ष नर जातिमें, भ्रम्यो बिषयबश मीत। मिथ्या अव्रत जाग तजि, तजि श्रद्धा बिपरीत। सदासैं मोहमें फंसिके, तैं नर भौ मैं।। दुख देखा॥ जगत० बिषय०॥९॥

नर्कयोनि चार लाख ४०००००

द्युतं मांस सुरा वेश्या, पापर्द्धि चोरिका तथा। परस्त्र गमनं चेति, जगज्जंजाल दुखरा। तदुद्भवकं पापातेन नरक होरबका दुख देखा॥ जगत० बिषय०॥१०॥ दण्डक टोलीले तुके, फोड दई दोऊ आंख, ऊधे मुख लटकाय दिय। चार दरो तन फांक, कश्चित् धिय न काश्चित् बिशन् कश्चित् असमन्ता दुख देखा॥ जगत० बिषय०॥११॥ धोंक्यो ऐरन हारवैं, हाक्यो भाड मंझार। तब ऊकतां पापाहिके पोज दियो मुखफार, परस्त्री पाप पाकेन। कृतघ्नो होइ दुख देखा॥ जगत० बिषय०॥१२॥ तेल तल्यो कोल्हू पिल्यों, पदड दिखाई शूल। चार लाख गति नारकी, सम गिराई धूल। पडा करणीसैं वैतरणी, नरकमें भी ए दुःख देखा॥ जगत बिषय०॥१३॥ कब ऊ काहू पुन्य सैं पाई सुरपद जाय, भूतप्रेत राक्षस भयो। किलबिस तीव्र कषाय, सुरगमें भो बिना सम्यक्। बिरद उद्भूत

दुःख देखा ।। जगत बिषय० ।।१४।। गज घोटक वाहन दिये, अरु भया वाहन जाति । हीन ऋद्धि लखि लखि झुर्यो, पर संपति न सुहात । अमर भी नाम धराया, तदपि मरनेका दुःख देखा ।। जगत बिषय० ।।१५।।

देवयोनि च्यार लाख ४००००० ।

च्यार लाख सुरजातिमें, मैं जरयो बहु घोर । चौरासीमें तू रुल्यो, पुन्य पापके डोरे । अलंभ लखो फेरो चौरन, बिना समताए दुःख देखा ।। जगत बिषय० ।।१६।। तजि त्रिशल्य त्रय मूढता, दर्शन ज्ञान अराधि । है पैंडा शिव पंथकी, श्री जिन भक्ति समाधि खुशी हो तो समझ हमने । तो हग सुख होमें सुख देखा ।। जगत बिषय० ।।१७।।

अथ—रागनी धनासरी पद उपदेशी तथा भैरवी ।

अब तू निज घर आव, अब तू निज घर आव । चिदक मन अब तू निज घर आव ।।टेक।।

चिद्रूप त्याग सुनु जिनशासन, मत चौरन घबराव । पावैगो निज सुमरो सुमकूं, श्री जिन धर्म पसाव । चिदक मन अब तू निज ।।१।। गति इन्द्री अरु काय जोग पुनि, जाना वेद कषाय ज्ञानभेद अरु संजम दर्शन । लेश्या भव्य सुभाव ।। चिदक मन० ।।२।। समकित सैनी और अहारक, चौदह मारग नाम । नाम थापना दर्व भाव करि, तस्व दरप दसाव ।। चिदक मन० ।।३।। यों जगरूप विचारि शुभाशुभ, करि थिरता भाव हरै । परम प्रगटै नयनानन्द, भ.वी सुगुरु उपाव ।। चिदक मन० ।।४।।

अथ राग धनासरी पद उपदेशी तथा देश भैरवी ।

क्यों तुम कृपण भए, हो सुघर नर क्यों तुम कृपण भए ।।टेक।।

घटमें ज्ञान निधान तुमारे सो क्यों दाबि रहे, भटकत विषय तु धनकूं खोवत। नृप हो रंक भए, हो सुघर नर क्यों तुम कृपण भए ॥१॥ विपत कालमें धन मन खरचत, ले लेकर वन ए। तुम धनवन्त होय दुःख पावो, मूरख भाव गए ॥ हो सुघर नर० ॥२॥ कब ऊक सूकरकूकर उपजत, कब ऊक बैल भए। मिटत पिटत नरकके माहो। डाढन एह रहे ॥ हो सुघर नर० ॥३। दान शील तप भावन भावर, संजम क्यों न लए। जाते नैनसुख तुम पाते, जाते धर्म दहे ॥ हो सुघर० ॥४॥

राग रेखता, पद उपदेशी अध्यात्म।

न फूलो दिलमें ऐ यारो पराई देख कैसा मन, बदसूरत गुजर सकें छुटाल्यो इसके लब दामिन् ॥टेक॥

नजर तुम पै मिलावैगी, तेरे दिलकूं भ्रमावैगी। तडफ कर जान जावैगी, डसेगी दिलको यह नागन् ॥ न फूलो० ॥१॥ इसीका खेयाल जब आया, बड़ा कीचकनें दुख पाया। सुना है जैन शासन में गया है नर्कमें रावन ॥ न फूलो० ॥२। अगर कुछ नैन सुख चाहो, न इसके फंदमें जावो। नरकमें मार खावोगे, न होगा हां कोई लामिन ॥३॥

अब राग ठेठ बरवा ठुमरी उपदेशी।

जिया ना लगावे रे देख कै पराई माया। जिया ना०। टेक॥

पुत्र कलित्र पराई सम्पति, इन संग मत ना ठगावे ना ठगावे रे ॥ देख क पराई ॥१। पुद्गल भिन्न भिन्न तुम चेतन, अन्त न संग निभावे ना निभावे रे ॥ देख कै० ॥२॥ मत कर विषै भोगकी आशा मत विषवेल बढावे नाह ना बढावे रे ॥ देख कै० ॥३॥ नैनानन्द जे मूरख प्रानी, खोवत धर्म लगावे रे। देख कै० ॥ जिया ना लगा० ॥४॥

अथ रागनी भैरवी अथवा खम्माच। पद उपदेशी।

वृषसैं मनोपा क्यों फेरी रे आतम रे। वृषसैं मनोपा० ॥टेक॥

याही बिन जिया रे, भव वन भटक्यो रे। और कुगतिया भई तेरी रे॥ आतम रे वृषसैं० ॥१। सुख वंछत जिया रे, दुख उपजत है रे। कोटि कुगतिया भईनेरी रे॥ आतम रे वृषसैं० ॥२॥ जिन प्रणीत जिया रे मारग चूकत रे, मारैगो काल अहेरी रे। आतम रे वृषसैं० ॥३॥ मृगतृष्णाकूं तूरे, क्यों जल जल जानत रे। त्रिग सुख होत अवेरी रे॥ आतम रे वृषसैं मनो० ।४॥

अथ राग धनाश्री।

तजि पुद्गलको संग, तजि पुद्गलको संग। अज्ञानी जिया तजि पुद्गलको संग ॥टेक॥

तुम पोषत यह दोष करत है, पयपिय जेम भुजंग। बड़-वानल सम मूरि भयानक, घायक आतम अंग॥ अज्ञानी ॥१॥ या संग पंच पाप मैं छिय चौमुगती कुगति कुढंग, परिवर्तनके दुखद ऊराये याहीके पर संग। अज्ञानी ॥२॥ शीकारवादि संग कागरके हो चतवादि विहंग, मूपनको मूछनको संगति ठानत लावर भंग॥ अज्ञानी ॥३॥ अजहूं चेत भई सोमई है रे मद मत मतंग, नयन सुख सतगुरु करुणानिधि। कहत विमल अभंग ॥४॥

अथ रागनी ठुमरी बरवा पद उपदेशी।

सब करनी दया बिन थोथी रे ॥टेक॥

जीव दया बिन करनी निरफल, निष्फल तेरी पोथी रे। सब करनी दया बिन थोथी रे ॥१॥ चन्द्र बिना जैसें निष्फल रजनी, आब बिना जैसे मोतीरे सब करनी० ॥२॥ नीर बिना जैसे सरवर निरफल, ज्ञान बिना जीया ज्योतिरे। सब करनी ॥३॥

छाया हीन तरोवरकी छबि, नैनानन्द नहि होवीरे वश करनी ॥४॥

अथ राग देश उपदेशी।

मुक्तिकी आशा लगी, अरु मह्मकूं जाना नहीं ॥टेक॥

घर छोडके जोगी हुवा, अनुभावकुं माना नहीं। जिन धर्मकूं अपना सगा, अज्ञानतें माना नहीं। मुक्तिकी आशा लगी ॥१॥ आहरमें तू त्यागी हुवा, पातिन तेरा छाना नहीं। ऐ यार अपनी मूढमें विषवेल फल खाना नहीं। मुक्तिकी आशा लगी ॥२॥ संसारकूं त्यागे बिना निर्वाण पद पाना नहीं। संतोष बिन अब नैनसुख तुमकूं मजा आया नहीं। मुक्तिकी आशा लगी। ३॥

अथ राग सारंग उपदेशी पद।

न कर करमकी तू आश रे, अरे जिया न कर करमकी तू आशरे ॥टेक॥

अंतराय भई प्रथम जिनेश्वर, जाके सुरपति दासरे। द्रव्य क्षेत्र अरुकाल भाव लखि, तजि विषकी विश्वासरे। अरे जीया ॥१॥ छहूं खंडको नाथ भरतनृप, मान गलित भयो तासरे। जीता सती इंद्र करि पूजत, भयो विजन बनवासरे। अरे जीया० ॥२॥ खगधर वंश तिलक नृप रावण, करमन ते भयो नाशरे। तीर्थंकरकूं होत परीक्षा, करम बडे ऊखरासरे। अरे जीया० ॥३॥ आशा करत करम सरवाबत, ज्यों पय पोवत खांसरे। नैनसुख चिरकाल भयो अब, दाढो गलकी फांसरे। अरे जीया न कर करम० ॥४॥

अथ लावणी राग जंगला गारा। पद उपदेशी।

क्यों परमादी हुवा वेसुऊकूं बीता काल अनन्ता। क्यों परमादी हुवा वेसुऊकूं बीता काल अनन्ता। टेक॥

आयो निकसनि गोदवेरे, भटक्यो बाहर क्योंवि। मिथ्या

दरसन तेहन मारे, मूजड पावक पीत। क्यों परमादी हुवा ॥१॥ भारी काया दाहकीरे, दहन पवनके हेत। सूक्ष्म और थूल तन धारची, तउ हूं न करता चेत। क्यों परमादी हुवा० ॥२॥ विकल त्रयतें अमंदरे, भयो असैनी अंग। सैनी होहि कामें रच्यौं पीवई विश्वा भंग। क्यों परमादी हुवा० ॥३। सुर नरनार दजोनिमेरे, इष्ट अनिष्ट संयोग। दर्शन ज्ञान चरण भर भाई, नैनानन्द मनोग। क्यों परमादी हुवा बेसुऊकूं पीता काऊ दानंवा ।.४।

अथ राग दरवा पद परत्रो निषेधका उपदेश।

यह तो काली नागेनीरे, जीया काली नागेनी। जीया तजो पराई नार, यह तो काली नागेनीरे ॥टेक॥

नारी नायो नागेनीरे, यो है विषकी बेल। नागन काटै कोपसेरे, यो मारे हंस खेल यो तो काली नागेनी। जीया तजो पराई० ॥१॥ वावां करतो औरछेरे, मनमें राखे और, वाकूं मिले औरकूं चाहे। वाकूं दलके और, यो तो काली नागेनीरे। जीया तजो पराई० ॥२॥ नैन मिळाये मजूं बंधे अंग मिळाए कर्म, धोखा देके दुःखमें डारे। याहि न भावे कर्म। यो तो काली नागेनी० ॥३॥ तर्थंकर एचाकूं त्यागैं, जो त्रिभुवनके राय, नैनानन्द नरककी नगर, सद्‌गुरु दई बताय। यो तो काली नागेनी० ॥४॥

अथ राग बिहाग खास तथा खम्माच खासमें गाना पद उपदेशी।

अरे जीया जीवदयासे तिरेगो, दया बिन भर भर जनम मरैगो।.टेक॥ पर शिर काटि जीव निज चाहत, रे शठ तापत भ्रम भरेगी। अरे० ॥१॥ दोष लगाय पोख निज चाहेजी, मछिदे करु नरक परैगी। अरे० ॥२॥ छळकर परधन हरण

धितारै, दिन दिन नमक समान गरैगो। अरे०॥३॥ सेय कुशील विषे विषखोपत अहिमुख अमृत नांहि झरैगो। अरे०॥४॥ ए पण पाप त्यागि दृग आनन्द, धरमसदा बुधि धाकर धरैगो। अरे जीया०।५॥

अथ ठुमरी पीलूकी राग कजरी पूर्वी।

भजन बिन काया तेरी योंही रे चली। टे॰॥

बालापन न तेरो गयं रे खेलते, जोबन विषयको यह अबार्त रे टली। भजन बिन०॥१॥ लाग रह्यो महफा जाहि खेलत, कोने अघ भारी पर नारी रे छली। भजन बिन० ॥२॥ वृद्ध भयो तन कंपन लाग्यो, दृष्टि कुराती तेरी प्रीत रे टली। भजन बिन०॥३। नैनानन्द तजो जग आशा मानो सतगुरुकी ये सीख रे। भजन बिन०।४॥

राग ठुमरी बरवा पीलू या बिहाग खास।

नाहि कियो भजन जिया बीत्यो काल वृथा रे॥टेक॥

निगोदिनि माह रुलयो दुखसागर, मूजल दाम दया रे। नहि कियो०॥१॥ सूक्षम थूल तरावर उपज्यो कृमि पिपील अंगारै। नहि कियो॥२॥ पंचेन्द्री भयो समनतन, किये पाप लभिचारे। नहि कियो०॥३॥ जूआ खेल मांस मद भखे, कुपथ न तज मद रे। नहि कियो०॥४॥ अब तज भजि परमातम पद, जो त्रिभुवनमें सारे। नहि कियो॥५॥ नैनसुख भगवन्त भजन बिन, कह उतरोगे पारे। नहि०।६।

अब राग ठुमरी बरवा पीलू पुनः।

थिर रहे ना जगमें, मत ना जीव बिगुंचे, थिर रहे न मतमें। ना जीव बिगुंचे॥टेक॥

जीव मतायें नष्ट होत हैं, राज तेज अरु बन्धि ॥थिर० ॥१॥ जीव दुखाय नष्ट भये जादव, द्वणक माप विध्वंसे। थिर रहे न० ॥२॥ ब्रह्म सतायें गए नरकमें। रावणकी रीसमें ॥ थिर० ॥३॥ दयावन्त उन्नत पद पावें। तीर्थंकर जग सेवें ॥ थिर० ॥४॥ नैनानन्द दयातें शिव पद पावें सन्त महंतें ॥थिर०॥५॥

अथ—ठुमरी खम्माचकी ॥

अरे भैय्या तजि विषियोंकूं चेतनजी। अरे भैय्या तजि विषियोंकूं चेतनजी। अरे भैय्या तजि० ॥टेक॥

यहै सुगुरु पुकारे, अरे मेरे प्यारे। भव भोग नागकारे, इन क्यों तजि देवनजी। अरे भैय्या तजि विषियोंको चेतनजी ॥१॥ ए हैं धान रीते भव काननके चीते। तोहि थिर दाब बीते, कीनो छेदनकी। अरे प्यारे० ॥२॥ जोबनको पक्षी हैं ये। भोडनको पक्षी हैं ये, मौतको मवली। बहु विपत निवेदनजी। अरे भैय्या ॥३॥ द्रिग सुखचाह जिन्हें। तिनको सुगुरु भनें, ये तो मतवनें। एहैं वैरी परे तनजी, अरे भैय्या तजि विषयूंकूं चेतनजी ॥४॥ अरे भैय्या० ॥

अथ—राग मांडदेशकी ठुमरी उपदेशी ॥

सुनरे गंवार निजके उधार तेरे घट मंझार, पर घट विहार मत फिरे ख्वार छांडोको सुरझाव। सु० ॥टेक॥

तजि मन विकार अनुभवकूं धार कर बार बार निज पर विचार तूहै समयसार अपने ही गुन गाले। सुनरे० ॥१॥ तुही भव सरूप. तुही शिव सरूप, होके ब्रह्म रूप पड़ा नर्के कूप विसयनके तूर चेतो मनकूं हटाले। सुनरे० ॥२॥ कहे

दाय तैन। आनन्द दैन, सुन जैन वैन। आसु होय चैन, तजि मोहसे न नरभौ फल पाके रे सुनरे० ॥३॥

अथ—राग खास बरवेकी ठुमरी उपदेश ॥

सुन सुन रे मन मेरी बतियां, अब कछु करो नाम वाई जग मैं रे। सुन सुनरे० ॥२॥ ने मन तप न दान मन भावत। ढूंढत संपति पग पग मैं रे, सुन सुन रे० ॥३॥ भजन क्षमाबिन भाव शीलकै। भगसैं भागिवे भग मैं रे० ॥४॥ किह बिधि सुख उपजै सुनि बीरण, कंटक कूलोप मग मैं रे। सुन सुन० ॥५। द्रिग सुख धरम लसन बिन बिसरत्यौं, अन्तरकौं न मनुष खग मैं रे ॥सु०॥६॥

अथ—जोगिया आसावरी पद उपदेशी ॥

पापनसें नित डरिये, अरे मन पापनसें नित डरिये। टेक॥

हिंसा जूठ वचन अरू चोरी पर नारी नहि हरिये, निज परकूं दुःख दय निदायन। तृष्णा वेग बिसरिये, अरे मन पापन० ॥१॥ आते पर भव विगडे बीरण पेखोंडा मन करिये, क्यों मधु बिंदू बिखेके कारण अन्ध कूप मैं परिये। अरे मन पापनसे ॥२॥ गुरु उपदेश बिमान वेठके ह्यांते वेग निफरिये, नयनानन्द अचल पद पावे भव सागर सूं तरिये अरे मन पापन० ॥३॥

इति नवमोऽध्याय संपूर्णम्।

दशवाँ अध्याय

अथ—अनुभवात्मक अध्यात्म पदोंका संग्रह रूप दशम अध्याय लिख्यते रेखता कानी रागमें पद अध्यात्म ॥

कहे कर्ता करम सेती, सुनों सुत मीनकी पती। कुरामें क्या किया तेरा, तू दुश्मन हो गया मेरा। टेक॥

तेरे दर्शनको रूचि आई पराई नारग कठाई, जबसे तू हुआ पैदा। कहाया पुत्र तू मेरा। कहे कर्ता० ॥१॥ तेरी परवशके खातिर, इते बनमें पशु खातर रहा गणिकाके घर निशदिन। दिया तेरे खातरें डेरा, कहे कर्ता० ॥२॥ तेरी इश्मतको देख्ननको। छुड़ाया साथ मेरे मनको, जुवेमें खो दिया धनको। कसा चोरीये चित मेरा। कहे कर्ता० ॥३॥ लगी मदिरा मुजे प्यारी, सहा दुख बहु दुःख भारी। धरा तेरा नाम शिथिलामो, रहूं हाजिर जैसा चेरा। कहेक० ॥४॥ बडे दुःखसे तुजे पाला, मुजे तें पेदमें डाला। सात यारोंको सग लेके, उजारा खोज तें मेरा। क० ॥५॥ न करता जो मैं यह नाता, तो मैं अब नैन सुख पाता। अगर कोई अछु बर होता, न लेता नाम वह तेरा। कु०मैं० ॥६॥ तु दुश्मन हो गया, कहैं कर्ता कर्म सेती। सुनो सुत मीनकी पती। कहै कर्ता० ॥७॥

अथ—रागनी जोगिया असावरीमें पद अध्यात्म ॥

है कोई हित् तू हमारे, जो हमकूं दुःख जगतें निकारे टेक।

आंचो पन्थ हमें बतलावे, साचे बैन उचारे। राग दोखसे मत नहि पोखे, सब पर सुहित चित धारे जो हमकूं दुःख है कोई० ॥१॥ हम दुःखिया दुःख मेटन आये, जनम मरणके हारे। जो कोई हमकूं कुमति सिखावे, कोई शत्रु हमारे। जो

हमकूं डूबत। है बोही०।।२।। कोटी ग्रन्थको सार यह है, पुन्य रख पर उपगारे। द्रिग सुख जे पर अहि तदि मारें। ते पापी हत्यारे जो हमकुं। है बोही० ।।३।।

अथ—राग देशना सोरठ पद अध्यातम ।।

म्हारी श्रद्धामें भंग पर्‌यो, सरधामें भंग पर्‌यो, हे मिथ्याकी मैं भाव धर्‌यो। म्हारी श्रद्धामें भंग पर्‌यो ।।टेक।।

च्यारों कषाय गिनी हम अपनी, मद जोबनके भर्‌यो। हे कुदेवोंको संग कर्‌यो ।।म्हारी ।।१।। दरव करमकी ममता तनमें, आप ही आप जर्‌यो। हे कुलिंगीको स्वांग धर्‌यो, म्हारी० ।।२।। भाव करम नो करम जुदे हैं, मैं चैतन्य खरे। कुज्ञानीके पन्थ पर्‌यो, म्हारी० ।।३।। ज्यों तिल तेल पुहपनमें दधिमें घी बसर्‌यो, हे अनादिको जोग जुर्‌यो। म्हारी० ।।४।। मुक्त भये बडभाग नैनसुख, तेल खितोड पर्‌ये हे कडाहड सिध कर्‌यो। म्हारी श्रद्धामें० ।।५।।

अथ रागनी काफी पद अध्यातम।

कब आवेगी न जानें म्हारी लब्धिकाल, कब आवेगी न जाने ।।टेक।।

मैं तो चिद्रूप चिदानन्द समैसार कब जानूंगा, कैसे कै छूटेगी हिंसाकी चाल कब आवेगी० ।।१।। कब दसल्य व्रत धरूं निरन्तर कब चोरी व्रत ठानूंगा। तोडूंगा न जाने कब लबके जाल, कब आवेगी० ।।२।। कब कुशील तजि धरूं शीलव्रत कब धन समता मानूंगा। तजूंगा न जाने कब भवकी ख्याल, कब आवेगी ।।३।। आप ही आप लखूं कब अनुभव तब नैनानंद मानूंगा। आवे ना हमारे फिर अशुभ काल, कब आवेगी न जानें म्हारी लब्धिकाल कब आवेगी न जाने ।।४।। इति।

अथ दयाकी महिमाके विषयमें मरहठी लंगडी रंगतकी जिसके ४ चौक हैं जिनमें पंच पापका त्याग है।

बन्धे है अपनी भूलसे बन्धो बन्धे बन्धे मर जावेंगे, दया जीवकी करेंगे तो हम भी सुख पावेंगे ॥टेक॥

दयासे परजा करेगी राजा दयासे सन्त कहावेंगे। दयाके कारन सेठ साहूकार बतावेंगे ॥१॥ जो दुखियाकी मदद करेंगे दूध जगमें जस पावेंगे। विपतकालमें वहो फिर मदद पहुंचावेंगे ॥२॥ धन जोबनके मदमें हम तुम जिसका जीव दुखावेंगे, पुण्य गिरेगा तो वे फिर छातीपर चढ आवेंगे ॥३॥ छेदें अरु भेदेंगे उनकूं काट खावेंगे। दया जीवकी करेंगे तो हम भी सुख पावेंगे ॥ बन्धे है अपनी भूलसे० ॥४॥

झूठ वचनसे मान घटेगा अरु जिसके ठग आवेंगे। सत्य वचन भी कहेंगे तो सब झूठ बतावेंगे ॥१॥ वसुराजाकी तरह झूठसे नरक कुण्डमें जावेंगे। सत्यघोषकी तरह फिर राजदण्ड भी पावेंगे ॥२॥ चोरीके कारनसे प्रानी कुल कलंक लग जावेंगे। रावणकी ज्यों वंश अरु वेलका नाश करावेंगे ॥३॥ फिर नरकोंमें उनके मुखको फूंका नाक जलावेंगे। दया जीवको० बन्धे हैं०॥४।

मैथुन व्यसन बुरा है प्रानी जो इसमें फँस जावेंगे। उन जीवोंके बीज अरु वंश नष्ट हो जावेंगे ।१॥ फिर उनके संतान न होगी तो मर जावेंगे। जो न मरेंगे तो उनके तनसे रोग न जावेंगे ।२॥ नरकोंमें उनकूं लोहेके थम्भोंसे लटकावेंगे। लोहेकी पुतली गरम करत छातीसे चिपकावेंगे ॥३॥ हाहाकार करेगा जब वो मुखमें जाम चढावेंगे। दया जी० बन्धे०।४॥

जिनके नहीं परिग्रह संख्या तृष्णावन्त कहावेंगे। लोभके कारण झूठ अरु चोरीमें मन लावेंगे ॥१॥ गुरुकूं मार देवकूं वेचें सभामें धर्म उठावेंगे। बाल वृद्धके कण्ठमें फांसी दुष्ट लगावेंगे ॥२॥ राजा पकड धरे शूलीपर फेर नरकमें जावेंगे। वचन अगोचर नरकके बहुत काल दुःख पावेंगे ॥३॥ कहे नैन-

सुखदाय दयाके सब संकट कट जावेंगे, दया बीबरी० बन्धे है अपनी मूढसे० ॥४॥

अथ राग बिहागकी ठुमरी अध्यातम।

देखो मूढ हमारी हम संकट पाए देखो मूढ हमारी ॥टेक॥

सिद्ध समान सरूप हमारो, डोलूं जेम भिखारी। हम संकट पाए, देखो मूल हमारी ॥१॥ पर परणति अपनी अपनाई, पोट परिगृह भारी। हम० ॥२। द्रव्य करम अब भाव करम कर, निजगल फांसी डारी। हम० ॥३। नोकर मनतैं मलिन कियो चित्त बाधे बन्धन भारी ॥ ४ ॥ बोये पेड बाबूल जिनोंने खावे क्यों सहकारी । हम० ॥ ५ ॥ करम कमाये आगे आवे, भोगें सब संसारी। हम० ॥६॥ नैनसुख अब समता धारो, सतगुरु सीख उचारी। हम० ॥ ७ ॥

अथ जैन मत व्यापार राग जंगला।

बीनाजी मैं बीना जगमें जैन मत अखत्यारीजी ।टेक॥

धर्मद्वीप दुर्गम्य दिशा बरबत गुरु संग व्योपारीजी। केवल-ज्ञान खानसे लेकर माल भरे हैं भारीजी ॥ बीना० ॥१॥ धर्म काष्ट केश कटा कीने, द्विविध करम वृष भारीजी। भक्ति आरके हांक चलाये, आगम सडक संभारीजी। बीना० ।२॥ सत तत्व अरु नव पदार्थ भरि, तीन गुप्त मणि सारीजी। भवि जहुरी बिन कौन खरीदे, खेय मोह दस्हारीजी। बीना० ।३॥ मिथ्या देश उलंघि जतनसे भवसमुद्रसे पाराजी, नैनानन्द खेर गुरु जनसंग, मुक्ति द्वीपमें ढरीजी। बीनाजी मैं बीना, जगमें जैन मत अखत्यारीजी ॥४।

इति दशमोऽध्याय सम्पूर्णम्।

ग्यारहवाँ अध्याय

अथ हथनापुर क्षेत्र पर पद बनाए तिनके संग्रहका एकादशम अध्याय लिख्यते।

राग जंगलेकी ठुमरी पकी।

हथनापुर तीरथ परसनकूं मेरा मन उमंगा जैसे सजल घटा। ॥ हथनापुर० ।टेक।

पूजत शांत प्रशांत भई मेरी विषय अगन आता पलटा ॥हथ०।१॥ सुख अंकुर उद्दे घर अन्तर अब सब दुख दुर्भिक्ष हटा। ।हथनापुर०॥२॥ धन यह भूमि जहां तीर्थंकर। धरि आतापन योग डटा। ॥ हथनापुर०।३। नयनानन्द, अनन्द भए इस पर शिव पोवन गंग डटा। हथनापुर तीरथ परसनकूं मेरा मन उमंगा जैसे सजल घट।४।

पद हथनापुरका रागनी जंगलकू।

अरे गजपुर नगरकी डगर बताय, हे बीरा दूंगी दरब अपार। गजपुर नगरकी डगर बताय ॥टेक॥

झांझर दूंगी पायल दूंगी दूंगी कड़े निकाल, गजपुर नगरकी। हे बीरा दूँगी दरब अपार।गजपुर०॥१॥ कर्णफूल चूड़ामणि दूंगी, मुंदरी रतन जड़ाय। शांत कुंथु अर मल्लिनाथके, चरण छुऊं परसोंय ॥गजपुर०॥ हे बीरा दूंगी दरब॥२॥ ओशन दूंगी पहुंची दूंगी, दूंगी मोतियन माल। चरण रहै दरु कर्म कटैं, ज्यों निरखिनि रवि मृणाल, गजपुर नगरकी डगर बताय॥ हे बीरा०॥३। जिनगुण गावत हरख बढ़ावत चल मेरे बीर अगार, सुवरण थार रतनमई दूँगी। ले चल अरज सुधार गजपुर॥ हे बीरा० ॥४। नैनानन्द कहै या जगमें, पाये दुख अपार। अब बीर नमोंहि प्रभु ढिग ले चल मानूंगी उपगार॥ गजपुर ॥ हे बीरा० ॥५॥

अथ राग परवेकी ठुमरी हस्तनापुरकी।

यह तो तपोवन वड वन है रे, जहां लिया जिन ज्ञानैं जोग धरी एजी जहां लिया जिन दीक्षानैं जोगरी ॥यह तो० टेक॥

चक्रवर्त भये तीन जिनेश्वर जानत हैं सब लोगरी ॥यह तो तपोवन ॥१॥ तृणवत तजि वनकूं गये प्रभु। त्याग सकल सुख भोगरी। यह तो० ॥२॥ गरभ जनम तप केवल ह्यां भयो, बानी खिरी शिव जमघरो ॥यह तो०॥३। पहुंचे जब जिरे इस वनमैं कट गए कर्मकु रोगरी ॥ यह तो० ॥४॥ शांति कुंथ अर मल्लि पद लिखे, मिट गये मेरे सब सोगरी ॥ यह तो० ॥५॥ नैनानन्द भयौ बडभागन। हस्तनापुर संजोगरी ॥ यह तो० ॥६॥

अथ राग रजवाडा।

पद धर्मशालकी क्षुल्लकजी हस्तनापुरकी यात्रामें बनाया।

चलो रे भाई धरमका मेला देखिये मैं वारी चलो धरमका मेला देखिये। क्षुल्लकजी आये चढा दूरसैं चेलोकियां ॥ चलो धरमका मेला देखिये ॥टेक॥

पंचमकाल करालमें, कठिन धरम व्यापार। तातैं अणुव्रत धार रे। पलैं पंचमगाम, धरमध्यान जाका नाम है चेलेकियां ॥ चलो धरमका मेला देखिये ॥ क्षुल्लकजी आये ॥१॥ सिद्धसेन मुनिराजके, हैं ये शिष्य महान्। चार तीरथ वन्दनकूं, कारज आत्म कल्याण तजि तृष्णा ममता धरी चेलेकियां ॥ चलो धरम०॥ क्षुल्लकजी० ॥२॥ पांच हाथ कुछ कम है, नर कर्मवश लिये धार। पण्डाल पीछा रही, दरज सब जन दियौ सार। रोपनमें संवत लियौ ॥ चेलेकियां ॥ चलो० क्षुल्लक० ॥३॥ संवत विक्रम भूपको, उन्नीससैं उनतीस। दिल्लीमें पाप किया, धरम दियौ बख्शीस ॥ महिमा फेरी चहूं खंडमें ॥चेलेकियां॥ चलो धरम० ॥ क्षुल्लकजी० ॥४॥ सुरकू गये मानक पनें, दियौ

पाय पखारा जाऊं तीर्थकूं ॥ चेचेलियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥५॥
आया कातिग मास जब, पावस भयो बिलीन। तीरथ बन्दना कारनैं, कियो बिहार बिनोद ॥ बिछुरा फिर गई सारे गुलरमें ॥ चेचेलियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥६॥ दिल्लीके सब भाईयों, करके सकल समाज। पंच सुखारा फेरियो, एक पन्थ दो काज ॥ जिनदर्शन क्षुल्लक मिलन ॥ चेचेलियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥७॥ देश देशके जिन भुवन, धन धनके हो हां संग। रथ गजबाजी लेयके, छाये उमंग उमंग ॥ दुन्दुभि बाजैं जै जै धुनि रटैं ॥ चेचेलियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥८॥ कातिग दुरी पुन्यूं दिना, उत्सव भयो महान। दास नैनसुख यों कहै, करो मोहि कल्याण ॥ पुण्य पदै दर्शन मिलैं ॥ चेचेलियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥९॥

इतिश्री एकादशमोऽध्यायः सम्पूर्णम्।

अध्याय बारहवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ अठ्ठाइयाके पदोंका संग्रह अध्याय बारहवां लिख्यते।

राग दादरे पीलूका ठुमरी अठाइयाकी।

न्हवण क्यों नहीं करै अरे नर न्हवण क्यों नहीं करै। तू तौ भवसागरसूं तिरै अरे नर न्हवण क्यों नहीं करै ॥टेक॥

सुबरण कलश शीश पर धरके, ल्याओ प्रासुक जल भर भरकै। ढारो प्रभु पर मन्त्र उचरिकै, जन्मजरामृत टरै ॥ अरे नर न्हवण ॥ तू तौ भव० ॥ अरे नर० ॥१॥ चन्दन घस चरणोमैं चढ़ाओ, उलटी भव आतापकै मिटाओ। अक्षतसैं अक्षयपद पायो, पुष्प मदन दुख हरै ॥ अरे नर० ॥२॥ दीपक मोह तिमरको नाशै, ज्ञान भानु घटमैं परकासे। क्षुधा रोग नैवेद बिनाशैं, धूपसैं वसुविधि जरैं ॥ अरे० ॥३॥ फलसैं फल मुक्तीको पावो,

अरघमें फेर न जगमें आवो। नैनसुख मत समय गमावो, कर ले जो कुछ करे॥ करे० ॥४॥

ख्याल चौकवंध राग जंगला अष्टजात्राके खत पढ़नेका स्पर्शइन्द्रीहूंर।

तू तो करले सिरीजीका न्हवन जातरा अबकी। तेरे सिरसे पापकी पोट ज्यों हो जाय हलकी॥टेक॥

अरे तेने मल-मल धोई देह खिडाए पानी, नहि किया सिरीजीका न्हवन अरे अज्ञानी॥१॥ अरे तेने छपरखटके बन भोगे भोगे घनेरे, नहि भए तदपि सम्पूर्ण मनोरथ तेरे॥२॥ अरे तेने ब्रह्मचर्य गजराज वेचिखर कीनों, ले जगत कलंक चले दुर्गति कहा कीनों॥४॥ अरे अब हूँ चेत चेत खबर नहीं कलकी, तेरे सिरसे पापको पोट ज्योंहो जाय हलकी॥४॥ तू तो करले सिरीजीका न्हवण जातरा अबकी। तेरे सिरसे पाप०॥५॥

रसनी इन्द्री द्वार शीक्षा जक जात्राकी, ख्याल दलंगी छन्द।

तेने रसनाके वश पुद्गल सब चख लीने, तेने मून मुख चपट चायकूं संकट दीने॥१॥ तेने भाखो नीरण विकथा असत कहानी, दुर्वचनके घीधे मरम सताए प्राणी। तेने पावे नागर पान लोभकूं कोडी, तेनेरी तदपि रही यह जीभ थूकसे जाडी॥२॥ अब करले भजन मेरे वीर आशा तजि कलकी, तेरे सिरसे पापकी पोट ज्यों हो जाय हलकी। अब करले सिरीजीका न्हवण जातरा अबकी। तेरे सिरसे०॥३॥

नासिका इन्द्री द्वार शीक्षा दक जात्राकी, दलगी छन्द।

तू तो टांक मांस कीडहीकूं नाक दबावे लख मांदे हांक सुंघनकूं नाक घ ावे॥१॥ इसकी तो वास है फास समझ ले मनमें, हो जैसा सोनका नाक देख दर्पनमें॥२॥ तें तो इसने सूंघ लिये पुद्गल जगके सारे। नहीं गई घिनक रही मिणक समझ ले प्यारे॥३॥ अब प्रभुकी देशा करो हलकी पुद्गलकी, तेरे सिरसे। अब०॥४॥

अथ नेत्र इन्द्री द्वार शीक्षा जड़ आत्माको।

तेने आंखूंमें अंजन बार अनन्तो डारे, किये तीन लोकके नाश पदारथ सारे ॥१॥ छिप निरखे जनम अरु मरण अनंतो बारे, सब जानत है पर मानत क्यों नहिं प्यारे ॥२॥ तू तो खोवत अपनी सोभा आंख का पानी, यह तेरे रिवाए कूप खिलाए पानी ।॥३॥ कर दर्श प्रभूजीका दृष्टि हटे तेरी छलकी। तेरे सिरको० ।४॥

अथ श्रोत्र इन्द्री द्वार शीक्षा जड़ आत्माको, कलंगी छन्द।

तेने कानोंसे सुन लई, जगतकी बहुत कहानी। नहि रूखा तदपि सुन खेल मैंढका पानी ॥१॥ तू तो सुन रहा निशदिन हरदम मौत बिरानी, तेरे सिरपे खेल रहा काल क्या ये नहीं जानी ॥२॥ अब करले प्रभुजीका न्हवन सुनके जिनवानी, तेरी हो जाय निमल देह ये फिर न जानी ॥३॥ कहै नैनसुख अब तज देवाल छल बलकी ॥४॥

पद जड़ आत्माका रागनी जंगला झंझौटो।

अरे पाछो घोरां घोरां, जीवा खोरा जड़ लेन। हे जीवा करेंगे प्रभुजीका न्हौन, पाछो घोरां घोरां घोरा जीवा जड़ लेन ॥टेक॥

इन्द्रादिक सुरगोंके साथ, संग लियें सुरसेन। घुमकिट घुमकिट, बजत मंजीरा, तनन तनन बाजे बैन। पाछो० ॥१॥ थरर थरर करें पायल सारंगी यंत्रसे सुनत हो चैन। बजत मृदंग मुचंग तम्बूरे, डफ खड़तालोंकी लेन। पाछो० ॥२॥ बाजत देव दुन्दुभि नभमें सब जीवन सुख देन। पंच प्रकार रतनकी धारा, बरष रही दिनरैन। पाछो० ॥३॥ भजो देव अरहन्त अरे नर, भजो धर्म तुम जैन। गुरु निर्ग्रंथोंके सुजस बखानो, शाश्वत आनन्द लैन। पाछो० ॥४॥

॥ इति द्वादशमोऽध्याय संपूर्णम् ॥

अध्याय तेरहवाँ

अथ रामचन्द्र लक्ष्मण सीता सम्बन्धी पदोंका अध्याय त्रयोदश लिख्यते। तत्रादौ रामचन्द्रजीकूं राजा दशरथ राजगद्दी दे हैं तिस अवसरकी बधाई राग खम्माचकी ठुमरी।

जीवो राजा दशरथके ये पुत्र च्यार, जीवो राजा दशरथके ये पुत्र च्यार। श्रीराम लछमण भरत शत्रुघन, जीवो नित बटियो बधाई द्वार। जीवो राजा दशरथके ये पुत्र च्यार ॥टेक॥

जीवो नित मात कौशल्या प्यारी, जिन जायो रघुपति अवतारी। सकल जगत दुख हरनहार, जीवो राजा श्रीराम, जीवो नित० ॥१॥ जीवो अपराजित मात सुहागन, जिन जायो लछमन बड भागन। राम कारज चित धारणहार। जीवो राजा श्रीराम, जीवो नित० ॥२॥ जीवो केकई लछमन हरनी, भरत महामणि जनम सुधरणी। शिव रमणीको परणहार। जीवो श्रीराम, जीवो नित० ॥३॥ धन्य सुप्रभा प्रमुदा तेरी जिन जायो शत्रुघन सुन एरी, परम धरम धन धरनहार। जीवो० ॥४॥ सुर नर लोए अजुध्या तीरथ, द्विज सुखकारी त्रिभुवनमें कीरत। भवि उद्धार सुकरणहार। जीवो० ॥५॥

रागनी खास जंगलेकी ठुमरी।

चकोरी बधाई देने अवधि मंझार। चकोरी बधाई देने अवधि मंझार। हे अवधि मझार राजा दशरथके दरबार माता कौशल्याके द्वार, सीताजीके अगार। चकोरी बधाई देने अवधि मंझार। चकोरी० ॥टेक॥

आय चन्द्रवंशी सूरजवंशी जादोवंशी राजा, बजि रहे धौंसे अरु बजि रह्या मारु बाजा। बजि रह्या रामका नटक दरबार, बाजे सारंग सितार, बाजे बीणा षट तार, गावें सभी नरनार। चकोरी० ॥१॥ फिर रह्या नटक अरु रघुपति पेखो, सुरग

सुरेन्द्रपे उपेन्द्र छत्र धारे हैं ज्यों। होय रही जाकी चमरों फटकार, चले चौरी ढ्यार पढ़ें अमृत कुमार। चकोरी० ॥२॥ गावत सुर गन्धर्व किन्नरी प्रगट करें बातों स्वर्गके किन्नरी। नाचे वे तो इन्द्रशाठ विधा अनुसार, छिन नाचे इक बार, छिन रूप हजार चकोरी० ॥३॥ गावोरी बधाई जाकी पुन्य फलेगा। आज रामजीकूं राज मिलेगा, धारेंगे राजाजी दशरथ जोग भार। कहे नेनसुख यार, सौंप देंगे सारा भार। चकोरी बधाई देने अवधि मंझार, राजा दशरथके दरबार। माता कौशल्याके द्वार, सीताजीके आगार. चकोरी बधाई देने अवधि मंझार, चकोरी बधाई देने अवधि मंझार॥ इति।

अथ सीताकूं रामजीकी पट्टराणीका राज्यतिलक होते वखतकी बधाई कौशल्याजी दे है रागनी झंझोटो जंगला खम्माच रागकी ठुमरी।

सीया पिया तेरा चिर जीवोरी, सीया पिया तेरा चिर जीवोरी। है चिर जीवो चिर जीवो चिर जीवोरी ॥टेक॥

तूंतो अटल राज नित करियो, तेरे सिरपे छत्र नित फिरियो। पिया तेरा चिर जीवोरी॥ सीया० ॥१॥ सुन मन्दोदरीकी जाई। तूंतो बांट ले पीत बधाई॥ पिया पिया है चिर ॥२॥ सुन जनक नृपतिकी लाली। तुझे मात विदेहा नैपाली॥ सीया० ॥३॥ तेरे जीवो तात अरु माता। तेरा जीवो भामण्डल भ्राता॥ सीया० ॥४॥ तेनें शील महाव्रत धारा। किया श्वसुर वंश निस्तारा॥ सीया० ॥५॥

तू तो दशरथ कुलमें आई। तेरा जीवो कन्त रघुराई॥ सीया० ॥६॥ तेरे सुफल भये चारे जेवर। तेरे जीवो पियारी तीनो देवर॥ सीया० ॥ ७॥ कहे सास कुशल्या सुन प्यारी। तेरे श्वसुर करी तप त्यारी॥ पिया० ॥८॥ तेरे कन्तकूं गद्दी देंगे। वे तो संजम निश्चय लेंगे॥ सीया० ॥९॥

स्वामी त्याग चले वेटो हमको है काज हमारी तुमकों ॥ सोया० ॥१०॥ तूतो होगी रामकी रानी। बन्धवा के पट्ट पटरानी ॥ सोया० ॥११॥ तेरी सखियां मंगल गावैं। तेरा पुन्य प्रताप मनावैं ॥ सोया० ॥१२॥ तेरे शिरपे चंवर एढारें। तेरे नामके सुजस उचारें ॥ सोया० ॥१३॥ तू देख नयन सुख भारो। तेरे कन्तकी राज तयारी ॥ सोया० ॥१४॥

कौशल्याजीकी तरफसें सीक्षा सीताजीको रामके साथ बनकूं जाते वखतका रागनी जे जैवंती०।

भर भर नैन मत रोवै मेरी सुन्दर जैसी पहैगी वैसी सोय सहैगा ॥ भर भर० ॥टेक॥

हट गए पुन्य पलट गए सुभ दिन। हम ना रहैंगे वेटो कौन कहैगो ॥ भर भर० ॥१॥ चाहत जीव सदा ही सुख सम्पति। होत वही जो वेटो करम कहैगो ॥ भर भर० ॥२॥ यद्यपि है परवाण यही विधि। तदपि केकैयाजीको सोक दहैगो भर भर० ॥३॥ नन्दन वन सम समकित द्रिग सुख घर लेहिये में जासै विघन बहैगो ॥ भर भर० ॥४॥

सीताजीका बचन रावणसे लंकामें। रागनी बरवा ॥

शोकसंगाती रे शोक संगाती रे। जानत भई हम सुख दाई भैय्या, हम सुखदाई भैय्या। मैंईको ना छूवे ॥ शोक संगाती रे ॥ टेक ॥

दश मुख रूर विभव गुण तेरो रे; राम बिना मेरे मनकु नभातो रे। जानत भई हम सुखदाई भैय्या, हम सुखदाई भैय। । मैंईको ना छूवे शोक संगाती रे ॥१॥ शोक बिगारन तार हमारो रे। दूंगी सराप फटैगी तेरी छाती रे ॥ जान० ॥२॥ देव धरम गुरु साख हमारे रे। हाथ लगावै मेरे मत उठपाती रे ॥ जान० ॥३॥ सीता हरणसे नरक जाऊंगे; कोई ना चलैगो तेरे संगन साथ रे ॥ जान० ॥४॥

दोहा—केहर देश फणेंद्रमणि, शरणागति समरथ, सती पयोधर अहिम धन। कोस्त न लागें हाथ शील संगाती रे॥ जान०॥५॥
शील पिता मेरो द्विग सुखदाई रे। शील बिना मेरो कोई ना संगाथी रे॥६॥

रामचन्द्रजीका वचन रावणसे लंकाके युद्धमें मोरचे पर खडे कहे हे। लावणी केरी जग।

रावनसे खिरी रघुबीर कहें निज मनकी। तू जनक सुता दे ल्याय चाह नहि रनकी॥टेक॥

अरे मेरा जो कोई करे बिगाड कटुक नहि भाखूं। मैं औगुण परगुण करूं वैर नहीं राखूं॥ रावन०॥१॥ अरे मैं सत गुरुके मुख सुनी जैनकी बानी। यह कलह जगतके बीच स्वपर दुखदानी॥ रावन०॥२॥ अरे ये बिन कारन बहु जीव मरेंगे रनमें। तू जनक सुता दे ल्याय आऊं मैं वनमें॥ रावन० ॥३॥ अरे मुजे जगत कम्पदा लगे सिया बिन फीकी। तुम्या दे सीतां सती चहत हूंनीकी॥ रावन०॥४॥ अरे वो मांगें वत दुख लहे परीक्षा तेरे। अब तोकूं हवनोयस्सौ स्रोचमन मेरे॥ रावनसें०॥५॥ तब लंकपतीयूं कहै सुनो रघुराई। जो लिखी हमारे कर्म मिटे न मिटाई। रावन०॥६॥ अब पछताये क्या होय बीच लूं तेरा। कहै नैनसुख रावनकूं काठने घेरा॥ रावनसे०॥७॥

वचन लछमनजीका रावनसे युद्धके मोकेपर रागनी जंगला झंझोटी ठुमरी।

हो रावन सीतांको दे देरे। हो मेरे बडे भ्रातकी नार [रावन सीतांको॥टेक॥

हम बनवासी राज न चाहें, अन चाहें तकरार। रावन सीतांको दे देरे॥ हो मेरे बडे भ्रातको०॥१॥ पिता बचनसे बनमें निकसे। जनक सुता लईलार॥ रावन सीताकूं। हो मेरे

बड़े० ॥२॥ पापी करत कतिनभी चोरी। है तेकूं धिक्कार ॥ रावन सीतांकू०। हो मेरे ॥३॥ कर मैं तोहि न छोड़त छाडूं। भेजूं नरक मंझार। रावन सीतांकू॥ हो मेरे० ॥४॥ कुकवक खंडित करूं छप तेरो। ना तर नाइ उठ जार॥ रावन हो मेरे० ॥५॥ देकर सती फरो फुदेक भोना धाम पधार, रावन हो मेरे० ॥६॥ द्रिग सुख कहत टरं नाहि टारा। सो कछु छिओ जुहार॥ रावन हो मेरे० ॥७॥

इति त्रयोदशमोऽध्याय सम्पूर्णम्।

अध्याय चौदहवां

ॐ नमः सिद्धेभ्यः अथ निंदात्मक पदोंका सबद नर चौदहवां अध्याय लिख्यते ठुमरी जंगला चाल रिखताल बाटली ठुमरी की चीखे ताल मतले वर्क।

किया जैन धरम बदनाम, धरमका मरम नहीं जाना ॥टेक॥

तैंनें तजके जिनवर धर्म नर, शिथिला भ्रष्ट पन्थ ठाना। दई बांध परिग्रह पोट तज दिया दर्शन कर न्हाना, किया जैन धर्म बदनाम धरमका मरम नहीं जाना ॥१॥ तैंनें पंच महाव्रत धरके शूद्रके घरका लिया खाना, वे तो खावैं नहिं मांस पोवैं पानी बिन छना। किया जैनधर्म बदनाम धरमका मरम नहीं जाना ॥२॥ तू तो खावै भक्ष अभक्ष मन रहा करने दिलमें दाना। तैंनें भ्रष्ट किया व्यवहार मुक्तका पन्थ न पहचाना, किया जैनधर्म बदनाम धरमका मरम नहीं जाना ॥३॥ अब तज दे भ्रष्टाचार धार ले भगवतका बाना। ज्यों पावै नैनानन्द करे फिर नरभौ नहीं आना, किया जैन धरम बदनाम धरमका मरम नहीं जाना ॥४॥

अथ रागनी जोगिया असावरीकी चालमें कुमतिका खण्डन सुमति करे है।

मैं जानी बात तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमतीसे यारी, मैं जानी बात तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमतीसैं यारी ॥ टेक ॥

इसके तो तू टहला ही डोले, सबसे प्रीत करारी। जो काम्राह होयगी तेरा, जोतो हिडा गढ प्यारी रे। मैं जानी बत तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमतोसैं यारी ॥१॥ क्या तुम भूल गये सब दिनकूं पडे थे निगोद मंझारी, एक स्वासमें जनम अठारा पाते वेदना भारी रे। मैं जानी बात तुमारी रे, जीया तैनें करी है कुमतीसैं यारी ॥२॥ अब हूं हम तुमकूं समझावत सुन रे पीव अनारी, तजि परसंग कुमति सौतनको नातर होगी खुवारी। मैं जानी बात तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमतीसेयारी ॥३॥ नैनानन्द कहो सब ह्यांसैं कीज्यों याद हमारी, जो न करूं उपगार तुमारा। तो मोहि दीज्यो गारी, मैं जानी बात तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमतीसैं यारी ॥४॥

अथ रागनी खास देशकी ठुमरी मिथ्याती कुलिंगीयोंका वर्णनकी।

हम देखे जगतके साधुरे, कहीं साधु नजर नहीं आते हैं ॥टेक॥

कोई अग विभूत रमाते हैं, कोई केश नखुन बढ ते हैं। कोई कन्द मूल फल खाते हैं, वे साधुना नाम कहाते हैं हम देखे ॥१॥ कोई नाहक कान फड़ाते हैं, फिर घर घर अलख जगाते हैं। कहि झूठ जगत भरमाते हैं, गांहे हाथ नजर ले जाते हैं॥ हम देखे जगतके साधु रे, कहीं साधु नजर नहीं आते हैं ॥२॥ घर छोड़ विरन चल जाते हैं, मठ छाय धुवा धन्वाते हैं। वे पूजा भेट धराते हैं, सो वमन करा फर खाते हैं॥ हम देखे जगतके साधु रे, कहीं साधु नजर नहीं आते हैं ॥३॥

निर्ग्रन्थ गुरु नहीं पाते हैं, जो मारग मोक्ष बताते हैं॥ नैनानंद शीश नमाते हैं, हम उनके दास कहाते हैं॥ हम देखे जगतके साधु रे कहीं साधु० ॥४॥

कुदेव कुधर्म खण्डण भजन राग भैरूं ठुमरी जंगला राग मिली हुई।

कैसी घरी देखो कैसी घरी, परमतमें कथा देखो कैसी घरी॥टेक

परनारी रत बहुत कृष्णकूं, ब्रह्माने निज कन्या वरी। परमतमें कथा देखो कैसी घरी, परमतमें० ॥१॥ मुकति मांहितें उलटो आवत, शंकरने सब सृष्टि हरी, कैसी घरी देखो कैसी घरी। परमतमें कथा देखो कैसी घरी ॥२॥ वपका सदक रमातल उतरी, शूकरने उद्धार करी। परमतमें० ॥३॥ ऐसी मूढ़ मतिनकी रचना, पाप कथा महा दोष भरी। परमतमें० ॥४॥ बिगत विरोध बचन श्रीजिनके, वस्तु सुभाव विचार भरी। परमतमें कथा देखो कैसी घरी ॥५॥ नैनानन्द नमत है ताकूं गणधर इन्द्रन शीस धरी। परमतमें० ॥६॥

इति चतुर्दश अध्याय सम्पूर्णम्।

अध्याय पन्द्रहवाँ

अब कविताने अपने दयासागर पुत्रको असाध्य रोगी सुनि विदेशमें भजन बनाए संकट दूर हुवा तिनका संकट हरण नाम अध्याय पन्द्रहवां लिख्यते।

ऐसे ही नम्बर ७ का पद महासंकट हरण है। राग जंगला कविता अपने आत्माकूं समझावे है।

मूढ मन मानत क्यों नहीं रे मूढ मन मानत क्यों नहीं रे भयो परम धरमसे विमुख बेशरम, मन मानत क्यों नहीं रे टेक

परदर्दनकूं डोले रोता, फिरे आपनी सम्पत्ति खोता। बुद्धि

रसातल मारे गोता, सुख चाहैं करे कुकरम । मन मानत क्यों नहीं रे ॥ मूढ० ॥१॥ चिर दुखपाय लियो जिन शासन वेदी मादि सारिके पावन । तदपि भयो न विज्ञान प्रकाशन, भयो मगन अविरतको भरम । मूढ० ॥२॥ अरे नैनसुख छियेके धन्धे, त्यागे क्यों न जगतके फन्दे । मत करना मनहिनके गन्दे, तजिके जतन दर अतन भरम मन । मूढ० ॥३॥

जब संवत् १९३६ सौ पांच महीनेकी उमरमें दया सागर था तब कविताकूं ४३ वर्षकी उमरमें उसका काम हुवा बडे ऋद्धै पाला संवत् १९२६ में बीमार हुआ, तब कविता परदेशमें था। रस्तेमें ये दंनूं भजन बनाए जिस वख्त कहे, उसी वख्त घरपे संकट सब दूर हुवा । चंगा पाया, फिर यही मन्त्र हर संकटमें सहाय करता रहा । राग कलिंगड़ा तथा परज पद अर्हत स्तुति ॥

विपत पडे कोई बन्धु न आई तुम ही नाथ सहाई, विपत पड़े ॥टेक॥

संपतिके सब बने संगाती संकटमें दुःख दाई, वे दुश्मन् तुम अति हितकारी या में शंक न राई । विपत पड़े ॥१॥ सुनि लई आन परजि लिए नैन न लिए दोनूं पति याई, बैपारन तुम मोहन चाहिये शिर दग सारथ जाही । विपत पड़े ॥२॥ पुत्र जुगल पर कोप विचारे करम उदय गति आई, फिर कर्मन यह नाच नचायो दो घर भीख मंगाई । विपत पड़े ॥३॥ मिल गए रतन जतन बहु कीने, गाय गीत बधाई । तिनहू दनूं दाय पछारे कछु नहि पार बसाई, विपत पडे ॥४॥ फिर कछु काल कलेश उठाए, विरह अवस्था आई । तुमरी भक्ति किये चित्त दंनूं कर लई तुरत सुनाई, विपत पडे ॥५॥

पांच मासको बालक लेके घर बैठे ईदमाई, बखत गई मोहि परम दया कर किंचित बार न लाई । विपत पडे ॥६॥ तब तैं

दया बिनु तुम जाने कर जाने सुख दाई, तातैं नाम दयासागर धरिके पाल्यो जिन राई। बिपत पड़े ॥७॥ अब साहिब इक खबर जहानमें ऐसी सुनि पाई, दास तुमारो संकट पावै कोई न शरण सहाई। बिपत पड़े ॥८॥ मैं परदेशी दास तुमरो घर पारसनाथ दुहाई, तुम ही मन्त्र जन्त्र तुम औषधि तुम्ही वैद्य तुम भाई। बिपत पड़े ॥९॥ तुम ही दियौ तुम ही अब पालो तुम ही करो सहाई, नातरदास नयनसुख भाखे होगी जगत् हंसाई बिपत पड़े ॥१०॥

इति संकट हरण अध्याय पन्द्रशम् संपूर्णम्।

अध्याय सोलहवाँ

अथ दिल्लीकी मन्दिर मंजरीका अध्याय षोडशवां लिख्यते छप्पय ॥

मगल श्री अरहंत जिन मगल सुखसागर, मंगल गुरु निर्ग्रन्थ पंथ सर्वज्ञ उजागर। वन्दनादि मन मान सुख नगर उच्चारूं शिष्टाचार विचार इष्ट हिरदै धर धारूं, श्री नदिल्ली नगरकी। यहूं प्रतिष्ठा मंजरी, जिन धार निरट संबार करु। सेवो जिन पद कजरी ॥१॥

जपनिका फूलोंके हारकी तरह हर एक तरेंके फूल गूंथूंगा और हर बातको गूंथ कर एक एक दिन गंडा डालता चला जाऊंगा जिसकू टेक और निशान कहते हैं जो यह है जिसे गंडा या नौहारका लिया। कंठालंकृत छन्द, जिसकी ६४ मात्रा और ४ लघु अन्तमें पड़ा होती हैं॥

बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससे कट जा संकट सारा बाजै मुक्तिमें नकारा। भैया जन मन बारंबारा ॥१॥

अब ढालमें जिनमतकी प्रशंसा, और अनादि अनन्त धर्म ऐसा कहूं हूं फूलोंकी गूंथ। छन्द कंठालंकृत॥

सुनियो उत्तम जन बड़ भागी, जिनने परमारथ अनुरागी। ग्यानी ध्यानी अरु बैरागी जिनके भक्ति प्रभुकी लागी, उनके अपने दोष छिपाऊं। तुमकूं मिसर आनि सुनाऊं, श्री जिन बिंब प्रतिष्टा गाऊं। मंगल मेला तुमैं सुनाऊं॥२॥ अब तो उमगो आनन्द सागर, हो गई सुलतों बात उजागर। तुम हो पंचायतकी चादर, कहियो जिन मंगलका आदर॥३॥ ये है धर्म अनाहदि अनन्त, जिसकूं माने संत महंत। जिसमें जीव दया बिरतंत, भैय्या सब मतका है संत॥४॥ पूजें ब्रह्मा बिष्णु महेश, ध्यावे इन्द्र और गणेश। सेवा करते हैं चक्रेश, जिसमें लोप नहीं लव लेश॥५॥

बिसेषंक—बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससे कटजा संकट सारा। बाजै मुक्तिमें नक्कारा, भैय्या जन्म न बारंबारा॥६॥ इति॥

दूसरी ढाल में देश नगर बतलाके हर मजहब के लोगूंको मेला देखनेके लिए सन्मुख करता हूं, फूलोंकी गूंथ। छन्द कंठालंकृत॥

ए तो जम्बू द्वीप है भाई, जिसको खार समुद्र खाई। इक लाख जोजनकी चौड़ाई, गावे संत महत बड़ाई॥१॥ या में सुदर्शन जान, दुख्यन भरत क्षेत्र पहचान। जिसमें आरज खण्ड महान, यही पुन्य भूमि सरधान॥२॥ यो ही कुरुजांगल है देश, जिसमें जैनी बसे हमेश। जन्म तीर्थंकर चक्रेश, कर गए जीव दया उपदेश॥३॥ तीरथ हस्तनापुर है भारी, जिससे जैन धरम है जारी। तिसकी दक्षिण दिशा मझारी॥ दिल्ली है केसरकी क्यारी॥४॥ ये तो रही युधिष्ठिर राजा, बजता रहा है मारू बाजा। इसका कहा है वे अन्दाजा, प्यारे सुनैंते अबही आजा॥५॥

बोलो जैन धरम जैकारा, जिसमें कट जा संकट सारा। बाजे मुक्तिमें नक्कारा॥ भैय्या जनम न बारंबारा।६॥

पहली दूसरी तीसरी बातमें शहरके कोट किले और रेल पुल और तीर्थके मार्ग बतलाए जाते हैं।

फूलौंको गूंथ छन्दके ठाले कृत।

अब मैं लिखूं शहरका हाल, सुनियों सब हो खुशहाल। जिसकी खंदक है पाताल, जिसमें नहर दई है डाल॥१॥ जिसके बारा हैं दरवज्जे, पक्का कोट बने हैं छज्जे। जिस पर सदाद बाजे बज्जे, उड गए दुश्मनके ह्यां धज्जे॥२॥ बुर्जें बुर्जों तोप धडकैं, जैसी बिजली टूट तडकैं। सुनके दुश्मन लोग धडकैं, बन रहे घूघस और छडकैं॥३॥ तीरथ कालिंदी के तीर, बन रहा लाल किला गम्भीर। बहता शांतल शीतल नीर, करते सैर अमीर वजीर॥४॥ आगे बना सलेमगढ़ बांका, ये है जंगल दलका नाका। जिसने बुरी नजरसे झांका, तांपे देख कलेजा कांपा॥५॥ पुल है कालंदीका प्यारा, मिलिल रांका बारंबारा। वो तो लोहेका है सारा, जिसकूं लागा दरब अपारा॥६॥ नीचे बहता जल धूधारा, ऊपर चलता है बजारा। उसपर छत लोहेकी डार, उसपर दोनी सडक निहार॥७॥ वो तो दई लोहेकी तान, जारी कर दिये अग्नि विमान। फिरते सारी हिन्दुस्तान, चाले वो पोवन अनुमान।८॥ भावे भावे श्री गिरनार, भावै वन्दो शिखर पहार। जावो काशी और बिहार। दरस्यो तीरथ सब संसार॥९॥ बोलो जैन धरम जैकारा, जिससे कटता संकट सारा। बाजे मुक्तिमें नक्कारा, भैय्या जन्म न बारंबारा॥१०॥

अब इन्द्र प्रस्थको आबादी और, और नगर निवा० सीबोगूंधा हाल। फूलौंको गूंथा। छन्द काठालंकृत॥

दिल्ली बस रही ऐसी ठौर। सारी पृथ्वी पर नहि और।

हो गए मूरत यहां शहजोर, कर गए आपना अपना जोर ॥१॥ जिसकी पूरब कानी राजे, दक्षिण में कृषभूमि बिराजे। पश्चिम में इसलाही गाजै ॥ उत्तर गंगा जमना छाजे ॥२॥ इसके यह अठारा भेद, जाते औषध मेटैं खेद। पंडित बांचे जहां जिन वेद ॥ काटे पापाम्बर निर्वेद ॥३॥ आते मुल्कोंके सौदागर, हैं सब हरदके धनसे उजागर। यहांके नरनारी सब नागर ॥ सबके रूपवन्त गुण आगर ॥४॥ रहते पंडित पंच प्रधान, करते गुणवन्तोंका मान। होते आए यहां सुलतान ॥ जाने सारी हिन्दुस्तान ॥५॥

ऐसी पंच भलेटो प्यार, जिसमें पटमतमके सरदार। चुन चुन आये हैं सरकार, जाते नीच कमीन ओवार ॥६॥ आगों इस शहरमें आए, राजा परजाके मन भाए। ए हैं दया धरमके पाए, उनके जस हमने यां गाए ॥७॥ है यहां एक साहु घर प्यारे, मानुष ठहै ठाम उघारे। आद सुन जैनी जिन मत धारे, हो रहे जिनके जो जे प्यारे ॥८॥ है सब चार इसी घर माव, दिग पट श्वेत पट सर्वे समोव। रहते आपसमें सब प्रीत, ये है रतन जनकी रीत ॥९॥ ये है धर्म दिगंबर मेला, ऐसा उत्सव परम दुहेला। खुल गया परमारथका गेला, हो गया दोनों लोक सुहेला ॥१०॥ बाजो जैन धरम जंकारा, जिसके कटजा संकट सारा। बज गया दिल्लीमें नक्कारा, भैय्या जन्म न बारंबार ॥११॥

दिल्ली खास शहरके अन्दर जोग २० मन्दिर चैत्यालय तो पहले प्रतिष्ठित हैं और एक मन्दिर लाला ईश्वरीप्रसादजीका नया बना है जिसकी जिन मन्दिर प्रतिष्ठा और जिन बिंब प्रतिष्ठाका मेला है सब मन्दिरोंका खोला और पता बयान किया जाता है यानी २१ शहरके अन्दर दिगंबर मन्दिर हैं। वजारी जुगादि देवके पंचायती मन्दिर

बादशाहीका बयान और श्रीमान राजेन्द्रकीर्तिजी भट्टारक दिगंबर होके महन्त जिनकी गद्दी का वर्णन जो अपार की प्रतिष्ठा करावेंगे पूजोंकी गूंज छन्द कन्ठाल कुत्र।

भैय्या इन्द्रप्रस्थके अन्दर, हैंगे बीस तिरी जिन मन्दिर। तिनका पता बताऊं सुन्दर, जिनमें तिष्टे देव दिगम्बर ॥१॥ कन्हों धरम परे संसार, मन्दर पंचायतका बार। होवें धेतक पूछ पुकार, खजूरकी महल्ल आगे यार ॥२॥ यह तें मंदिर आदि विराजे, श्री जिन ऋषभदेवका पाजे। जिसमें दुन्दुभ घण्टा बाजे, जिसकूं देख सुरग भी लाजे ॥३॥ जिसमें चौबीसों जगदीश, तिष्टैं पंचायतके बीस। जिनकी करैं नरेश रीस, करते मुक्तकूं बकसीस ॥४॥ करते भट्टारककी सेवा, पदकी जहां मणीं हो मेवा। जो कोई पूजैं श्री जिन देवा, उनका पार लगावें खेवा ॥५॥

उनकी पट्टावली है भारी, मैंने च्यार ही पुश्त उचारी। जिनकी प्रतिमाऊँ में सारी, खुरद ही लाख प्रतिष्ठा कारी ॥६॥ भैय्या वर्द्धमान भगवान, जबसे पहुंचे पद निर्वाण। छहसै और तिरासी मान, बीते वर्षोंके दरम्यान ॥७॥ श्रीमत् लोहाचार्ज विशाल, दोनों अक्ल्यकू मरण दिखाल। तबसे लगा गांव जंजाल, पाई शुभ गति परम दयाल ॥८॥ तिनकी अन्वयमें स्वामी, भट्टारक भए नामी। मानों लाहा वर्द्धक हामी, पा गए कौरल शुभ गति गामी ॥९॥ भैया पंचम काल मझारा, इनके जिन मंदर उदधारा। जहां तहां करवाते नकारा, तामें कुछ भी भेद न धारा ॥१०॥

यद्यपि हैं कुछ परिग्रह धारी, तदपि हैं अब ही मलहारी। जो कुछ लेते भेट हमारी, देते परउपकारमें सारी ॥११॥ जिनका बाह्य अंबर सुन्दर, भैय्या पाले संजम दुद्धर। वे भी करें ध्यानमें धुरन्धर, बैठे पांचों इन्द्री सुरकर ॥१२॥ रखते नित

कमण्डल पोथी, करते कुंकुम रंगको थोथो। जिनकी मांवर शुद्ध रथोतो, सब ही पंथोंके घर होतो ॥१३॥ रखते नम्र चरण अरु सीस, करते विद्याकूं बकसीस। सेते जैन धरम आदेश, देते पंथोंकूं आसीस ॥१४॥ ऐसे देवेन्द्रकीर्ति कहाए, जिनकूं सब पंथोंने ध्याए। पीछे जगतकीर्तिजी गाए, उनको गद्दी पर बिठलाए ॥१५॥

पीछे ललितकीर्ति देखाय, होने गद्दी पर बैठाय। तिनके राज इन्द्रध्वज थाय, सब ही रहा धर्म जगाय ॥१६॥ जिनको गद्दीके हकदार, पंडित है मुनि कर्मिधार। जिनको विद्याका नहीं पार, अरु हैं अति गम्भीर विचार ॥१७॥ वे तो शब्द कोश सब जानें, जिनको पटमत पंडित मानें। ज्योतिष वैद्यक मरम पिछानें, सारे सूत्र सिद्धांत बखानें ॥१८॥ प्यारे इस गद्दीका मान, होते आए सब सुलतान। ये हैं पचायत अस्थान, बढ़ता ज्यादों जिसका दान ॥१९॥ बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससे कट जा संकट सारा। बज गया दिल्लीमें नक्कारा, भैय्या जनम न बारम्बारा ॥२०॥

अथ हरसुखरायजीके नये मंदिरजीका बयान और पण्डितोंको शैलीका जिकर यह मंदिर तेरहपन्थको शुद्ध आमनायका धर्म-पूरेमें है।

प्यारे धर्मपुरेमें आके, पूछो दूजो मंदर जाके। तुमको गहरा ध्यान लगाके, वन्दो अजितनाथ गुन गाके ॥१॥ लाला हरसुखराय बनाया, जिसमें संगमरमर बिछवाया। सोना भीतों पर लिपवाया, जहां तहां रत्नोंसे जड़वाया ॥२॥ वेदी समोशरण मण्डान, जिसमें तिष्टे श्री भगवान। आवे देखनकूं सुलतान, जिसकी पड रही धूम जहांन ॥३॥ लग रहा हुकम द्वारपे तेज, दीना है मलकेने भेज। टोपी तारैं सब अंगरेज, बिछती नहीं किसीकी सेज ॥४॥ तारैं दरवाजेपे बूंट, जो भा पग देखें

चौखूंट। बाटैं सम्पत भरभर मूठ, इसमें नहीं है भैया झूठ ॥५॥

जिसमें सब साधर्मी लोग, सुनते जिन सिद्धांत मनोग। करल्यो दरशन पुण्य संजोग, छूट जाय जनम जनमके रोग ॥६॥ जिसमें च्यार विराजैं पंडित, च्यारों अति ही गुण मंडित। जिनकी बुद्धि प्रबल प्रचण्डित, करते मिथ्या मतकूं खण्डित ॥७॥ पंडित गोपालराय सहामी, दोनूं मथुरादास हैं नामी। बनारसीदास बडे गुण धामी, च्यारों कहिये भद्र प्रणामी ॥८॥ लाला श्री बलदेवसहाय, लाला पारसदास बताय। तिष्ठे लाला दिलसुखराय, तिष्ठे धरमदास प्रमुखाय ॥९॥ तिष्ठे लाला सन्मनलाल, तिष्ठे लाला चिम्मनलाल। तिष्ठे राय किशोरीलाल, तिष्ठे जहां पिशोरीलाल ॥१०॥

लाला रंगीलाल विशिष्ट, श्रोता हैं सब ही सदिष्ट। स्वत मन्दिरजीसे इष्ट। जिनकूं मानों बारी शिष्ट ॥११॥ सुनते सूत्र सिद्धांत हमेश, जिनके राग द्वेष नहिं लेश। जाकर सुनल्यो सब उपदेश, जिससे कट जांय कर्म कलेश ॥१२॥ बोलो जैन धरम जैकारा, जिससैं छूट जा संकट सारा ॥

पाथरीवाले सोदागरमल प्यारेलालजीके चैत्यालेका वर्णन जो धर्मपुरेमें है—

भैया मन्दिर है इकविजा, रचना है कुछ सही नवीजा। जिसनैं दरस किया कोई जीवा, मैं ता नाम सुनत होरीवा ॥१॥ जल्दी ऐसे पता लगावो, सूधे धरमपुरेमें जावो। पाथरीवालोंका घर पावो, प्यारेलालके जा रहावो ॥२॥ सुनकूं करो तैने दर्शन, शम्भवनाथ होंयगे परसन। करियो मंगलका आकर्षन, दिन दिन लगेगी संपत वर्षन ॥३॥ जल्दी लगजागी लगतार, जल्दी भरजांगो भण्डार। सब ही राजा करें सादार, तेरो करेंगे सब मनु हार ॥४॥ होंगे दुःख दरिद्र दूर, होंगे पार

सभी अघचूर। होंगे दुखपूर भरपूर, ऐसा मंदर है मशहूर ॥५॥ बोलो जैन धरम जैकार।

श्रीदूमलके चैत्यालेका जिकर जो धरमपुरेमें है। भैया चौथा मन्दर जाना।

इधर। ऐसे पता बताना, श्रीदूमलके घरपे जाना, उनकूं सूते जाय जगाना ॥१॥ उसमें रहते हैं दुखुर लाला, साथै तिष्टै हैं चैत्याला। लिख रहा उसमें जो गुरु लाला, भाषै कूंज लाल जौहरा ॥२॥ करियो अभिनन्दनका ध्यान, होंगे भी वीमें कल्याण। तजियो मत जेवा अभिमान, भजियो मनमें श्रीभगवान ॥३॥ बोलो जैन धर्म जैकार॥

सनेहीलाल रामप्रशादजीके चैत्यालेका जिकर जो अनारकी गलीमें है।

भैया जाना गली अनार, भाई सनेही लालके द्वार। लीज्यो रामप्रशाद पुकार, करियो भाईलाल जुहार ॥१॥ तुमसे दोनूं आप मिलेंगे, पंचम मन्दिर लेय चलेंगे। तेरे पुन्य प्रताप फलेंगे, भैया कर्म कलेश टलेंगे ॥२॥ करियो सुमतिनाथकी जाय, जिससे कट जांय सारे पाप। भैया दर्शनके परताप, सो भी सुख पावोगे आप ॥३॥ बोलो जैन धर्म जैकार॥

सदधरेमें इकका लालाजीके चैत्यालेका जिकर अनारकी गलीमें।

अब मैं भाषूं मन्दिर छठा, जा है मुक्ति महलका अट्टा। करियो पूजा करके ठट्टा, हो जाय मुक्तिसें घट्टाबट्टा ॥१॥ प्यारे सब घरे संसार, जाना मन्दर गली अनार। लाला इकलालके द्वार, लेना मंदर पूछ पुकार ॥२॥ वहां है पद्मप्रभ सरकार, जिनका परगट है दरबार। जानें जिनकूं सब संसार, करते सबका बेड़ा पार ॥३॥ जपियो ॐकार अर्हंत, जपियो सिद्ध सदा जैवन्त। जपियो आचारज गुणवन्त ॥४॥ ये ही मन्त्र मुनिश्वर ध्यावैं, जिसके गुणगण घरघे गावैं। जिससे जनममरण

छुट जावैं, भैय्या फेर न जगमें आवैं ॥५॥ बोलो जैन धरम जैकारा।

सेठके कूंचेका पंचायती मन्दर तथा इद्राम्लोके मन्दरका शिखर।

भैय्या सेठ केकूंचे जावो, वारे पंचेंमें बतलावो। उनके ऐसे कह जिन बाबा, सप्तम मन्दिर हमें दिखावो ॥१॥ देगो देव सु पारस दिखाय, लेंगे अपने पास बिठाय। लाला ज्ञानचन्द हरखाय देंगे तुमकूं शास्त्र सुनाय ॥२॥ झांकी देखी है अलबेली, करतो पूजा नित नवेली। पढ़ते फल दल फूल चमेली, बांटे रुपये भर भर थेली ॥३॥ ये है मन्दिर स्वर्ग समान, लागे रुपये लक्ष अनुमान। लिख रहा संगमर्मर पाषान, दिप रहे कंचनसे अस्थान ॥४॥ वेदा समोसरण है गोल, तिष्टे श्रीभगवान अडोल। भविजन रहे हैं जै जै बोल, करते चर्चाकी कल्लोल ॥५॥ लाला रुम्मनलाल चढाई, वेदो दूजी वहीं लगाई। करतो सब संसार बड़ाई, पूजा उत्सवसे करवाई ॥६॥ होते नित ही नृत्य अखाड़े, होते नित ही जै जैकार। बजते नौबत झांझ नगार, घंटा द्वारेपे टकारे। ॥७॥ द्वारे जगमोहन गजावे, जिसके देखनकूं जग आवे। जिस पर धर्म धूजा फहरावे, मानों लाला देव बुलावे ॥८॥ आवो आवो भविजन प्यारे, छूटूं पाप ताप तुमारे। पूजो श्री जिनदेव हमारे, जिससे कट जाय संकट सारे ॥९॥ बोलो जैन धर्म जैकारा।

इन्द्रराजजीजीके चैत्यालेका शिखर।

भैय्या अष्टममन्दिर और, इसके धौंही है या ठौर। जिसकी रचना है चौकोर, दरशन करना तुम बागौर ॥१॥ ये है इन्द्रराजजीवाला, जाके चकोंका चैत्याला। दरगिज नव ना करियो टाला, जपियो चन्दा प्रभुकी माला ॥२॥ इनकी पूजा जो करवावे, फौरन कुष्ट जलोदर जावे। डायन जायन पास न आवे, कैदी तुरत रिहाई पावे ॥३॥ जिनके होता

था भोग वियोग, हो गया इष्ट अनिष्ट संयोग। हो गए रोहीमें सब रोग फौरन होवैं सबै निरोग ॥४॥ पावैं अन्योंकी सुख आवैं, बंझा पुत्र सपूत खिलावैं। जगमें चक्रवर्त कहावैं, इम भी पर भोमें जय पावैं ॥५॥ बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससे कट जा संकट सारा। बज गया दिल्लीमें नकारा, मैया जनम न बारंबारा ॥ ६ ॥

बुलाकी बेगमके कूंचेका मन्दर लाल किलेके नीचे उर्दू बाजारमें।

भैया लाल किलेके पार, लश्कर पड़ता है सरकार। बजता है उर्दू बाजार। जिसकूं जानैं सब संसार ॥१॥ वहांपर नौमा मन्दर जानौं, जिसको देख बना पहचान। जो तुम बात हमारी मानों, इसकी महिमा कमीबसी बखानूं ॥२॥ गदरवानकी है याद, फौजां हो गईं वे मर्याद। उसके एक सरपकेबाद, उठा ऐसा एक फसाद ॥३॥ हाकिमनैं ए हुक्म सुनाया, मन्दर उस नौजीमें आया। सारे पंचोंने भेजाया ॥४॥ पहुंचा लाल किलेके अन्दर, रोणी चढ़के देखा मन्दर। उच लंगा जो अति ही सुन्दर, दूंगा हुमक लड़िगा धुरन्धर ॥ ५ ॥

जब यो वहांसे बाहर आया, सब ही पंचोंने गुन गाया। तब ही उसनैं हुक्म सुनाया। इसने मन्दर जैन बचाया, वहां था भैया एक शिवाला। उसपर बचने लगा कुदाला, उसकूं कहा जैन मतवाला। ऐसैं रद हाकिमकूं टाला ॥६॥ लाला जोरावर सिंह आये, लाला सालीराम बुलावे। लाला ग्यानचन्दजी आए, उसे हुक्म ए लिखवा लाए ॥८॥ मन्दर जैन रहे आबाद है, ए गवर्मेंट इरशाद। जो कोई तोड़ेगा मर्याद, मलके कर देगी बर्बाद ॥९॥ तबसे झण्डा जैन खड़ा है, जो तौ लाल किलेके सड़ा है। मन्दर अतिशैवा नम डाहै, जिसपर साहिबकी उपडा है ॥१०॥ लाला नानकचन्द सराफ, करते दोनूं वक्तों

आप। लाला बांकेरायजी आप, करते पूजा पुन्य अपार ॥११॥ तिष्ठैं पद्मावती व धरणेंद्र, दीये मस्तक पार्श्वजिनेंद्र। जिनकूं ध्यावे स्वर्ग सुरेन्द्र, पूजें नरपति और गणेन्द्र ॥१२॥ इतियो पुष्पदन्तकी सेवा, कर दें पार दुःख की खेवा। मंदिरों बड़ा जिनेश्वर देवा, भैय्या करें सुपावे मेवा। बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससे कट जा संकट सारा।

दरीबा मोहल्लाके पास सुखानन्दके कूंचेमें तीन चैत्याले हैं तिनका वर्णन। तिनमें सालीग्राम मथुरादासजी सुखानन्दियोंके चैत्यालेका जिकर।

अब मैं बीच दरीबे जाऊं, मन्दिर तीन तुमें दरसाऊं। आज्ञा पंचोंकी जो पाऊं, न्यारे न्यारे कर जितलाऊं ॥१॥ लाला मथुरादास विशिष्ट, लाला सालगराम कनिष्ट। दोनू भाई थे धर्मिष्ट, जिनकूं सेठ कहैं सब सृष्ट ॥२॥ जिनकूं मदनसेठने यार, कीना अपना सब भण्डार। जिनके उपजे पुत्र च्यार, मानों धरम थंभकू निहार ॥३॥ च्यारूं भाई बड़े उदार, दाता भुक्ता अरु गम्भीर। लाला धरमदासके वीर, रहते भगवनदास अधीर ॥४॥ तीजे अजुध्यादिपरशाद। चौथे हैं ईश्वर परशाद, इनके साथे करदि अनादि तिष्ठैं मन्दिर देव अराध ॥५॥

ये तो मन्दिर है चंग, अरु है अति ही अभिनंदन्न। जो कोई सेवै सम्यक्त्व सन्त, कर दे तिनमें कोटानन्त ॥६॥ जो कोई वंयाके मूं फेरे, उनकूं नरकादि धर्मीने गेरे। उनकूं दुःखर फिदर घेरे, उनकौ कोई न आवैनेरे ॥७॥ कर त्यौं जप तप संयम दान, जाको पूजो श्री भगवान। धर त्यौं श्रावक जिनका ध्यान, जिससे हो जावै कल्याण ॥८॥ बोलो जैनधर्म जैकारा।

लाला हरदास द्वारकादासजीवाला चैत्याला दरीबे सुखानन्दके कूंचेमें।

भाई मानिकरामजीवाला, द्वारिकादासका है चैत्याला । वन्दो उसकूं जाके लाला । हरगिज मत ना करियो टाला ॥१॥ वन्दो देव जिनेंद्र महेश, वन्दो गुरु निर्ग्रंथ महेश । वन्दो दयावर उपदेश, जिनसे कट जाय कर्म कलेश ॥२॥ बोलो जैन धर्म जैकारा ।

मीमामलजीका चैत्याला सुखानन्दजीके कूंचेमें ।

भाई मीमामलजीवाला, यहां हो है परम चैत्याला । जपियो परमेष्टीकी माला, हरगिज मत ना करियो टाला ॥१॥ जो कोई पूजै धरको भेदी, फौरन छुट जांय ग्रनी फैदो । जो कोई हो गए गुणके भेदी, वो तो हो गए पाप निखेदी ॥२॥ बोलो जैन धरम जैकारा ।

दिल्ली दरवाजेका मन्दरजी ।

भैय्या कहु दिल्ली दरवाजे, मन्दिर अति प्राचीन विराजे । श्रीमत ज्ञानदजी राजे, स्वामी पार्श्वनाथ विराजे ॥१॥ यहै तो मंदर है विख्यात, करु है सब पंचोंके माथ । पड़ती देहवारकूं जात । होवे पूजा नित्य प्रभात ॥२॥ भैय्या रोप ओनमद्वार, पड़ते जल मरूोंपर भार । चढ़ते छत्र चमर जहद्दार, होते पुरत फुल बहार ॥३॥ है यह चमत्कार परधान, महीमा जाने सर्व जहान । सारी दिल्ली परधान । ये है तीरथ जग महान् ॥४॥ बोलो जैनधर्म जयकारा ॥ भैय्या चौदहमें मन्दर, है कुतुबवाली घाटी अन्दर । जहां बहाँ फवारा सुन्दर, पर है भीतर चैत्य धुरन्धर ॥५॥ तिष्टै ऋषभदेव भगवान, तिष्टै बाहुबली धर ध्यान । जपियो अनन्तनाथ भगवान, जिससे हो अनन्त कल्याण ॥६॥ ये है प्रतिमा अधिक मनोग, जिनका पड़े ध्यान है लोग । महिमा जानत है सब लोग, हरते कुष्ट जलंदर रोग ॥७॥ ये तो रचना श्री जिन थान, आतमराम अनन्दीराम । तिनके भए सनेहीराम, तिनके सीस करें विश्राम ॥८॥ बोलो जैन० ॥

सैयद फिरोजके बंगले शहादत खांकी नहर पर मन्दिरजीका शिखर ।

भैया बंगले सैयद फिरोज, करना मन्दरजीकी खोज । भाई सन्तलालजी रोज, करते पूजा देखो मौज ॥१॥ नहर शहादत खांकी भाई, जहांपर महलत सी बन छाई । देखा पड़ता पेड़ दिखाई, जाना घाटी अन्दर भाई ॥२॥ वहां है मन्दिर मुक्ति समान, उज्जल मुक्ताफल अनुमान । लागा संगमर्मर पाषान, कीया कंचन सम रखान ॥३॥ लाते पानीपर मूल्याल, करते जंगली मठपर छाल । चुगते चांवल मुनीलाल, केशर घसैं चिरंजीलाल ॥४॥ भाई जगन्नाथ प्रभुनाथ, दे तो भामणो लजवाय । लेते थारों बांध बनावय, अर्चें संतलालकी काम ॥५॥ करते पूजा नित प्रभात, उनका जस है जग विख्यात । रखा धरमन्यायका साथ, सवैं जैन धरम दिन रात ॥६॥ बोलो जैन धरम० ॥

खुशहालरायके कटलेमें लाला श्यामलाल चिरंजीलाल भगवानदास ईश्वरीप्रसादकी हवेलीमें पुस्तैन चैत्यालय ।

भैया शांतनाथकूं रट ले, सब दे सब दुनियांके खटके । चल दे खुशहालरायके कटले, जो हो जिन दर्शनका चट ले ॥१॥ वहां है अति अद्भुत चैत्याला, लाला श्यामलालजी वाला । उनका वर्णूं वंश विशाला, जिनने सदा धरमकूं पाला ॥२॥ ये हैं सुनपतवाले सेठ, रहै ते दिल्लीमें ठेठ । बन गई धरम ध्यानकी बेट, रख दिया पापाचार लपेट ॥३॥ उपजे तीन पुत्र बड़ भागी, तीनों परमारथ अनुरागी । ज्ञानी ध्यानी अरु वैरागी, जिनकी सुकृत सूं लव लागी ॥४॥ जेठे पुत्र चिरंजीलाल, छोटे भगवानदास रिसाल । बिचले ईश्वरप्रसाद विशाल, घर गए मन्दर रतन पताल ॥५॥ उनके उपजे सिंह समान, लाला मिहरचन्द गुणवान । आवो तुम उनके दरम्यान, करलयो दर्शन

श्री भगवान ॥६॥ ए तो मन्दिर है पुर तेनी, जिसकूं जानें सब ही जैनी। वर्षों दूजे की है पैनी, मुझकूं बहुत पड़ेगी कहनी ॥७॥ उसका वर्णन फेर करूँगा, हरगिज टाला नहीं करूँगा। पदके प्रभुके पाप धरूँगा, सारे जिन मन्दिर उचरूँगा ॥८॥ उसका वर्णन मैंने छोडा, वे देख होके मूं नहीं मोड़ा। फिर गया अब तो दिल का घोड़ा, माछो वाड़ेमें था दौड़ा ॥९॥ धाछो जैन धर्म उपकार१० ॥

भीरजकी पहाड़ीका शिखरचन्द मन्दिर जिन और धर्मशालाका बयान सदर बाजारमें।

भैय्या माछो वाड़े जाना, जण्डेलवालोंसे जा पतलाना। ऐसा मौका फेर न पाना, दर्शन करना कर गुण गाना ॥१॥ करियो कुन्थनाथकी पूजा, ऐसा देखने जगमें दूजा। तू तो फल अनादि अरुझा, सब फिर तब तो सूझा सूझा ॥२॥ वहां तो शिखरचन्द है दहरा, लग रहा ड्योढीपर पहरा। तू तो ध्यान लगाके गहरा, कर पीवन मोहनका सेहरा ॥३॥ भैय्या ड्योढ़ीपे पग धोके, जाना छिने वंत जहां होके। तू तो चाउँ दरब सजोके, करियो पूजन चोखे चोखे ॥४॥ बांधो धोती दैय कमरके, ओढ़ो दुपटा द्रिष्ट न मरिके। तू तो श्री जिननाम सुमरिके, दीजो अर्घ रकाबी भरके ॥५॥ ये हैं पंचायतके सीज, मन्दिर शिखरबन्द जगदीश। जिसकी कौन करेगा रीस, ए है सुरपुर बीस बाबीस ।६॥ वहांके भाई पण्डित सारे, है परि पूरण भक्ति धारे। करते पूजा कर जयकारे, रहते नित ही नृत्य उचारे ॥७॥ पंडित लाला प्यारेलाल, पंडित लाला मिठनलाल, पंडित लाला मोहनलाल, पंडित सब ही पच विशाल ॥८॥ गाती सब ही वहना माई, गाती मंगल और बधाई। पहने तप आभूषण भाई, जिनके दूषण एक न राई ॥९॥ भजते देव सदा अरहन्त, जपती सिद्ध सदा

जयवंत। नमति सतगुरु मुनि निर्ग्रन्थ, सुनतो केवल जिन सिद्धांत ॥१०॥ जिनकी कूंख उपन्ने लाल, है वे भागवंत गुण शाल, कादर जप ते श्री जिन माला। हो जाय तू भी तुरन्त निहाल ॥११॥ लोहा जैन धर्म जयकारा ॥

धीरजकी पहाडीका शिखरबन्द सुन्दर जिन मन्दिर और धर्मशालाका बयान बदरबाजारमें।

जाना धीज पहाडी प्यारे, मन्दिर शीखर बन्द गु'जारे। शिख पर बाजे हैं नक्कारा, कर रहे जैनी जै जै कारे ॥१॥ वेदी संग मर्मरकी प्यारी, जिसकूं लगी संपदा भारी। वे ती लगे हैं ऐसी प्यारी। जैसी हो केशरकी क्यारी ॥२॥ करियों मल्लिनाथकूं वन्दन, पूजा करियो ले जल चंदन। हैं वे पर गट पाप निकंदन, टूटे जनम जनमके बन्धन ॥३॥ लग रहे संग-मर्मर जड प्यारे, पीते सुवरण सेती सारे। जिनमें ऐसे फूल निहारे, मानो खिल रहे नभमें तारे ॥४॥ भैया निज निज पुन्य सजोग, सेवे सभी सहरके लोग पपना तजि तजिके उद्योग। साधैं लाहू' दार निरोग ॥५॥

सेवैं पुरुष नगरके सारे, सेवौं सभी दिवाली बारे। सेवौं नफागढके प्यारे, सेवौं मढी बहादर दारे ॥६॥ सेवौं झाडू पहाडीवाली, सेवौं सब ही देश निहाली। सेवौं बाल बिरध बल पूली, सोहैं सब ही जगकी फांसी ॥७॥ ले रहे अपना मनते शरणा, सेवौं लालाजी सब वर्ण। सेवौं रतनलालजी वर्ण, जिनकूं आनैं प्यारूं बर्ण ॥८॥ पूजा करे लोक उमराव, पूजैं दूल बलाव कर चाव। भाई दयारसैन धर भाव, करते नित्य मद उछाव ॥९॥ हो गए रायजरण अनुरागी, सेवौं हरीसिंह बड भागी। भक्ति हरदेवदासकूं लागी, बलसोमचन्दके मनमें रागी। सेवैं राय धमन्डीलाल, सेवैं लाला नन्हूलाल। सेवैं राय किशोरी-लाल, सेवैं बल्लूमल गोपाल ॥१०॥

सेवें चौधरी शिवबाराम, सेवें भाई गोविन्दराम। सेवे भाई कासीराम, सेवे राम मनसीराम सेवैं अमीचन्द गुण धाम ॥११॥ ऐसे सब दहोलके लाला, हर दम जिनका रहै गुलाला। जिसने दिया धरमसे टाला, उसका घर देवैं मू काला ॥१२॥ उसकूं पापी पापी फूंकैं, जिन जिन कहनेसे नहि चूकें। उसके लोगोंकूं सब दूंदैं, सूरत देख जनमसे थूकें ॥१३॥ ये हैं कहरकी बदनामीकी, जगी पलटन है लरनेकी। जो कोई मिल जाय इनैं हमेशी, समझा है दाता की बेटी ॥१४॥ भैया जाना इनके पास, करना शुभ सेवे तरदास। बार जिन दर्शनकूं जाव, तब ही बैठा इनके पास ॥१५॥ तुमकूं करना देवे दर्शन, तेरा जो हो आपना परशन। करियो मत मिथ्या मत पोषन, नाहर लगेगा जूता दर्शन ॥१६॥ बोलो जैन धर्म०

जैसिंहपुरेका मन्दिर हरसुखरायजीवाला ॥

गुजरे जैपुरके सुलतान, जैसिंहराजा सिंह समान। जिनका सूरज वंश महान, माने सब ही हिंदुस्तान ॥१॥ प्यारे दिल्ले इक मोल, होगी जैसिंहपुर तहसील। उनका रहता एक वकील, सुनलो मन्दिर बात फजील ॥ यहां है दोनूं धाम दिगम्बर, आकूं पहले बदल लंबर। जिसका कलश लगाओ अंबर, करते आठ पूजा संवर ॥३॥ कर गए हरसुखराय निहाल, रच गए श्री जिनेन्द्रकी शाल। उनके भाई मोहनलाल, होना श्री जिन पद संभाल ॥४॥ भैया गहरा ध्यान लगाना, स्वामी मुनि सुव्रतकूं ध्याना। अंधा नर भी फेर न जाना, इसकूं विद्यामति गहाना ॥५॥ बोलो जैन धरम जैकारा।

खण्डेलवालोंका पंचायती दूजा मन्दिर जो जैसिंहपुरेमें है ॥

दूजा भाग खण्डेलवाला सेवैं सब बाबरमीवाला, उनका यश अंसे बढ वाला जैसो बढ़त वृक्षका डाला ॥१॥ यहां यो चैत्य लगे चमत्कारे, निश्चय रच हैं जे जै कारे। नाहीं सब

नाना पद धारे, होते जिन मंगल बहा भारे ॥२॥ भैया सुनले कान लगाके, प्रातःकाल ही सुने लगाके। ले फल यहां पर थाल लगाके, पूजे नेमनाथ गुन गावे ॥३॥ यहांका है ऐसा परभाव, हो जाय रंक छिनकमें राव। जो कोई पूजे धरके भाव, उनके होवे नित्य उछाव ॥४॥ बोलो जैन धर्म जैकारा

इसके यहां मन्दिर प्रतिष्ठा मंजरीमें वर्णन कर चुके हैं। पड़ पड़गंजका दिगम्बर मन्दर जमना पार दिल्लीके उत्तर ॥

चलिये पड़ पड़ गंज मझार, दिग पट मन्दर रहै गुलजार। यहां है जैनी घर दो चार, पर है जमनाजीके पार ॥१॥ याही सुग नाम रुपे जाना, सुन्दरलालके जा बतलाना। इनकूं मन्दर जरा बतलाना, स्वामि नेमिपार्श्वकूं ध्याना ॥२॥ तब तौ संग चलेगे तेरे, लेकिन लाना बहुत सबेरे। करके दर्शन भैया मेरे, जाना जल्दी अपने डेरे ॥३॥ भैया मन्दरका उपगारा, करियो कुछ जीरण उद्धारा। ये तौ है संसार असारा, तन धन है सब धुंध पसारा ॥४॥ बोलो जैन धरम०

शाहदरेका मन्दरजी जमनापार ॥

प्यारे तज दे सब अफसोस, मत लाइयो वे मनमें जोस। है शाहदरा दो कोस, वहां भी मन्दर है दिग पोश ॥१॥ यहां दस घर हैं जैनी साठ रहते नित मन्दिरमें ठाठ, करते सब ही पूजा पाठ। बन रहो शिखर अनूठी ठाट ॥२॥ यहां पंडित साहबलाल, मोतीरामजी तथा लाल। कीना है सब पाप संभाल, होवा शास्त्र सभाव चाल ॥३॥ लाला सुमेरचन्द बड़भागी, लाला कल्लूमल अनुरागी। लाला लालचन्द त्यागी, सीतल सबकूं भक्ति लागी ॥४॥ लाला पाखीराम उदार, लाला कल्लूमल जितलाए। लाला गुलजारीमल गाए, लाला मंगलाल भी आए ॥५॥

काका हैं परमेश्वरदास, काका हैं शंकर परकाश। काना सब पंचोंके पास, जाकर कर नायों अरदाश॥६॥ इसकूं दर्शन करना होजे, इतना सब दुनियामें कीजे भैया ज्यों कंचकी भोजं। त्यों त्यों भारी हो कनकीजे ॥७॥ तुमरे संग चलेंगे यार। स्वामी सङ्गा विरद् बलिकरियो पूजा अष्ट प्रकार, जिससे हो सबे उद्धार। बोलो जैन धरम जैकारा॥

इति दिल्लीकी जैन मन्दिर मंजरी समाप्त॥

अथ जैन स्तंभ मंजरी लिख्यते। तिन मन्दिर दिल्लीमें श्वेतांबर जैन धर्मके हैं। तिनका बयान॥

भैया सुनल्यों खातर जाम, जिन मत है जगमें सरनाम। जो हैं और तान जिन धाम, करते श्वेतांबर परणाम॥१॥ वे तो जैन हैं सब भाई, माने श्री जिनराज दुहाई। जिनकी भक्ति और बडाई, भैया सब गुरुओंने गाई॥२॥ हैं तो वीतराग निर्भूषण, जिनका भूषणमें है दूषण। पर व पहराके आभूषण, करते संवछरी पजूषण॥३॥ भैया माने जन्म कल्याण, पूजे चौवीसों भगवान। रखले निस्त्र भोजनको आण, पीवे पाणी सब छाण॥४॥ जपते मन्तर श्री नवकार, रखते जीव दयासे प्यार, करते रत्नोंके व्यापार। जिनकूं जाने सब संसार॥५॥

जिनकी ओसवाल है जात, अरु है जौहरी जग विख्यात। करते सामायक परभात, जाते पोषालोंमें प्रात॥६॥ जिनके मन्दर स्वर्ग समान, लग रहे संगमरमर पाषान। लिख रहे कंचनके बखान, लग रहो जिनमें सर्व निशान॥७॥ जिनके द्वारे नौबत बाजे, अन्दर घनघन घंटा बाजे। ऊपर कलश मनोहर छाजे, शिरपर ध्वजा जैनको साजे॥८॥ बन रहा दादाजीका पहरा, बन रहा ठाठबाठ सब गहरा। करना वहां भी सब

कैशोरा ॥९॥ वो तो माळी वाडे पाय। है नौवरेके अंदर काय, यहां पर जाके भेद निकाय, है इक शिखरबन्द कादाय ॥१०॥

दुजा चेळपुरीके अन्दर, हैगा एक शिवाला सुन्दर। उसकी गळीमें न पैन धुरंधुर, हैगा वहां श्वेतम्बर मन्दर ॥११॥ तीजा वच्छराजकीवाला, हैगा अति सुन्दर चैत्याला। खिल रहा जैन धरमका लाला, चौरे खानेमें गुलाला ॥१२॥ देवें इक भाई श्रमाळ, सेवें वळक पंच रळवाळ। जिनकी कटहै राय पुराळ, बन रही धर्मध्यान पोशाल ॥१३॥ बोलो जैन धरम०।

अथ बौद्धमती और श्री जिन हर्षसूरि कुशलसूरिनामा श्वेतांबर जती चरामती जैनीका जैन स्तम्भ लिख्यते।

भैया इन्द्रप्रस्थ जो दिल्ली, कर गई स्वर्गलोककी विल्ली। गड रही बुद्धोंकी जहां किल्ली, जिसकी अट्टहासकी खिल्ली ॥१॥ वो तो दश गजकी है प्यारे, इतनी है पत्तल मंझरे। उसके नीचे देखो आरे, लिख रही चौंकी चाक पकारे ॥२॥ वो तो ढको है उसके संग, हो रही मिलके एक ही अंग। है यह चौंकीका यह ढंग, खुद रही बौद्ध मूर्ति सरंग ॥३॥ खुद रही गाथा एक महान, मैं हूं चन्द्र वंश सुलतान। पूजूं महत बधु भगवान, तज दई हिंसा पाप विहान ॥४॥ जाय ज्यां जीव हतेम कोई, सो नर होगा राजद्रोही। जिसने जीव दयाको खोई, होगा राज मान्य नर सोई ॥५॥

मैंने तो भर अपना गाडा, जिसने इसकूं सारे ताडा। उसका उखडा जायगा मांढा, दिगडगा सब डेरा डण्डा ॥६॥ तिसतैं हमने ऐसा भाखा। ये है जैनाभासका साखा, जिसके दिलमें हो अभिलाषा। पढ़लो आर खडरवाला ॥७॥ इसके पास खम गढ़े है उत्ना, वहां है दादाजीके चरना। जिनकूं जैन धरमका झरना, उनपर धरते है वे कठना ॥८॥ पड़ गया हरख सूरका हेला उनका कुशलसूर था चेला, जिसका सोमवारको मेला।

होता मोठाको मदद्मत मेला ॥९॥ पहले गुजरी है इक बुड्ढी, मसजी टूट गई थी टुट्ट', सो तो पाया भरगी टूट्टो। छाल्हत हाके जैसो गुट्टो ॥१०॥

उसकूं मिल गई मोठ जुगक, उसकूं यो भी भयो अनेक। दोई पाव व पाव अनेक, कर लिए काम करचे एक ॥११॥ उसने मदरसा एक बनाई, मोठकी मदद्मतको कराई। वहां पर एक बागमें भाई, छत्रा कुगक तुरकी गाई ॥१२॥ भैया पूजा देव दिगंबर बधा विलकुल जती सितम्बर। तिर्यां पश्चामें पैगम्बर, एक बा जैसो होय मकम्बर ॥१३॥ चेटक नाटकमें चटकीला, अटका उसकूं दे पटकीला। अपनी हटका था हठीला, पर था फक्कर एहा रंगीला ॥१४॥ इसके अटका बादशाहगीर, परमा मांगे वेत फकीर। उसने पेले बादल भोर, कुरबान छपे अठ तकदीर ॥१५॥

दे दे सिंहासनसे पटका, उसकूं दिखला दीना झटका। फिर तो जैनोंसे नहीं अटका, मिट गया सब मजहब का खटका ॥१६॥ त्योंही अबका नाटक यार, मेटा गवर्नमेंट सरकार। था जा ईश्वरके दरबार, मत कर मजहबका तकरार ॥१७॥ ए हैं अहुतोंका पूजा, ऐसा जगमें देव न दूजा। मत ना फिरे तू सूजा सूजा, आ जा शरण प्रभुके छूजा ॥१९॥ ये हैं धरम अनादि अनन्त, जिसकूं मानें सन्त महन्त। इसमें ओदइया दिरहन्त, नैया सब मतका है अन्त ॥२०॥ दोको जैन० ॥

अब जैनोपकार संबंधी तीसरी जैन कुरवा वर्णन और उपगार उनका साधु नागोदास पर। था इक साधू नागोदास, रहता।

निगम दोजके पास, था वहां रहता अपना खास। करता सब हीसे परकाश ॥१॥ मेरा कुवा एक बना दो, मुझकूं कोठा एक चिना दो, थोड़े दरखत यहां लगाओ। मेरे पंजे जरा जमादो ॥२॥ ए हैं विष्णु परमका धाम, होगा सब हीकूं

आराम। पंछी करेंगे यहां विश्राम, होगा दुनियामें सरनाम ॥३॥ थे यहां साहूकार घनेरे, मुखकूं देखे मेरे तेरे, आवें सब ही श्याम सवेरे। उठ जांय अपने अपने डेरे ॥४॥ उसने कीना एक शहूर, देखे जैनी नामक दूर। चढ़िये हरसुखराय हजूर ॥५॥

वो तो चलके उनपे आया, अपना दुःख सब आह दिखाया, सुनके फौरन हुक्म चढ़ाया। उसका कुवा यहां बनाना, उसे करली नाह करार, पानी लेंगे वे तकरार। मेरे मन्दिरजीमें यार, पूजा होवेगी हर बार ॥६॥ पानी रांगड़ खेता लेंगे, कौड़ी एक कभी ना देंगे। हम तो मेला खूब करेंगे, चाहे जब ही आय भरेंगे ॥७॥ बन्ध गई उसकूं वे पतवार, आने रंयत अरु सरकार। फिर तो उस बगियामें यार, हो गए मन्दिर बहुत तैयार ॥९॥ होते नित हि राग विलास, कर दिया परघट माघोदास। अन्दर दरवाजेके पास कूवा जैन धरम है खास ॥१०॥ जिसका शीतल मीठा नीर, पीके निर्मल होय शरीर। लाला हरसुखराय वजीर, दे गये जिन मतको तदबीर ॥११॥

सुनहरी मसजिदका जिकर और, कुछ कहल इमाम पर जलसा व सरावगियानका बयान।

नाचो कुतुबवालीके पास, मस्जिद सुनहरी है खास: जिसमें खड़ी रहे थी घास, कर गया नादर सत्यानास ॥१॥ संवत् १८५७ में आई, लाला हरसुखराय बनाई। चारों कोनेसे मढ़वाई, दोनों शाहनशाह पढ़ाई ॥२॥ गुम्बज सोनेका है भारा, देखो चांदनी चौक मंझार। ये तो लाने छत बहार, जिनके लागे चले फुहारा ॥३॥ मत कर मसजिदका तकरार, है इक मिलकहीमें यार। टूटो मस्जिद हुई सुधार, करियो जैनोंने उपकार ॥४॥ ये है जैन धर्म चरणारो, इसमें जीवदया धारो,

इस भी परभौमें सुखकारी, अरु है तीन लोकमें जारी ॥५॥ बोलो जैन धर्म०।

अब कोटलेके जैन स्तम्भका हाल जो काठ जैनी राजाकी बनाई हुई है—

अब मैं कोटलेपे जाऊं, जिसकी लाट सबको दिखलाऊं। आहा पंचोंकी जो पाऊं, इसका भेद सभी बतलाऊं ॥१॥ ये है जैन धरमका चिन्ह, इस पर हुकम चढ़ा मौजिलया, जिसने हिया मों कीरलया, धरकूं दे डूंगा में घचा ॥२॥ जिसने दया धरमको पाला, कष्ट हो गया में रखवाला। जिसने जीवदयाकूं टाला, सबकूं होगा देश निकाला ॥३॥ होवे जिस हाकिमका दोरा, करियो मेर जिलेपर गौर। करियो मत हिया कठोर, होंगे परमेश्वरके चोर ॥४॥ मैंने देखा ज्ञान पसार ये है सब संसार असार। इसमें दया धरम है सार, दीज्यो पापीकूं बिसार ॥५॥

प्यारे दिल्ली है ऐसी शान, जाने सारी हिन्दुस्तान। राजा रैयत सब सुलतान, माने अप भी सबको कान ॥६। बोलो जैन धरम जयकारा। जिससे कट जा संकट सारा, बज गया दिल्लीमें नकारा। भैया भजन न बारम्बार, संवत् है पैंतीसा प्यारे, कातिकमें ये छन्द उचारे। नैनानन्द कवी नेयधारे, सब पंचोंकी नजर गुजारे ॥१। पूरा आ गई थी नजदीक, कीने झटपट सबने सीख। हिल मिल सबसे ठीक ठाक, गाते जिन मंगल तहकीक ।२॥ इसके कारन सब नर नार, तजिकर अपना घरबार। जाते थे श्री जिनके द्वार, करते निस दिन मंगल चार ॥३॥ बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससे कट जा संकट सारा। बज गया दिल्लीमें नकारा, भैया भज बारंबारा ॥४॥

इतिश्री दिल्लीके जैन मंदर मंजरी समाप्त अध्याय ५.सपर्वा संपूर्णम्।

अध्याय सत्रहवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ दिल्लीकी प्रतिष्ठा मंजरीके पदोंका अध्याय सत्रहवां लिख्यते। श्रीमत् शांतिनाथ जिनो जयति।

अथ संवत १९३५ माघ शुक्ला ३ तथा ५ कूं इन्द्रप्रस्थमें। लाला ईश्वरीप्रसाद मेहरचन्दजीने जिनमन्दिर प्रतिष्ठा तथा जिनबिंब प्रतिष्ठा भट्टारक श्री राजेन्द्रकीर्तिजीसे कराई। तिसमें अनेक मंगटेहलोंके विधान हुए तब प्रत्येक विधानके पद भट्टारकजीकी मरजीसे प्रतिष्ठापाठके अनुसार यति नयनानन्दने बनाये। भव्यजीवोंने गाये बड़ा भारी महान उत्सव भया जहां भव्य जीव हजारों कोससे आये। तिस मंगल महोत्सवके पद लिखिये हैं।

माघ सुदी ९ अंकुरारोपणके उत्सवका पद राग दादरा।

डाली डालीमें बो बो अंकूर, सरि परी डाली डालीमें बो बो अंकूर सजनी। श्री जिनबिम्ब प्रतिष्ठा केरी, डाली डालीमें बो बो अंकूर ॥टेक॥

वेदी रचकर चौक पुरावो, चलो मण्डपसे बहु दूर॥ सरी परी० चलो मण्डपसे बहु दूर ॥सजनी॥ श्री जिनबिंब प्रतिष्ठा केरी। डाली डालीमें बो बो अंकूर ॥१॥ पूजाकूं पंडित बुलवावो। कोई भट्टारक मशहूर ॥सजनी॥ श्री जिनबिंब प्रतिष्ठा केरी। डाली डालीमें बो बो अंकूर ॥सजनी॥ श्री जिन डाली ॥२॥ क्षेत्रपाल दिगपाल मनावो। दावो भेंट मंजूर ॥सजनी॥ श्री जिन डाली डालीमें० ॥३॥ धूप दहन खड़े चढ़ावो, जिससे होवे विघन चकचूर ॥सजनी॥ श्री जिन डाली० ॥४॥ मन्त्र लिखावो नागर पानपे, घसो केसर अरु कपूर ॥सजनी॥ श्री जिन डाली० ॥५॥

अभिपूजा यो मेहरचन्दसे । देखो दुखकी मार अरू ॥सजनी॥ श्री जिन ॥ढाढोढा० ॥६॥ कुन्द खुशबो उमके हाथसे, करो श्री जिनजीका मधकूर ॥वरीएरी करो श्री जिन ॥सजनी॥ श्री जिन ढाढोढा० ॥७॥ धंधमायनका मान कराओ, देखो बक्र अमृपग मूर ॥सजनी॥ श्री जिन० ॥ढाढो० ॥८॥ मरल्यी सब्बो अठाराकूंडे, चलो माडी जैन हजूर ॥ सजनी ॥ श्री जिन ॥ ढाढोढा० ॥९॥ यो पोषान अठारा लाओ, ये है सबमहि मंगल मूर ॥सजनी॥ श्री जिन० ढाढो० ॥१०॥ शांतिनाथजीके मंगल गाओ, होवे नैनसुख भरपूर ॥सजनी०॥ श्री जिन० ॥ ढाढी ढाढी० ॥११॥

अथ माघ वदी १० वस्तुविधान हुआ ताका पद राग डगरा कहा दे पझाडिया ।

गाऊं वस्तु विधान करी है प्रतिष्ठा मेहरचन्दने ॥टेक।

गाऊं दिल्ली नगरकी बडाईयां, करू धर्मपुरेका बयान । करी है प्रतिष्ठा मेहरचन्दने, गाऊं वस्तु विधानकरी है प्रतिष्ठा मेहरचन्दने ॥१॥ सखी चढोरी दिखाय बताऊं मन्दर, चरदमों शांतिप्रभूजीका ध्यान ॥ करीहै० ॥ गाऊं० ॥२॥ बना मन्दिर नन्दिश्वरका, जोहै शिखर महान । करीहै० । गाऊं० । ३ । सखिनों ही दर्शनो ही देखु है, यो गो लगा अ०मान ॥करीहै० प्रति० गाऊं । ४ । ताके मन्दर बने हैं पांचू मेरुआ, उसको मन्दर भगवान ॥करीहै०॥ गाऊं० ॥५।

सखि च्यारों दिशाके मन्दिर बनियों, तेरा चोका बावन जान करीहै० ॥गाऊं०॥६॥ सखि नई वस्तु सुघड़ कीजियो, आलाधर-जीकी थान । करीहै प्र० ॥गाऊं०॥७॥ सखि बखेंकूं जहां तहां थापिये, कीजे ड्योढी दरबान ॥करीहै प्र० ॥गाऊं०॥८॥ सखि छप्पन कुमारी पूजिये, ये हैं देवी परधान ॥करीहै प्र० ॥गाऊं०॥९॥ सखि मन्त्रोंके आदर कीजिये, जिस जिस दोजें

नागर पान ॥करीहै म० गाऊं ॥१०॥ बलि संवत् उनीसके पैंतीसमें, दशमी तिथ पहचान ॥करीहै० गाऊं० ॥११॥ बलि माघ बदीमें यहै नैनसुख, हुवा बस्तु बिधान ॥करीहै प्रति०॥ गाऊं० ॥१२॥ इति।

अथ माघ बदी ११ नांदोबिधानका पद राग जंगला झंझौटी।

म्हांको माताजीका न्हवणकरण सजनी ॥टेक॥

श्री जिनराज गरभमें आये। पढ़ियों दिवनहर सजनी, म्हांको माताजीका न्हवणकरण सजनी ॥१॥ म्हांरी कुलाचलवासी सगरी कुमारीदेवी, मोतियन मांग भरन सजनी। म्हांको माताजीका० ॥२॥ म्हांको बडभागन बाई उबिफ लालनी, निज निज नेग करन सजनी ॥म्हांको माताजीका० ॥३। कनक काग लाके ले लपौरी उबटने, पुन्य अनेक करन सजनी ॥म्हांको माताजीका० ॥४। सगरी बहन भाई, म्हांरी सुहागन बाई। प्रभुजीके चरन परन सजनी ॥म्हांको माताजीका० ॥५॥

मन्दर चढियो लाला मेहरचन्दजीके, मंगल करन धरन सजनी ॥म्हांको माताजी० ॥६। चढ़ियों पहेली प्यारी बहन सनेही म्हारी, हितमित चित हरन सजनी ॥म्हांको माता० ॥७॥ नंदी बिधानके मंगल पढियों, नैनानन्द भरन सजनी। म्हांको माताजीका० ॥८॥ इति।

माघ बदी १२ कलशारोपण दूजोरावण जिन मन्दर प्रतिष्ठाकी तैयारीका पद राग भैरू नर। धन ये घडी भैया धन ये घडी ॥

मेहरचन्दने प्रतिष्ठाकी तैयारी करी ॥टेक॥

बज गया जैन धरमका डंका, मलके बिक दूरोयाने छिपे भरी। मेहरचन्दने प्रतिष्ठाकी तैयारी करी, बलि धन ये घडी भैया धन ये घडी। मेहरचन्दने प्रतिष्ठाकी तैयारी

करी ॥१॥ अपने पिताकी आज्ञा पाकी, जो कह गए वो सारी करी । मेहरचन्द० । आजि धन ये घडी भैया । मेहरचन्द्रने० । ॥२॥ धन वह कुक्ष धन्य वह माता, जिन जाये नरके हरी । मेहर० । आजि धन घडी भैया मेहर० ॥३॥ बावन मन्दिर कलश चढाये । ध्वजा अरमनी कीनी खडी । मेहर० । आजि धन ये घडी भैया धन मेहर० ॥४॥ जिन मन्दिर जिन बिंब प्रतिष्ठा । दिल्ली नगरमें जारी करी । मेहर० आजि धन घडी० । मेहर० ॥५॥

घर घर देव दुँदभी बज गई । लग लग गई रतननकी घडी । मेहर० । आजि धन० । मेहर० ।६॥ हो गये घर घर आनन्द मंगल । मुलक मुलककी पंडा टरी मेहर० आजि धन० मेह० उमंग चले नैनानन्दसागर । इस बस्त रुण्डपछारी गई । आजि धन० मेहर० ॥८॥

इति पद गर्भकल्याणका माघव हरि १३ कूं उछावहवा राग जंगलेका गीत ॥

उतर आयारी प्रभु गरभ मंझारी, है गरभ मंझारी । जगत सुखकारी, उतर आयारी प्रभु० । है उतर आयारी० है संमक आयारी, प्रभु गर्भ मंझारी ।

इतनी एक टेक हरेक दफे पढना तब आनन्द आयेगा ॥

इन्द्रोंके आठो सिंहासन कम्पे, इमें तो आवेरी याका अरज भारी । उतर आयारी० ॥१॥ सुरगोमें घंटे जध्यानक बजे, ज्योतिष घररी बोलेसिंह नकभारी । उतर आयारी ॥२॥ भवन पतोके संख धुन घेरें, ढोल बाजेरी बितरोके सुखकारी । उतर आयारी प्रभु० ॥३॥ मंदी सुगंधी पवन चले आठो, बरष रही गंधोदककी फुबारी । उतर आयारी प्रभु० ॥४॥ घर घरमें बरसे रतनकी धारा । बरष रहेरी बलि फूल फुलबारी, उतर आयारी ॥५॥

आज बखि मेहरचन्द्रके महरचन्द्रके। बोल रहेरी मध्य जीव जे जे कारी। उतर आयारी ॥६॥ शांतने अशांतता हरी जगकी। भयोरी नैनानन्दमें तो आऊं बलिहारी। उतर आयारी ॥७॥

इति गर्भ मंगल संपूर्णम् अथ माघ सुदी १ जन्म मंगलका उत्सव भया ताका पद राग बरवा॥

तू तो गोदमें खिला ले बरनार सुहागन। परमेश्वर तेरे घर जन मारी, तू तो गोदमें० ॥टेक।

मैं तो नहलाये प्रभू मेरुपे। ढरे सुवरण कलश हजार सुहागन॥ परमेश्वर तेरे घर जनमारी॥ तू तो गोदमें खिला० ॥१॥ पूजा कर्मोंके ये बारते। भर भर सुवरना थार ॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे घर जनमारी। जरा गोदमें खिलावे वरनार ॥२॥ तांडव निरत कियो प्रभु आगे। मंगल गान उचार ॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे० ॥जरा गोद० ॥३॥ बाग वलोंके मण्डप छाये। मैंने इन्द्रभरवके बार ॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे० ॥तू तो गोदमें० ॥४॥ भट्टारकजीने मन्त्र पढे प्यारी। जिन आगम अनुसार ॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे० ॥तू तो गोदमें० ॥५॥

चंवर छतर धर प्रभूजीकूं ल्यायो। चढ ऐरावत असवार॥ सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥ तू तो गोदमें० ॥६॥ दलके दमूह खड़े ते द्वारे खड़े सब बहुदेदार॥ सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥ तू तो गोदमें ॥७॥ सुफल भयो नर जनम हमारा। सुफल भयो घरबार॥ सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥ तू तो गोदमें ॥८॥ सुफल भयो मेरे मातपिता कुल सुफल भई तू नार ॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे० ॥९॥ नैनानन्द वचन सु निपके। लिये प्रभु गोद पसार॥ सुहागन० ॥परमेश्वर तेरे० ॥१०॥

इति जन्ममंगलम् सम्पूर्णम्।

माघ सुदी २ कूं भगवानने बालक्रीड़ा करी घोड़ारोहणका उछाव हुवा पाछे सुहाए ताको छोटा पद। राग दादरा अंगल जिला झँझोटी।

नाथ झूलें सखि मधुवनमें, नाथ झूलें लाडो मधुवनमें। नाथ झूलें भव्य फूलें, नाथ झूलें लाडो मधुवनमें ॥टेक॥

इन्द्रपालमें इन्द्र बनायो, मेरुशृङ्गके वन पंचनमें। लाडो मधुवनमें, नाथ झूलें सखि मधुवनमें। नाथ झूलें भव्य फूलें ॥ नाथ झूलें० ॥१॥ जिन उत्सवकी चाव बधाई, जेती प्रभावनके अंगनमें ॥लाडो मधुवनमें ॥२॥ चहुं संघके मनमें भाई, करी प्रतिष्ठा धन ताही छिनमें। सखि मधुवनमें ॥नाथ०॥३॥ बाग बहारीके मण्डप छायो, चमके मानो जैसे दामि निवनमें। लाडो मधुवनमें ॥नाथ०॥४॥ बाजत ताल मृदंग बांसरी, फूले भव्य समान वन वनमें ॥लाडो मधुवनमें नाथ०।५॥

आप सुहावें इन्द्रणी सुहावें गावें मंगल कर हुलसावें। सखि मधुवनमें ॥ नाथ० ॥६॥ माघ सुदी दोयज पैंतसे, पाई है सो भ्रनुन चपार घरनमें। लाडो मधुवनमें ॥नाथ०॥७॥ नयनानंद भव्यजन लखूं आनि परे प्रभु शांति चरनेमें, सखि मधुवनमें। नाथ झूलें०।

इति बालक्रीडा घोड़ारोहण संपूर्णम्। तप मंगलका पद महलोंसे निकसी जाय वृन्दावन तपवन चलो इस चालमें।

लियो जोग गिरी जिनराज, अनाथों सखी सुमति वरो। तासे चक्रवर्त पद त्याग, तजी नागपुरनगरी ।टेक॥

गज तजे चुरासी लाख, तजे इतने रथरी। तजे मुकट बंध नरनाथ सहसबत्तिस छतरी, लिया जोग० गए चक्रवर्त ॥॥१ तजे तुरग कठारा कोडी तजो प्रभु नौनिधरी, गये रतन चतु- र्दश छोड़। तजी सब रिद्धसिद्धरी, लिया जोग० गए चक्रवर्त०

॥२॥ तजि रानी छत्राण छै हजार, तजी षटखण्ड धरी। लिये पंच महाव्रतधार, गही शिवकी डगरी। लियो जोग० गए चक्रवर्त ॥३॥ जिस बनमें धरयो प्रभु ध्यान, तहां सब विपत टरी। षट ऋतु फल फूले आन, भई बन सेठ हरी। लियो जोग० गए चक्रवर्त ॥४॥ अहि नकुल भुजंग मृगाद, [illegible] पीलपिलो। हरे गऊंसिंह प्रतिपाल चुंघावे दूध खड़ो। लियो जोग० गए चक्र०। ५॥

सब जाति विरोधी जाय छिमा उरमांहि धरी, भगवानके तप पर भाव। परस्पर प्रीत करी, लियो जोग० गए चक्र० ६॥ तप कर बारह परकार, हरे बन चार अरी। उन केवलज्ञान पसार जगतकी व्याधि हरी। लियो जोग० गए चक्र० ॥७॥ च.ए मेरु[illegible] बन इन्द्र लिये सेठी नगरी, तहां पूजे शांत जिनेन्द्र। बसो दिल्ली नगरी, लियो जोग० गए चक्र० । ८॥ अहि [illegible]ण महार, भई जति जग नगरी। करे नैन नन्द गुणगान, धरे चरनन पगरी। लियो० गए० ॥९॥

केवलज्ञान विषे भगवानकी वाणीमें उपदेश सुना ता[illegible] ज्ञान [illegible] महा[illegible] पद राग सारंग।

वानी [illegible]खरी प्रभु शांतकी, मेरी शांत भई सब पर हो। वानी खिरी प्रभु ठेक।

छुट कुमत कुमति जागी, मैं टूटी करम जंजर हो। वानी खिरी० ॥१॥ जड चेत दोऊ भिन्न हैं, जैसे छीरसे न्यारो नीर हो। वानी खिरी० ॥२॥ मांटीमें ज्यों कंचन बसे, तिल तेल ज्यों एक सरीर है। वानी खिरी० ॥३॥ जैसे [illegible] [illegible], रहै अग्नि गुपत मेरे बीर हो। वानी खिरी० ॥४॥ [illegible] [illegible]में मेल ना [illegible] तुम्हारा चोर हो। वानी० ॥५॥

काल [illegible] पुद्गल [illegible] रहे इक दिवान [illegible] रहो। वानी खिरी० ॥६॥ भूल्यो कर्मके भर्ममें रहे चर्म[illegible] तुम [illegible]

हो बानी जिरो० ॥७॥ भटकयो चतुर्गतिमें सदा, भयो राजा रंक फकीर हो। बानो जिरो० ।८॥ घ.घरके मरमर चडे, नहीं कोनी कछु चकोर हो। बानो जिरो० ॥९॥ कर ले सबर सधुदिदसे, कर दल रे पाटपटोर हो। बानो जिरो० ॥१०॥

मातपिता सुत बन्धु हैं, सब रचा रचके गीगर हो। बानो जिरो० ॥११॥ जिस दिन जिर बाके पडे, तेरे कोई न आवे तीर हो। बानो जिरो० ।१२॥ पंचमकाल कराळमें, तू तो कर के प्रतिष्ठा मेर धीर हो। बानो जिरो० ।१३॥ मेहरचन्दसे सीख ले, तू तो दिल्लीमें आ करबोर हो। बानो जिरो० ॥१४॥ दास नैनसुखयों कहै, तेरे इनमें है तकसीर हो। बानो जि० ॥१५॥

इति अथ पंचम मंगलका समुचे पद दादरा पूर्वका करवेमें।
जाऊं बलिहारीमें जाऊं बलिहारी, जिन मंगलकी मैं। जाऊं बलिहारी० ।टेक।

तूभिनो शांत शांतके कर्ता हरो अशांत मारी, मैंजाऊं। जिन मंगल० ॥२॥ मार्शश्याम छठमीके दिना गर्भ धरयो मायारी, मैं जाऊं०। जिन मंगलकी० ॥२॥ जेठ बदी चौदशकूं जन्मे, तास लोक हितकारी मैं जाऊं। जिन मंगलकी० ॥३॥ जिस दिन जनम बयो दिन दिक्षा, चक्रवरत ऋद्धि छरी। मैं जाऊं। जिन मंगल० ॥४॥ पोह सुदी एकादशीके दिल, उगयो ज्ञान इकतारी। मैं जाऊं। जिन० ॥५॥

पोह बदी चौदसकूं स्वामी, लिहे सुकत मंझारी। मैं जाऊं० ॥६॥ सुमरो मदद भई मेहरचन्द पे, रच दिया मन्दर भारी। मैं जाऊं० ॥७॥ नंदीश्वरका रचना करके, नये नये बिंब भरारी। मैं जाऊं० ॥८॥ मेरु शिखर सुस्नान करायो, क्षीरोदधि जल ल्यारी। मैं जाऊं० ॥९॥ भरभर चरस बठोवर कलशे, प्रभु शिर धारा ढारी। मैं जाऊं० ॥१०॥

चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ाये लड नैवेद्य करारी। मैं आऊं० ॥११॥ दीप धुप फल अरघ संजो के, करी आरती भारी। मैं आऊं० ॥१२॥ माघ सुदी तृतिया पैंतीसे, करी प्रतिष्ठा भाई। मैं आऊं० ॥१३॥ अनेक पिताकी आज्ञा पाली, विछोमें को भारी। मैं आऊं० ॥१४॥ हुव्यो सफल सकल जीवनकूं, नैनानन्द उचारी। मैं आऊं० ॥१५॥ जिन मंगलकी, गरभ मंगलकी। जनम मंगलकी, तप मंगलकी। ज्ञान मंगलकी, मुक्त मंगलकी। मैं आऊं० ॥

इति अथ प्रतिष्ठाकी बधाई रागनी भैरवी।

ईश्वरीप्रशादजीके मन्दरकी गावो अब तो प्रतिष्ठा बधाई सगरी ईश्वरीप्रशादजीके मंदरकी। गावो० ॥टेक॥

सखि गवर्मेन्टने हुकम दिया, जगो देवि जयादिकको लगन भारी। ईश्वरीप्रशादजीके मंदरकी, गावो अब तो प्रतिष्ठा बधाई सगरी ॥१॥ सखि मेहरचन्दने सुजस लिया, दई जोड प्रतिष्ठाकी डगरी। ईश्वरीप्रसाद० ॥२॥ सखि सुफल किया नर भव अपना, करु सफल करी दिल्ली नगरी। ईश्वरीप्रसाद० ॥३॥ सखि मेरु शिखर रचि न्हवन किया, क्षीरोदधिको बहुत भर भर गगरी। ईश्वरी० ॥४॥ सखि जेनिद्पुरेपे अब संघ चढ़ा, दा तीन लाखके जगमगरी। ईश्वरी० ॥५॥ सखि अन्दर बहार प्रतिबिम्ब विराजे, देखो जी मण्डप रह्या जगमगरी। ईश्वरी० ॥६॥ सखि चारों ओर चढी पलटन, रहा तीन लोकमें यश जगरी। ईश्वरी० ॥७॥ कहो दास नयनसुखने बिनती, पूरो शांतनाथ प्रभूके पग री। ईश्वरीप्रसाद० ॥ इति।

यह पद भी भजन कल्याणका है, इन्द्र प्रशंसा करे हैं जन्माभिषेक वास्ते ठुमरी देश और मांकडे।

प्रभू धन्य धन्य तुम धन्य धन्य तुम हो प्रभु इन किदे जन्य तुम सम न अन आगमन दिखारो। प्रभु धन्य० ॥१॥

सुनिये जिनेंद्र मैं हूँ सुर सुरेन्द्र, ये हैं मम उपेन्द्र ये है सुर गजेन्द्र । कहिये जिनेन्द्र किजे न्हवन तयारी । प्रभु धन्य० ॥२॥ हो जगत भान, किरया निपान, मोह दयो पछान, हो धर्म दान, सुरपति इशान, ये है संग हमारो । प्रभु धन्य० ॥३॥ सन्मतिकुमार, माहेंद्र सार, अरु सुर अपार, चपारो विरकार, मैं तो लेके हार, तोरी सेवा उर धारी । प्रभु धन्य० ॥४॥ हे दीनबन्धु, हे दयासिन्धु, मैं मेरचन्द तोहि वंदि वंदि ल्यूंगा सहस्र कंजे जग जलधारी । प्रभु० ॥५॥

नहीं करी देर, गये गिर सुमेर, पांडुक वनेर, पांडुक शिलेर दई आय घेर, ताको पूजा विस्तारी । प्रभु० ॥६॥ भरी क्षीर सारो कलशा हजार, प्रभु धोल डार, जिन गुण उचार कहि चले जै कार, अरु लीनी शिव सारो । प्रभु० ।७। वंदि मिष्ट बैन, हरि यात संग करि सुरस सैन, लगे गोद दैन, भई सुखचैन, मानों फूली फुलवारी । प्रभु धन्य० ॥८॥ इति ।

यह पद भी जिन स्तुति राग देश ठोर मांझको हुमरी हजूरी सङ्कट हरण पद । अर्थ सिद्ध अरु विजयकूं करावे है संकट हरण पद्योंमें हुआ है रोग शोग चिन्ता भय फंद मुकद्मा फांसी इत्यादिकूं तोड़े है वार ८ नित्य पढ़े त्रिकाल अर सामो रात दिन १ व ७ वा १४ वा २१ निहायत ४० दिन वरदान दिया हुवा है ।

प्रभु तार तार भवसिन्धु पार संकट मझार, तुम ही आधार दुख देखहार वेगी डाटो मोरी नैया । प्रभू तार० ॥टेक॥

परमाद चोर दियो हमपे जोर, भगवोल तार दिये मझमें बोर । तुम सम न और तारन तरैया, प्रभु तार० ॥१॥ मोहि दण्ड दण्ड दियो दुख प्रचण्ड कर खण्ड खण्ड चहुं गतिमधें भण्ड तुम हो तरण्ड, तारो तारो सैंया । प्रभू तार तार० ॥२॥

द्रिग सुखदाय तेरो है हिरदय, मेरो काट फांस, हर भवको त्रास, हम दरश आय, सूई जग भमरैया। प्रभु तार० ॥३॥

आगे यह पद पंचकल्याणकोंके स्वस्ति मंगलका है चौबीसौं महाराजकी पूजाका, राग भैरवीकी ठुमरी।

स्वस्ति श्री ऋषभोऽजित सम्भव अभिनन्दनजीके पंचकल्याण। स्वस्तिश्री० ॥१॥ स्वस्ति सुमति अरु स्वस्ति पद्म प्रभु, ऐसे सुपारसजीके पद कमलान। स्वस्तिश्री० ॥२॥ वन्दूं मैं चन्द्रा प्रभुके पद पंकज, ध्याऊँ सुविधजीके गुण पहचान। स्वस्तिश्री० ॥३॥ ध्याऊं मैं शीतल श्रेयांस सम नाऊं, वासवपूज्यजीका करूं सरधान। स्वस्तिश्री० ॥४॥ स्वस्ति विमल अनन्त धर्म प्रभु शांति मनाके करूं कुंथु गुण गान। स्वस्ति० ॥५॥

अरह स्वस्ति अरु स्वस्ति मल्लि जिन, स्वस्तिश्री मुनिसुव्रत-नाथ। स्वस्ति श्री० ॥६॥ स्वस्ति नमि अरु नेमि पार्श्व प्रभु, स्वस्ति श्री महावीर भगवान। स्वस्ति श्री० ॥७॥ जन यश प्रभु धन्य यह वासर, घर घरमें बरसे रत्न महान। स्वस्ति श्री० ॥८॥ जब भगवन्त प्रगट भये जगमें, टूटेगे सकट सकल जहाना। स्वस्तिश्री० ॥९॥ होंगे हजार नयनसुख आगर, मांगेंगे परम सरब कल्यान। स्वस्तिश्री० ॥१०॥ मंगल कीजो सरधा चंदनकूं, कीज्यो नैनचन्दके सारे कल्यान। स्वस्तिश्री० ॥११॥

इति पद जिनदेव स्तुतिका, राग खम्माचकी ठुमरी।

सेवें सब सुरनर मुनि तेरा द्वार, सेवें सब०। तू है परम अरथ जास सोखदो दिवैया, तोहि तजि अब जाऊं प्रभु किसके द्वार। सेवें सब० ॥टेक॥

अतुल पराक्रम अतुल ज्ञान तव, अतुल गुण तेरो न पार। सेवें सब सुरनर० तू है परम० ॥१॥ नाथ उभर पति इन्द्र भगत अति, चरन पर तनरज पखारे। सेवें सब०

तू है परम० ॥२॥ तुमकूं नमाव माथा कौनकूं पसारूं हाथ, तुमको दिखैया दे सकल्प्रनगार । येवें सब० तू है परम० ॥३॥ तुम बिन राग दोष देव हो सब नमोप, किये हे पकोल्प सब हो पुकार । येवें सब० । तू है परम० ॥४॥ तुम सन्मुख रहे, तिनें नैनखुख भये, तुमसें विमुख रुले जग मंझार, येवें सब सुरनर, तू है परम, तोहि तजि० ॥५॥ इति ॥

हिंडोला छतीसी राग हिंडोलेकी मल्हार जिनमें मेहरचन्द-जीके हिंडोलेका वर्णन हो।

दिल्लीमें प्रतिष्ठा परी भैना कि न करी, जिनपे झुलाये श्री भगवान दिल्लीमें प्रति० ॥ टेक ॥

पंचमहाल कराइये, जिसने किया ये उपगार । परम जगाया जम्बूद्वीपमें, भारत खण्ड मंझार । दिल्लीमें० जिनपे झुलाये० ॥१॥ करत हारी सीर बनारसी, नहि मुनिवर नहि ज्ञान । जिसने दिखाया चौथा कालये । जिन दिये पंचकल्यान । दिल्ल में० ॥२॥ जिनये रचारी मण्डप घन दिपे, जिनये बनाया माल गुलाल । जिसने बनाए चौसठ खम्भये, जिन लटकाई चन्दनमाल । दिल्लीमें० जिनपे झुलाये० ॥३॥ जिसके सजो चन्द्रोपकने, लटकत मोतियन माल । लटकि रहेरी मरतक मणि तने, झूले हरित रसाल । दिल्लीमें० ॥४॥ जिस दिये बाजे मंगल दुन्दुभी । जिन पद राई जयजयकार, बरस रही रतननकी झरी । पड़ रही अमृत फवार । दिल्लीमें ॥५॥

जिसके बरस दियको पालकी, जिसके घूमेंरी मतंग । जिसके नगारे बाजें रसभरे, जिसके ये सजेरी तुरग । दिल्लीमें० ॥६॥ जिसने बुलाए लाखों भव्यजन, जिसने करी है मनुहार । जिसने लगाया चौसर चौक ये, जिसने लगाया ये बाजार । दिल्लीमें० ॥७॥ जिसने रची ये चौ बुर्जे रचे, जिसने रचा है मण्डप द्वार । जिसने पको ये दरपर घर घरे, तोरण

विपत अपार। दिल्लीमें० ॥८॥ जिसने बनाये दर शाबानरी जिन ये चढाये कलश रतंग। जिसके ए मंडे लगे असमानमें, फर्कें उमंग उमंग। दिल्लीमें० ॥९॥ जिसने की ;जसो ये नौबत झड रही, जिसकी बजे है ये खटताल। जिसका ये घौंसा धें धें धें करे, जिसकी बजे है ये घडियाल। दिल्लीमें० ॥१०॥

जिसक बजे है बीणा बासरी, जिसके ये बजे हैं सितार। जिस जिस रंगी खर खर कर रहो, बज रहे यंत्र अपार। दिल्लीमें० ॥११॥ द्रिग द्रिग बजत मृदंगरी, तुम तुम करत तम्बूर। जिसके मजीरे घुमदिट धुम करें, बज रहे जिसके हजूर। दिल्लीमें० ॥१२॥ कौन बनाओ जिसका बाग है, जिसने बनाया ये मेदान। जिसका हुक्म जिसका राज है, कौन प्रतिपाला जुगमान। दिल्लीमें० ॥१३॥ जिनये लगाई रवि फुलवारियां, जिनये लगाया गुलशन अपार। जिसने लगाया मोती मोगरा, जिनये लगाई चम्पा डार। दिल्लीमें० ॥१४॥ जिनये लगाई मरवन मालती, जिनये लगाई येबावेड। महक उतारी वलणीके बडा। महक उठी एपमेड। दिल्लीमें ॥१५॥

जुहीरकी सखोरी कलियां खिल रही, खिलरहा हार सिंहागार। केवल खिलेरी लख अलके छिपें, भमर करत गुंजार। दिल्लीमें० ॥१६॥ खिल रही मैनाचन्दन मंजरी, झुकर है सब ललार। जिस जिए जिसमें नज जिस लग रहो, जिसका लगा है दरबार दिल्लीमें० ॥१७॥ जिन एही दोला नाहा बीचमें, जिन ए लगाई रेशम डार। जिसके येमूले ठाकुर पाहने, दोलत सादर मोर दिल्लीमें० ॥१८॥ कौन झुलावे ये मेहरचन्द सापन्ट्र, झरूरी ये बड भाग, जिसको इन्द्रणी झोटे दे रहो। धन धन इनका सुहाग, दिल्लीमें० ॥१९॥ मंगल गावे डांड जिनन्दके, निरत करत गण गंधर्व। चंदर टर तजे जेघु नाटें, हो रहा आनन्द पर्व। दिल्लीमें० ।२०॥

कोई तो अलापे मालव भैरवी, कोई गावे राग हिंडोल। कोई तो अलापे सारंग रस भरी, हूं हूं करत उरत कलोल। दिल्ली में० ॥२१॥ कोई गावे राग मनोहरी, कोई गावे भीमपलाश, कोई गावे नट कोई खट गा रही। कोई गावे ललित बिभास। दिल्ली में० ॥२२॥ कोई तो अलापे राग धनवंती, कोई गावें मेघ-मल्हा कोई तो अलापे मधु अरु माधवी। धन रहे चैन विहार, दिल्ली में० ॥२३॥ उचार, सुनतो धर नारी मन लायके। रतिया इनको तू मान धर्मपाल कुलमें भये, जाको ईश्वरप्रसाद। दिल्ली में० ॥२४॥ उनके वंश शिखरपै मगन भए भगवान, पुत्र रतन इक उनकूं दिया, मेहरचन्द गुणवान। दिल्ली में० ॥२५॥

पिताने बनाया मन्दर सोहना, नन्दीश्वरके आकार। मेरु बनाये पांचूं बीचमें, अकोमंदर सार। दिल्ली में० ॥२६॥ बावन मन्दिर फिर रचे, चहुं दिश तेरा तेरा थापि। बिना ही प्रतिष्ठा पितापर भगवान, हुकम पढ़ा गये आप। दिल्ली में प्रति० ॥ जिनये झुलाये श्री भगवान, दिल्लीमें प्रति० ॥२७॥ अब गया बेटा हंसा कूंपका करम लिखे ये हमार, तन तो चला मन मन्दर विषे। कीजियो काम हमार। दिल्ली में प्रति०। जिनये झुलाये० ॥२८॥ इतनी कह परभवकूं गए, धरते श्री नवकार। धृग धृग धन सम्पदाकूं, धृग धृग यह संसार। दिल्ली में० ॥२९॥ मेहरचन्द पढ़ माताने लाख दिनाको सार वार, हुकम लियजो अपनो मालके। मन्दिर दियाजो तयार। दिल्ली में प्रतिष्ठ०। पूरी भैना धन करी, धन श्री झुलाए श्री भगवान। दिल्लीमें प्रतिष्ठा पूरी भैना धन करी ॥३०॥

राजेन्द्रकीर्ति बुलायके, सब पंचोंको कहाय। गवर्मेंटकी आज्ञा लई, लियाजो मुहूर्त दिखाय। दिल्लीमें प्रतिष्ठा पूरी भैना धन करी। धनही झुलाये० ॥३१॥ संवत् विक्रम भूपको, उन्नीससै ये बीस।

माघ सुदी तिथलोकक्कूं, करी है प्रतिष्ठा श्री जिन दोय। दिल्लीमें० ॥३२॥ च्यार सहस्र प्रतिमाजी पूजी, शांतिनाथ प्रमुख जाय। तीन लक्ष आए भव्यजन होता धर्म लगाय, दिल्ली में प्र० ॥३३॥ गरभ जनम तप मंगल करे, ज्ञानमुक्तके गुण गाय। माघ सुदी तिथि तिथकूं, प्रभूजीकूं लिये हैं झुलाय॥ दिल्लीमें० प्रति० धनदी० ॥३४॥ नाम जता कुछ है नहीं, चलण पड़ रता चार। दास नयनसुख यौं कहै, पढ़ियो सब नरनार॥ दिल्ली में प्रति० धनदी० ॥३५॥

दोहा—नंदो बिरदो जगतमें, धर्मचक्र जिनराज।
जैवंती बरतो सदा, सेवो भोर समाज॥३६॥

इति दिल्लीका कवित्त स सम्पूर्णम्।

इति अध्याय सतरहवां सपूर्णम् ॥१७॥

अध्याय अठारहवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ जहां जहां अनेक नगरोंमें जैनकी रथयात्रा भई तिनके पदोंका संग्रहरूप अध्याय अठारहवां लिख्यते।

तत्रादौ चांदखेड़ीकी पूजाके पद रागनी दादरेमें ठुमरी।

हूवो नित नित मंगल चार, अहिक्षेत्री हूवो नित नित मंगल चारजी। नगर चांदवा सु खरखराजी, हूवो नित नित मंगल चार ॥टेक॥

कमलवदन भगवान बिराजै, जाकी महिमा अगम अपारजी ॥ नगर० ॥१॥ नरनारनके भाग उदेसैं, पूजा हुई केदारकी

॥ नगर० ॥२॥ उपजयो हरख नगरमें सगरे, हो रहे जैजैकारको ॥ नगर० ॥३॥ नैनानन्द नगरमें छयो। म्हारे गिरे करमके भारको ॥ नगर० ॥४॥

इति रागनी जंगला झंझोटी।

पंचोंके भाग उजागर मिल गए गुरु नागर पंचोंके भाग उजागर ॥ टेक ॥

दांप बरछके गुप्त रहे प्रभु। प्रगट भये अब आकर ॥ मिल गए गुरु० ॥१॥ हाथमें कमंडल करमें पीछो। जीवदयाके सागर ॥ मिल गए० ॥२॥ कर्मोदयसे तेईसके सुन्दर। सपत विक्रम पाकर ॥ मिल गए० ॥३॥ ऋतु बसन्त वैशाख सु कलकी। पांचों कांटे नादर ॥ मिल गए० ॥४॥ नैनसुख यह नगर पांवटा। पाय प्रभुका पादर ॥ मिल गए० ॥५॥ इति।

रागनी कहरवाकी ठुमरी।

सुफल भई म्हारी आज नगरिया। टेक॥

दरस देख मेरे नैन सुफल भये, चरन परस मेरे शिरकी पगरीया ॥ सुफल० ॥१॥ पारस प्रभुका न्हवन करनकूं। भरि भरि ल्याऊं क्षीरोदधिकी गागरिया ॥ सुफल० ॥२॥ बहुत दिवसमें भटकत भटकत। आज मिली शिवपुरकी डगरिया ॥ सुफल० ॥३॥ नैनसुख प्रभुके गुण गावे। मेटो प्रभुजी भवभवकी गगरिया ॥ आज सुफल० ॥४॥ इति।

अथ बडौतकी पूजाके पद। राग खम्माचको ठुमरी।

आज शुभ दशा उदे भई म्हारी, हो आए पूजा निरखन कारन। नगर बडौत मंझारी, आज शुभ दशा उदे भई म्हारी। टेक॥

मैंतो भ्रमत अनादी, गयो एतौ कालवादी। अब जागी है समाधी, सुखकारी ॥ आज शुभ० ॥१॥ तेरा विनती उचारूं, मान मायाकूं बिडारूं। सदा आरती उतारूं, प्रभुथारी ॥ आज

शुभ० ॥२॥ कहै नैनसुखदास, मेटो मेरा भवत्रास। हमकूं है आस तुमारी ॥ आज शुभ० ॥३॥ इति।

पुनरागनी झझोटी।

झिलमिलके पूजा रचो रचा, पुर बड़ोतमें चन्द्रा प्रभुकी। झिलमिल पूजा रचो रचो ॥टेक॥

नवशत एक हजार चोंउपै, और मिलाको च्यारूरे। चैत्र सुदी दशमी पंद्रस, घर घरमें जै जै मची मचा। पुर बड़ोतमें चन्द्र प्रभुकी झिलमिल पूजा रचा रचो है मैं ॥१॥ रथमें बैठ चले प्रभुजनकूं, मुदित भये नर नाररे। भरभर अंजुलि करें आरते, मानों सुरपति नचो नचो। है मैं ॥ पुर० ॥२॥ दर्शन हेत देश देशनके, आए भाजी दौररे। आप हो आप मयी त्रिभुवनकी, आई लक्ष्मी खिचो खिचो, है मैं ॥ पुर० ॥३॥ जग प्रताप सुन्यो जिनशासन, सुनि सुनि भयेसु शियाररे। नैनानंद दयाकी सरके, हिरदे महिमा बची जचा है मैं ॥ पुरे० ॥ झिल० ॥४॥ इति।

खिरमनकी पूजाका पद रागनी किशनलाल भाटकी चालकी।

यह पूजा निस्तारे, प्रभुकी पूजा निस्तारे। है जनम जनमके बन्धन तोडै, भवसागर तारे। टेक॥

हुई खरघनेकी पूजा भारी खबर हुई सारे। है मुलक मुलकके जैनी आये बाजत नकारे ॥ ये पूजा० ॥१॥ नरनारी मंगल गावें, आनन्द विस्तारें। है नृत्य करें कठ करें आरते पायमें धर धारें ॥ ये पूजा० ॥२॥ बाटै दान करें तिह पूजा आप धृपा भारें। है नैनानंद कहै सब परजा जै जै उचारे ॥ ये पूजा ॥३॥ इति।

बरनावेकी पूजाका पद चाल किशनलाल भाटका ठुमरी।

जिनदेवकी पूजा आय नगर बरनावेमें चलके ॥टेक॥

दलके मिट गए कर्मदलके कट गए कष्ट भव भवके।

जो फंसि रहा जगजंजाल रह गया हाथ ही मलमलके ॥१॥ जिन पूजे श्री भगवान मनाए मंगल पलपलके, जो हो गया जगसे पार। मिटा लिये दुःख सब कुल दलके। जिन ॥२॥ जिन गाये मंगलचार, छोड़ दिये झगड़े छल बलके, वे हुए संत मशहूर जहां गये, भविजन हुल हलके। जिन० ॥३॥ जिन ले लिए प्रभुको गोद रथमें चढ़, पंचोंमें रलके, जो हुवा नैनसुख भक्त मराके बस्त ही वाल जलके। जिन० ॥४॥ इति।

शाहपुरको मूलनायक प्रतिष्ठा पद रागनी भैरवी।

थानि विराजे श्रिन पदम जिनेशा। टेक।

नानगरीमें दुखम सुखमकूं, गनिये सुखमा सुखम खमेशा। थानि विराजे० ॥१॥ भवधाधि जिन यानकों तरसे, तातें हमरे भागपकेशा। थानि विराजे० ॥२॥

दोहा—मनवल घनवल अंगवल नृपवल वृषवल हो। थानि विराजे०। थानि परागग दिन। जिनेश० ॥३॥ श्वेत संगमय बिंब तिहारो, ज्यों अकलंक निशेशा। पाप ताप निरखत ही भागत, ज्यों अहि निरखि खगेशा। थानि० ॥४॥ जयकुमार पर करुणा उपजी, तिष्ठेसा सुजरेशा। पंचन मिल मन्दिर चिनवायो, जै जै जै नमतेशा। थानि० ॥५॥ अबकों तारू भवसागर सुगतू करम कलेशा। भव भवमें प्रभु तुमरी सेवा, चाहत नैनसुखेशा। थानि० ॥६॥ इति।

दिल्लीको पूजाको पद राग धरमा।

म्हारे विघन बिनश गए दूर, अजि ए जो म्हारे विघन बिनश गए दूरजी। सुन सुन संस्तुति दिल्लीकोजी, म्हारे विघन बिनश गए दूरजी ॥टेक॥

बहुत दिवसके चित हुलसायो, मेरे भए मनोरथ पूरजी। सुनसुन ॥१॥ दुजा कलश वेदोके आगे, लागो सुरग संपदा

दूरजो। सुनसुन०। म्हारे सुनसुन० ॥२॥ ऐरावत गजके विरचारे, जैसे कोटिचन्द अरु सूरजो। सुनसुन० ॥३॥ नैनानन्द कहे करजोरे, म्हारे कर्म महागिर चूरजो। सुनसुन० ॥४॥

रागनी जंगला। कव्वाल लोगूंके गानेकी भेटके तौरपर जैसें। चुगलखोरने चुगली खाई अकबरके दरबार तुझे मैं दूंगा पटा। अरि दुर्जनका दुर्जनका देश। इस जगतें मान घटा। इस चालमें। अब पद शुरू।

तरस तरसके नरभव पायो, आयो तेरे दरबार हिरीजो, कीजे बचा। अजि कर्मनसे कर्मनसे प्रभु पीछाजी मेरा वेगी छुटा दे ॥टेक॥

कुगुरु कुदेव कुलिंगी पूजे हंड्य बहू संसार परम गुरु तूही बचा, अजि कर्मनसे, कर्मनसे। प्रभु हो पीछाजो मेरा वेगी छुटादे ॥१॥ स्वारथके सब संगी देखे, बिन स्वारथ फिर आंयजी। बने नहि कोई बचा। कर्मन० ॥२॥ बिना तुमारी शरण प्रभुजी कामनके अनुसारजी, चतुर्गतिमांही नचा। कर्मनसे० ॥३॥ कहे नैनसुख दास दयानिध, चित्त चकोर चनिहार, तेरे चरनोंमें रचा। कर्मन० ॥४॥ इति।

अथ भजन निरञ्जनका पद लिख्यते। राग देश विहाग चरकके जिल्हेकी ठुमरी।

भजनसे रखि ध्यान प्राणी। भजनसे० ॥टेक॥

भजनसे इन्द्रादि पद हो चढत वेटि विमान, भजन होवे होत हरि प्रतिहरी चक्रि बलवान। प्राणी भजनसे० ॥१॥ भजनसे षटखण्ड नवनिधि होत भरत समान, तिरे भवसागर तुरत छूटे पापको अवसान। प्राणी भजनसे० ॥२॥ नवल सूकरसिंह मर्कटकरि भजन परधान, भए वृषभसेनादिक गणधर गुरु भजनके परवान। प्राणी भजन० ॥३॥ भजनसे भर पूज्य

मुनिगन गौतमादि महान, भजन कीये तिरे भीढ जटायु मोक्ष स्थान। प्राणी० ॥४॥ कहत नैनानन्द जगमें भजन समन निधान, भर भजनसे अरहन्त सिद्ध आचार्यगण निर्वान। प्राणी० ॥५॥ भजनसे रखिये ध्यान, प्राणी भजनसे रखिये ध्यान ॥५॥

इति अष्टादशमें ऽध्याय सम्पूर्णम् ॥१८॥

अध्याय उन्नीसवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ सुरेन्द्र नाटकके दर्शनिरत पद्यांका अध्याय उन्नीसवां लिख्यते।

अथ भजन स्थापन हेतोः मंगलाचरण। दोहा।

बीत्यो काल अनन्त ही, आवनहार अनन्त, वर्तमान ऋषभादि जिन, नमूं अनंतानंत ॥१॥ वंदु गुरु निर्ग्रन्थ सब, दया सिन्धु अणगार, जिनके शत्रु सुमित्र सम, राव रंक इकसार ॥२॥ निकसी मुख सर्वज्ञते, जो धुनि गुण गम्भीर। इष्ट वानि ताकूं नमूं, हरो हमारी भवपीर ॥३॥

कवित प्रतिज्ञा दोहा।

कहूं सुरेन्द्र नाटक चूंप, प्रगटूं जिनकल्याण। समय समयके राग सब, समय समयके गान ॥४॥ भजन कियौ ते तिर गए। बिना भजन करि खेद, यौंही बकि बकि मरि गए। पढि पढ च्यारों वेद ॥५॥

अथ गंधर्व शिक्षा। दोहा।

तीन ग्राम अरु सप्त स्वर, ताल भाव करि शुद्ध, विनयसार हित परमाद तजि। गावो भजन सुबुद्धि ॥६॥ प्रथम अलापें

उच्चारिए, मंद मध्य प्लुत टेर, उतरि उतरि चढ़ि चढ़ि उतरि। बार बार स्वर फेरि ॥७॥ बैठो गोढ़ो मोड़के, निर्भय सिंह समान। ताल चूकि स्वर चूकिके, मत कहियो बुधिवान ॥८॥ स्वरमें पुत्री कर लालके, समते लेहु उठाय। सकल सभा कवि द्रिष्ट धरि, गावो चित उमगाय ॥९॥ सिरन हलावो लाजमें, खिल्लावो मति बीर। मटको मति पटको न पग। रहो धीर गम्भीर ॥१०॥

अथ श्री ऋषभ जिनगर्भ गम मंगल बधाई रागनी भैरवी तथा ख्याल धनाश्रीमें भी फिर चलती है। नाभिराजाके मरुदेवी स्वप्न फल पूछे हैं।

सुनियों गरीब निवाज, सुनियों गरीब निवाज। अरज मोरी सुनियों गरीब निवाज ॥टेक॥

मैं जुगलनि तुम जुगल हमारे, वल्लभ जुगल सिरताज। अबकि पचिनिश अवधि कहि संहित वश दिंध सदिन राज। अरज मोरी सुनियों गरीब निवाज ॥१॥ वरषत रतन नगरमें घर घर मारू भए पट काज। सोलह सुपन आज हम निरखे, कौन निमित्त किह काज। अरज मोरी० ॥२॥ इन सुपन हम ऐसो निरख्यो, भाखत लाजे लाज। कहूर घरपोल रख राज अवधानकर, भाखो फल महाराज। अरज मोरी० ॥३॥ कहत नाभि सुन मुनि बड़भागन, भावी सुत जिनराज। गर्भ वसे सुनि त्रिय सुख पाए, गयौं भरम सब भाजि। अरज मो० ॥४॥ इति।

अथ श्री ऋषभ जिन जन्म मंगल बधाई रागनी भैरवी तथा ख्याल धनाश्री।

अवधिपुर आज कृतार्थ भया, हे अवधिपुर आज कृतार्थ भयौ ॥टेक॥

तजि सर्वार्थसिद्ध परमारथ दायक देव चयौ, नाभि नृपति मरुदेवीके मन्दिर आ अवतार लियौ। यों अवधिपुर आज

कृतार्थ भयो ॥२॥ रंक भये धनवन्त जगतमें करणके लेश बह्यो, नर्कनमें नारकी सुख पायो, मोपै न जाय कह्यो । हे अवधिपुर आज कृ० ॥३॥ जो अनन्त त्रिकाल चतुर्गति माहिं मूढ भयो, सो आनन्द नयन हम निरखे आदि जिनेन्द्र जयो । यो अवधिपुर आज कृ० ॥४॥ इति ।

अब श्री जिन जन्माभिषेकार्थ चतुर्निकाय देवागम वर्णन लावनी पीलू बरवा ।

चले सुरासुर सकल अवधिपुर श्री जिन जन्म न्हवन करनैं ॥टेक॥

हुकम सुधर्म सुरेन्द्र चढ़ायो अपने निकट कुबेर बुलायो, श्री जिन जन्म वृत्तांत सुनायो । सकल अमरका चार प्रमुखे चार करो ऐसी परनैं, चले सुरासुर० ॥१॥ चले कल्पवासी सब देव, चले भुवनपति करने सेवा, ज्योतिष अरु व्यन्तर सब भेवा । चौबीस अरु चालीस देय बत्तीस इन्द्र चाले शरनैं । चले० ॥२॥ सेना सप्त सप्त विध ल्याए, गज घोटक रथपति सजाए । वृष गन्धर्व नर्तकी धाए, घन घन गगन मंझार । हो जे जेकार यो महिमाको वरनैं, चले सुरासुर० ॥३॥ नागदत्त ऐरावत सुन्दर, यो सजिके ले प्रथम पुरन्दर, गए अवधि नृप नाभिके मन्दिर, माया निद्रा रची । रे प्रभु शची, लगी जब कर धरने । चले सुरासुर० ॥४॥ लोचन सहस सुरेन्द्र बनाए, निरखि हरख उरमें न समाए । मस्तक धरी प्रभु चरण छुआए, उमगि नयन सुख भाय हृदय लिपटाय । लगे संस्तुति करने, चले सुरा० ॥ इति ।

अब जिन जन्माभिषेकार्थ सुरेन्द्रने जिनेन्द्रकूं गोदीमें लिये सुर गिरपे ले जानेकूं तयार हुए तिस प्रमोद नाटककी स्तुति रूप ठुमरी पीलू बरवा ।

भयो पावन आज जनम हमरो भयो पावन आज, हे जनम

हमारो तन मन हमरो। भयो पावन आज जनम हमारो, भयो पावन० ॥टेक॥

अब सुरेन्द्र पदको फल पायो, जानि दियो दर्शन तुमरो। भयो पावन आज जनम हमरो० ॥१॥ बिन तुम भक्ति वृथा खोये दिन, जामें को अरिथ न हमरो। भयो० ॥२॥ तुमसे वर तें सेवें सुरगण नातर काई न दे दमरो। भयो पावन० ॥३॥ जग में अमर यथार्थ कहाया, करसो क्या दुर्जन जनमो। भयो पावन आज० ॥४॥ श्रेय जिनेन्द्र सुरेन्द्र पदवी गज पदवी सुर गिरपै अमरो। भयो पावन० ॥५॥ पढियो द्रिग सुख जिन गुण मंगल, हरियो भव भवको भमरो। भयो पावन० ॥६॥ इति

अथ सुरेन्द्र कृत गजदन्तोत्सव बधाई गानमेंहूं नर तथा जंगला मिली हुई ठुमरी।

शुभकी घडी भैय्या शुभकी घडी, बोलो बारम्बार जै जैकार शुभकी घडी ॥टेक॥

तीर्थंकर अवतार लियो अब घाटेंगे नैय्या मझधारमें पडी। बोलो बारबार० ॥१॥ भवसागरकी अटक मिटा लग होंगे बेड़े पार, मत रहो अड़ी। बोलो बार० ॥२॥ बरषा धो बद रहते सम्पदा सारी, लुटा दो भरया भर भर घडी। बोलो बार० ॥३॥ घर घर करो रतनकी वर्षा, नगर नगर अमृतकी झडी। बोलो बारबार० ॥४॥ गावो नाचो पर भावना बढ़ावो, नाचो नचैया गजदन्तपै खडी। बोलो बार० ॥५॥ सुनि सुनि भाव दिखावो सुर सुन्दरि, अधिक रचैया रंग रंगको भरा। बोलो बार०॥६॥ भर भर अंजुलि अर्घ उतारो, वारो प्रभुपे मोतियोंकी लड़ी। बोलो बार बार० ॥७॥ गगन हलें ये बजा बजावत, नेरे तौं नैन चन आज हो पड़ा। बोलो बारबार० ॥८॥ इति।

अब सुमेरु पर्वतोपरि पांडुक वन संस्थित श्री जन्म जिन

जन्माभिषेक समये सुरेन्द्र कृत भक्ति। रागनी देश गौड़की पूर्बकी ठुमरी।

जन्मे जिनेन्द्र आए सुरेन्द्र, ले गए गिरेन्द्र, पांडुक वनेंद्र थापे शिलेंद्र पीठेन्द्र विहगी। जन्मे जिनेंद्र ॥टेक॥

सजि सजि विमान सुर लानि लानि दियो नभ समान। मंडप तहां तान छवि निरखि हर्षि, अमर मन भयो। जन्मे जिनेंद्र० ॥१॥ आमें लगे ढाल, मोतियनकी माल, गावे देवबाल, जिन गुण विशाल, लखि चमर काल सुरपति फर्मायो। जन्मे० ।२॥ सोमां सुरेन्द्र सोमो चंद्र सोमो धनेंद्र सेवो यह जिनेंद्र आयो सूर्य चन्द्र क्षीरोदधि जल ल्यावो। जन्मे जिनेंद्र० ॥३॥ रचि असंख्यात पेढी दिखात सब एक साथ, पुलकित गात। हाथोंहाथ कलश ल्याए, लोजे स्वामी न्हावो। जन्में जिनेंद्र ॥४॥ करि भुज हजार, पढ़ि मंत्र सार। सब कलश ढार, दिए कई ही बार पड़ो धारा झघझघ भई सब्दा ल्यौ ठगावो। जन्मे जिनेंद्र ॥५॥ या जिन प्रसंग, भई जैन गंग प्रगटो अभंग। उछरी तरंग, लई सुरन अंग। ल्याई गंगा नित ध्यावो। जन्मे जि० ॥६॥ यह अति विचित्र गंगा है मित्र सुनकें चरित्र चित्त हो पवित्र, चितलित नयनसूं दरा सुनहि पावो, जन्मे जि० ॥७॥ इति

अथ—इन्द्राणी सुरादि देवका जन्माभिषेक करि के कलशाभव पर जुगका आदि में कर्मभूमिकी रीति चलावनेके अर्थ भगवत के अंजन मज्जन वंश वेश आदि करि शृंगार करें हैं। राग जंगलेकी पचती ठुमरी।

ढां ः ः ः बेगी आंजो कजरा, इदरानी प्रभुओं के बेगी। आंजो कजरा। टेक

ए तो चार ध्यान बल निरखत, मैं खेऊ प्रभु भक्तभरा। इन्द्ररानी प्रभुओंके वेगी ॥१॥ ए तौ निर्दूषण अन्नभूषण, अग निरवारन जन्म घरा। इन्द्ररानी ॥२॥ हम तुम संसारी सुन

प्यारी, निज निजनेग करो सगरा। इन्द्राणी० ॥३॥ मज्जन मंडण पूजा प्रभुजीकी मेटि धरे प्यारी जन्म जरा इन्द्रानी ॥४॥ कर दे तिलक त्रिलोक सिर, घसि कुंमकुंम चन्दन उजरा। इन्द्रानी० ॥५॥

मैं तो मुकट धरूं प्रभुजीके सिर, तू पहरा फूलोंके गजरा। इन्द्रानी ॥६॥ मैं पहराके प्यारी कानोंमें कुण्डल, तू पहरा मुदरी मुंदरा। इन्द्रानी० ॥७॥ मैं पहरा दिए प्यारी सुरभूषण, तू पहरा दे तगरी घुंघरा। इन्द्रानी० ॥८॥ मैं तो कान विंधे फिर बींघे तू पहरा दे वाली झुमरा। इन्द्रानी० ॥९॥ मैं तो न्हवण करि कर लई पूजा, तू मोतिनयके अर्घ धरा। इन्द्रानी० ॥१०॥ मैं थाप्यो प्रभु नाम ऋषभ जिन, तू करले यादी क्षाव लरा। इन्द्रानी० ॥११॥ नयनानंद सुरेन्द्र न्हवण करि, कविधि नगर फिर कूंच करा। इन्द्रानी० ॥१२॥ इति।

अथ—श्री जिन जन्माभिषेक पश्चात् जन्म नगर प्रवेश समये अति प्रमोद निर्भर चतुर्निकाय देवों सहित सुरेन्द्रका जिनेन्द्रकूं लेकर गजेंद्र पेकदर नगरमें आकाशसे उतरण। नगर बधाई उत्सव। रागनी जंगला चाल गंगा लाग्री मेरालो दोनोंके भजनकी खबरी खबरदार हुए तारे परगानेकी अति अद्भुत।

ले गए अवधिपुर प्रभुजीकूं सुर जै जै उचारें। ले गए अ०। घसि जै जै उ०। अवतारें भरि भरि अंजुलि रूप उतारें, ररत तान सुम ननननन सब इन्द्र चंवर ढारे। ले गए अवधि०। प्रभुजीकूं सुर जै जै उचरे। ले गए। घसि जै जै०।

यह टेक प्यारी चारे पटना आगे दौड़ रपट चालका बदल है।

एजी धूधू किट धूधू किट धकड़ धकड़ा धुं ताहाताहा झझाझा करे चारंगी झिंझार पुन, द्रुम द्रुम रपदा बड़। न्हग

बाजे भेरी बीणा बांसरी, डबक ढोल गाजे। गावे ले के चक फेरी नाचे नमर्मे सुरी छम झननननन झननी झिलने वारे। ले गए अनधिपुर प्रभूजीकूं सुर जय जय उच्चारे। लेगए०। जिन जय जय उच्चारे। ऋष भारे॥

ऐसा सारा बोल कहना चाहिये हरदफेमें॥

कोई कहै नंदीवर्गी लीयो ए जिनेन्द्र चन्द्र कोई कहै लीयो राजा। नाभि नगरीको इन्द्र कोई कहै भ्राता जग त्राता कोए लीयो माता। आयौ जिन मुन मुक्तिको। दाता सोवे साता पायके उपे मगन संननननन इन हमकूं निरतारे। लेगए अ० सारा। कहो॥

ऐसी विध करत उछाव गीत गान सब। घेर लियो ऊंगल जमीन आसमान सब, अठ थल बन मन घाट बाट कुंअरोक। पूजे राज मन्दिर उजाए शंख ठोल ठोक, ल्याए सायको लिके। गजेन्द्र घननननन नर चौंकी परे सारे, लेगए अ०। अजि जै जे पधारे रुधन रे। सारा कहो॥३॥

शचीने उतार जिनराज गोदमांहि लिए। आये स्थानेमांहि आय मातकूं प्रणाम दिए। कैसे जिन माताकूं जगावे मीत गावे गीत, कैसे इन्द्र प्रभूके पिताके करे बात चीत। कहो नैनानंद बिरतंत सुम टननननन ज्यों सुने संत सारे। लेगए अजि०। ऐसी जै जे जे पधारे ऋषभारे। सारा कहो इति॥

अब इन्द्रणी जिनेन्द्रकी माताकूं जगावे है गीत गावे है रागनी जगला झंझोटीकी ठुमरी॥

पद। सोवे महारानी बच्चा गोदी ले लेरी, कहा सोवे०। ले गोदी ले लरि। अमर घूंटी देलेरी, कहा सोवे महारानी बच्चा गोदी लेलेरी॥

इतनी टेकका पूरा बोल हर दफे कहना॥

प्रफुल भई तोरी नींद मरुदेवी मैया। भयोले री पच्छा,

बल्ला गोदी लेलेरी। कहा सोवे, हे गोदी० ॥१॥ जायो जगत जन्यों त्रिभुवनपति मचौरी उछल। बल्ला गोदी लेलेरी, कहा सोवेम० ॥२॥ मिट गई जुगल जनम परिपाटी। मचौरी। इकबल्ला गोदी लेलेरी। कहा सोवेम० ॥३॥ घर घर माता द्रिगानंद छाए। मच गई इकाबल्ला गोदी लेलेरी। कहा सोवे० ॥४॥ हे गोदी० इति ॥

अब श्री जिन जन्म समये प्रभात जोग हर्षित माता पिता प्रति बधाई रागनी जंगला झंझोटी ठुमरी ॥ पूर्वोक्त चालमें जाननी ॥

ते राजंवो सुत ऋषभ जगत जननी। तेरा जीवो सुत०। हे जगत जननी भगवत जननी। तेरा जीवो सुत ऋषभ जगत जननी टेक पूरी करनी ॥

जीवो तेरा कर नाभि नृप नागर, जायो तैनें पुत्र सुगत जननी। तेरा जीवो, हे जगत जननी ॥१॥ शिव मारगको करन उजागर, सब जन इष्ट जगत जननी। तेरा जीवो। हे जगत। भग० ॥२॥ नर्कादिकमें मिटी वेदना, ज्यों तप चन्द्र उगत जननी। तेरा० हे जगत० ॥३॥ गई असाता भई साता त्रिभुवनमें, निरखत हर्ष पगत जननी। तेरा जीवो सुत, हे जगत० ॥४॥ बरखें पुष्प सुधा रस घर घर, कोई न रंक चुगत जननी तेरा। हे जगत०। भगवत० ॥५॥ द्रिग सुख मुक्ति कपाट जब टूटो। हरखे भव्य जगत जननी तेरा०। हे जगत। भगवत० ॥६॥

अब जिनेन्द्रके पिताजीको सुरेन्द्र जगावे है और माता मई निद्रा दूर करनेकुं स्तुति करे है जंगला झंझोटी ठुमरी ॥ चाल बल मारे नजरिया राम ॥

अब सुख निद्रा निवारो महाराज, तुम उठो जिनराज पुत्रकुं खिला ल्यो रहाणो। अब सुख निद्रा० ॥टेक॥

एक तो प्रभु तुम तीन ग्यान जुत दूजे जन्मत, मनु महाराज। तिजे त्रिभुवननाथ तात तुम, चौथे सकल जुगल सिर ताज। तुम छठो पितामह।१॥ जनम्यो परमेश्वर तुमरे घर तुम चोनो सजि राज समाज। ज्यों मुनिराय वरे निश्चल तप, त्यों निशल्य क्यों हो गए आज। तुम षठो पितामह॥२॥ प्रथम नींद इस प्रथम कालमें फरौजारी तुमने महाराज, जगो जगो निरखो सुतको मुख। मन चिते सब होंगे काज, तुम उठो पितामह॥३॥ जागे तात बधाई छाना, पुलिकत गात चले जिनराज। काल अनादि सकल दुख ट्रिग सुख गए, एक हो छोनमें भाज। तुम एठो पितामह० ॥४॥ इति॥

अथ श्री जिन ऋषभदेव जुगादि जिन जनम समये कर्म भूमि व्यवहार प्रवर्त नाय नाल काटन माता पिताका अभिषेक करण। जिनदेव पुनर्न्हवण॥ ताळवादेन घुंटा चूंघावन तांडव नृत्य करण मङ्गल सजावरण। पालने झुलावन तदुपरि इन्द्रादि देव स्वर्ग गमन इत्यादि वर्णन हेतो। चाल कलहा मङ्गलानमें बडे लिख्यते॥

अथ चाल शहले बडे मंगलाचरणका॥

प्रथम नमूं मैं देव जुगादिको जो भए प्रथम करके करतार। तीर्थंकर पद धारिके। अभिमानें चलाए सृष्टिके व्यवहार॥१॥ फिर मैं बताऊ प्रभुके जन्मको, महिमा रहा जो कछुक सब शेष। मात पिताका उनके इन्द्रने, किया जा जुगलामें अभिषेक॥२॥ दौड़॥

सुन को ज्यों पंचो किया इन्द्रने विचारयों, अरु गया चोल ए तृतय धारा काल। मिट गई जुगल जनमकी तो रीत अब॥ अरु भैया मिट गई भोग भूमी चाल॥१॥ अब लों तो ह्यां चीज जुग किया सारे जनमते, अर जिनके माता पिताका रजते काल। कौन तो नहलावेको झुलावे उन्हें पालने, भजि

उन्हें पालें श्री कल्पतरु डाल ॥२॥ छिप गए कल्प कल्प चोखा आ गया, अर आगे होगो विपरीतांओ कमाल विद्यमान जुगल जिते हैं कारज अरमें। अर ए तो जाने नहि पुत्र प्रतिपाल ॥३॥ जब भगवान अकेले जन्मे नाभिके। तरज कीए माता मरुदेवीने निहाल। आगे जन्मेगेशी अकेले पुत्र लखनके। अरु कन्या जन्मेगी अकेली गुण माल ॥४॥ दिया मैंने नहवण प्रमुका गिर मेरुमेंये, अरु नहि देखायो जुगलियोंने हाल। कहूं अब ऐसी देखे सगरी सुहागना, अरु चांटे इन्द्राणी प्रमुकीका लाल ॥५॥

गावे सब सुन्दर सुहागन मगल मंगलो, अरु नहाऊ माता था पिताकूं यही चाल। नहाऊं मैं प्रमुको पहराऊ सुर चोरदे, अरु बस भूषण अहाऊ हीराकाढ़ाई देखे सारे जुगल प्रमोये प्रमुका तालला। करवाये चले पछ मानेला चल, प्रमूकूं चुंघाऊं अमृत घूंटा सबके सामने। करवाते जने घूंटा देनेका ए हाल, एवाडीके मन्दिर सजाऊं बहुत चावसे। अरु लाये खाने लागे बाधू बदरचाव। लाया दिव इन्द्रने विचारी फेरी विक्रया, अरु भेवा फैला दई दिया इन्द्र जाल। ८॥ इति ॥

चाल जालहामठखानको रगत दूसा ल्दल सुन दर्शक प्रथम मलकी सोभालें सुरेन्द्र कृत दिकरा।

प्रथम जापकी सुरेन्द्रने सरद ऋतुके मेया भाषी मीत, अजिये तो ऋतुको रोतो बई भोगनके मरे। अजि उनकी महिमाकूं बखानें भैया मीत ॥१॥ छोटा सरद मदनके चमूक छीके छड़ छा गए। अरु मानों मौत रह्या मन्दबा दरार, छिप गए इन्द्र धनुष सुखी छा गई। अरु भैया खिले हैं सुखे गुलजार ॥२॥ खिल गए चमन चमेली गुल सुखके, अरु गुल खिले हैं गुलालके गुलदार। खिल गए गेंदा जाईजुही मोती नारा। अरजुक

खिले हैं अशोक बेशुमार ॥३॥ खिल गया केवड़ा कपूरी अम्बा-सीनीयां, अरु फूला मारवा मालानाम हजार। फलि रही नारंगी कपूरीके जे झुकि गए, अरु अहे दाड़िम आंब गुल्लेदार। ॥४॥ बिचरें हैं सारस चिरग हसो तूतियां, अरु मोर मैनाओ रहे हैं चहकार। कूंकेकारी कोयलकूं जो नेवेले दे दिए, पेऊं पीऊं कर रूप पैयाजी पुकार ।५॥

भर गए हौज मकरंदोसा गुलाबके, अरु छुटे पचरंगे फवारे गुलजार। बेठशोंमें बैठेमो बालक विद्या पढि रहे, अरु बटैं द्वारे द्वारे औषधा अहार ।६॥ द्वारैं द्वारे राजामो प्रजाकूं अभंकरि रहे, अरु जहां तहां मुनि बैठे संयम धार। कहीं राजभोग कहीं प्रभुधन स्वण्डमें अरु करें पूरव भवोंमें उपकार ॥७॥ ज्योंका त्यों चरित्र प्रभूजाको सुरेन्द्रनें, अरु चित्र पढावे दिखाया किन्न सार। ऐसी बखी भांति सब के सभी भौनकूं, भरे भंडा दई दिया भाखों जीर कुमार ॥८॥ इति।

सदृऋतु प्रथम भवन वर्णनम्।

अथ हिमऋतु संयुक्त द्वादश महलका शोभामें सुरेन्द्र कृत क्रिया कार्तिक अगहन रचना छन्द जंगलामकल्याण।

हिमऋतु महलोंमें गुलाबो सर्दी छा गई, अजि जो तो लगे सी सबीकूं सुखदाय, अजी जो तो होवे कातिक अगहनमें उदे। अजि जा तो सब जीवनके मनकूं भाय। टोक पदो॥

हिमऋतु आई जी अन्धेरी छई गगनमें, अरु लगी महलोंमें तारोंकी जगा जोत। उद लाग सूरज चन्द्रमाका जहां देखिये, अरु देखे संझा सुबै होतीका उद्योत ॥२॥ बुध गुरु शुक्रके सितारे देखे ऊगते, अरु शनि भौम राहु केतु अस्त होत। दीखे सब जोगनी नक्षत्र अश्विनी प्रमुख, अरु पुष्य श्रवण, विशाखा मलखोत ॥३॥ देखे ध्रुव अचल समान हस्त स्वाति चित्रा, अरु दीखे रेवती नक्षत्र लोर गोत्र। हरित अंकुर फलफूल

नीले पीले दीसे, अरु दीखे खेत परिपूर्ण जैसे पोत ॥४॥ पीरीपीरी केशर अबन्की मन भावती, अरु दीखे जाफरानी क्यारियां बहोत। ऐसी भांति इन्द्रने दूजेमें करी विक्रिया अरे भैया! अब सुनि शिशिर भवनका वर्णन होत ॥५॥ इति हिमऋतु भवन।

अथ शिशिरऋतु प्रदर्शक त्रिविध महलकी शोभामें सुरेन्द्रकृत विक्रिया पौष माघ भाव छन्द, आल्हामरदान बहादरी चाल केल्यो ख्याल।

शिशिर भवनमें पाला पड़ रहा, अति यामें रचे हैं गुस्ल हम्माम। अजिन्हां तो आतशा रतन जामें जड़ दिये, अहिवे तो पक्षीकूं निहारे चाहो ठाम। चीता चा वेंडे, परे नरनारी जहां जाडेमें मखमल बानियां। अजिन्हां तो बिछे हैं गलीचे महा दाम, तत्तो छतो परन बलेली वहां सुहावनो। अरु खेंचे आतशी पंखेको बहां गुलाम ॥३॥ अरु छिरके हुरके मेवावर धरे, अति वैसे पहरे सबके शाना शाम। खिल रहे केशरके सूके वन खिल गए, अरु दाचे देशान्तरनसे सारे धाम ॥४॥ छुट रहे झाड़ झुत्तेमें मोती लग गए, अरु मोले लोग गादफल अरु दाम। मालो है जाबना पुलाकेका चन्दनका बना, अरु मेवाकी लोहल पखेल जिनमें सुरह श्याम।

इति शिशिर भवन। अथ वसंत ऋतु प्रदर्शक चतुर्थ महल सोभा सुरेंद्रकृत विक्रिया फागुण चैत्र भाव छन्द–आल्हामरदान बहादरी चाल चांदले वर्ती।

भवन वसंती पचरंग रहनके अति जा सेरलोंके पूरे गीत सुधार जलो चांपे पलेली छिडा दई कुसुमयां अरु जिनकें मूंगेके लगे हैं पाए चार ॥१॥ परवीनाचा दीवाली पढ़े।

हीरोंके झाडोंमें लगी हैं लोलनकी बहां अरु मेवा गांठे गुच्छोंके दिये डार इन्द्र नीलमणिके सबो कर्णफल गिर हैं अरु

जिनपे झालोंकी लगी हैं कतार ॥२॥ कहीं पुखराज लगाए हैं फर्समें अरु चन्द्रकांतको ए रोशन अपार सूर्यकांत मणिको खिलो हैं किरणावली अरु जहां भानुको नहीं है दरकार ॥३॥ रंग दिये फटकमईली मंदर बोहने अरु फूलवारीके बनाए गुलशन कयार पीरी पीरी केशरखंती जम्पे खिल गए अरु देवे फूल सरसोंके जीवहार ॥४॥ फूल गए अब अनार सोंलो मालती अरु भैया कूकत कोयल बारबार बज रहे जनमृदंग बाजे पांवरो अरु कहीं बाजे डफरबल सितार ॥५॥ कोई गावे भैयाजो बसन्तो मधु माधवी अरु कोई मालकोस कान्हरा केशर कोई गावे महू सिंधु भैरवी मूपालीसट अरु भैया हो रहे प्रभुके जै जै कार ॥६॥

इति बसन्त भवन शोभा समाप्त ।

अथ मंप्ता ऋतु ग्रहशोभ पंचम भुवन शोभा सुरेंद्र कृत बिक्रिया केशव ज्येष्ठ महारो बाग सांवन लगो पंचम भवनमें ।

पखे लगि गए बाजि भैया खसके बंगले दिये है छुटवाय हरे हरे भैया तंबू तन गए अरु हरा लगी हैं फना तोको करतार ॥१॥ बाबा करो दोहो ।

देवते गुलाबोंवे भराई इन्दर बावडी अरु भरवा दिये तलेवा सागर ताल कन्डरोंसी नहरोंमें चौतरफा बंवे छुट गए और जिन बेठेबो हैं हंसरु मराल ॥२॥ हरी हरी दूबें सडकोंपे सोभा दे रहो अरु नारंगी फलोंकी झुकी डाल हरे हरे पत्रोंको महरावे महलोंकी बनो अरु जिनमें हरो हरी चवर चंदवाल ॥३॥ हरी हरी अटारी हरी हरी बन गई, चांदनी अरु बिछ गए हैं फरश हरेलाल हरे हरे वृक्ष हरी हरी वेलें झुक रही अरु जिनपे हरे हरे तोते करे प्यार ॥४॥ हरी हरी समाजें निरत जहां हो रहे अर जहां हरी हरी नाचे सुकुमार, हरे ही गवैया गावे हरी हरी रागनी अरु करे किमर गन्धर्व अपार ॥५॥ ऐसो भांत बिक्रिया प्रकाशोको सुरेन्द्रनें अरु सोवर शरद प्रथम

दीखें चार तावी तावी धूपोंमें वे मादक छाया कर दई। अरे भैया! ए हैं प्रभुजीके पुन्योंका संस्कार पंखे लग गये अ० ॥६॥

अथ वर्षाऋतु प्रदर्शक वर्षा भवनोंकी शोभामें सुरेन्द्र कृत विक्रिया ॥ थामल्यो बाग रसाल लेलदो ॥

वर्षा भवनमें भाई वर्षा ऋतु रही, अरे भाई कारे कारे उठे हैं अंबर छकधार। दामिन दमके गरजे घन घटा, अरु अमृत गंधोदककी फुहार ॥१॥ दोड ॥

बंगले टपके अरु टपके पेलेके पडे, अरु टपके दाडिमो सरीफे सहकार। चन्दन टपके जो टपके सोता मोगरा, अरु जामें टपके हैं हारसिंगार ॥२॥ छोटा छोटी नालियां चलेंसो लहरावती, अरु जामें गुरके रहे हैं झगार। तूती तूती बोले जामें तूती मीठो बोलियां, पीऊ पीऊ करत पपैया जो पुकार ॥३॥ घरर घरर घन आवे जब गरजते, अरु बाजे सनन सनन की बयार। चले चल वैया पर वैया जब झरंटे, अरु छाती दोखेकी महलोंमें पछधार ॥४॥ ऐसी ऐसी शोभा वरसाकी जहां बन रही, अरु बरसावे भैया मेव फवार। गावे गन्धर्व अखाडे सब सजि गये, अरु गावे किन्नरी इन्द्राणियां मल्हार ॥५॥

सुंदर बजावे हैं तूंबरे वीणा बांसुरी, अरु बाजे ढक्कन फोरी सहनार। सजि गये महल राजाके सब दिल गई, अरु जापे आयो सिंह आसन सिंगार ॥६॥ छत छत गगनमें छट गये देवा देवता, अर छट गये जुगलोंके ठठकार ॥७॥ किया अभिषेक जापेमें भगवानका, अरु जासूं चलेंसो दाहिना करधार। दिये राजाओंके सब टेरले सुरेन्द्रने, अरु इन्द्र राणीने जपेहे मंगल चार ॥८॥ निज निज गोतनि गीतन सब कर रही, अरु कोई अंदर कोईने किये वार। ऐसी विधि कियाकी महरम भगवानका, अरु किया न्यारा न्यारा सबका सिंगार ॥९॥ इति

गये छत्र सिंहासन गहां बिछ गई। अरु होवे राजापे चंवर फटकार, अवधिपुरीमें थांपे जुगलीओ आ दमें। अरु बना थांदवे मनुष्य दरबार ॥१८॥

इति दर्षा भवन। माता पिता अरु भगवंतका नह्वन समाप्तम्॥

अब भक्तिक देवता अरु समस्त जुगल जुगलको जिन दर्शनाभिलाषी वहां आगरा बाहार ल्यावना भगवंतकूं सभामें दिठावना प्रजाकूं दर्शन करावना घूंटो देना इन्द्रका तांडव नृत्य करना और समयकालको बहार दिखावना। समुच्च वर्णनमें सुरेन्द्रकृत नाटक यहां पा आंब लेश्यों॥

धन माताजी धन धनवे पिता, आजि जिनके जनम धरे श्री भगवान। आजि जिनके आपे चतुर्विध देवता, आवे करनेकूं जन्म कल्याण॥१॥ घटेओ चतुर्विध देवता, अरु चढे भैया इन्द्र शतेन्द्र। नाभि नृपतजीके संगहां अरु भया गये वे माताको लेने सहित जिनेन्द्र॥२॥ दोह॥ आज गुमारोजो ध्यटपे सुरनायने, हाति जग जननी पधारो दरबार। कहो जग जननी दिखादे अपने पुत्रकूं, आजि सारे द्वारपे खडे हैं सरकार॥३॥ पूर्व जनममें तेने किया तप स्वामिनी, अरु तेरे दर्शनोंके खडे इन्द्र द्वार। तेने माया पाटा है परम दश लाखगो, अरु तेने धारा नाना शीलका विचार॥४॥ पाले तेने दुखित जनोंका दया धारके, अरु किया सुखित जीवोंका उपगार। करी अर्हंत शिव पंथकी प्रभावना। अरु दिया साधू संतोंका ते अहार॥५॥

दिये महा दान संतोषा सबको जाचमा, अरु भया भोग भूमें तेरा अवतार भई तू तो दानके प्रभाव पारखखण्डमें। अरु राजा नाभिकी भई है पटनार॥६॥ पाए तेने दानके प्रभाव कल्प वृक्ष ए, अरु मन वांछित भोगूंके भण्डार। आगे तुम जावोगे दोनूं ही सुरलोकमें, अरु हांके देव ल्योगे नर अवतार॥७॥ अर धर संयम हरोगे सब कर्मकूं, अरु तुम

आवेगे मुक्तिके मंझार। जाया तेने पुत्र सुपूतो ऐसा जगतमें, अरु कोई जनेतो जनेगी तोकीनार ॥८॥ इतनी अरज कोज्यो जब भागनी। इस जंबू भर अली भरत मंझार, बीत गयो काल ठारा कोडा कोडी सागरा। अरु ह्यां तो भयाना जिनेन्द्र अवतार ॥९॥ सारे भोग भूमियों भेगूं मैं गलतां रहे, अरु नहिं धराह्यां कहूने व्रत धार। नहिं जाना मर्म किसीने जिन धर्मका, अरु नहि जाने कोई श्रावग अचार ॥१०॥

लिया अब जनम प्रभुरे तेरे गर्भसे, अरु ए तो मारग चलावेंगे चाचार। धर्म मर्मको बतेया मैया ते जन्यो, अरु तू तो सुफल भई है संसार ॥११॥ जीवो तेरा कंत पिता भगवंतका, अरु तेरा जीवोए सपूती पुत्र सार। इतनी अरज मेरी सुनले तं श्रंकरी। अरु तेने जायो है धरम अवतार ॥१२॥ तेरे दर्शनको आये हैं देवी देवता, अरु माता आये हैं धारूं की पारवार। किया तेरे पुत्रका नहवनमें सुमेरुरे। अरु तेरे पतिका किया है शृंगार ॥१३॥ बट रहे दान बधाई तेरे द्वारपे। अरु बांटे माता तेरे सखा भरतार, बांटे मन भाई सी बधई तेरे पुत्रकी। अरु बा'है बला बिरछ जोबो हार ॥१४॥ इतनी अरज मेरी सुनले अब भागनी, अरु दिया ऊकमरा जाने पर प्यार। जावो मेरी प्यारी परलाको पूरी भावना। अरु तेरे पुत्रको पधारो दरबार ॥१५॥ सुन ऊकवाई न समाई फूली अगमें। अरु किया इन्द्राणी इन्द्र राणीने सिंगार। निज निज नेग सुहागन सब कर रही, अरु सेवा करे सब छपन कंवारी ॥१६॥ औरपुरा बैंझो उआरे देवी आरते, अरु गावे नाचें देवी करें संगल चार। तीयल पहराईभी मातकूं सुगं कोकली, अरु जामें जड़े हैं रतन भेराजी बेशुमार ॥१७॥

अथ माता महारानी जचाका शृंगार। रहाय।

धन्य जिन माता धन्य महावती, जिनकी कूखमें सो

भगवान। भजिवे तो शीलकूं सिंगारें धर्मको, भजिवे तो जानें जगजीवनकूं पुत्र समान ॥१॥ चाल ॥ प्रथम लगाईजी माताके तनमें रवगंकी, जाति इन्द्रनीने सुगंध अपार। गजरे पहराये फूलोंके देवी देवता, अरु जिनमें रहै मोठी मीठी महकार।२॥ मंहदी लगाई चरणोंके इन्द्र राणियां, अरु हर धोते हैं मंगायके महार। चन्दन केशर अर गङ्गा मंगायके, अरु धोते ठीयकके पल्ले गुछेदार ॥३॥

माथेपे बिन्दी मुख भोताजी अबीरकी, अरु पोये मोती बाल बालमें सुधार। माथेपे मुकट झलके हिरणाकटी, अरु वे तो मुलके इन्द्र धनुष अकार।४॥ चोटीपे चूड़ामणि बांधोजी सुधारिके, अरु माथे चिंतामणि दावा लगादार। कानोंमें करणा भरण बांधे सोहने, अरु वे तो सोहैं चन्द्र मंडल अकार ॥५॥ नाकमें धारो नकवेसर सुहावनो, अरु चित्रा वेदई फूलोंके बुन्देदार। कण्ठाभरण सजायेजी जड़ जड़के, अरु डारे रतन जटित कालों हार ॥६॥

झलके हैं लटक माताके मुख चन्द्रपे, अरु मानों पन्नगोंके रही झगड़ा डार। हमरे चलोंपर तुम काहे बल खा रहो, भजि हम तो हैंगी माताजीकी ताबेदार ॥७॥ झीनी झीनी माताको पहराई चांगी सोहनी, अरु जामें साथिये निकारे बूंटेदार। कुरतेपे फूल निकाले मखतुलके, जाति कटि मेखला पेटी पेटीदार ॥८॥ गुन्दा हे तारोंके कमर दस सोहना, अरु डारे दामनमें लाल फूलो हार। बांधे भुज भूषण जटित नवरत्नके, अरु बाजू बन्धोंकी लगाई हैं कतार ॥९॥

हरी हरी चूरियां सजाईजी सुहागकी, अरु कर कंगन जड़ाऊ दिये डार। पोरी पोरी छल्ले गूंठा गुठड़े सजायके, अरु पड़े छड़े पायलोंकी झनकार ॥१०॥ गूंठोमें आरसी जड़ाऊजी आदर्शकी, अरु दांतों मञ्जन आंखोंमें अंजन डार।

नागर पानका बनाया बीड़ा रसभरा, अरु पीछा ओढ़ना छड़ के करी तैयार ॥११॥ अर दिया माताजीका पल्ला इन्द्र राणियां, अरु लिया उठाके बच्चेकूं गोदी धार। किया इन्द्र राणीने छत्र भगवन्तपे, अरु गावें कुलगिरवासी मंगल चार ॥१२॥ धीरे धीरे माताजी लई है अपनी गोदपे, अरु देखा पुत्रकूं कृपाकी दृष्टि धार। सब गया दुःखजी अब जगका तिहुं कालमें, अरे भैया! निरखो है अजब भैया लेके बच्चा बार ॥१३॥

अथ माता सहित पुत्रका दर्शन का जिन बनविहार नगर जात्रा। ख्याल। कोई तो बतावे भैया ए है सरदारकी, अरे भैया! प्रगट भई क्या ए जिनबानी। अरे भाई सुरति दिखालादी, कोई तो माता कहे। कोई कहे सुरति भई है, भैया मूरतिवान ॥१॥ पुनः ख्याल। कोई तो बतावे भैया सकल महानंद, अरे भैया भाग जगे हैं कारण पाय। अरे भैया! मनके विकल्प छोड़िये, लखियाकूं पूछोजी भैयाजी अर्घ चढ़ाय ॥२॥ चाल— प्रथम उतारीजी राजाने प्रभुकी आरती, शुद्ध शुद्ध कियाजी प्रभूको नमोकार। तंजे मनु जनम सुफल अपना जानके, अरु लिया पुत्रकूं गोदीमें धर प्यार ॥१॥ सौंपे महारानीके लिटाया कर दाहना, अरु लगाये बायें अंग पूजो मनुहार। दिया गठजोड़ाजी शचीने रानी जी राजका, अरु टाढा करोजी दर्वाजोपे खड़ा बार ॥२॥ पूछे जब इन्द्र सुरेन्द्रोंने जिनेन्द्रको, अरु लाया ऐरावत होके जी तैयार। ऊँचा लख योजन बदन जो निर्मये, अरु हर सुखदं दन्त अनुसार ॥३॥

इक इक दन्तपे सरोवर सुहावना, अरु पच्चिस पच्चिस कमलनी इकसार ॥४॥ पच्चिस पच्चिस कमल जिनके बने, अरु तिनके पत्ते इकसो आठ आठ सार। इक इक पत्तेपे नृत्य देवी कर रही, अरु इयो आठ आठ देवोंके झनकार ॥५॥ चले जो सबके घूमत इत उत देखता, अरु आपे लिखो है सबोंको

अंबावार। अबावारीमें सत्तरवो हैं मोहना, अरु भये राजारानी प्रभु असवार ॥६॥ हांके गजराजकूं सुरेन्द्र अंकुश लेयके, अरु प्रति इन्द्र दो चंवर रहें ढार। कोई तो बजावे भेरी बीणा अरु दुन्दुभी, अरु कोई झांझा मजेंओ झटकार।७॥ मन रहे शंख बरखेकी जिनेन्द्रके, अरु बाजें घन्टे अरु घोंघे घूं घूंकार। लेके भगवानकूं विराजेसो गजेंद्रपे, अरु किया परवस हजुवा नगरीके भेया करेओ बाजार।८॥ इति

अथ नगरकी जात्र में सुरेन्द्र कृत पंचोरवकी बधाई, रागनी झम्माचकी।

चिरजीवो महारानी मरुदेवी जया, चिरजीवो, जायो तेने आंवटे जुगादि जिनराजदेव। आज तीनों लोकमें हर लरुणा, चिरजीवो ॥टेक॥

रहियो तू सपूति हे प्रभूकी जगदाव मात, जीवो प जगतनाथ तेरा कजा। चिरजीवो० ॥१॥ बड़ो आप दरबार यद करें घरबार, तेरे द्वार आज मंगल रघा। चिरजीवो० ॥२॥ वंदिके जिनेन्द्र चन्द्र ले गयो सुधर्म इन्द्र, निरख नयन सुख भयो सघा। चिरजीवो० ॥३॥

अथ तांडव नृत्य होतो राजमहलमें माता पिता पुत्र संयुक्त विराजे दरबार लगा पुत्रकी गावलोका और अखाडेकी तैयारा। चाल बारहा पूर्वोक्त रवाम।

धन धन माता धन वे पिता, अजि जिनके जन्म धरें श्री भगवान। अजि जिनके महलोंके हजूरी दरबारमें, अरु नाचें इन्द्र अखाड़ेमें देखे सकल जहान ॥१॥

चावो—बिछ गये फारश जरीके त्रिभुवन महलमें, अरु मणि कमलोंकी बिछी हे कतार। नरम नरम मखमल मखतूलका, अजि कस दिया हे फरश इक बार ॥२॥ हो गये हाजिर सकल सुरलोकके, अरु देवी देवता सकल नरनार। चारे हो

खुशक न समावैं फूले अँगमें, अरु मन माईकी बधाई बांटे घार ॥३॥ गली गली कूंचे कूंचे ऊँचे नीचे सब लगां, अरु वरें वर्षा देव पंच प्रकार। निर्मल भई है दशों दिश आगतमें, अरु भई चमस त्रिलोकी इकसार ॥४॥ गावैं गन्धर्व बजावें बारे बजि गये, अरु देखें गण जुगलनके अपार। तुम्बर गावे हैं राजाकी बिरदावली, अरु सजि गया है राजाका दरबार ॥५॥

बीचों बीच महलादेके सुरेन्द्रने, अरु थापा सिंहासन देखो परकार, जैसो हो देव शिखरको भया चूलिका। अरु रच दिये बन ताही परकार ॥६॥ फूलो फुलबारी न्यारी न्यारी सो हैं क्यारियां, अरु छूटें फव्वारे हजारे गुलदार। रच दिया अचल सिंहासन रतननसें जड़ा, अरु फोरी बिछिया सुरेंद्र सारा घार ॥७॥ फिरे च्यारों ओर सभामें भगवानके, अरु मानों देवें परदक्षना बारम्बार। बिछ गई पांडुक शिला अरु गद बिछ गई, अरु सोहै तापे सो सिंहासन त्रिधार ॥८॥ बैठे महाराज राजाकी देखे पुत्रकूं, अरु माता बैठी ले गोदामें कर प्यार। हँस हँस बालक निहारे अपनी मातकूं, अरु देखें देवेंद्र सुखोंसे इस सार ॥९॥ चौंपं चहुं ओर निहारे दरबानकूं, अरु छवि इन्द्रानी परिव मंद दे फार। चूंसे था अंगूठाकी अनूठ दर-बारमें, झुक झुक देखें जुगलनकी ये नार ॥१०॥

निरख निरख मुखचन्द्रको जिनेंद्रका, अरु रूप बंध आने ले लेवें सवार। सिरी भगवान स्वयम्भू भये पुण्यसे, अरु चारें तीनों ज्ञान आनें सब घार ॥११॥ तुम देखा सब ईश्वे चित चाहसें, अरु देखे सब हीको दरें सबके प्यार। मन हुलसावें न समायेजो वे अंगमें, अरु भये हरख सबक नर नार ॥१२॥ अब प्रारम्भ दरायोको सुरेंद्रने, अरु होतो भयो मेंदा नाचनेकूं तैयार। हुकम चढ़ावो बीन बाजो गति देवता, अरु सारे गणको हो जावो भैया होशयार ॥१३॥

अथ सुरेंद्र कृत गन्धर्व शिक्षा तथा गन्धर्वोंके दोषोंका वर्णन ख्याल।

प्रथम मिलावो भैया साज सूर, अरु खैंचो खूंटा ठोको तबल मृदंग। सारंगी तम्बूरे बीणा बांसुरी, अरु ध्याकेशाले ल्या मिलावो अरुकी तरंग ॥१॥ पुनः ख्याल ॥ अब ल्यो दस्तावजन नसकी तरंग सब, भेरन फरी अलगोजे सहनार। करणा मंजीरे खजरी ढोल सब, झांझ पुंगी इक तार लौंगह सार ॥२॥ खैंच ल्यो सितारोंको रबाबनका, अरु भैया खैंच ल्यो नगारे असवार। घूंघरू बनाके छेड़ो पट तालको, तौर ले ल्यो अपने अपने भैया सब ही ओजदार ॥३॥ भावा—सुरसैं चूके गाऊ फैगा देई तालसैं, अरु फैंक दूंगा याको पहाड़से तां बार। बेगा मटकेगा अरु रेगा बाका ताल आ, अरु बेगा हसेगा धरेगा जो ह्यां दार ॥४॥ बिन अवसरके उठावेगा जो रागकूं, अरु बाकूं देगी बारां सभा धिक्कार। कण्ठकूं फूलावेगा जो गावतां, अरु समझावा ना करेगा जो विचार ॥५॥

मूण्ड हलावेगा साजोंमें घबरायके, अरु नहीं करेगा सभामें आंखें च्यार। सुरके पुरसमें उठावेगा जो रागनी, अरु बोला लावेगा बेताला शेखोमार ॥६॥ बिगडे सुरोंपे न धर्मेगा सुर छोडके, अरु मरूताटपे न लेगा जो संभार। इतने दोषोंकूं न बचावेगा जो देवता, अरु उसे फैंक दूंगा मैं तो भैया ढाई दांपके तीवार। ॥७॥ इति।

अथ समारम्भे इन्द्रकी आज्ञानुसार साज बाज तयार होके राग किसी रीतिसे भजन होने आरम्भ हुये और इन्द्र महाराजने अपना स्वरूप कैसा बनाया और तांडव नृत्य कैसे आरम्भ किया। ख्याल—

सज गई भैया नाटक मण्डली, अरे भैया सज गये भिन्न भिन्न बाजे सर्व, अरे भैया घुट गये स्वर सम अरु तालमें,

अरु सब गये किन्नर गन्धर्व ॥१॥ भावा—सज गया सब अखाड़ाजी सुरेंद्रका, अरु सदी पजसे हुवाजी तयार। पहरा है सजीलाजी रंगीला जामा इन्द्रने, अरु कर लीनी हाने सुभाजी हथार।२॥ सुभ सुभ ऊपर नचावें सुर सुन्दरी, अरु बाज बाजोंके अखाड़े लिये धार। छिनमें उछालेजी अखाड़ोंको आकाशमें, अरु फिर फि' आवे सभाके मंझार ॥३॥ ठुमक ठुमक गति भरेजी सुहावनी, अरु फिर सर्प ले हाथूमें संभार। ले वेयक फेरी नाभे चक्कर आकाशमें, अरु आवे सर्प भी सभाके मंझार ॥४॥ छिनछमें छोटा छिन भारें ऐसी विक्रिया रचि बो तो फीके सुर गिर धनिहार, सररररर बाजे सारंगी सुहावनी। झिटझिट धम धम बाजें तबला खितार ॥५॥

प्रथम उछाल्यो भैयाबाने भैरु रागकूं, अरु दूजे किया मालकोशको उचार। तीजे हिंडोल अलाप्यो भैया मालके, अरु चौथे श्रीकूं उचाऱ्या बारबार ॥६॥ पांचवें उचाऱ्या सरसाने जीव बसन्तकूं, अरु छठे दीपक उचाऱ्या' हर बार। छहं सह राग इन्हूंकी भैया भार्या, अरे भैया तीसूं की उचारी बारबार ॥७॥ तीसोंकी उपजता दिखाईकी सुरेन्द्रने, अरु गाया इनका फिर सारा परिवार. कैसे कैसे नाटक दिखायेको सुरेन्द्रने अजितने प्रभुजीके दई भैया नौ भवोंकी नकल उतार ॥८॥

अथ भजन तांडवनृत्यके भावमें सुरेन्द्र कृत भक्ति रागनी जंगला चाल गंगाबाली मेलाको लोगोंकी बजे पर सांगकी तरह व इकतारे पर गानेकी।

किया ऋषभदेव तबतार किया सुरपतिने निरत बाके किया ऋषभ० भक्ति निरत किया बाके हर्षाके, प्रभुजीके नव भवको दरशाके। बरररररर दरे सारंगी तम्बूरा नाचे प । पारी भटकाके, किया ऋषभदेव० ॥टेर॥

अजि प्रथम सकाशी बाने इन्द्रसाक किया ऐर, अ ' तवो

जगतमें सुनी न काहू देखी तैसी। आयो कोउ कौतुक पटकी कायो मुकुट बांध, कम देखो कूचो मानूंवा कुच्यो पून्योंका चांद। मनकूं हरत गति भरत प्रभूको पूजे चरणोंको जिनन्दाके ॥ छिया ऋषभदेव० ॥ सारी ठेक पढ़ो ॥

लखो प्रभुजूंपे चढ़ाये हैं हजारूं देवांदेव जिन, हाथोंकी हथेलीपे नचाये हैं अखाड़े तिन। ताथिया ताथिया थिटथिट थित्ता धनको धोरी लागे, घुमकिट घुमकिट बाजे तबला नाचे प्रभुजीके आगे। वीनूं भेरि गावें तिहां किन्नर हल गावें, जब जासें भञ्जन ताके ॥ छिया ऋषभदेव० ॥२॥ अजि छिनमें आय देखो तो नन्दीश्वर द्वीप जाय, पांचूं मेरु वंदि आ मृदंगपे बजावे थाप। वंदे ढाईद्वीप तेरा द्वीपके अकृत्रिम चैत्य, तीनोंलोक मांहि पूजि आवे दिव नित्यानित्य। आवें जो झरटि जम्बूद्वीपे होसा लेने दम धरै छम छम मन मोहैजो मुरदाके ॥ छिया ऋषभ० ॥३॥ अजि अमृतके लगे झड पड़ो रतनधारा, थोरी थोरी पाछे पौन लिए देव जै जै कारा। भर भर थोरो बरसावें फूल दे दे ताल महके सुगन्ध चहके सुचंग खड़ताल। जन्मे जिनेन्द्र भयो नाभिके आनन्द, नैनानंद यों सुरेन्द्रगण भक्तिकूं प्रकटाके। छिया ऋषभदेव अवतार लिया सुरपति, ने निरत जाके ॥ प्रभुजीके न० ॥ सररसरर घर० ॥४॥

इति ऋषभदेव भगवन्तके जन्मकल्याणक सम्बन्धी कथन संयुक्त सुरेन्द्र कृत नाटक। समाप्त लेख्यो।

अथ बारनूंजी में भगवन्तके नीम व पिछलोंका कुछ वर्णन, अजि ए तो दिखलावे ऋषभ जिनेन्द्रकूं अजि भैया इन्द्र सुधर्मा कर कर चाव। भावा—प्रथम दिखाया भाग चरित्र विदेहका, अरु महाबलकी विभूति विस्तार। समकित पायके सन्यास जैसे संधिया, अरु किया स्वय बुद्ध मन्त्री उपगार ॥२॥ दूजेमें दिखाई दूजे स्वर्गकी विभूत सब, अरु ललितांग देवताका अधिकार।

घर घर पुष्प सुधारस बरषे, छग रहे पंचाश्चर्य खरी। नयन नंद सुरेन्द्र प्रणति करि, भविजन सम्यक् दृष्टि धरी। है शुभकी घड़ी। छाये पुण्य०।३।

अब चौथी बधाई रागनी पूर्वी झंझोटीका जिसमें इन्द्र महाराज भगवानको जन्म घूंटी दे हैं पद्धति कहियां हैं महुरा वौ ढोलकी साथ बहुना कहांसे प्रगट है।

हे दिवा ले माई पुत्रकूं जन्म घूंटी। हे दिवा ले०।टेक।

हे बालक तेरा है बड़ा चंचल, पकड़ ले मुट्ठी ढक ले अंचल। ए है मगरा करे है झगरा। स्तुति कर ले, चरन पकड़ ले। बड़ी है ठठना, मुझमें बलना। मैं ल्याया हूं स्वर्ग लं करे, इष्ट मिष्ट रस विष्ट अनूठो अमृत रसको घूंटोरा। दिवा ले माई ॥१। हे जो मैं अपना बल दल दिखलाऊं, उलट पुलट त्रिलोक कर डारूं। तेरा सुत है बली अनंता, मति श्रुत अवधिधार गुणवन्ता। याते मेरी कछु न बसावे, हाथ छुड़ावे निकसा जावे। मुख बावे दहलावे मोकूं हन हंस कर समझावे माता, बालक बड़ो नवीनद हूं हवि ज्ञान हमारो जाय अनुचित टूटोरी। दिवा ले माई०।२। माताने बालक पुचकारा, तब प्रभु दांया हाथ पसारा। देखें जुगल जुगलनी सारी, घूंटी इन्द्र सुधर्म निहारी। कुछ पिवाई कुछ गूंठे लगाई, दिखलाई जब नीव खग- हरी। चूसें प्रभु अंगुष्ठ भये वो पुष्ट [illegible] जुगलन चूंथो, हम सुख ए अब भातकूं ठेरी। दिवा ले माई पुत्रकूं जन्म घूंटी। हे दिवा ले० ॥३॥

अब जिनेन्द्रको हिंडोलेमें इन्द्र महाराज झुलावे हैं। राग दादरा जंगला झंझोटमें ॥

नाथ झूलें पालो जुगलनसें, हे नाथ झूले नाथ झूले हाथ फूले पालो जुगलसें। हे नाथ झूले० ॥१॥ इन्द्र झुलावे इन्द्राणी

अवधिनगर सुखदाई। प्रभु तातको देन बधाई।।बदरबा० ।।९।।
आवो दर्शन प्रभुजीका करवयो। नयनानन्दपे घर भर दयो
।। बदरवा० ।।१०।।

अथ दूजी बधाई तक तक मारे नजर या इक चाल।

जुग जुग जीवो ऋषभ अवतार, तुम जुग जुग जीवो ऋषभ अवतार। तुम सकल जगत दुःख हरन करन सुख, जुग जुग जीवो ऋषभ० ।।टेक।

एक तो प्रभु तुम करी वपाया, दूजे तीर्थंकर अवतार। तीजे धर्म तीर्थंकर्ता मोक्षपंथ दर्शावन हार, तुम सकल जगत दुःख हरन करन सुख। जुग जुग जीवो० ।।१।। चौथे स्वयं बुद्ध वृत धरि हो, करि हो भविजनको उद्धार। तिरि कहै मोक्ष व रोगे साहिब, फेर न आवोगे संसार। तुम सकल। जुग जुग जीवो० ।।२।। चरम शरीरी तुम हो साहिब, मेरा चेरा तुमरा राखो नाथ चरणमें अपने। तुम भगवत मैं भक्त तुमार। तुम सकल ।।३। तारे बहुत भव्यजन तुमने, हमसे अधम रहे मझधार। अब कहै नाथ हमें निरवारो, तुमरा जन्म हमारो पार। तुम सकल ।।४।। नाचे इन्द्र जिनेंद्र निहारे, ले तबलेमां सुधा पसार। लखि लखि सुख दृग सुख न समावे, अबकौ करि नयन हजार। तुम सकल ।।५।

अथ तीजी बधाई रागनी देशका सोरठा।

छाये पुन्य जगत जन शुभकी घडी, शुभकी घडो है शुभकी घडो है शुभकी घडो। छाये पुन्य जगत जन शुभकी घडो ।।टेक।।

जग्यो सुहाग भाग जग जनके, परजा सकल निहाल करी। जन्म्यों तीर्थंकर या भूपर, नर्कादिकमें चैन परी। है शुभकी घडी। छाये पुन्य।१।। चिर जीवो यह बालक जगमें, आपे त्रिजग प्रिय मांग भरी। जुग जुग जीवो तुम मातपिता नित, सुत सब लोप अवधिपुरी। है शुभकी घडी। छाये पुन्य० ।।२।।

तीजे भव वज्रजंघ श्रीमती दिखा दई, अरु दिया वज्रदन्तजीकूं ज्यूं अहार। ३॥ चौथे भवमें भये थे जुगलया भोगभूमिमें, अरु तीन कोशका किया है तन धार। पांचवें दिखाई माया सिरीधरा देवकी, अरु जाने करी जिन पूजा अविकार ॥४॥

छट्टेमें दिखाई है सुविध आवगकी क्रिया, अरु भये अच्युत विदेहके मझार। सातवें दिखाई अच्युतेन्द्रकी विभूत सब, अरु किया पुण्डरीकनीमें अवतार ॥५॥ भया सुत वज्रसेन तीर्थंकरदेवके, अरु भयो वज्रनाभिचक्री एकवार। मुनिवर होके जैसे भाई सोले भावना, अरु गये सर्वार्थसिद्धिके मझार ॥६॥ ऐसे नौ जनम दिखलाये भगवानके, अरु नच्यो ताल सुरगति अनुसार। हांटें वहुदान प्रजाकूं परमेश्वर दई, लखियो ते गावें यों दश ई सब प्रकार ॥७॥

अब शुरू चतुर्मास आषाढ़ वदी चौदसको सम्भावदार दिन जन्म वधाई मलार। मेरा पियरवा नहिं आयोरी यह चाल।

शुभके वदरवा झुकि आयरी। शुभके०॥ हे झुकि आए झुकि आयरी। झुकि आयरी शुभके वदरवा ॥टेक॥

सखी अपनीके दिन आये, देखो जगत पुन्य घन छाए वदरव झु० ॥१॥ सखि भविजन भाग विशारा, जहां चैत्र चुयो रुप माए ॥वदरवा०॥ ।२॥ सखी सर्वारथ सूए। भई जनम जनमकी वृष्टी ॥वदरवा० ।३॥ सखि अने हरख अंकूरे। सब फले कलपतरु पूरे। वदरवा० ।४॥ वनफल दुभिक्ष हटायो। शिवफलको संवत आयो ॥वदरवा०॥ ३-५॥ सभि दाह दलाप निवारो। चले शीतल पवन विचारो ॥वदरवा० ।६। झडि वरषें अमृत फुवारे। सुर जैजेकार उचारे ॥वदरवा० ।७॥ सुर पुष्प रतन भरषावे। गन्धर्व समूह यश गावे ॥ वदरवा० ॥८॥ पशो

सुहावे, चन्द्र सुहावे आछो पैठा सुरगणमें । आछो मधुवनमें, नाथ सुने० ॥२॥ सूर्य सुहावे धारणेंद्र सुहावे, त्यौंतर फूले न समावे वदनमें । आछो मधुवनमें । नाथ सुने० ।३॥ चकर लागत अगवतको सुहावे, फूले देवन मावे वचनमें । आछो मधु-वनमें । नाथ सुने० ४॥ वसुत सुहाग बढ़ो त्रिभुवन घर, बढ़ो हरख भविजनके मनमें । नाथ सुने० ॥५॥

बरसे घर घर वसुत संपदा, चमके मानों जैसे दामिनि घनमें । आछो नाथ० । ६॥ ऐसे हर प्रभु जन्म कल्याणक, वारवार नमि पंचनमें । आछोनाथ० ॥७॥ गये सुरेंद्र जिनेंद्र प्रकट कर, सकल सुरा सुराग सुरगनमें आछो० ॥८॥ पाडुक देश करे प्रभु सेवा, नमें नयन सुख गाय भजनमें । आछो० नाथ० । ९॥

अथ भजन विसर्जन राग देशबिहाग परजका जिला ।

भजनसे रखि ध्यान प्राणी, भजनसे रखि ध्यान ॥टेक॥

भजनसे इन्द्रादि पद हो, चढत बैठ विमान । प्राणी भजनसे रखि ध्यान । भजनसे० ॥१॥ भजनसे खट खण्ड नव निधि होत भरत प्रधान, तिरे अब सागर तुरत हो पावको भगवान । प्राणी भजन० ॥२॥ नवकमकर्दमित शुद्ध करि भजन परवान, भये श्र ऋषभसेनादि गणधर भजनके परधान । प्राणी भजन ॥३॥ भजनसे भये पूज्य मुनिजन गौतमादि महान, भजनसे तिर गये भील उटायु येडक स्थान । प्राणी भजन० । ४॥ कहत नयनानंद जगमें भजन सम न निधान, भये भजनसे अरहत सिद्ध आचार्य गये निर्वाण । प्राणी भजनसे रखि ध्यान, भजनसे रखि ध्यान प्राणी भजनसे रखि ध्यान ।.५॥

इति श्री नयनानंद यति कृत सुरेन्द्र नाटक सम्पूर्णम् ।

बनाया संवत् १९४४ चैत्र शुक्ल ५ को सम्पूर्ण किया ।

प्रथम ही पुस्तकी पूजा करते लाला उमरावसिंह व निहालसिंह सीतरमलालोंकूं अवसिद्दा मांगा दिया संगमलाल ले गया जो कोई नकल करे हर्फ बहर्फ क्योंकि ज्यों टेक जांचकी लिखाम समेत शुद्ध उतारे और गाते वक्त जितने दूसरे अक्षर हैं सारे गावैं ये भजन जहांसे उठते हैं वहांसे ही लिखने शुरू किये हैं। इमा चुकनेपर कांपकी दूसरी जगह भी पड़ी है. जो गायन विद्याके अनुसार लिखे हैं गरज इसी तरह गाना इसी तरह लिखना अपनी कुमावे कोई सुधारे बिगाड़े गाके अपराधी होगा। इति सुरेन्द्र नाटकके त्रिशत् पदोंका अध्याय एकोनविंशो अध्याय सम्पूर्णम् ॥१९॥

अध्याय बीसवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ नयनानन्द यतिकृत भजन विलास सम्बन्धी उत्तम पदोंका छोटा सर्वसंग्रह नामा बीसवाँ अध्याय लिख्यते।

अत्र हो महा चमत्कारी रूप अर्हंत स्तुतिका पद संकट हरण लिख्यते ठुमरी देश गौड रागकी हजूरी।

प्रभु तार तार भवसिंधु पार संकट मझार। तुम हो अधार, दुःख दे खार, खेवो हाथा मोरी नैया। प्रभु तार तार० ॥टेक॥

परमाद चोर दियो हमपे जोर, भ्रम पोवडोर, दिये मझमें बोर। तुम सम न और तारन तरैया। प्रभु तार तार० ॥१॥ मोहि डंडडंड, दियो दुःख प्रचंड कर खंडखंड। चहुं गतिमें भंड, तुम हो तरंड, तारो तारो मोरे सैंया। प्रभु तार तार० ॥२॥ हग सुखदाय, तेरी है हि राय, मेरी बाट

फांस हर सबको साथ। हम शरन आय, तू है जग पवरैया। प्रभु तार तार० ॥३॥ इति।

यह संकट हरण पद जाहो जिस संकटमें १०८ दफे दिन ७ वाँ १४ वाँ २१ वाँ ४० वाँ पढकर अजमाइयो तत्काल संकटकूं मेटे हैं। रोग शोग राज भय शत्रु भयभूत प्रेत पिशाच भय नष्ट करे हैं, फंद हवालात फांसीसे बचावे हैं। यहा चमत्कार इसका अनेक बार देखा है।

अब दूजा पद इसी भावमें जाम हिंदू मुसलमानोंमें जो जीव हिंसा करनेवाले पापा हैं तिनके ऐश्वर्य पर ऊंचा दुकान फीके पकवानका तान।

वाहरे अजान तेरी इक शान है हिन्दुस्तान अरु मुसलमान। किया निशान पकवान फीकानोके वाहरे अजान ॥टेक॥

तेरे लख खान जमका अजान तेरे लखि निशान। कन्ने विरान दुश्मनके मान, गल जावें घमंडीके। वाहरेअजान० ॥१॥
हे देवदान काक चन्द्रमान कोई है हैवान। कह है शतान तेरे ए समान, बेईमानो कहां चंखे। वाहरे अजान० ॥२॥
पढिकर कुरान वेदरु पुरान हरेतूम समान। जीवनके प्राण मयावद गुमान, मल घर नहिं मोके। वाहरे अजान० ॥३॥
जाहरे नदान नामदेश्यांन हर मुखनशान, किया जो कहान ऊंची दुकान पकवान तेरे फंके। वाहरे अजान० ॥४॥

अर्थ—यहां हर मुख नयनविलास का नाम है, पुनः हर सुख सम्यग्दर्शन रूप तत्त्वार्थ बोधमई सुखका भी है, जो तेने तत्त्वार्थ बोध न जाना अर्थात् हिंसाके फलकूं न जाना ऐसा अर्थ है। हिंसक जीवोंको उपदेश करके प्राणियोंके दश प्राणोंका नाश करतेकूं मने करे हैं।

सुनरे अज्ञान गुरुदेवके ज्ञान अपनी समान लखि सबकी ज्यान, दश प्राण किसी प्राणीके ना संहारे। सुनरे अज्ञान ॥टेक॥

मत काटि पीटि, परपरकूं टोटि, मत ना घसीट, मत ना उखीट, मत रख अनिष्ट दीठि, मीचे भारे मारे। सुनरे अज्ञान० ॥१॥ तू तो इष्ट मिष्ट खावे रस विशिष्ट, यों ही दिव्य दृष्टि, कहि हार श्रेष्टि, होके कनिष्ट, रसनाकूं ना बिदारे। सुनरे अज्ञान० ॥२॥ मत नाक मोरि, मत आंख फोरि, मत कान मोरि, ए पांच जोर, दुःख दे कठोर, पांचें जीव जन्तु मारे। सुनरे अज्ञान० ॥३॥ मन टूट जाय बुधि छूट जाय, बोल्यो न जाय, खोल्यो न जाय, हल देह जाय, करु भाखेंगे हत्यारे। सुनरे अज्ञान० ॥४॥ ले हाथ हंस भयो नष्ट कंस, रावणको वंश, भयो सब विध्वंस, कौरव समंस, दुर्गतिमें पधारे, सुनरे अज्ञान० ॥५॥

मत झूंठ भाख, मूंदन उछाप, है नहीं साख, जीवनकी लाख मत करे नाश, ए पराके हैंगे सारे। सुनरे अ० ॥६॥ दिन दोकी जोत, है सिरपे मौत, सब ठग कपोत, है खोत पोत, फिर रात होत, खोटी बाजी मत हारे। सुनरे० ॥७॥ सुनकर दमन्त, चितकर प्रशांत, है यही उनको आवे है अंत। हग सुख हांस, मत अपनी बिगारे। सुनरे अज्ञान० ॥८॥

इसी चालमें दशलक्षण धर्म कथन उपदेश रूप दशमाका पद है।

भज राम नाम, मति चालि वाम, दुनियाके नाम, आवैना काम, धन धाम गाम, तेरे संग ना चलेंगे। भजि राम० ॥टेक॥

रख छिमा भाव कोमल सुभाव तज मन कुदाव, रख सबसे चाव। आठव हटाय सब करगम लेंगे। भजि० ॥१॥ संजमकूं साधि तपकूं अराध, तज रूपि उपाधि उपाधि। कर दान यह दर धर्म गहेंगे॥ भजि० ॥२॥ निज पाक शौच मत करे ढ़च, लखे जीव ह्राच परलोक सोच। तेरी फौज फाक, फूंकु शोक ए दलेंगे॥ भजि० ॥३॥ यदि है अकोल

बन ना विपीक, मत कर दुकोड मत बन रकीक। तेरे सब बकील कर हीलकूं टलेंगे ॥ भजि० ॥४॥ कहै नैनसुख पले मेटि दुख यही मुख्य मत रहे बिमुख, तेरे हाक प्रमुख सब स्वामर्मे रलेंगे ॥ भजि राम नाम० ॥५॥

अथ चतुरविध दानोपदेश ।

यहै बारबार सतगुरु पुकार सुनो दया धार, पट मतको चार। करो दान चार दोनूं भवमें सुख पावो, यहै बारबार सतगुरु पुकार० ॥टेक॥

यहां हो यश अपार, वहां हो जग उद्धार। टले पाप भार फले पुण्य वार, कुछ लेज्यो छार, ग्लानि हाथां मत आवो। यहै बारबार सतगुरु० ॥१॥ दीज्यो रोग जान औषधिको दान। जामें गुण महान औगुण जरान, शुभ स्नान पान दे अज्ञानकूं मिटावो। यहै बारबार सतगुरु पुकार० ॥२॥ मूरख विद्वान दीज्यो विद्यादान, जामें पाप हान सम्पत्तिकी खान। देके स्वार्थ ज्ञान परमारथ सिखावो ॥ यहै बारबार सतगुरु० ॥३॥ भयवान जान शक्ति प्रधान, धन जन मसान पट मालनान। देके दान मान समझावो भय हटावो ॥ यहै बारबार सतगुरु० ॥४॥ लगे भूख प्यास अति होय त्रास, नर पशु अनाश आवे शन्त पाश। कण मण गिरास देके शुद्ध जल प्यावो ॥ यहै बारबार सतगुरु पु० ॥५॥

इस भांत चार दीज्यो दान उदार, औषध सुधार विद्या उधार। सब भय निवारके आहार करवावो ॥ यहै बारबार० ॥६॥ कहै दास नेन आनन्द देन बोलो मिष्ट वेन, पावे सर्व चैन सीखो जैन ऐन। जासूं सूधे शिव जावो, यहै बारबार० ॥७॥

अथ दर्शन विशुद्धि भावना हेतोः इसी चालमें पद।

कब जगैं भाग चरू लगत त्याग, होके वीतराग सेऊं धर्म बाग, कब कर्म नाग बन बागको बुझ ऊँ ॥टेक॥

जामें भर्म बांस कुकरमकी तांस, पापोंकी फांस व्यसनोंकी

थांभ, उत्पत्ति नाश घेतिकाल कब पाऊं। कब जाऊँ० ॥१॥ जामें भोग कुण्ड विषयनके कुण्ड, चौदोय कुण्ड पञ्चोय दण्ड कब अग्नि कुण्ड दुर्ध्यानकूं भगाऊं। कब जाऊँ० ॥२॥ जामें धर्म जीव अधर्मको छोड़, आकाश जीव पुद्गलकी टोल भरे काल भोल। क्या दलील यहां बताऊं। कब जाऊँ० ॥३॥ आवे कब वो काल मिले गुरु दयाल, टूटे मोह जाल मेरा हो निहाल कहि अपना हाल मस्तक जा झुकाऊं। कब जाऊँ० ॥४॥ हरि अशुभ वृत्ति करूं शुभ प्रवृत्ति अशुभ अशुभ कृति, तजिहूं निवृत्ति कर निज परमातमकूं एही भाव भाऊं। कब जाऊँ० ॥५॥ हग सुख कुबुद्धि किये अति विरुद्ध दर्शन विशुद्ध, बिन रह्या अशुद्ध कर शुद्ध प्रवृति कर शिव पद पाऊं। कब जाऊँ० ॥६॥

इसी चालमें कविता अपने आपकूं उपदेश करे है।

सुनरे गंवार नित केवलार तेरे घट मंझार, परगट दिदार मत फिरे खुवार। उसहीकूं सुलझा ले, सुनरे० ॥टेक॥

तजि मन विकार अनुभवकूं धार, कर बारबार निज पद विचार। पद समयसार अपने ही गुण गा ले॥ सुनरे ॥१॥ तूही भव स्वरूप तूही शिवस्वरूप, होके मत कूर पड़ा अन्धकूप विषयनके तूप चेता मनकूं हटा ले। सुनरे० ॥२॥ नई दाय नैन आनन्द देन सुन जैन बैन; आतूं होय चैन तजि मोह सैन। नर भवका फल पा ले, सुनरे गंवार० ॥३॥

कविता अपने आपकूं उपदेश करे है।

मत करे रोष ले दिलकूं मोष, किया धर्म होय निज मनकूं तोष। अठ का का अपने घटमें। मत करे० ॥टेक॥

तजि मान अर्क मायासे फर्क करे लोभ तर्क, ए देह नर्क मत जान फर्क इनहोवे तू तो भारमें। मत करे० ॥१॥ पाकर कुल महान अरु रूप ज्ञान, मदीन ठान घटमें निदान भगवान

सुद्दी तेरी कुंजी तेरे करमें। मत फरे० ॥२॥ हिम्मत न हार ले झट निकार, कहूँ बारबार दृग सुख पुकार। मत फिरे खुवार जा लग मोक्षके नगरमें। मत फरे० ॥३॥

रागनी जंगला ठुमरी चाल।

सनम इतना न सतावोजी, तोरे दरशन बिना तरफें अंखियां, इतना न सतावोजी, सनम इतना० ॥टेक॥

जो तेरे दिलमें ए है सनम, सिर काटकर देहूं चलम। मुझे चैन खुशी नहीं लोग कठम, परदेश न जावोजी। सनम तेरा० ॥१॥

इस चालमें गजल।

जनम किरथान गंवावोजी, पायो तरस तरस नर भव दुर्लभ किरथान गंवावोजी। जनम० ॥टेक॥

मत ना मांस विषै तन मांचे, मत झूठी कह निर्भय होवे। तजि च्यारों पांचूं सातूं मत पाप कमावोजी। जनम० ॥१॥ त्रिषट मोय षट जीव विचारो, झटपट षट अरु पांच निवारो। द्वादश दाण चतुर शर धर तेरह मन ध्यावोजी ॥जनम० पायो० ॥२॥ यही मोक्षको मूल बतायो, अरहन्तादि महन्त न गायो। पर प्रतीत करतो सम्यक, इसे बढ़ावोजी ॥जनम० पायो० ॥३॥ तज चौबीस अठाईस धारो, पचतीस छत्तीस संभारो। ले छयालीसपयाभाटूं, सीधे शिव जावोजी ॥जनम० पायो० ॥४॥ जो तैं नाम नैनसुख पायो, तो तैं निज पर क्यों न लखायो। तजि परार्थ निज अर्थ गहो, मत नाम लजावोजी ॥जनम० पायो० ॥५॥ इति।

अथ त्रैकाल्यं द्रव्य षटकं इस श्लोक सूत्रके अनुसार प्रारम्भः।

हे आत्मन् च्यारूं कषाय पांचू पापका तूं व्यसन मत सेवै, त्रिक कहिये त्रिकाला षट कहिये षटद्रव्य मोव कहिये नौ ऐसे नौ पदार्थ। षटजीव, षटकायाके जीव, षटलेश्याभाव ६,

पांच अस्तिकाय ५, द्वादशांग १२, बाण कहिये पांच सुमति ५, चतुर कहिये चतुर्गति ४, शर कहिये पांच भेदज्ञान ५, तेरह प्रकार चारित्र १३, इनका ध्यान मोक्षका मूल अर्हंत देवोंने गाया है। तिसकी प्रतीत करके शांति चित करले जिसमें तेरा जो अर्थ है, सब पावे। पुनः चौबीस परिग्रह २४ तजि अट्ठाईस साधु मूलगुण चार पच्चीस उपाध्याय गुण पाय छत्तीस आचार्य गुण सम्भाल जिससे छयालीस अर्हंत गुण लेकर अष्टकर्मकूं खपाकर सीधे मोक्षमें पधारे। अष्टगुणरूप सिद्ध कहावोगे। इत्यर्थः।

अथ जगत् जीवोंकी विषय विडम्बना पर मधुबिंद काराका दृष्टांतपूर्वक भजनोपदेश राग नीचे भैरवी। चाल इस रागनाकी।

नालिश करूंगी अदालतमें, मेरी गोटेकी अंग या दिगारी महाराज ॥टेक॥

सासजीसे कहिहूँ, ननंदजीसे कहिहूं, छोटे देवरने दीनी गारी महाराज ॥ नालिश करूंगो० ॥१॥

इस जोडकी पूर्वी भैरवीकी ठुमरी।

देखः सुबड मधुबिंदुके कारन दशा बादनका मूढ दशा ॥टेक॥

मूढ पन्थी फिरे भववानन, जैसे करट विष व्याकुलता ॥ देखो० ॥१॥ भटकै कहुँ गहिके पन्थमें नित। लागी अगन जगमें चारूं दिशा ॥ देखो० ॥२॥ करके भवकूप करि कूपमध्य। मां खोवहि जन स्वाद नशा ॥ देखो० ॥३। बाटत श्याम श्वेत चूहे दक। निशि दिन वायुपं सावसा ॥ देखो० ।४॥ नीचे नर्क रूप सुख कारन। भक्षागम हरि देवा देवा ॥ देखो० ॥५॥

सिर पर लाककी गज गूंजत। करत कुटुंब सुर हाथ पछा ॥ देखो० ॥६॥ कहूं दो दि विमानचरा हक। परत बूंद सुख लागो चढा ॥ देखो० ॥७। भापर नाक चढाव मूढ इम। कैसे तजूं सुख आयोगमा ॥ देखो० ॥८॥ दूसी बस

पाताल पधारे। नर्क कुण्डमें जाय पड़ा ॥ देखो ॥९॥ जिन भूल मूल हम खोयो। पाप धर्म तजि फेर फंसा ॥ देखो० ॥१०॥ नैनानंद जन्मजल दुखकूं। मानत सुख मन हरखता ॥ देखो० ॥११॥ इति।

अथ भजन उपदेशी रागनी जंगला झंझोटीका ठेका।

चाल—मेरा सांवरयां नहिं आयोरी, मेरा सांवरया नहिं आयोरी ॥टेक॥

सखी मेरे पान पर चूना, मेरा पिया बिन घर सूना। सांवरया० ए चाल।

समझ मेरे प्यारे जरा अब तो समझ मेरे प्यारे जरा। हे प्यारे जरा मतवारे जरा अब तो समझ मेरे प्यारे जरा ॥टेक॥

तुम त्रिभुवनमें फिर आये, चौरासीमें नर्क स्वाये समझ मेरे प्यारे ॥अबतो० हे प्यारे० ॥१॥ तैने स्वर्ग विमान चढ़ाये, पशु गतिमें बले बहुघाये ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥२॥ ठाट ठरब निशान बजाये, पड़ नर्क कोट छिदवाये ॥समझ मेरे० ॥अबतो० हे प्यारे० ॥३॥ तैने अपरस सब कर लीने, अरु पुद्गल सब पर कीने ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥४॥ तैने दुग्धामृत बहु पीये, पड़ि कुगति मूत्र पीलिये ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥५॥

तैने सूंघे अतर हजारूं, पड़ा नर्क सड़ा दुरगंधूं ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥६॥ तैं तो जगत व्यवस्था निरखी, अपनी गति क्यों ना परखी ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥७॥ तू तो नौग्रीवक लौं धारै, गया नर्क अनंतीबारै ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥८॥ किये ऊंच नीच सब काज, तुम आप करत हो लाजी ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥९॥ तैने तो बहुत करी कमाई, भी सो अपनी ठगाई ॥समझ० अबतो० हे प्यारे ॥१०॥

आये नंग धरंग पधारे, गये साक्षी दाह पधारे ॥समझ मेरे० सदहो० हे प्यारे० ॥११॥ क्यों पाप करे परमादन, धर सम्यग्दर्शन धारण ॥समझ सदहो० हे प्यारे ॥१२॥ जिहुँ दाक अचल सुख पावो, जिहुँ लोकमें पन्थ चढ़ावो ॥समझ मेरे० सदहो० हे प्यारे० ॥१३॥ हग सुख सब पाप धुलैगा, नहि काल अनंत रुलैगा ॥समझ मेरे० सदहो० हे प्यारे० ॥१४॥

पद उपदेशी ठुमरी जंगला पूर्बी दादरा चाल ।

पिया के चल पधारे बजार मेरा भैया ना माने रे ॥टेक॥

छोटीसी ननदी छंटेवे देवर, छंटेवे मोरे भरतार । मेरा भैया ना मान रे पिया इस चालमें है ।

कुछ देख भवोदधि पार, मंजिल दूरे पड़ी । भैया देख अथोदधि पार, मंजिल दूरे पड़ो ॥टेक॥

मोहा कठिन है अटक है भयानक, कर्मोंके विकट पहार, मंजिल० । कुछ० ॥१॥ दिन तो छिपेगा छुटेगी अंधेरी, दुःख देगी लुटे रजनी धार । मंजिल० कुछ० ॥२॥ लूटेंगे धन तेरा चूटेंगे तन ते । लुटे देंगे मन्के हार । मंजिल० कुछ० ॥३॥ आश्रव रुपाड़े निरधर चुराड़े, कोई रोके ना इस बनवार मंजिल० कुछ० ।४॥ सम्झो पद तो चुकादे भवो दिध, ऊंचा सुमन उपकार । मंजिल० ।५॥

मन्दर बनादे प्रभावनाये देदे, पात्रोंकुं देदे आहार । मंजिल० कुछ० ।६॥ केवली कलोत जिन शासन बिठावरे, विद्यादा करदे .उद्धार । मंजिल० कुछ० ॥७॥ दुःखतकुं देदे बिठादे मुक्तिकुं । वीरकपे करदे उपकार । मंजिल० कुछ० ॥८॥ लखिदे कुव्यलोकुं रातूंडे देदे, जिससे पटकदे सारा भार । मंजिल० कुछ० ॥९॥ मनकुं विचारो पधारो तिर पद, नहि त्यागिकुं टोके परकार । मंजिल० कुछ० ॥१०॥ साले हगानन्द

सदानन्द पायो, आवो न जावो संसार मंझि० कुड़० ॥११॥

इति पद उपदेशी चाल अमल कीजे प्यारे अमल कीजे मैं तोरे जोबन परवारी मान मेरा रस कीजे । इस चालमें रागनी सारंग ॥प्रारंभः॥

वश कीजे प्यारे वश कीजे, अरे हां रे गुमानी मन वश कीजे । अरे हां रे गुमानी मन० । केवाधू उपदिश जिवार, जगतमें यश लीजे । अरे हां रे गुमानी मन वशकीजे ॥टेक॥

पाप करत गया काल अनन्त, अब हो जा ब्रह्मचारी । समर दृढ कस लीजे । केवाधू० अरे हां रे गुमा० ॥१॥ उदय विपाक भयो सब सुख दुःख, जब अपजस सुनिगारी । समाधिमें धंस दीजे । केवाधू० अरे हां रे गुमानी० ॥२॥ समता सुधा सिंधुमें घुस कर, हरो बहुलता सारी । निजआतम रस पीजे, केवाधू० अरे हां रे गुमानी० ॥३॥ नयनानन्द बन्ध सब टूटैं, छूटैं व्याधि इत्यादि । मुक्तिमें बस लीजे । केवाधू० अरे हां रे गुमान० ॥४॥

इति पद हजूरी जिन स्तुतिमें चाल ठ.ठे रहियो वलमा चलूंगी तोरे साथ । इस चालमें साथ राग बरवा पीलू खम्माचका दादरा कजरी रागनी पूर्व ।

मेरी करो करुणा पकरूं जी थारे पांव, मेरी करो करुणा पकरूं० ॥टेक॥

तीनो लोको शरनाजी, तीनो मोरे हरता । जन्म जरा मरणाव, पकरूं जी० मेरी करो० ॥१॥ मोसो नहिं दुःखियाजी, तोसो नहिं सुखिया । मैं मंग तुम राय, पकरूं जी० मेरी करो० ॥२॥ काढो कारागृह सैंजी, हमारा भव द्रहसैं । कर्म महा गढ ढाव, पकरूं जी० मेरी करो० ॥३॥ दीज्यो नैनासुख तुम कीज्यो थारे दुःख गुम रखयो मत उलझाव । पकरूं जी थारे पाव । मेरी करो० पकरूं जी० ॥४॥

पद गुरु दर्शन हेतोः विनय संयुक्त भावना। रागनी बरवा जंगला।

हे किस बन ढूंढूं जाऊं, तजि गये गुरु म्हारे संसार। किसबन० ॥टेक॥

होय विरागी ममता त्यागी त्यागा मिथ्याचार, घन बन त्याग भये ब्रह्मचारी तृष्णादई है बिसार। किस बन ढूंढूं० तजि० ॥१॥ धारि दया रथ ले व्रत सारथ सर्व पदारथ डार। चढ़ पुरुषा रथ जाय मदना रथ पटकि भये भव पार। किस० तजि० ॥२॥ तजि भव भारथ हरि धर्मारथ कियो नार। गये कर्मारथ विजय हितारथ स्वर्गारथ पथ सार। किस बन० तजि० ॥३॥ किस पर्वत किस कंदर अंदर किस समसान मझार। ढूंढूं किस चौपट किस कोटर कौन नदी किसपार। किस० तजि० ॥४॥ कंचनासन केशरआसन केपर्यंक पसार, जाने कहांतिष्ठे किस आसन जिनशासन अनुसार। किसबन० तजि० ॥५॥

सुनि बनरक्षिका भावक ऐसहु दुर्लभ इस संसार। जो कहूँ दृष्टि परै तो बता दे मानूंगी उपकार ॥किसबन० तजि० ॥६॥ त्रिविध भेष गुण देखि नयनसुख 'ब्रह्मचर्य' त्रिकाल निहार, करियो नवधाभक्ति भविकजन ढूंढो शुद्ध अहार॥ किसबन० तजि० ॥७॥ इति।

पद रागनी जंगलेकी ठुमरी चाल। एही एही दर्शन करवै रस पद रघुनन्दन गावत हैं। इस भजनकी।

जब चौरासी लाख योनियोंमें द्रव्य क्षेत्र काल पुद्गल परमाणुकार रचित हैं कै पावै। पुनः किस किस योनिमें कै कै और उनमें के पावे मनुष्य जन्म वर्णन करिये हैं।

सुनो भव्य चुरासी लाख जोनि नमें इन्द्र कैसे रच क्रमसे पावें ॥टेक॥

किस किसमें है कितनी कितनी, चौराशीमें कितनी पावें ॥सुनो सन्त०॥१॥ बावन अक्षरमें इक अपरब है। अक्ष दोमें अपरब रस पावें॥ सुनो सन्त०॥२॥ अक्ष दोमें अपरब रचनाया। अक्ष दोमें वस्तु तत्त्व पावें॥ सुनो सन्त०॥३॥ छत्तीस आखरमें गिन पांचूं। सब मांहि इर्थसिद्ध सब पावें॥ सुनो सन्त०॥४॥ कहो निकस चुराशी लाखनमें। पांचूं किस किस किसमें आवें॥ सुनो सन्त०॥५॥

नाना गति भेद करी कथनी। नाना जीवन प्रति नहिं गावें॥सुनो सन्त०॥६॥ इस हेत अर्थसिद्ध शब्द बनायो। गुरुदेव यथारथ समझावें॥७॥ भगवंत भक्त अर्हन्त वचन सुनि, हाथ जोड़ सदा त्यावें। सुनो०॥८॥ कहै नैनचंद तिहु काल, करा कराये अपराधको छिमावें। सुनो सन्त चुराशी लाख जीव०॥९॥ इति।

यह पंच समिति बद्धमें पालन हेतोः। हितोपदेश रागनी जंगला, चलो सखी दर्शन करये यह चाल। ईर्या समिति।

मटके मत पटके हाथपांव, खटखटके चल मूरख पलपल। मटके मत ।टेक।

खटके पग उछटे जाय सटक, फटके नख टूटैं सब खलखल। फट जाय उदर पर जाय छूटे, गिर जाय नरकको तू दलदल। मटके मत०॥१॥

भाषा समति—बोले मत बोले और सदा, खोले मत छागो तू अवगुण। बोले मत विष सा रस बिगडे, परमारथमें होगी मुशकल। मटके मत०॥२॥ हितमित कोमल वच इष्टमिष्ट, धनाढ्य वचन मुख बोल सरल। धर्मामृत गर्भित पाय जिसे, हो जाय विषयको शांत अनल। मटके मत०॥३॥

एषणा समति—जूठापर मिलमू देख चले, करि गौर जरा दिलमें निश्चल लखि जंतु चराचर आपट को। कर सल

बचाकर आऊं निकल। मटके मत० ॥४॥ वेबक बड़ो मत जीव मरै, जे जाय बचानक विद् निगल इम जाय सरपके दुष्ट पकर पछताय। धुनै चिरकूं मलमल। मटके मत० ॥५॥

आदान निक्षेपना समति—ज्यों घो एणमण जो दरक सदा, निर्दोष गहो तजिके छलबल। घो पीछनकूं लहुत ही सदा, कह यो अवश्य है समल निर्मल। मटके मत० ॥६॥ ठाते धरतै भूलोप रखो, पट कोमल आदिक वस्तु संभल। राजा हंडे भंडे न मला हंडे न लगत रहे धर्म सफल। मटके मत० ॥७॥

प्रतिष्ठापना समति—बैठो उठो सोवो लेटो कूदो मारो मलो जुन पंछ, हिंसादि तजो धर ध्यान भजो गुरुदेव चरन को होय सफल। मटके मत० ॥८॥ उपरोक्त वृत्तादिक अनु हितू, कवितादि पढ़ो जो कुछ किसटल। इनि के निर्णय तत्वार्थ गहो, गहि जैन वचन कर गाढ अटल। मटके मत० ॥९॥ मत मित्र सुछन्द करो करनी होनी भरनी सब होगा रहल रहो चोदक नयनानन्द सदा। वट मारपने कर दूर सकल। मटके मत० ॥१०॥

अब सम्यक वाचक पचीस दोषोंके त्यागका उपदेश रूप भजन रागनी जंगला ईहे टाका जिला जाल। तल तक मारे नजरया राम ए जाल।

करले कुछ अपना उपगार, मूढ करले कुछ अपना उपगार। तु तो बहुत रुला जग माहवे अज्ञानी सब, अबके कुछ अपना उपगार ॥टेक॥

एक तो तजि दे तू तीन मूढता, दूजे अष्ट मदादि छार। तीजे शंकादि समल अठ्ठं, सोवर तू मनकूं धो डार। तू तो० करले० ॥१॥ चौथे तज दे तू षट अनायतन दर्शन मोहिन कीन विकार, अनु चारित्र मोहनीका मद हर। अक्षर टाके हाथ न यार, तू तो० करले० ॥२॥ कस्यो अनादि निगोद विषै छट का पर जदिव कर भयो निकार, नरनारक पशु स्वर्ग विषे फिरे पर

परावर्तन बहु बार। तू तो० करतो० ॥३॥ चौदह काल मनुष गति भरम्यो, पड़्यो पड्यो मलमूत्र मंझार। कोल पके कनराक खके तन, ऊंधे मुख लटकतो दरबार। तू तो० करतो० ॥४॥ च्यार लाख पर आय नर्कमें भुगतो मित्र करम अनुसार, कुटि कुटि पिट पिट छिद छिद भिद भिद कियो। सगरां हाहाकार। तू तो० करतो० ॥५॥

भरम्यो बासठ लाख पशू गति नाना बिध दिये मरण अपार, छिप छिप भिच भिच छिबल छिबल मरि रवाप रवापमें ठारा बार। तूतो० करतो० ॥६॥ चार लाख सुरढगों नबिहरंयो जहां सागरा सुख भण्डार, झुर झुर मर मर रुलयो जगतमें। भोगे सुख होये बिपति पहार, तूतो० करतो० ॥७॥ काल नैनसुख सुन मेरे मनवा, अब तो तज निज दोष गवांर। आगम आप्त गुरुको सतकारक, परखि होय आंसु बेड़ा पार। तूतो रहुत रुलयो जग जालमें अज्ञानी बद करतो० ॥८॥ इति॥

अथ नयनानन्द कृत दशाध्याई तत्वार्थ अधिगम सूत्रके पहले अध्यायके अनुसार ख्यालार्घ्य लिख्यते।

अथ त्रैकाल्यं द्रव्य षटकं इस श्लोकके भावार्थमें ख्याल लंगड़ो रगत।

अरहन्तादि त्रिलोक पति न कर जिन ग्यारह बातें जानी, सतमतीतसें। धरें चित्त सोई हैं सचे सरधानी ॥टेक॥

तीन काल षट द्रव्य नवों पद अरु षट कायाके प्रानी, लेश्य भाव षट। तथा पंचास्तिकाय जिसने जानी ॥१॥ द्वारर अव अरु सुमति पंच गति च्यार जिन्होंने पहचानी, ज्ञानावरणके सब्रझि करि भेद स्वपर परणति छानी ॥२॥ यही मोक्षका मूल इसे सब मूल कहैं सतगुरु ज्ञानी, जिन सुख कारन दर्शनाबरण

निवारन सुख दानी ॥३॥ मिटै दृष्टि तेरी भ्रष्ट नेयनसुख अन्त करोगे शिव रानी, यह प्रतीत यों। धरे चित सोई हैं बचे परमानी, अर्हतादि त्रिलोकपति० ॥४॥ ।इति।

ख्याल दूसरा लंगडो रंगतमें। अथ मोक्षमार्गस्य नेतारं इस मंगलाचरणके भावार्थकूं लिये हुये आप्तदेवकूं नमस्कार सहित सम्यग्ज्ञानरूप तत्वार्थ अधिगम विद्याके समस्त साधन वर्णन करनेकी इच्छासे वक्ताकी प्रतिज्ञामें ख्याल लिख्यते।

वन्दे हैं जे मोक्षमार्गके शुद्ध प्रवर्त करतारे. कर्म महागिर चूर्ण करि सकल तत्व तिन विस्तारे ॥१॥ वन्दूं रत्नत्रय विविध हेत पुनि कहुँ अधिगम साधन सारे। सधे जिनसे मोक्षका मारग परमारथ प्यारे ॥२॥ अति अगाध तत्वार्थ तिन साधन मूढन भ्रम हारे। मेरे रक्षवारा, दुख दूर कर गये सद्गुरु उपगारे ॥३॥ जिस मारग करि तिरे आप भी ... गये ... इम पारे। लिये शुभ साधन सनातन भी सन्तोंने लिखारे ॥४॥ उमास्वामि रघुक सन्मारग प्रथम अध्याय सुनो प्रगट। ..., धरे चित्त सोई हैं सद्ज्ञानी। अर्हन्तादि० ॥५॥

अथ मंगलाचरण हेतो: उमास्वामि आचार्य ... प्रति पद वक्ताकी तरफसे नमस्कार।

दोहा—उमास्वामि पद कमल नमि, नमूं सूत्र ... जैन।
कहूं प्रथम अध्याय अब, तत्वारथ पद दैन॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।

इस प्रथम सूत्रमें एक रत्नत्रयरूप ही मोक्षमार्ग कहा है। याते ताके रूपकी सिद्धिके अर्थ इस सूत्रका सिद्धांत प्रगट करनेकूं यह वक्ता ख्याल दूजा रंगतका लटा कवितोंमें कहे हैं।

चाल—लगे ढलनेकूं ज्यों चलते चांच चरेली। गह सुचाल चांच चरेलीका।

भाई सम्यग्दर्शन ज्ञानचरणशिव परल्यो। है यही मोक्षका मारग इसीमें परल्यो ॥टेक॥

है सम्यक शब्द प्रशंसा वाचक वीरा, तीनोंके मतका सूचक है सुनि वीरा। तीनोंको आदिमें सम्यक शब्द लगावो, यों मोक्षमार्ग लक्षण सम्यक बतावे ॥१॥ या मार्ग ऐसा एक वचन है माणो, यो पृथक पृथक शिवपन्थ न गिणयो ज्ञानी। तीनों मिलि यह एक मार्ग जिन गावे, यो मोक्षमार्ग यथा जिन आगम गावे ॥२॥ तीनोंकी परीक्षा कर तुम ऐसें परल्यो, है यही मोक्षका मारग इसीमें परल्यो भाई० ॥३॥

अब सम्यग्दर्शनकूं मूल अरु सम्यक्ज्ञानकूं वृक्ष अरु सम्यक्चारित्रकूं फूल वर्णन करकैं तीनों अवयवयुक्त मोक्षमार्गरूप कल्पवृक्ष बताया मोक्षफलकी प्राप्तिके होनेका नेम बतावे हैं तथा संसारका मूल कारण पंच प्रकार मिथ्याभाव है ताकूं भी कहे है।

ख्याल—है ज्यों पदार्थ त्यों श्रद्धे जो श्रद्धानो, सो लख सदीव भाषो है केवलज्ञानी। तिसहीका सम्यग्दर्शन नाम उचारा, सो शांतिमूल तिनबिन फलफूल न धार ॥१॥ पुनि जिव जिव है जीवादि पदार्थ व्यवस्था, सा नय प्रमाण करि समझे सर्व अवस्था। तहां संशय अरु विपरीतता मूल मिटावै, अरु दोष अनध्यवसाय प्रवेश न पाव ॥२॥ जहां सकल चराचरका कर कर व्याकपन, करे ज्ञान कसौटमें तिनका संघर्षण। सत् असत् भावकूं निर्मल करि निर्धारे, सो भाख्या सम्यग्ज्ञान कल्पतरु धारे ॥३॥

है तिसका चारित्र फूल यही उर धरल्यो, है यही मोक्षका

मार्ग इसीमें परख्यो। भाई सम्यग्दर्शन ज्ञानचरण चित धरलगो, है यही मोक्षका मारग इसीमें परख्यो ॥४॥ पुनः।

पुनि पांच भांति हैं मिथ्याभाव कषाई, जिनने रुप यही सबके व्याधि लगाई। तिनकूं आगम सद्गुरुका सूत्र बतावे, जिनके वश प्राणी कहुँगतिके दुःख पावे ॥१॥ तिनके प्रभावकूं जो कोई सम्यग्ज्ञानी, धरै ऐसा उपाय जिन आगम परवानो। जे जे करनी हैं करम जहृणका कारण, ते तजि धारै व्रत करनी पाप निवारन ॥२॥

जो है सम्यक्चारित्र फूल फल लावै, निश्चय तीनों करि मोक्ष महाफल पावै। तीनों बिनफल नहीं मिले पढ़क थिर मानल्यो, है यही मोक्षका मारग इसीमें परलयो ॥३॥ भाई सम्यग्दर्शन ज्ञानचरण चित धरलगो ॥ है यही० ॥४॥

अर्थ—अब ऊपर जो कह्या कि सम्यग्दर्शन १ सम्यग्ज्ञान २ सम्यक्चारित्र ३ इन तीनोंके सम्यक् समुदाय होनेसे ही मोक्षमार्ग है तातें मोक्षकी प्राप्ति है। यदि इन तीनोंकूं पृथक् पृथक् मोक्षमार्ग मानमन कर एकहीसें मोक्षमार्गकी प्राप्ति कोई मानेगा तो कदाचित् त्रिकालमें भी मोक्ष न होगा। सो इस अर्थके पुष्ट करनेकूं प्रथमका रोगी और वैद्य तथा औषधीके आचरणका दृष्टांतरूप ख्याल रचना करके श्रद्धान ज्ञान आचरणके विषयमें मिथ्यात्व रूप सम्यक्त्वके रोगनकूं नष्ट करता रोगकी शांतिरूप फलकी प्राप्ति दर्शाने दिखानेकू हैं तामें रोगी और वैद्यकी तीनों क्रिया सम्यक्रूप होनेका उपदेश है।

ख्याल-रोग वैद्योंका दृष्टांतरूप।

रोगी नहीं माने वैद्य वचन जो कोइ, नहिं रोग मुकतैं कबहिं कदाचित् कोइ। जिस वैदके नहीं श्रद्धान हुवा वचनोंका, सो कैसे करै इलाज होय क्योंनीका ॥१॥ यदि वै रोगकूं वचन वैद्यका

मानै अरु वैद्यकूं चाहिये दवा अदोष बखानै। जो वैद्य न समझै रोग दवा न विचारे, जो देखो रोगीके निर्णय नहिं धारे ॥२॥ तो है मुझमें सन्देह यहां है भाया, नहीं रोगी निर्मल देहपणो क्यों आया। तिस वैद्यकूं चाहिये देखो भाली यसों, दे औषध युत दृष्टांत रोगकूं हरलो ॥३॥ पुन रोगी पास आप दिखावे जोरां, अरु पूछे तिन रोगिनसूं बहुती ठौरां। यदि ज्ञान सत्य औषधकूं भावना भव हो, तो है निश्चय यह रोग जावना तब हो ॥४॥ यहूं जानै न करे तो दुख ही भाख्यो, है यही मोक्षका मार्ग इसीमें परख्यो। भाई सम्यग्दर्शन०, है यही मोक्षका मारग० ॥५॥ पुनः।

पुनि वैद्य न जाने क्रिया वचन नहि आने, अरु देशकाल समयकूं नाहिं पिछाने। सेवनकी विधि विपरीत तरह बतलावो, अरु तैसे ही रोगी उसकूं खा जावे ॥१॥ तो होय वैद्य बदनाम नाश रोगयशका, तिसतें सतगुरु उपदेश करे सम्यक्का। दोनूंको सम्यक् रूप क्रिया हो दोनों, तो है निश्चय मिट जाय रोगके कोनों ॥२॥ पर एक क्रियासे कछ उन काम चले हैं, अन दोसे जोरन कछु रोग टले हैं। अन आदि अंतको विरया व्याधि मिटावे, अन अंत मध्यको दोसे साता पावे ॥३॥ अन आदि मध्यको हरे व्याधि विज्ञानी, तीनों बिन होय न सुख समझ ल्यो प्राणी। तातैं सम्यक् सरधान ज्ञान आचरिये, हो निर्मल देह अकाल वृथा क्यों मरिये ॥४॥ भाई देह रोगका यह दृष्टांत बताया, पर कर्म रोगका रत्नत्रय ही गाया। तीनों मिलित शिवपंथमें जब धावेगा, तो निश्चय तद्भव परभव शिव पावेगा ॥५॥ कहे नैनसुख सन्मार्ग रुचे तो परख्यो, है यही मोक्षका पंथ इसीमें परख्यो। भाई सम्यक्०। है यही मोक्षका पंथ इसीमें परख्यो ॥६॥ इति।

अब केवल सम्यग्दर्शन स्वरूप कहनेकूं। तत्त्वार्थ श्रद्धानं

सम्यग्दर्शनम्। अरु जीव अजीवादि तत्वोंका नाम मात्र बतावनेकूं सूत्र। जीवा जीवास्रव बन्ध संवर निर्जरा मोक्षास्तत्वं। इन दोनूं सूत्रोंका अर्थ दर्शावनेवाला ख्याल कहिये हैं। छोटा बांसबरे०।

भाई सम्यग्दर्शन भाव हृदयमें धरल्यो। है यही मोक्षका मूल अराधन करल्यो ॥टेक॥

सुन तत्व शब्दका शुद्ध अर्थ केसे हैं, है तत्व जिसी बिधि है जैसे तैसे है। अरु अर्थ शब्दका निश्चय अर्थ बताया, निश्चय करि ऐसो तत्वारथ समझाया ॥१॥ भाई तत्वारथ श्रद्धान है सम्यग्दर्शन, वह उपजे निजपर बोध जीव हो परसन। सो दो प्रकारसे उपजत है सुन प्राणी, इक तो सुभावसे जान निसर्गज ज्ञानी ॥२॥ जो उपजे देव गुरु आगम परवानी, सो उपदेश अधिगमज कह्यो जिनवानी ॥३॥ सम्यक्त शब्दकूं शांति दशा उर धारल्यो, है यही मोक्षका मूल अराधन करल्यो। भाई सम्यग्दर्शन भाव हृदयमें धरल्यो। है यही मोक्ष० ॥४॥

अथ सम्यग्दर्शन सराग १ वीतराग १ भेद करि दो प्रकार है। और तत्व जीवादिक सात हैं। तिनके नाम वा लक्षण कहनेकूं ख्याल बांसबरेलीका कहे हैं।

जहां प्रशम और संवेग दया आस्तिकता, सो सराग समकित वरनि भेद व्यक्तिता। जहां केवल आत्मानुभवकी होय विशुद्धी, सो वीतराग समकित उनके शुद्धी। १॥ सो भी अर्हन्त सदा तिनकी पावे, तातें लक्षण सगुन तिनके गावे। अब तत्व कहा है तिनका वर्णन सुनले, करि शब्द नाम निक्षेपादिसे गुनलो ॥२॥ भाई जीव अजीव आस्रव बन्ध बिचारो, संवरकू धनसा निर्जरादि मोक्ष बिचारो। इन सात नमें तुम जीव जुदा कर डारो, है यहा बन्ध छूटनेकूं मोक्ष बिचारो। ... जो चाहे छूटना ... विचारो, है ...

भरमामैं सदा कलह करवारी हैं। ये अति उतपाती कुराफाती अरु दुर्मद भारी है ॥२॥ भाखैं त्रिज गर्धम हैं हम ही हम सबै ब्रह्मचारी हैं। इक छिनमें धसको, करें हम भस्म रूप बना हारी हैं ॥३॥ ते मिथ्याती हैं मल घाती परमर नचकारी हैं। तिनकी सतसंगत, मदांधुनि वतन करावन हारी हैं ॥४॥ इष्ट भ्रष्ट अरु नाम नैनसुख दुर्गतिके सहचारी हैं। विपरीत भावमें, करें फिरिया० ॥५॥

अथ ननोतानगरके जिन मन्दिरकी वेदीमें विराजमान वासु-पूज्य १, मल्लिनाथ २, नेमिनाथ ३, पार्श्वनाथ ४, महावीर ५, ए पंचकुमार जिन तथा शीतलनाथ भगवानकी नित्य पूजाके पढ़नेका भजन। रागनी जंगला झँझोटीका जिला। मैं कहूँ गुरु महाराज रतनू सब बिना जात मेरी इस चालमें लंढोरेके राजाकी ठुमरी, सोई चाल इसकी है।

मैं पूजे पंचकुमार मिटो भव भ्रमन अटक मेरी ॥टेक॥

जल वासुपूज्य भगवान मल्लि मैं करी याद तेरी, भये नेमि पार्श्व महावीर प्रगट गई टूट मोह बेरी। मैं पूजे० ॥१॥ आयो तुम दरबार करी प्रक्षाल तीन वेरी, भई जन्म जरा मरणादि भवातप शीतल जिन मेरी। मैं पूजे० ॥२॥ चर्चत चन्दन शांत भये प्रभु पंच पाप वेरी, भई अक्षय ऋद्धि समृद्ध करी जब अक्षतकी ढेरी। मैं पूजे० ॥३॥ पुष्प हरें कन्दर्प क्षुधा नैवेद्य चढ़ाय गेरी, दीपक चढ़ाय चरणारविन्दमें आंख खुली मेरी। मैं पूजे० ॥४॥ अष्टकर्मको वंश भयो विध्वंस धूप खेरी, फलतैं अजरामर आश भई शिव सम्पत अब नेरी। मैं पूजे० ॥५॥ अर्घ अनर्घ आरती आरत मेटो सब मेरी, कहै नैन चैन मांगे मंगल भव सेवा तेरी। मैं पूजे० ॥६॥

अथ गजलके तौरपर जिनेन्द्र स्तुति, रागनी चानो गर्मित

पीलू बरवा इस गजलमें फारसी अंग्रेजी संस्कृत उर्दू अरु भाषाके शब्द मिलाये गये हैं।

सुन सुनके ऐ जिन तेरी धुनको, अब दिले गुलजार पुन्य गुलिस्तान फला ॥टेक॥

ते शुद्ध मंजिल इन्दिश अदितमन् क्षैशुद्धम् भव विषयानल बदजन्। वेदर्म वेदिमं शुभाशुभ जब दूरने आराम मिला, पुन्य गुलिस्तान फला। सुन सुनके० ॥१॥ बांछाभ्यदं शुद्ध प्रवृत्ति शर्णं चतुष्ठ च सर्वं निवृत्ति। ऐसो भाव च भाव विशुद्धि मोहकालसीम् टला, पुन्य गुलिस्तान फला। सुन सुनके० ॥२॥ आई बोटिम् तन चर्ण जिनेश्वर, लखवेनु भाइ ए तुम परमेश्वर। दिखलाई चेतनकी खिपतको, कर्मोंका जंजाल टला। पुन्य गुलिस्तान फला, सुन सुनके ऐ जिन० ॥३॥ नैन चैन हुआ अब मेरे दिलमें, मैं खुशकियत जैसा तेरा हो दिलमें। पुद्गलका चोला सै तेरो, क्योंके गोया मैं आप खुला। पुन्य गुलिस्तान फला सुन सुन नई ऐ जिन। अब दिले० ॥४॥

आत्मा प्रति सुमति कृत परमार्थ उपदेश, गजल रागनी रेखता।

खुदीमें आ मियां आतम तु पर्दा है न दूरना है, तेरे बर्बाद होनेसे न मुझपे माल रख रखा है ॥टेक॥

भटक रहा तू कुमतिसे, भटक रहा अब दूर। भटक रहा मधुबिन्दकूं, होके बिद्ध रहरूर। खड़ा है आखनज बिरपें वो तकता है न बर्गा है। खुदीमें आ० तेरे० बर्बाद० ॥१॥ पाप रहो मुख नागनी, दुर्गति नाचे देखि। फिरटा रहे पद्मारके, माखी मिरद अनेक। गई दर अब बहुत तेरी अरोवा फना उमरका है। खुदीमें आ० तेरे बर्बाद० ॥२॥ चढ़ै होन-ध्यान गुरु, बैठा तोहि बिमान। भव ध्यानके नैनसुख, निकस होय

निर्वाण, तू पर निज काज अब झटपट जुगाक्षिय शिव समरका है। खुदीमें आ० तेरे बर्बाद० ॥३॥

पुनः गजल चाली पर्दा गर्भित अध्यात्मोपदेश।

ऐ प्यारे चेतन दुनियामें आखिरको जा साथ नहीं बेखबर सोता है क्यों। टेक॥

ऐ गाफिल तू कौन बसा रहे, नृपबलदेवादि देखो न रहे जाता उधर ले उथान बखत। बर्बाद तू होता है क्यों, बेखबर सोता है क्यों। ऐ प्यारे० ॥१॥ विषय मगन यहां नाग हो बन्दे जोग जुग छिड़ें चले दो पल दे, योनू में फल गाढ़ में अपने सार तू खोता है क्यों। बेखबर सोता है क्यों ऐ प्यारे० ॥२॥ लग रहे कर्म कलंक अनादी, हिम्मं दुबारा हो रहा स्वादी। खूनके दस्तरको खूनसे। ये धब्बा धोता है क्यों। बेखबर सोता है क्यों। ऐ प्यारे० ॥३॥ यह तो अर्ज है अदना ज्ञानी, रंज अलम है यहां जाबिदानी ऐनुल हादिस हक्का। बेखबर सोता है क्यों। ऐ प्यारे० ॥४॥

पुनः गजल रागनी छिड़ी टोड़ी। अध्यात्मोपदेश

चेते तो चेतन चेत गफलतमें बहुतक खोवेगे, चेते तो चेतन० ॥टेक॥

माया कुगन सुहाती फेरे, है फल चुगलका मौफैर। चुगलेगी विषया खेत, फिर पिछ पछताकर रोवेंगे। चेते तो चेतन चेत गफलतमें बहुतक खोवेंगे. चेते तो० ॥१॥ अटकोगे छोटे नरकमें, भटकोगे सबके चक्करमें। इस रापदाके हेत, पिछली भी पूंजी खोलोगे चेते तो० गफलत० ॥२॥

दोहा—खोवै सम्पति गांठकी, चले जु नर विपरीत। वैद मरे टोटा पड़े, भाग्यहीनका मीत। पिछली भी पूंजी खावोगे चेते तो चेतन० ॥३॥ निकलोगे काल अपारमें, हूंडोगे बहु संसारमें। पहलाके पशु अरु प्रेत, करि पाप जन्म डबोवोगे।

चेतै तो चेतन० गफलत० ।४॥ देते हैं सुगुरु चिताइ यौं. पाते हैं भव्य उछाह ज्यौं। तजि बैर प्रीति समेत, हे त्यागि जग अघ धोवोगे। चेतै तो चेतन चेत० गफलत० ॥५॥ करनै न होगा नैनसुख। भुगतौगे धार अनन्त दुख, निपगलको नाहूरेत। एक तक जगतमें ढोवेंगे। चेतै तो चेतन चेत० गफलत० ॥६॥

अथ समस्त जैन-समाजीय महाशयोंकी तरफसे इतर जैन एक प्रति पत्रिका मज़मून जैन पाठशालाओंके इजराय तथा विद्याध्ययनके उपदेशमें रागनी पीलूमें भजनके तौर पर चाहिये कि सर्वत्र भाद्रव मासके समय जिसजैनसे पहले इसकूं पढ़ा करैं और इसके अर्थका व्याख्यान जताना सुनाना करैं इसकूं मामूली काम करैं।

हीज्यो हीज्यो जिनसंघ हमारो करसी, हीज्यो हीज्यो० हे हमारी करसी त्यो दया करसी। हीज्यो हीज्यो जिनसंघ हमारी करसी ॥टेक॥

भ्रमत चतुर्गति नरभव पायो, जाम कियो श्रावक घरसो। हीज्यो हीज्यो० ॥१॥ पाय सर्वज्ञ धर्म दयामय, जो दरस्यो तीर्थंकरसो, हीज्यो हीज्यो० ॥२॥ जाकूं सुर नर सिद्ध मनुज रूपि, शूद्रनकूं कर गये तरसो। हीज्यो हीज्यो० ॥३॥ सीख सीख करि फौज चोर ठग, ठगि गये तुम रहे तुमधरसो। हीज्यो हीज्यो० ॥४॥ भटक रहे भव अन्धकूपमें, छूटके तासुर धरि करसो। हीज्यो हीज्यो० ॥५॥

खावें परिजन चूंट चूंट तन, हो हो मरघटके तरसो। हीज्यो हीज्यो० ॥६॥ लिपटे व्याल देत जुग जूंह, निज दूर काट रहे जाड। हीज्यो हीज्यो० ॥७॥ सिर पर डाढको गज गूंजत, नीचे दुर्गति अजगारसो। हीज्यो हीज्यो० ॥८॥ स्वाद स्वाद मधुबिन्दु आशवरि रहे परम भेदन करसो।

होज्यो होज्यो० ॥९॥ काटैं सुगुरु दयालु दया करि, तदपि शठ रहे हठ धरजो । होज्यो होज्यो० ॥१०॥

सकल संघ समझावत सबकूं, झूंठा झूंठो बात रहे परजो । होज्यो होज्यो० ॥११॥ शास्त्र कथन विचार करो सब, सको होय पढ़े खरजो । होज्यो होज्यो० ॥१२॥ निर्णय कियो परस्पर बहुजन, जैन सभा घर घर धरजो । होज्यो होज्यो० ॥१३॥ तो यह बात विचारमें आई, बिन विद्या रहे दुख भरजो । होज्यो होज्यो० ॥१४॥ भूल गये विद्या बिन मारग, सो दुखको तो यही दरजो । होज्यो होज्यो० ॥१५॥

करि परमाण विपर्यय हो, हो गये कुसंगतिमें परजो । होज्यो० ॥१६॥ सेवें असंग कुदेव कुमारग, भगवत मतसें गये फिरजो । होज्यो० ॥१७॥ तदपितु शठ जन हठन तजत है, कहत सहठ हठ परबरजो । होज्यो० ॥१८॥ पुनरपि पंच सकल समझावत, सुनयो भ्रात दया करजो । होज्यो० ॥१९॥ अब गई जैन सभा अब जहां तहां, तुमकूं आलस रहे करजो । होज्यो० ॥२०॥ हो गयो सूर परस्पर दयाहमें, भग गयो दुर्गतिको डरजो । होज्यो० ॥२१॥

देंगे ऋण मण धन सब हिलमिल, होके विद्याके गरजो । होज्यो० ॥२२॥ चालत्या बार विचार रहे सहे । है अब सबको यही मरजो । होज्यो० ॥२३॥ लघु लघु शालाये काम चले नहीं । त्यो बड़ा शाला थिर धरजो ॥ होज्यो० ॥२४॥ जातें होय धरमकी रक्षा, फेरो जैन दल फिर करजो । होज्यो० ॥२५॥ पढ़े जैन दलके सब बालक, कर्म कटैं जावें भगतरजो हो० ॥२६॥ नातर खोय जन्म नयनानन्द पद दुर्गति जावोगे खरजो । होज्यो० ॥२७॥

इति जैन सभासदोंका भजन जैन दलोंके नामकी सम्पूर्णम् ।

अथ सिद्ध महेश्वरकी आरती हमारे महादेव सिद्ध ही शिवरूपी हैं अन्यथा नहीं। चाल तुकड़ा महारानी नमोनमोकी।

तुम ही प्रभु सिद्ध महेश्वर हो, हे महेश्वर हो परमेश्वर हो, तुम ही प्रभु सिद्ध परमेश्वर हो ॥टेक॥

निराभरण चिद्ब्रह्म स्वरूपी, तुम जिनधर्म धनेश्वर हो। तुम ही प्रभु० हे महे० ॥१॥ तुम शंकर कल्याणके करता, सुख भरता भूतेश्वर हो, तुम ही प्रभु० हे महे० ॥२॥ हर्ता हो अघ कर्म कुलाचल, मृत्युंजय अमरेश्वर हो। तुम ही प्रभु० हे महे० ।३॥ निर्बन्धन भव बन्धन भेत्ता, नेता मुक्ति पथेश्वर हो। तुम ही प्रभु० हे महे० ॥४॥ ध्यावें सुर नर मुनिगण तुमकूं, तातैं आप गणेश्वर हो, तुम ही प्रभु० हे महे० ॥५॥ पूजत पाप ताप मिटे सब, शांति प्रद चन्द्रेश्वर हो, तुम ही प्रभु० हे महे० ॥६॥ इन्द्रादिक पद पंकज सेवें, तातैं पूज्य प्रजेश्वर हो। तुम ही प्रभु० हे महे० ॥७॥ मेटो जन्म जरादि त्रिपुर दुःख, तुम सबके मुक्तेश्वर हो। तुमही प्रभु० हे महे० ।'८॥ गुन्द गुन्द परब्रह्म भारतो, तुम दग सुख प्रदेश्वर हो, तुम ही प्रभु सिद्ध महेश्वर हो, हे महेश्वर हो परमेश्वर हो। तुमहो० ॥९॥

अथ कलिकाल महिमा रागनी करवा पीलू ठुमरी।

कष्ट पड़ो कलयुगमें, भरे नर पापके बोझ भरे भारोरे। कष्ट पड़ो० ॥टेक॥

बढ़ गई व्याधि उपाधि जगतमें, कष्ट रहे न सहन्त सहो रे। कष्ट बढो० ॥१॥ भूपति मारि गऊकूं खावें, जिन मत एक म्लेच्छ भलीरे। कष्ट बढो० ॥२॥ वेश्या भोग करे मन वांछित, भूख मरें सब साधु सुख तोरे। कष्ट बढो० ॥३॥ निर्धन भक्ष्य दूध भाजी, औषधमें रस रहो ना रहो रे। कष्ट बढो० ॥४॥

मातापित कूं पुत्र कहैं इम, हम आदर तुम कुदिष्टा रे।

कष्ट कढ़ै० ॥५॥ पर रमणी रत भये हूँ भार्या, रावनकूं करें गर्भगत रे। कष्ट कढ़ै० ॥६॥ धरम अंग मन अंग करे सठ, पड कुपेर भाये भानुमती रे कष्ट कढ़ो० ॥७॥ कहैं दृग मातु भ्रात अंधे जनकी, तौ न हार मानें पीन गती रे। कष्ट कढ़ो दशयुगमें, मरे नर पाप० ॥८॥

अथ संवत् १९४६ वैशाख सुदी ९ तथा १४ कूं सहारनपुरमें बी. बी. जिनकीके नवीन मन्दिरमें जिनराजकी प्रतिमा विराजमान होनेका महान उत्सव भया ताके ४ पद लिख्यते। प्रथम बी बी जिनकीका ५ दिन तक निराहार व्रत करना अरु परमेश्वरकी हजूरमें अर्ज गुजरना पूजाकी निर्विघ्न समाप्तिके वास्ते ताके भावके पद पहला। रागनी जंगला झंझोटी॥

मुझे तारो जी भगवान शरण लई थारी, मैं अति अधीन बल हीन अनाथ हूं नारी ॥टेक॥

चीज पहला—मैं था भवमें भगवान भरमते या तेरा, है तुही तात तुही मात तुही गुरु मेरा ॥१॥ मैं पूरब जन्म अनंत भरे दुःख स्वामी, तुम जानत हो सब ज्ञानमें अन्तरजामी ॥२॥ कहि मैं सुर नर नारक पशु परजाय भरी सब। कोई पुन्यके करके पाप गई नारी सब ॥३॥ पाई परधान परजाय पड़ा दुःख भारी, भया पति वियोग भगवान करम अनुसारी ॥४॥ मुझे इसकी चिंता नाहिं करें कोई जैसा। जो हो आगे तदबीर परभवमें फल तैसा ॥५॥ मैंने ठानिया अब इक पंच बोझ भया भारी, मैं अति अधीन बलहीन अनाथ हूँ नारी ॥६॥ मुझे तारो०

चीज दूजा—अब मैं बनवाया भगवान तुमारा मन्दिर, तुम हो के आप प्रभु तिष्ठो उसके अन्दर ॥१॥ मेरी है इतनी अरदास शक्ति मेरी थोरी, मैं ठानिया भारी बोझ निशंकित होरी ॥२॥ तुम दीजो मुझे निबाहि पांच पद पाऊं। नहि

बिठो जब तक आप न भोजन पाऊं ॥३॥ मैं प्रथम नमूं अरहंत देवके चरना, फिर सेवों हूं महाराज सिद्ध पद धारा धरना ॥४॥ मैं आचारज उवझायोंको शीश नमाऊं, फिर जिन मुद्रा धारी सब साधु मनाऊं ॥५॥ मुझे है पांचूं परमेष्ठी शरण तुम्हारी, मैं अति अज्ञान दक्ष ज्ञान अनाथ हूं नारी ॥६॥ मुझे तारो० ॥

और दोहा—प्रभु परमारथमें पांच पंच गुन गाने। तुमहीकूं परमेश्वर इन्द्रादि बखाने ॥१॥ प्रभु जो कोई तुमरे चरणोंसे आनि परे हैं। सब भवक दुखनेंसे टिके पार तरे हैं ॥२॥ प्रभु तुमही जगमें जगमें पंच कहाये। पांचों ही परमेश्वर यों सब गाये ॥३॥ मैंने तुमरे मतके पक्षका है लिया शरना। मुझे अति अनाथ प्रभु कीजिये इतप करना ॥४॥ प्रभु है तुमारा हो काज लाज रख लो अबी। मेरा बड़ा जगतमें नाथ पार कर द्यो अबी ॥५॥

कहै नैन चैन जिनवान सरन तुमारी। मैं अति अज्ञान पक्षहीन अनाथ हूं नारी ॥६॥ मुझे तारो मां भगवान शरण छहूं थारी। मैं अति आधीन बलहीन अनाथ हूं नार ॥७॥

अब सहारनपुरकी स्त्रियां जिनपदकी भिक्षाकी सम्पूर्ण करै हैं, और आप धर्मकी भावना भावै हैं। उसका दृष्टांतमें दूजा पद ॥

धो धो जिनजीने दियो आपना अमर सुहाग री। हां हे अमर सुहागरी पुन्य बनाया भागरी, ला री जिनजीने दियो अपना अमर सुहागरी। देखो० ॥टेक॥

दलदाया सा जिनजीका मन्दिर, देखा मारग दे कोई सखी पधारो। देखो० हे अमर० ॥१॥ पारस प्रभुजीको मूरत है प्रतिमा जामें। पंचोंकी है सभा ढालिया बांध पधारी। हां देख हे अमर० ॥२॥ रघुर बंश कर माता पिताका कुल। कर वे

उजागर भव सागरसें तारारी । बीबी० हे जन्म० ॥३॥ इनने तौ बीबी अपना जन्म सफल किया ।। हमारी तौ नैय्या अटक रही मझधारारी । बीबी० हे जन्म० ॥४॥ पाया है दुर्लभ प्यारी धर्म जिनेश्वरजीका । पाकर उत्तम वंश वृथा गया जन्म हमारारी । बीबी० हे जन्म० ॥५॥

करल्यो दमोरी ऐसा किरपीने किया जैसा । कांल चले है सिरपे हरदम मौतका आरारी ॥ बीबी० हे जन्म० ॥६॥ खाता जाता खाटे ये तौ सबको ऐसी प्यारी । खाटैं जैसे खाटको कोई बरतत रहु मारारी ॥ बीबी० हे जन्म० ॥७॥ कहत नयन-सुख लगावें यहांरी दुख । करल्यां पूजा तिरल्यो हो जाय भग बिसतारारी ॥ बीबी० हे जन्म० ॥८॥

अथ तीजा पद किरपीपै भगवन्त कृपावन्त होनेका भावमें ।

रागनी जंगला ।

किरपीपै किरपा करी करी, किरपीपै किरपा करी करी । प्रभो सुध सब लोक सहारनपुर । किरपीपै० ॥टेक॥

सुखी रहो सब पंच नगरके, प्रभुजीकी धूजा फिर भरी भरी । किरपीपै किरपा करी करी प्रभो सुखकर० ॥१॥ मंगल गावें सुहागन घर घर, परम हरख उर भरी भरी । किरपीपै० प्रभो सुखकर० ॥२॥ उमंग चले परमानन्दके घन, बटत बधाई गरी । गरी किरपीपै० प्रभो० सुखकर० ॥३॥ नैनानन्द भया भविजनके, सब जग चिंता टरी टरी । किरपीपै किरपा करी । प्रभो सुखकर० ॥४॥

चौथा पद अति चमत्कारी प्रभावीक इसके चमत्कारकूं उस दिन वैशाख सुदी ९ तथा १४ कूं प्रत्यक्ष लाखों आदमि-योंने देखा जिस वक्त रथ उत्सवका दिन था और धूप बिजलीकी पड रही थी जमीन पर भाडकीसी भूमक तप रही थी भारी धूप ... गरम ... ... थे । ... ... जिन

जब तीतरमकी बेटीने रथके आगे खोलीके गाना शुरू किया तो इकबारगी च्यार तरफसे शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलने लगी अरु छिड़काव मात्र मेघ बरस कर देशकूं शीतल अरु पवित्र करता चला गया अर दूनूं दिन उत्सवोंमें प्रातःकालसे दो घड़ी दिन रहे तब तक सूर्यने दर्शन न दिये, मुख न दिखाया अरु बीचके दिनोंमें वैसी ही धूपें पड़ती रही इससे प्रभाविक समझा गया मगर उत्सवके दिन बादल चन्दोवेसे तने रहे जिनके चमत्कारके आख्याने कहने चाहिये सो वही स्तवन यहां लिखता हूं यह बड़ी धूमधामकी चतुर चाहना पद है।

रागनी जंगला। खास उत्सवके दिन पड़ती हुई धूपोंमें गाया तो प्रभाव देखनेमें आया।

जिया जन्म सफल जिरमोलै, जिरोलोका मन्दिर बनवाया। जिया जन्म०। जब मन्दिर बनवाया मन भाया, जाकर्यो उनकूं बुलवाया। तब करके परख प्रभु ईकूं उत्सव रचयो पधराया, जिया जन्म० ॥टेक॥

जब सहारनपुरके सकल पंच मेले कर, बोलो सब पंच धरो हाथ मेरे सिर पर। मैंने बनवाया है जिनेन्द्र [illegible] शुभ धाम, हारी हूंमें नारी अरु पुजारीका आदी नाम। [illegible] पंच निर्वाह पकड़ल्यो बांह दोस नहिं आतुमैं ठाया, जिया जन्म० एसो मन्दिर० ॥१॥ जब दरपन तेरा [illegible], पूजा में लगावो मैं तो टाढा द्वारे दरबार। [illegible] रहेगा तुमरा पंचो तावेदार, फरदा तरीद नीदा दना देंगी देहा पार। फिर चीने जिनकी कही पंच सिर धरी बहुत हरस्ट सुभाया। जिया जन्म० एसो मन्दि०॥२॥ जब संवत् [illegible] बैसाख सुदी नौमी भई। सोपी फेर तरह [illegible] सुभाई, पूरब पश्चिम तथा दक्षिण उत्तर ओर, [illegible]

हमारा अष्ट करमसैं डरना है, सम्यक्तादिक अष्ट गुण पाय जगतसैं तिरना है ॥४॥ अजर अमर०॥पुन॥

पाप पुन्य दो बन्ध शुभाशुभ हरि शुद्धातम करना है, सोहं सोहं जाप जपि इन पापोंकूं हरना है ॥१॥ भूत भविष्यत वर्त्तमान हरिके पथ अवधमें परना है, दुकर्नी ए तो कहा सन्मुख तो सबके मरना है ॥२॥ भव समुद्रसे तिर नयनानन्द शिव रमणीको वरना है । अशरनगसमें हमारे पास हमारा ॥३॥ अजर अमर० । ऐसा अटम० ॥

रागनी देशकी ठुमरी अपनी आत्माकूं उपदेश अध्यात्म ॥

मत दे करमके सिर दोष मत दे करमके सिर दोष ॥टेक॥

दोष तेरी आत्माको कियो नहिं संतोष पियो मद मिथ्यान चाही कुशल पर गल फांस । मतदे० ॥१॥ असत बोली छमाय भरम्यो कियो पर धन खोस, खोयो सील गिमाय बहु आरंभमें बेहोश । मतदे० ॥२॥ भग्यो भक्ति जिनेन्द्रसे कियो सत गुरन पै रोस, सीख मुनि जिन धर्मकी उठ लग्यो पीछे भोस । मतदे० ॥३॥ नहीं मिटै धीर विज्ञान अंजन बिनक भृङ्गि दोप, आजैं हलाहल मूढ चाहै नैनसुख अफसोस । मत देकर० ।४॥

रागनी भैरवी ठुमरी मधुबिंदुका दृष्टांतमें जगतकी विडंबनाका वर्णन । अध्यात्म विचार उपदेश ॥

देखो सुघड मधुबिंदुके कारन जग जीवनकी मूढ दशा । देखो० ॥टेक॥

भूले पंथ फिरैं भवकानन, जैसैं कटक बिच व्याकुल शशा । देखो० ॥१॥ भटकें चहुं गतिके पंथमें नित, लगी अगनजामें चारों दिशा । देखो० ॥२॥ लटकें भव तरुप करि

कूपै भ्रम मींखीं परिजन खींनसा। देखो० ॥३॥ काटत स्याम स्वेत चूहे जड निस दिन आयुर्य सार्धसा। देखो० ॥४॥ नीचै नर्क सर्प्य मुख फारत भक्ष गम लखि हंस हंसा। देखो० ॥५॥

सिरपर काल वली गज गृञ्जत, फहत देव कोई हाथ पसा। देखो० ॥६॥ काढूं तोहि विमान चढाऊ, पडत बिन्दु मुख लागी चसा। देखो० ।७। भाखत नाक चढाय मूढ हम, कैसे तजूं सुख आयो गसा। देखो० ॥८॥ टूटी जड पाताल सिधारे नरककुण्डमें जाय धंसा, देखो० ॥९॥ धिग धिग भूल मूल हम खोयो सारसमें तजि फेर फंसा, देखो० ॥१०॥ नयनानन्द अन्धजन दुःखकूं मानत सुख नड साडसा, देखो० ॥११॥

आगे मुतफर्कात पद मांदगीसे पहले इसी सालमें बनाये गये थे सो लिखे जाते हैं। संवत् १९४४ रचना है रागनी जंगलेकी ठुमरी चलती हुई जिनेन्द्र भक्तिकी महिमामें।

भक्तिसें मुक्ति पावोगे, भक्तिसे मुक्ति पावोगे, अजि भक्ति विना मल जावोगे भक्तिसें मुक्ति पावोगे ।टेक।

पूजें श्री अर्हतदेव सब सच्चे भक्त कहावोगे, अजि भक्ति विन० ॥१॥ आराधो नित धर्म अहिंसा निराबाध हो जावोगे भक्तिसें० ॥२॥ सेवो गुरु निर्ग्रन्थ जगतमें फेर न धक्का पावोगे. भक्तिसें० ।३। त्यागो कुगुरु कुदेव कुमारग परभवमें फल पावोगे भक्तिसें० ॥४॥ त्यागो पांचूं पाप नरकमें पडे पडे मूंचाओगे भक्तिसें० ॥५॥ नयनानन्द कहै सौ बार मैं भक्ति तुरत तिर जावोगे भक्तिसें० ॥६॥

अथ जिनेन्द्र भगवान भक्ति जिनवाणीकी स्तुति. राग भैरू नर।

धारण करूं मैं तो धारन करूं, जिन वचनको हिये धारन करूं ।टेक।

सर्गे देव परम गुरु सेऊं, तन मन धन सब वारन करूं जिन वचन० ॥१॥ रत्नत्रय भजि अष्ट दरब सजि, नित नित अर्घ उतारन करूं जिन वचन० ॥२॥ पूजूं तीनों पर्व अठांही, असि आउसा उचारन करूं जिन वचन० ॥३॥ नयनानंद तिरो या मारग, भव भव बन्ध विदारन करूं जिनव० ॥४॥

अथ संवत १९४८ में एक मुनिराज इलाके राज्य जयपुरमें फागी ग्राममें चौमासा किया तिनकी वन्दनकूं भव्य जीव गये कथि ताकूं हाकिमने नौकरीके सबबसे रुखसत न दई तिन मुनिराजकी भेटके वास्ते परोक्ष वन्दना निमित्त पद बनाकर भेजा सो लिखे हैं। राग खम्माचकी ठुमरी।

लीज्यो हमरी सुगुरु वन्दन त्रिकाल, लीज्यो हमरी सुगुरु वन्दन त्रिकाल। हे अशरण शरण तरण तारण प्रभु मुनियो अरज होके दयाल, लीज्यो हमरी सुगुरु वन्दन त्रिकाल, लीज्यो० टेक।

निवसत मन मधु लिट पद पंकज, निसदिन दरशनके खयाल. लीज्यो० ॥१॥ जबसे चरण धरे तुम साहिब, कीने भविजन जग निहाल। लीज्यो० ॥२॥ बीत्यो काल अनादि भ्रमत जग, पकर सुजावेगा निकाल। लीज्यो० ॥३॥ परवश परम अभाग उदय करि, आन सक्यों फंसि कर्म जाल। लीज्यो० ॥४॥ ज्यों निर्भाग पाय चिन्तामणि, देत भवोदधि मांहि डाल। लीज्यो० ॥५॥ त्यों हम विमुख रहे दर्शन विन, नाथ अभव्यनकी मिसाल। लीज्यो० ॥६॥ नयनानन्द परोक्ष वन्दना, लीज्यो प्रभु कीज्यो न टाल। लीज्यो० ॥७॥

रागनी ड्योडी, भजन जल जात्राका चाल हमकूं छोड़ चले वन माधो अथ पद।

आवो सन्त चलें जल भरने, आज सिरीजीका न्हवन करेंगे ।टेक।

सुवरण कलश धरो शिर ऊपर, क्षीरोदधि जल छाण भरेंगे; केशर अरु कर्पूर रलाकर ल्याय प्रभूजीके पाय परेंगे आवो० ॥१॥ अष्ट दरव ले पूजा करके, भवसागरसे वेग तरेंगे; जल चढ़ाय प्रभुके पदपंकज जन्म जरामृत दाह हरेंगे। आवो० ।२। पुष्प चढ़ाय मंगाय महाचरु, दीपक ज्योति जगाय धरेंगे। आवो० ॥३॥ खेवैं धूप दशांग चरण बीच, जातें कर्मके वंश जरेंगे; फल चढायकर अर्घ आरती, अब हम पुण्य भण्डार भरेंगे। आओ० ॥४॥ चरण पकर अरु पसर करि लगर लगर अरदास करेंगे, दृग सुख सन्मुख होय प्रभुके: मुक्ति लिये विन नाहिं टरेंगे। आवो० ॥५॥

अथ न्हवन करनेका भजन राग दादरा पूर्बी ठुमरी; चाल–अरे हां रे कटरिया नैनोंने मारा हो नैनोंने मारा गोरी सैनोंने मारा हो रे कटरिया नैनोंने मारा। इस चालमें।

भाई करल्यो सिरीजीका अब तो न्हवन, भाई कर ल्यो० अब तो न्हवन करो। पूजा भजन करो ले ल्यो शरन, भाई करल्यो० ।टेक ।१। तरसि तरस उत्तम कुलमें तुम आये खोवो अकाज मत नरभौ रतन। भाई कर० ॥२॥ पायो है भाई जिनजीका धरम अब, जीव प्रतिपालका है जिसमें कथन। भाई कर० ॥३॥ कलशे भी ले ल्यो पकल ल्यो वसर, भरल्यो जल छान करिये जतन। भाई कर० ॥४॥ धीरे धीरे चलियो निरखके पृथ्वी, नैन चैन जैनका है जैसा नमन। भाई करल्यो० ॥५॥

इस चालमें पूजा पद: रागुल्लजीका।

गये भैना पियरवा नैना बदल गये भैना० है नैना बदल

गये, घरसे निकल गये व्रत लीने धार, गये भैना प्रियरवा नैना बदल० ।टेक।

हे व्याहनकूं आये मोरे दूला कहाये, देके दरस गये तोरनसे फिर । गये भैना० ॥१॥ हे पशु पुकारे प्रभुजीने निहारे, दुखिया विचार दिये बन्धन कतर । गये भैना० ॥२॥ हे मोडा अरथ परमारथके कारन, कंगनकूं तोड़ लिया संजमकूं धर ॥ गये० ॥३॥ हे लेल्यो पियारी सब छिमा हमारी । वेगी बता दो गिरनारकी डगर ॥ गये० ॥४॥ हे करूंगी नयन सुखदाई तपस्या, लूंगी प्रभूके पद पंकज पकर ॥ गये० ॥५॥

इस चालमें तीसरा पद श्री गुरुदेवोंकी तलाश ।

कहीं देखे बहनियां श्री गुरु हमारे, कहीं देखे बहनियां श्री गुरु हमारे । हे श्री गुरु हमारे आली जिन मुद्राधारे, देखे बहनियां श्री गुरु हमारे । कहीं देखे० ॥टेक॥

हे जब देखूं तब पाऊं परम सुख, धारूं धरम मिट जांय भ्रम सारे । कहीं देखे० ॥ हे श्री गुरु० ॥१॥ हे सम्यकदरस धार, सम्यकज्ञानसे विचार, सम्यक आचारसे निवार कर्म डारे । कहीं० ॥२॥ हे इस भवमें कोई हितू न आली, वोहि हितू जो भवजालसे निकारे । कहीं देखे । हे श्री० ॥३॥

हे नाती संगाती सब स्वारथके साथी, घाती हैं ए तो परमारथमें सारे । कहीं० । हे श्री० ॥४॥ हैं वे स्वारथ परमारथके साथी, सतगुरु हैं प्यारी अवलम्ब देन हारे । कहीं देखे० । श्री गुरु० ॥५॥ हे व्याकुल हैं प्यारी विन दर्शन ए दोऊ नैन, सुख हो कहांसे बिन सतगुरु निहारे । कहीं० । हे श्री० । आली जिनमुद्रा धारे० ॥६॥

अथ नवीन रचनामें जिनवानीका पद ।

चाल—डगर गंगाके जाङ्गियोंकी लयमें जोग जरी इक तारे पर गाते हैं ।

हे आराधो साधो जिन प्रवचन मात गंगे, अजि कलि मलंक प्रक्षाले गालै पाप करै मन चंगे साधो जिन प्रवचन मात गंगे । जी अराधो साधो० ॥ टेक दौड़ ॥

ए तो तीर्थंकर हिमवन्तोंसे निसरी, गणधर गुरुवोंके हिरदेमें पसरी ढायके वगाये मोहाचल दृश दिशरी । मेटी जग जड़ ताप पोंकी सब तिसरी, सादि अनादि अचल ध्रुव शासन नाशन क्लेश कुढंगे । साधो जिन प्रवचन० । हे अराधो० ॥१॥ ए तो मुनिभि रुपासित है तीरथ भारी, करै अजर अमर रहै तीनों काल जारी । जाके रसके रसैकेशा सेवें साधू ब्रह्मचारी, याकूं जानियो जहाजकी समान उपगारी । ये तो सब तत्त्व पट द्रव्य पदारथ परमारथ रस भरी सदा रत्नत्रयमई शिव गंगे । साधो जिन० । हे अराधो० ॥२॥

तारे याने सिंह नवल कपि पापाचारी, तारे गज शूकरने कूकरने बलधारी । चोर ढोर चोल और तारे भील भगकारी, तारे वज्र पापीयानै मुनिके शिकारी । कहै नैन चैन ऐनकी है, ऐन बादशाही करै सबकी रिहाई, भव भवमें है सुन्दराई जो सेवैं गंगे, जिन प्रवचन मात गंगे । हे अराधो साधो जिन० ॥३॥

अथ गजल रागनी भानी ।

ए प्यारे चेतन दुनियामें आखिर आजाद हमी, बेखबर सोता है क्यों तू बेखबर सोता है क्यों । ए प्यारे० ।टेक।

ए गाफिल तू कौन बसर है, हकुम बीच कि दुखों न रहै । ज्ञान दया के जान बजर अर्थात् तू होता है क्यों. बेखबर

सोता है क्यों । ऐ प्यारे चेतन० ॥१॥ विषय अगन यहां जग रही धन्दे, जोग जुगतमें चले तो चल दे । भोगोंमें फंस रहा हमें अपने सार न खोता है क्यों, बेखबर सोता है क्यों । ऐ प्यारे चेतन ॥२॥ लग रहे कर्म कलंक अनादी, हिम्मतवाका मत हो आदी । ज्ञानके दरियाको ज्ञानमें, वे अकल धोता है क्यों । बेखबर सोता है क्यों । ऐ प्यारे चेतन० ॥३॥ यह तो जगह है जहां न फानी रंज अलममें ह्यां जा विरानी, ऐ तुल राहत वक्त सफरका, बे कदर सोता है क्यों । ऐ प्यारे चेतन० ॥४॥

राग कालंगड़ा पद हजूरी अपने पुत्रकी पीडामें नैनसुखनें परदेशमें बनाया संवत १९३८ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ शुक्रवारके ।

विपत पड़े कोई बन्धु न भाई, तुम ही नाथ सहाई विपत पड़े० ॥टेक॥

सम्पतके सब सगे संगाती संकटमें दुखदाई, वे दुश्मन तुम अति हितकारी या में झूठ न राई विपत पड़े० ॥१॥ सुन लई कान परख लिये नैन लिये दोनू पतियाई, वे पाहन तुम मोह नसाहिब शिव लग सारथ वाही विपत पड़े० ॥२॥ पुत्र जुगल परलोक सिधारे करम उदय गति आई, फिर कर्मन यह नाच नचायो दो घर भीख मंगाई । विपत पड़े० ॥३॥ मिल गये रतन जतन बहु कीने गाये गीत बधाई, तिनहू दोनू हाथ पसारे कछु नहि पार बसाई । विपत पड़े० ॥४॥ फिर कछु काल कलेश उठाये विरध अवस्था आई, तुमरी भक्ति विषै चित दीनों कर लई तुरत सुनाई । विपत पड़े० ॥५॥

घर बैठे संवत सैंतीसे भेजी सहजोवाई, चक लगाई मोहि पुत्र अचानक किंचित बात न लाई । विपत पड़े० ॥६॥ तब तैं दया सिंधु तुम जाने अरु जाने सुखदाई, तातैं नाम दया

सागर घर ले पाल्यो जिनराई। विपत पडे० ॥७॥ अब साहिब इक खबर अचानकमें ऐसी सुन पाई, दास तुमारो संकट पावन कोई न शरण सहाई। विपत पडे० ॥८॥ मैं परदेश तुम दास घरमें पारसनाथ दुहाई, तुम ही मंत्र जंत्र तुम औषधि तुम ही वैद्य तुम भाई। विपत पडे० ॥९॥ तुमहि दियो तुमहि प्रतिपालो, तुम ही करो सहाई नातरदास नैनसुख भारी होगी जगत हंसाई। विपत पडे० ॥१०॥

अथ जिनमत प्रशंसापर मत निंदा त्रिलोक दर्पण पद ठुमरी।

हम नमें देव अरहन्त एक निर्ग्रंथ गुरुको हम पूजें। टेक॥

हम स्याद्वाद सिद्धांत सुनें अरु तीनलोक [illegible] [illegible]। हम नमें ॥१॥ रागी द्वेषी लोभी हिंसक मत [illegible] [illegible] [illegible] पूजें। हम नमें ॥२॥ काया क्लेशी हो मूल [illegible] [illegible] [illegible] फलागतको जूझे। हम नमें ॥३॥ क्रोधीजन [illegible] [illegible] [illegible] वाराह सिंह वनके गाजे। हम नमें ॥४॥ नर हो [illegible] [illegible] विषे सोके मठ आडम्बाड धरम सूझे ॥५॥ [illegible] [illegible] सब [illegible] धरम करतूति किया [illegible] [illegible]। हम नमें ॥६॥ हम नाचे सिरधिन जैन किये [illegible] नैन चैन [illegible] [illegible]। हम नमें ॥६-७॥

अथ श्री पार्श्वनाथ भगवानके [illegible] [illegible] [illegible] वर्णन है तो कमठ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। राग धरवा।

जारे कमठ जारे जारे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] संहारे। जारे कमठ० ॥टेक॥

छलकर [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] न आई। जारे कमठ० ॥१॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. पकसायो नृप एक न मानी। जारे कमठ० ॥२॥ [illegible]

पाप उदय तेरो आयो, नृप अरविंदने पकर बुलायो। जारे कमठ ॥३॥ फाड्यो नाक कियो मुंहकारो, पर लदाय दियो देश निकारो। जारे कमठ० ॥४॥ क्यों धार्यो सठ भेष कुलिंगी, क्यों ह्वाटो गिर जैम भुजंगी ॥जारे कमठ० ॥५॥ क्रोध महाविष तज्यो न काहू, लेय शिला धर्यो कर बाहू। जारे कमठ० ॥६॥ क्यों मरुभूत मिलन तोहि आयो, चरण पकर मस्तग जा झुकायो। जारे कमठ० ॥७॥ हाहा तोहि दया किम आई, पटक शिला मार्यो सज्जन भई। जारे० ॥८॥ पीटि कुलिंगन पकरि निकार्यो, चोरी करन गयो कहुं मार्यो। जारे कमठ० ॥९॥ भयो कुर्कुट अहि पापाचारी, नैनानंद भयो सठ संसारी। जारे कमठ० ॥१०॥

इति प्रथम भाव। आगे कहें हैं जो सारा सुरेन्द्र नाटक गाना मंजूर न होय तो लंबर २३३–२३४–२३५ ए तीन पद तो हर भजनमें गावने ही चाहिये सोई मंगलाचरण पूर्वक फिर लिखे हैं।

अथ मंगलाचरणम दोहा।

बीत्यो काल अनंत ही, आवनहार अनंत. वर्तमान ऋषभादि नमूं अनन्तानन्त ॥१॥ नमूं सिद्ध निष्कल सकल, सकल सुगुरु निर्ग्रंथ। नमि नमि वंदूं भगवती. जिनवाणी जयवंत ॥२॥ भजन किया ते तिर गये, भजन बिना करि खेद। यों ही वकि वकि मर गये, पढ़ पढ़ च्यारों वेद ॥३॥

अथ गांधर्वी शिक्षाके दोहे प्रारम्भ।

तीन ग्राम अरु सप्त स्वर, ताल भाव करि शुद्ध। विनय सहित परमाद तजि, गावो भजन सुबुद्धि ॥४॥ प्रथम अलाप उचारिये, मंद मध्य अरु तार। गर्भ जन्म तप ज्ञानके, गावो मंगलचार ॥५॥

अथ जुगकी आदिमें जुगादि देवके जन्मके दिन कर्म

भूमिकी रीति प्रवर्ती वनके निमित सुरेन्द्र विचार करे हैं ताकी सूचना चाल आल्हा मलखानकी ।

पद पहला ।

प्रथम मनाऊं मैं अर्हन्तको, अजि जाकों धरें सुरनर मुनिजन ध्यान । अब मैं बताऊं जिन पितु मातको, अरे भैया इन्द्र करावे जैसे असनान ॥१॥ धावा पहला । सुनजी ज्यों पंचों किया इन्द्रने विचारयों, अब गया बीत ए कुनीत सारा काल । मिट गई जुगल जनमकी परिपाटियां, अरु भैया मिट गई भोगभूमकी चाल ॥२॥ अब लों तो स्वामीजी जुगल या सारे जनमते, अरु जिनके माता पिता कर जाते काल । कौन तोन्हुलावेको खिलावे उन्हें गोदमें, अजि उनकूं पालेथी कलपतरु डाल ॥३॥ छिप गये कलप काल चौथा आ गया, अरु होगी कैसे परजाकी प्रतिपाल । विद्यमान जुगल जिते हैं इस क्षेत्रमें, अरु ए तो जाने नहीं कर्म भूका हाल ॥४॥ भया नहि काहूके अकेला ऐसा पुत्र तो, अरु नहि जनीकाहु कन्या सुन्दर बाल । अब भगवान अकेले जनमे नाभिके, अरु किये माता मरुदेवीने निहाल ॥५॥

आगे जन्मेंगे जी अकेले सुत कन्यका, अरु नाना भी जीवेंगे बहु काल । किया मैंने प्रभुका न्हवनकिर [illegible], अरु नहि देखा यो जुगलियोंने हाल ॥६॥ करूं अब ऐसी इन्द्राणी दाई होयके, अरु क्रोड नारियोंमें होके प्रभुजीका नाम गावें सुर सुन्दर सुहागन मंगल मंजरी, अरु नहीं [illegible] जावें में याही काल ॥७॥ न्हाऊं मैं प्रभुको पहराऊं [illegible], अरु वस्त्राभूषणमें पूजों न्याये भाल । देखें [illegible] र जुगलनी, अरु जासे [illegible] जी [illegible] ॥८॥ पहराऊं तालवे फुलाऊं टोपू [illegible]

सुतोंकी प्रतिपाल। ऐसी विध इन्द्रने विचारी फोरी विक्रिया, और भैया फैला दई यिका इन्द्रजाल ॥९॥

अथ जिनेन्द्रके जन्मोत्सवमें नाभिराजाकी सभामें भगवतके आगे सुरेन्द्र तांडव नृत्य करनेके वास्ते अपनी गांधर्वी सेनाकूं तैयार हो जानेकी शिक्षा करे हैं। चाल आल्हा। दोहा। राग आल्हा कवि वचन।

अब आरम्भ करायोजी सुरेन्द्रने, अरु भयो नृत्यके करनकूं तैयार। जन्म समयमें श्री भगवंतके, अजिवे तौ नाभि नृपनिके दरबार ॥१॥ भावा। हुकम चढायो जीव जावो गति देवना, अरु सारी मंडली हो जावो हुशियार। साजकूं मिला ल्योजी निकालो स्वर शुद्ध कर, अरु छेडो खरज ऋषभ गंधार ॥२॥ मध्यम गरमगरमकूं विचार ल्यो, अरु करो पंचमका शुद्ध उचार। धैवत साधो अरु सोधोजी निखादकू, अरु ल्यो ऐसा तौ चली उनकी संभार ॥३॥ स र ग म प ध नि नि ध प म ग र स क्रिया, अरु र ग म प ध नि सोधो हुशियार। ग म प ध नीको अरु म प ध नि सुरनकूं, अरु फिर प ध नीके छेडो तीनों तार ॥४॥ छेडो धानी दोन अरु छेडोनीकूं एकली, अरु छेडो स नि ध प म ग र स सार। उलटि पलटि कई बजावो गति चावसे, अरु दरसावो छहों रागोंकी बहार ॥५॥

पांचूं पांचूं भार्या दिखा नो छहों रागकी, अरु दिखला दो उनका सारा परिवार। स्वरसे चूकेगा अरु ऊकेगा जोलसे, अरु फक दूंगा तेरा द्वीप सेतीवार ॥६॥ बेजा मटकेगा अरु देगा औटी ताल जो, अरु बेजा हंसेगा वृथा जो मुख फाड। बिन अवसरकी उठावेगा जो रागनी, अरु नहिं करेगा जो भक्तिका विचार ॥७॥ कंठकूं फुलावेगा चिल्लावेगा जो गावता, अरु साज बाजोंमें अडावेगा जो नाड। दिल घबराये वे

उठावेगा जो रागनी, अरु गाये जावे गान सोचेगा विनाऽ ॥८॥ विगडे सुरांपे नथमेंगा झट गावतां, अरु नहिं पकडेगा झट समताल। झट न बुलेगा न छुटेगा स्वरकी चावसें, अरु हो हो जावेगा जो स्वर नेनीवार ॥९॥ अरु जो ना बैठेगा गवैया गोडी मोडके, अरु सिंह आसन वाउघ्रा ललकार। इतने दोषूं को जान बचावेगा जो देवता, अरु मैं तो कूंगाजी अपाढे सनिकार ॥१०॥

अथ फुटकड भजन उत्तम भैरवी ॥हजूरी॥

जिस दिनसें मैं दरस तोरे पाये, अनुभव घन बरसाये। दरस तोरे० ॥टेक॥

भेद विज्ञान जग्यो घट अंतर, सुख अंकुर सरसाए। दरस तोरे पाये, जिस दिन० ॥१॥ शीतल चित भयो जिम चंदन, शिव मारगमें धाये। दरस तोरे पाये, जिस दिन० ॥२॥ प्रगट्यो सत्य स्वरूप परापर, मिथ्या भावन नाये। दरस तोरे पाये, जिस दिन० ॥३॥ नयनानंद भयो अब मन थिर, जगमें सन्त कहाये। दरस तोरे पाये, जिस दिन० ॥४॥

किस विध कीने करम चकचूर इसका जवाब भगवद्वचन।

जिस विध कीने करम चकचूर, सोही विध बतलाऊं तेरा भरम मिटाऊं वीरा। जिस विध कीने करम चकचूर ।टेक।

सुनों सन्त अरहंत पन्थजन स्वपर दया जिस घट भरपूर, त्याग प्रपंच निरीह करें तप। ते नर जीतें कर्म करूर, सोई विधि बतलाऊं तेरा भरम मिटाऊं वीरा। जिस विधिकीने करम चकचूर ॥१॥ तोरे क्रोध निठुरता अघघन, करत दूर सिर डारें धूर। असत अरु करि भंग बनावें, ते नर जीतें करम क्रूर। सोई विधकीने करम चकचूर ॥२॥ लोक संपदांकें सुखनें भरि, काढ असंजन त्याय जरूर। विषय कुकर्म कुरू-

चल पूंके, तें नर जीते करूर । सोई विधकीने करम चकचूर ॥३॥ परम छिमागृंद भाव प्रकासे, सरल वृति निर्वाह कपूर । धरि संजम तप त्याग जंगत सवें, ध्यावें संचचित केवल नूर। सोई विधकीने करम चकचूर ॥४॥ यह शिव पन्थ सनातन सन्तों, आदि अनादि अटल मशहूर, या मारग नयनानंद पायो । इस विध जीते करम करूर । सोई विध कीने करम चकचूर, जिम विधकीने करम चकचूर ॥५॥ ॥इति॥

अथ अर्हत महिमा मंजरी यति नयनानंद कृत लिख्यते, तिसकी आदिमें ऐसा वर्णन है कि व्याकरणमें अर्ह धातुसे अर्हन बना है ताका ऐसा अभिप्राय है कि अर्हत ही पूज्य है और नहीं । चाल खयाल बन्ध चौक लंगडी रंगतकी, कलंगी छन्द । प्रारम्भः ॥

मुजको है भगवान भरोसा जो कोई तुमको ध्याते हैं, भक्त तुमारे । कर्म रिपु जीत सिद्धपद पाते हैं ॥टेक॥

ज्ञानावरणी हरा आपने जिसने जग भरमाया है, करके अचेतन । चेतनाकूं भवसिंधु फंसाया है ॥१॥ हरा दरशनावरणी कामद केवलज्ञान उपाया है, फोरि महाबल । जीतिके मोह-मल्ल जश पाया है ॥२॥ अंतराय करके अन्त अर्हन जगतीर्थ कहाया है । बन्ध मोक्षके, आप्त हो तुम षटमतमें गाया है, ॥३॥ वैयाकरणी अर्ह धातुकूं पूजामें बतलाते हैं, भक्त तुमारे । कर्म रिपु जीत सिद्ध पद पाते हैं ॥४॥ मुझको है भगवान भरोसा जो कोई तुमको ध्याते हैं, भक्त तुमारे, कर्म रिपु जित सिद्ध पद पाते हैं ॥४॥

अथ व्याकर्णोक्त शब्द षटमत प्रमाण है तस्मात अर्हत देव षटमत पूज्य है अरु प्रमाण है सो कहे हैं । खयाल चौक दूजा, यहां ऐसा मतलब है कि व्याकर्ण है सो शब्द शास्त्र है अरु यह किसीका मत शास्त्र नहीं है अरु षटमत मान्य हैं ।

शब्द शास्त्र निर्वैर जगतमें सो मान्यो पटमत निरंट पूजनी कहो। छहों मैं तुम अर्हन् क्या जानैं मट ॥१॥ गणधर इन्द्र धरणेन्द्र तुमारे, समवशरणमें आउट छट चरण तुमारे पकर पीते हैं ज्ञानामृत गटगट ॥२॥ करि विपयानल शांत सन्तजन धरते हैं संजम झटपट, पट पटमेंसे पांच तजि जिन चिनमें जात हैं लिपट ॥३॥ तुम सेवासे तुमसे हो हो काट करमशि बजाते हैं। भक्त तुमारे कर्म रिपु जीत सिद्ध पद पाते हैं। मुझको है० भक्त तुमारे० ॥४॥

अथ समवशरण शब्दमेंसे अर्थ निकले हैं। कल्याणमंदिर १ शिवालय २, मंगलमंदिर ३; शरणमें प्राप्त होनेका शरणालय ४: वा शरण स्थान ५, अभय स्थान ६, उदार मंदिर ७. अघ भेदि मंदिर ८। इत्यादि समवशरणके नाम हैं ख्याल तीजा।

समवशरण भगवान तुमारा अद्भुत महिमावाला है, सत्पुरुषोंने, अर्थ उसका इस भांति निकाला है।१। सर्वोंमें कल्याण अव शरण मन्दिर वही शिवाला है, मंगल मन्दिर, जगतका निराबाध रखवाला है।२। तथा शरणमें प्राप्त होनेका वही शुद्ध शर्णाला है, शरणागतको. अभय [illegible] करनेवाला है।३। अति उदार अघ अघम भेदी [illegible] झाला है. मानों भाषै, अरे नर शिवका [illegible] है।४। तारण तरण निरखि सुरनर मुनि शरण तुमारी [illegible] भक्त तुमारे, करम रिपु जीत सिद्धपद पाते हैं।५। मुझको [illegible] भक्त तुमारे।

अथ अरहन्त देवकी अनन्त चतुष्टय [illegible] वर्णन. चौक चौथा; ख्याल लंगड़ा।

लब्धि अनंत चतुष्टय [illegible] गुण दर्शन [illegible] ज्ञान अनन्ता; भये प्रतिबिंबित सर्व द्रव्य [illegible] ।१। [illegible] काल प्रवर्ति द्रव्य स्वगुण पर्यय [illegible] युगपत् [illegible]

तुम अनन्तदर्शी प्यारे।२। अनन्त अलोक विलोको सब अनंतके भंडारे. वीर्य अनन्ता: अनादि कर्मबन्ध तोडन हारे. ।३। परम ब्रह्म पद पाय घातिया हारि ज्याकिम मल्हारे. परमेश्वर हो: आपने सब अघभर पटकि डारे।४। हलके हो सिद्ध हो गगनमें किससे ण गुन पाते हैं, भक्त तुमारे: कर्मरिपु जीत सिद्ध पद पाते हैं।५। तुमको है०। भक्त० भक्त तु० ।६।

अथ अरहंत चरण शरणके महात्मसें भक्तोंके कुष्ट रोग अग्निभय दूर भये अरु जे विमुख हो गये ते दुर्गतकूं गये तिनका वर्णन। कवाल चौक पांचवां।

निर्निदित पद पंकज तुमरे त्रिभुवन जंतु सहाई है। पतित भवांबुधि पोत बन भक्तोंको सुखदाई है।१। वादिराज श्रीपाल नृपतिकी बाधा कुष्ट मिटाई है। अग्नि भई जल, ध्यानकी कंवल विषें पधराई है।२। विष्णुकुमार मुनि गजपुरमें अग्नि प्रचंड बुझाई है। वनकी वह्निमें बचे मुनि जिन तुमसें लौलाई है।३। बचे पांडु सुत लाक्षा मण्डप बचि गई कुन्ती-माई है। तुमरे ध्यानसें बचे भारतमें फतै जिनपाई है।४। गये सागरसेन नर्क अनंते जो तुमसें फिर जाते हैं। भक्त तुमारे. कर्मरिपु जीत सिद्धपद पाते हैं।५। भक्त तुमारे।६।

पुनः अर्हंत भक्तिसे शूली भय समुद्र भय पाताल पतन कूप भय निर्जन, वन गुफा भय भक्तोंके दूर भये अरु जिनोंने अर्हंतकी आज्ञाकूं लोपा ते असभ्य संभाषणके दोप करि नर्कमें धस गये और पृथ्वी फट गई, कवाल चौक छठा।

शूली टूट भया सिंहासन महिमा सुर नर गाई है, सेठ सुदर्शन; गये मुक्तिमें धजा फराई है।१। संजयंत मुनि पड़त सिंधुमें केवल सिंधुमें लब्धि उपाई है; गये मुक्तिमें, शत्रुकी कुछ नहीं पार वसाई है।२। चारुदत्त रस कूप गोह गहि

महानिधि-पाई है, वर्चा अंजना: गुफामें काढ़ विमान चढ़ाई है।३। तुमसे विमुख नरकमें राजा वसुकी ज्यों धसि जाते हैं, भक्त तुमारे; कर्मरिपु जीत सिद्ध पद पाते हैं, तुमको है। भक्त तुमारे।४।

अथ मदोद्धत गजेन्द्र वा मृगेंद्रभय वा सर्पभय आदिकी भक्ति करि भक्तोंके दूर भये तिनका वर्णन सार्थक, कथाक सातवां।

मुनि अरविंद विलोकि महा गजराज चीरने धाया है, ध्यानावस्थित, निरख मन्द मृत जीव सिर न्याया है।१। हो प्रशांत चित करी तपस्या स्वर्गादिक सुख पायो है, भया तीर्थंकर; पार्श्व प्रभु जिन्हें जगतने ध्याया है।२। भया सिंह गारीच जीव पिहितास्रव पद लटकाया है, सागर गुफा: जीव लखि मनमें अति पछताया है।३। गहि सम्यक्त तपस्या करिके तीर्थंकर कहलाया है वर्द्धमान जिन, भया अरु मोक्ष महाफल पाया है।४। हरा सर्पका दर्प श्रीम सेवासे सेवा पाते हैं, भक्त तुमारे; कर्मरिपु जीत सिद्ध पद पाते हैं।५। तुमको है, भक्त तुमारे।५।

अथ अर्हंत भक्ति करि दुख पशु उद्धार वर्णन कथाक आठवां।

जहां सिंह शूकर अरु मर्कट नकुल दुष्ट पशु [illegible], [illegible] तुमारी सेव मनुष गति अति उत्तम धारी।१। श्रीमद्‌ आदि जिनन्द्र चन्द्र अरु अवस्था जब धारी: [illegible] कुस्वर्गनादिक स्यात् हितकारी।२। स्यात् [illegible] [illegible] दूरि कर्म बन्धन सारा, धारि सुर नर महाहिने [illegible] जिनकी बलिहारी।।३।। त्रिभुवन अरु जिनका [illegible] [illegible] सुनाते हैं: भक्त तुमारे कर्मरिपु जीत सिद्धपद पाते हैं।४। तुमको है०; भक्त०।

अथ संग्राम भय अरु अनेक भक्तोंके भय संकट अरहन्त भक्तिसे दूर भये अरु अनेक पशु पक्षीनके उद्धार भये सो लिखे हैं: खयाल नवमां।

वज्रकिरण संग्राममें जीत्या कर मुद्रा जिन धारे हो। सद्भक्तोंको तुमहीने संकट सेती उभारे हो।१। भील भुजंग जटायु स्वान मांकक चण्डाल निहारे हो, चोर ढोर खर धनी निर्धन अनक्ष उधारे हो।२। हिंसक व्यसनी गुणी निर्गुणी भवदधि पतत विचारे हो, अतिथ अनाथन साथ दे सिद्ध सदन ले धारे हो।३। मानतुंगके बन्धन तोड़े भक्तामर यश गाते हैं। भक्त० मुज० भक्त० ।४।

कवि कुल व्यवस्था वा जन्म वा निवासनगर खयाल

जन्म लियो मरुराठ देशमें जहां नौवराणा नगरी, पाल्यो भूधरदास यतिने पढ़ा जाने सारी।१। जिले मुजफ्फरनगर कांध ले है थाप्यो अपनी नगरी, सकलपंच मिल वधाई दई मिनुमुपिलकी नगरी।२। चलन गृहस्थाचार अवस्था भई पचासके लगभगरी, नाथ तुमारे सुजस गानेमें कलम हमने रगरी।३। जलते हैं पापीजन हमसे भक्तोंके मन भाते हैं; भक्त तुमारे कर्मरिपु जीत सिद्धपद पाते हैं। तुझको है भगवान० भक्त०।

कविताके पट नाम तथा उसने अपने चार सागिर्दोंके नामसे अनेक पद बनाये तिनमें अपना नाम नहीं गेरा परन्तु रचना सब कविताकी कृत्य जानना ताकी सूचनामें यह अन्तमें खयाल बन्ध छैक लिया चौक हैं; इसके कहनेका यह प्रयोजन है कभी कोई ऐसी शंका न करे कि विगानी रचना अपनी रचनामें क्यों शामिल किया है तातैं आशंका मेटी है।

हैं पट नाम नैनसुख दृगसुख दृगानन्द प्रमुखादिप्रभू। ऐनुल राहत नयन आनन्द नैन चैनादि प्रभू।१। चन्दनलाल

खुशालराम अरु मुँशी अरु मंगलमल्लादि प्रभु। इन नामोंने रचना पदमें करि दिये विख्यात प्रभु ।२। सुफल भई नव रचना हमरी तुमरे पद परशाद प्रभु, हर मुल्कोंमें भगतजन गाते हैं कर याद प्रभु ।३। भजन प्रताप सकल पंचोंसे पाते हैं हम दाद प्रभु; करो अनुग्रह न आवे अब आगे परमाद प्रभु ।४। गाऊँ मैं गुण ग्राम तुमारे घर घर ध्यान समाधि प्रभु; कहै नयनसुख मिटाओ जन्म मरणकी व्याधि प्रभु ।५। तारे तुमने दुष्ट अनन्ते हम तो दास कहाते हैं; भक्त तुमारे कर्मरिपु जीत सिद्धपद पाते हैं ।६। मुझको है भगवान भरोसा जो कोई तुमकूं ध्याते हैं; भक्त तुमारे कर्मरिपु जीत सिद्ध-पद पाते हैं मुझको है० ।७।

इति श्री नयनानन्द कवि कृत अर्हत महिमा मंजरी समाप्तम्।

अथ नवीन भजन: अर्हत स्तुति रागनी जगला वगैरह देहाती मेवाती गंगावासी लोगोंके भजनकी तरजमें स्वतन्त्र इकतारे पर गानेकी छोटी कली।

तुम्हैं त्रिभुवनके जन ध्यावैं थारे सुण सुण गुण भगवान, तुम्हैं त्रिभुवनके जन गावें ।टेक।

अजि अर्हघातुसं भये हो अर्हत पोषद लब्धिसे भये हो भगवान, धरो अनन्त दरस सुख वीरज: सिर मुख गुण गावें। थारे सुण सुण गुण भगवान तुम्हैं त्रिभुवनके जन ध्यावैं ।१। अजि आप तिरे औरनकूं त्यारो शुभ शिक्षा करि भर्म निवारो; तारनतरन विरद सुर नर मुनि शरण सरण आवैं; थारे सुण सुण गुण भगवान तुम्हैं त्रिभुवनके जन ध्यावैं ।२। अजि पद पद मैं पद पद गाजि कविजन, ध्याऊन जिन चिनमें धरि मन, धर्म अरु काम मोक्ष पुरुषारथ फल पावैं, थारे सुण सुण गुण भगवान तुम्हैं त्रिभुवनके जन ध्यावैं ।३। अजि शूकर सिंह नकुल कपि तारे, स्वान कुगति कष्ट

उधारे, इस मुखके इस दोष हरो थारे सेवग कहलावैं; थारे सुण सुण गुण भगवान तुम्हैं त्रिभुवनके जन ध्यावैं थारे० ।४।

अथ दूजा भजन इसी चालमें जिनेन्द्रके अठारह गुण अरु कुदेवोंमें अठारह औगुण दिखावे हैं तिनकी सूचनामैं ।

मैं तजि दिये कुदेव अठारह दोष धरनहारे, मैं तजि दिये सर्व कुदेव अजि दोष धरनहारे; सब टारे, निर्दोषी इक तुम ही निहारे, वीतराग सर्वज्ञ तरणतारणका विरद धारे, मैं तजि दिये सर्व कुदेव० ।टेक।

भूख प्यास तुमकूं नहीं दाता, रागद्वेष अरु नाहि असाता, जन्म मरण भय जरा न व्यापे मद सब निरवारे, मैं तजि दिये सर्व कुदेव अठारह० ।१। मोह खेद प्रस्वेद न आवै विस्मय नींद न चिंता पावै, भजि गई रति अरु अरति कहैं सुरनर मुनिजन सारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरन हारे । मैं तज दिये० ।२। भूखा देव छिपटना डोलै प्यासा नित सिर चढ़ चढ़ बोलै, रागी छीन पराया धन दे द्वेषी दे मारे, मैं तजि दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे । मैं तज दिये० ।३।

रोगी रोग सहित दुख पावें, जन्म धरैं सो मर मर जावें, डरता बांधै शस्त्र बुढ़ापा सुधबुध हरि डारे, मैं तजि दिये सर्वकु देव अठारह दोष धरनहारे । मैं तजि दिये० ।४। मदवाला नित मदिरा पीवैं, मोह मूर्छित मरयान जीवै खेद खेद विस्मय करि व्याकुल किसको निस्तारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे । मैं तज दिये० ।५। सोवै सो परमादी होवै डूबै अरु सेवगकूं डबोवै, खोवै आतमगुण सु तुमारे गुण कैसे निर्धारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे । मैं तज दिये० ।६।

चिंतातुरकूं चिंता सोखै, रति वेहोश अरतिसें रोकै. मृत भवानी उतमानी तज यो सब प्यारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे। मैं तज दिये० ।७। ब्रह्म विष्णु सोता है वोही, जिसने कर्मकालमा धोई. दयानन्द वो ही देव हमारा सेवो सब जन प्यारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे। मैं तज दिये० ।८।

रागनी धानी चाल यह है—चाहो पिया मार डारो न्यारी रहूँगी, हो न्यारी रहूँगी मैं तो गारी ना सहूँगी. चाहो पिया मारि० ।टेक।

सौतन वैरन मोपै ताने चलावें. एकै कहूँगी नां मैं सौ सौ कहूँगी, चाहो पिया मार० । भजन ।

राखो रुचि वीरा मत रूसो धरमनें, राखो रुच वीरा, हे रूसो ना धरमसे, जिनमतके मरमसे, राखो रुचि वीरा मत रूसोजी धरमसें ।टेक।

धर्म प्रभावति रोगे भवसागर, पिंड छूटैगा तेरा आठों करमसें, राखो रुचि० ।१। सांचे देव धरमहीको सेवो, नाहिंसे तिरोगे, ना तिरोगे जी भरमनें. राखो रुचि० ।२। नाग नयनसुख सीख सयानी, भाषै है सु गुरु तेरे जीया देवलमें. राखो रुचि वीरा मत रूसो धरमसें. राखो रुचि वीरा, हो रूसो० ।३।

रागनी भैरवी या कव्वाल चाल।

तेरे इश्कमें दिवाना हुआ. तैने कदर मेरी जानी नहीं. मैं तो तेरे इश्कमें दिवाना हुआ ।टेक।

बोलो ना हमसें खफा हूं तुमसें. न्यारी रहूं न्यारी लाना हुआ, तैने कदर मेरी जानी नहीं, मैं तो तेरे नह प्यार हैं.

रागनी भैरवी ।

मैं तो शांति पाई तृष्णा घटानेसें, जबसे ममताकी स्वामीसें

लई प्रभु जबसे चरनकी शरनमें लई। जागी सुमत मोरी भागी कुमत, प्रभु जबसे चरनकी शरनमें लई ।टेक।

छूटी अदर्शन चिंता अनादी, जबसे समाधी धरनमें लई, जागी सुमत० ।१। अनुभव भयो मेरे मनमें तुमारो, जबसे तेरी जप करनमें लई, जगी सुमत० ।२। साता भई भगगई सब असाता, जो पूर्व जन्मन मरनमें लई, जागी सुमत० ।३। भजी सर्व चिंता भया सुख अनन्ता, नैनानन्द सम्पत भरनमें लई, जागी सुमत० ।४।

अथ पद अध्यात्म चाल।

मैं बाज आई झिलके लगानेसे, मैं बाज० ।टेक।

सोनेकी थलयामें भोजन परोसा, है खा गया यार बहानेसे, मैं तो बाज० यह चाल पद।

मैं तो शांति पाई तृष्णा घटानेसे ।।टेक।।

रागीसें पूजे विरागी न पूजे, भ्रष्ट भयो बहकानेसे, मैं तो शांति पाई तृष्णा० ।।१।। धारी कुभेख अनेक भरे दुख, दूर भग्यो जिनवानेसे, मैं तो शांति पाई० ।२। मिटी कुदिष्ट सुदिष्ट भई अब, श्री जिनके समझानेसे, मैं तो० ।३। बन्ध मोक्षको मारग सूझयो, स्वपर स्वरूप पिछानेसे, मैं तो शांति पाई० ।४। जाने पुन्य पाप दोऊ बन्धन, शुद्ध भावना भानेसे, मैं तो० ।५। नैनानन्द मिटे सब सुख दुख, सम्यग्दर्शन पानेसे, मैं तो शांति पाई० ।।६।।

अथ द्वादशानुप्रेक्षा गर्भित धर्मोपदेशका भजन रागनी झंझोटी चाल यहै है।

मनहर लिये जाय मेरा सांवरया, दिलहर लिये जाय मेरा सांवरया ।।टेक।।

सुनरी सखीरी जिन सजननसे दिल फटा, उनसे मिले सोई बावरा, दिलहर० इस चालमें।

अरे भाई भाले सम्यकभावना रे, भाई भाले० ।टेक।

सुन ले पियारे मेरे इस भव विषम विदेशमें, हैं कुगुरुनकी बहकावना, रे भाई० ।१। सुन ले पियारे मेरे देहादिक सब अथिर हैं, इनमें चित मत भटकाव रे, भाई० ।२। सुन ले पियारे मेरे तू अशरण तिहुंकालमें, जहां चहुंगतिमें भरमावना रे भाई० ।३। सुन ले प्यारे मेरे एक अन्य तू अन्य सब, अपनायत क्यों निभावनारे, भाई० ।४। सुन ले प्यारे मेरे अशुचि अमंगलको घड़ा, तुजै पड़ना है धरना उठावनारे, भाई० ।५।

सुन ले प्यारे मेरे आश्रव हर संवर करो, विन निर्जिरा और उपायनारे, भाई० ।६। सुनरे पियारे मेरे लोक विषै तेरी रोक है, विज्ञान विनानिक सावनारे भाई० ।७। सुन ले प्यारे मेरे शिव पापक जिन धर्म है विन धारे होगा बचावना भाई० ।८। सुन ले प्यारे मेरे पिछली मत अब छोड दे, अगली विन हो सुरझावना भाई० ।९। सुन ले प्यारे मेरे अनुप्रेक्षाका यों ही अर्थ है, दृग सुख वृथा न गंवांवनारे भाई० ।१०। ॥ इति ॥

अर्हन्त भक्तिके उपकारमें पद। इस ही चालमें पद दूजा।

मैं तो तिर गया तेरे परतापसे। टेक।

मैं तो प्रभूजी भवसिंधु में तेरी सेवा विन खाए गोते आपसे। मैं तो तिर गया० ॥ १ ॥ मैं तो चलयाजी खोटे पंथमें, दुःख पाए कुगुरुनके मिलापसे। मैं तो० ॥२॥ तुमसे प्रभुजी मैं तो फिर गया, जैसे फिर जावे पापी वे ठानापसे। मैं तो० ॥३॥ सेयो सदासे मिथ्या धर्ममें, पीछा छुड़ा नहीं मेरा काहू पापसे। मैं तो० ॥४॥ दृग सुख अब टूटी भव बेडियां, मेरी असि आउसाहीके जापसे। मैं तो० ॥५॥

रागनी बरवा या धनासरी या पीलूमें भजन उपदेशी।
क्यों नर देह धरी हे बनारे प्यारे क्यों नर देह धरी। टेक।

तोंद जो रुकेपर गोमें बोले बाल जरी, खोसे धन अरु नार बिरानी, पापकी पोट भरी, हे बनारे प्यारे क्यों नर देह धरी ॥१॥ तृष्ना वस न कियो सठ संवर दुर्गति बांधि भरी, सिर करि सिंधु किनारे डुब्यो यह क्या कुबुद्धि करी। हे बनारे प्यारे० ॥२॥ यह तो देह तपस्या कारण काहू पुन्य धारी, तें तप त्यागि लागि विषयनमें रापों पाहि नडी। हे बनारे प्यारे० ॥३॥ बार अनन्त अनन्त जनमें तें सब देह धरी, क्या न कियो न कियो सो करिले पर जा जात मरी। हे बनारे० ॥४॥ यह आरम्भ परिग्रहमें फंस किनकी नाव तरी, त्रिगसुख नाम काम अन्ध न फेरे सठ खाक परी। हे बनारे प्यारे० ॥५॥ इति।

अथ भजन हितोपदेशी दादरा बरवा खंम्भाचका। चाल।
चैन नहि बिन देख तुमारे, आवो पियारे वे तो पास हमारे, हम ठाढे तोरे द्वारे चैन नहि०। अथ पद शुरु। हे आतमा इन विषयोंसे टर जा। टेक।

काहू पुन्य प्रभाव भयो नर, संजम धरि भवसागर तरि जा, विषयोंसे टर जा। हे आतमा० ॥१॥ जो न सके करि तप जप हे नर, तो सठ तू विष खा करि मर जा, विषयोंसे टर जा। हे आतमा० ॥२॥ बड जा सिंह सरपके मुखमें, गिरसें गिर धरणीमें उतर जा, विषयोंसे, हे आतमा० ॥३॥ सूली चढि मरि विषयोंमें मत परे वडवानलके मुखमें वडि जा, विषयोंसे टर जा, हे आतमा० ॥४॥ एक जन्म दुःख जन्म जनम सुख पटकि परिग्रह वनक निकर

जा, विषयोंसे, हे आतमा०॥५॥ एक जन्म सुख, जनम जनम दुःख, है त्रिग सुख तिस दुखकें न हरि जा, विषयोंसे, हे आतमा०॥६॥

अथ अर्हन्त दर्शन उत्सव चाल चपरासिया गारि दे गयो, चपरासिया गारी, हे बालम तेरे राजमें, चपरासिया गारि दे गयो।

इस चालमें खम्माच दीपचन्दी दादरा अर्हन्तस्तुति।
विकलपता सारी टरि गई, विकलपता सारी टरि गई। टेक।

तुमरे सुगुण सुन, सोवे मैंने निज गुण करन, भरम रज झरि गई, विकलपता सारी०।१। निरखत भाग मेरे [illegible] मनोरथ, सुभगति पावन परि गई, विकलपता०।२। पूजन तुम पद करत भव दधि टूटो नवका तिर गई, विकलपता०।३। चहुं गतिमें फिरि आनि भयो नर, उत्तम सज्जनमें धरि गई, विकलपता०।४। तिरत तिरन प्रभु थारे चरन गहे नाव हमारी अब आरि गई, विकलपता०।५। जो न गहोगे प्रभु पार हमारा नवा तो अब आनि तरि गई, विकल०।६। नैन चैन प्रभु [illegible] कहेंगे, फेर बाकि चैन करनि गई, विकलपता मनकी टरि गई, हे जिनजी तुम०।७।

अथ राग भैरों नर कुमरी जुगी भजन।

प्यारे दर्शनकूं लों लगी लगी, प्यारे०। अर्जी लगी लगी, लै लगी लगी, पद पंकजनकूं लो लगी लगी, प्यारे दर्शनकूं लो लगी लगी० टेक।

परमारथकी प्राप्ति भई अब, स्वारथ करि करि थकी थकी, प्यारे दर्शन०।१। सुनि सुनि जिन गुन मर्म अमोलक, ज्ञान कला उर जगी जगी, प्यारे दर्शन०।२। आई सुमति सुमतिकी दायनि, कुमति कुसंगत भगी भगी, प्यारे०।३।

नैनानन्द भयो मन मेरे. कर्म प्रकृति सब दुगी दगी, प्यारे दर्शन० ।४।

अथ पुन्यः अर्हन्त स्तुतिका पद हजूरी रागनी ।

एही अंदेशा हमेशे रहा, तेरे धरमकी शरन ना लई । मुझे एही अन्देश हमेशे रहा । टेक ।

मानी न मैंने हिदायत तुमारी, सतगुरुने मुझेभ तेरा कहा । तेरे धरमकी शरन ना लई, मुझे एही० ॥१॥ हंस हंसके विषयोंमें फंस फंस कुगतिमें, पड पड सजामें न तिरना चहा, तेरे धरमकी शरन ना लई । मुझे एही० ॥२॥ छेदन व भेदन व सूलीपे धर धर, मारा व बांधा अगनमें दहा । तेरे धरमकी० ॥३॥ चीरा करोतोंसे कोल्हूमें पेल्या, चक्कीमें पीसा व घोसा गया । तेरे धरमकी० मुझे० ॥४॥ ऐसा करोले धरो मोक्ष हीमें, कहे नैनसुख फिर न आऊं यहां । तेरे० मुझे एही० ॥५॥

अथ पद राजुलजीका राग पीलू ।

सांची कहो भए जागी कव नगुन सांची । टेक ॥

हम न बिसरि श्रीवकुल टासू अटके, भोगी परम निर्भोगी कव न गुन । सांची कहो० ॥१॥ जगत रिद्ध तजि चहत अबे निधि, लोभी परम निर्लोभी कव न गुन । साची कहो भए जागी कव न गुन० ॥२॥ वस्त्र शस्त्र बिन करत करम रण मदन मथ्यो निष्कोधी कव न गुन. सांची० ॥३॥ नव भव परम दया मोपैं राखी दशम भए प्यारे न्यारे, कव नगुन, सांची० ॥४। कहत राजमति तुमरी शरण बिन, द्रिगानन्द मोहि होवें कव न गुन सांची० ॥५॥

अथ राजुलजी अपने परिवारकूं अपनी दिक्षामें विघ्न करनेको रोके हैं रागनी खम्माचकी ठुमरी बाखास भोरवी मारवाडी जबानमें ।

वाईना बोलोजी म्हेतो आतम ध्यावाला, वाईना, हे आतम ध्यावाला म्हे परमातम ध्यावाला, वाईना बोलोजी, म्हेतो आतम ध्यावांला; जीजो ना बोलोजी म्हे तो, आतम ध्यावांला । टेक।

देखो म्हानैं खंगी अज्ञा, म्हांके, छै नही परतज्ञा, म्हेतो नेमी सरजीरै लारैजावांला, वाईना ।१। म्हांको अपराधगीनो, करज्यो हे छिमासु हेल्यो, म्हेतो जोग लेस्यां तो आहार पावालां, म्हनै ना बोलोजी, म्हे तो आतम ।२। येतो म्हांका जन्म नाती, कर्मांरो छै कोण साथी, संजम दियाद्यो उपगार गावांला, म्हांसूं ना० ।३। सुनस्यां जिनेन्द्रबैन, कोनी म्हांकै नैनचैन, म्हेतो धर्म ध्यानमें जनम बितावांला, म्हांनू ना० ।४।

अथ सनोली गांवकी पूजाका पद। चाल तक तक मारै नजरिया । रागनी जंगला वा भैरवी ।

ले चल सहेली सनोली आज, जहां हो रही है पूजा चन्दा प्रभुजीका मेरी प्यारी, ले चल सोली सनोली आज ।टेक

एक तो स्वामी मुजे मन्दिर दिखल्या, दूजे दिखाये पूजाजीका समाज, तीजे सुनवादे जिनवाणी तू बिराणी मेरी, बिना धरम जावै जनम अकाज, जहां हो रही है पूजा चन्दा प्रभुजीकी मेरी प्यारी, ले चल सोली सनोली आज, आए मुल्क मुलकके श्रावक, लेले रथ घोटक गजराज, बिच बजार पहुंची रथजात्रा, चल पैदल जल्दी उठ भाग, जहां हो रही है पूजा ।२। हो रहे मंगल गान बधाई, सखि देखो जैसा धर्म जहाज, तिरना है तो लेल्यो शरन प्रभुजीका, मरना है क्या कर नाराज, जहां हो रही पूजा० ।३। नैनानन भगवान भगति बिन, जिनकै चक्रवर्तिको राज, तप, बिना नर्कमु भूमो, ब्रह्मदत्तसे नर सिरताज, जहां हो रहा है पूजा० ।४।

अथ गजल फारसी आगेवालीकी कृष्ण कामणीकी चालमें।

अथ स्वपर भेद विज्ञानार्थ बहिरात्मा अन्तरात्मा होकर परमात्माका चिन्तन करि, निजात्माकूं उपदेश करे हैं।

आजन संवरमें हुवा मुश्त गरूकमें, मोहिनशीं होके स्वपर भेद विचारा ।१। बहिरात्म दशासे छुटया अन्त दशामें, द्रिष्ट पड़ा मुजको जगत धुंध पसारा ।२। सीचके आंखूंको अनेकांतसे देखा, दुरबीनोंसे था दूर जोवो नूर हमारा ।३। कीना अरहंत वसिद्धोंकी सिफतका चिंतवन, परमातमके गुणोंसे मैं निजातमको उजारा ।४। सांचेको सांचेमें धरा ख़शी नजरके, सहेसें जना नक्श मुझे तो मैं निहारा ।५।

राग भोग फल तने मुझे भागी बनाया, चाय मुल्क सरहा लोक संसार ।६। मोह कीजें लाने मेरी कलकल तोये, रहूं अधो मध्य मुझे देह मारा ॥७॥ पृथ्वी अप तेज पवन कालमें भर्मा, दम पून मैं भरे जनम निगोदोंमें अठारा ॥८। कल कल्में नकल पाईक भीनी नौंविकल मैं, सग नम अस नस मैं चरमको न सभारा ॥९॥ निस दिन कुविसनकी रहा हिर्स हमारे। पडके नर्कोंमें बजा सिर्पे कुहाड़ा ॥१०॥

ख्वातिथे मेरा माल जो मुजे यार बनाके, बांटा ना किसनै कहां दुःख वो हमारा ॥१॥ ऐ दिल वे शर्म अगर शर्म है तुजको, करके जतन आत्म रतन ढूंढले प्यारा ॥२॥ करले परमातमके निजातमके गुणोंका चिंतवन, अब्बले ले सोधन कल्का तू गगनसारा ॥३॥ जड कर्म हैं भिन तेरा चिद्‌ चेतन, द्रव्यसे करि भाव फिरा मारा मारा ॥४॥ जैसे तिलमें है तिला शीरमें रोगन, आतिश चकमकमें वही हाल तुमारा ॥५॥

है तौ कर्मोंसे तेरा योग अनादी, वादी डल नजरोंमें

नहीं इनसें तू न्यारा ॥१॥ ता हम चेतन व अचेतनमें फरक हैं, ग्रफलत है तेरी तुही है इसका मिटावन हारा ॥२॥ रंजय महुव्वपै कलम फेर दे ऐदिल, तू है नित शांत नहीं ज्ञान मई द्रिष्टा प्यारा ॥३॥ निर्भय ओंकार चिदानन्द स्वरूपी, जाना मैं सिद्ध समो रूप तुमारा ॥१९॥ वीर्ज बहु सूक्ष्म अवगाहन मई है, अगुरु लघु निर्बाधक सब कर्मोंमें न्यारा ॥२०॥ ऐदिल समझावें सुर गुन कथ तक तुमको, शिव सुख चाहै तौये है काफी इशारा ॥२१॥

आगे आरती अरहंत देवोंकी लिख्यते। सन्नानमें कीजे शिव ॐकार ॥

जै श्री जिन देवा। जै ॐ जिन देवा। पार लगाओ खेवा, करूं चरण सेवा ॥टेक॥

वन्दूं श्री अरहंत, परम गुरु। परम कृपा धारी प्रभु परम दयाधारी, परमातम पुरुषोत्तम। जग जन हितकारी, जै श्री जिन देवा। पार लगाओ खेवा, करूं चरण सेवा ॥१॥ प्रभु भव जल पतित उधारण चरण शरण थारी, ... सद्गुण निर्लोभी करम भरम हारी, जै श्री जिन देवा। पार० । करूं ॥२॥ स्वामी तुम सेवत गजपति ... धारी प्रभु भयो, तीर्थंकर पद पारसपा भयो ... जयश्री जिनदेवा, पार० करूं ॥३॥

आयो पिहिताश्रव मुनि चारन सुनकर ... प्रभु गुणपति; भयो तीर्थंकर सुन शिक्षा थारी, जय श्री जिन देवा, पार० करूं ॥४॥ स्वामी दीपक शील ... अविचारी, प्रभु दुर्जनः ... जय श्री जिन देवा, पार० करूं ॥५॥ ... प्रभु तुम मेटे भव भारी, प्रभु० । ... होय भारी, जय श्री जिन देवा, पार० करूं ॥६॥

बलिने जग परस्वाय दुःखी किए मुनिवर ब्रह्मचारी प्रभु, विष्णुकुमार मुनीश्वर किये तुम उपगारी; जय श्री पार० कहु ।७। पुण्याहार भए सखी जिन्होंने तुम सेवा धारी; प्रभु०। विदित कथा सतियनकी गावें नरनारी, जय श्री पार० कहु ।८। स्वामी वज्रकिरण नृप मूरति तुरी करमुद्रा धारी, प्रभु०। जीत्यों सिंहोदरसेरा मगर दशारी, जय श्री पार० कहु ।९।

स्वामी तिर गए नृप श्रीपाल मुजनते महा सिंधुधारी प्रभु महा०। कुष्ट व्याधी गई छिनमें तुम ही निर्वारी, जय श्री पार० कहु ।१०। महा मंडलेश्वर पद दे तुम कियो जगतधारी, प्रभु कियो, वादिराय मुनिवरकी हरी व्याधि सारी; जय पार० कहु ।११। मानतुंग मुनिवरके तोड़े राजबन्ध भारी, प्रभुराज; चढ़े सुदर्शन सूलीधरी मुकति नारी, जय श्री पार० कहु ।१२।

इत्यादिक भगवंत अनंती महीमा तु धारी, प्रभु महीमा०, तीन लोक त्रिभुवनमें व्रदित तथा थारी; जय श्री पार० कहु ॥१३॥ शेष सुरेशनरेश मुनिश्वर जावे बलिहारी, प्रभु०। पावें अबे अचल पद टरें विपत सारी, जय श्री० ॥१४॥ कहत नयन सुख आरती, तुमरी भरत हरनहारी, जयजय जिनवाणी नमो नमो; त्रिभुवन जनमाना नमो नमो, गराधर बखानी नमो नमो; जय जय जिनवानी नमो नमो ।टेक।

वीतराग हिमगिर तें उछरी, गणधर गुरुवोंके वदनें पसरी; मोह महाचल दमो दमो; जय जय० ॥१ ॥ जग जडता तप दूर करो सब, समता रस भरपूर करो अब; ग्यान विषे ले रमोरमो, जय जय०; त्रिभुवन जन, गणधरन बखानी ॥२॥ सप्त तत्व षट दरब पदारथ; खोदिये तो विन भेए अकारथ, अब मेरे उर जमो जमो, जय जय० त्रिभुवनर गणधरन० ॥३॥ जबलग शिव फल होयन प्रापत, चहुँ गति भ्रमण न होय समापत, तब लों यह कृषि थमाथमो, जय जय० ॥४॥

सूकरसिंह नवल कपितारे, भील भील अरफीन उभारे; त्यों मेरे अघ खमो खमो, जय० त्रिभुवन जन० गरधरन वन्दा० ॥५॥ जै जग ज्योति सरस्वती प्यारी, त्रिग सुख आरती करे तुमारी; आरति हरो सुख समो समो, जय जय० । त्रिभुवन० गरधरन० ॥६॥ ।इति।

अथ पांचों इन्द्रि छेदन निषेध तथा दया पालन हेतु चतुर्विध दानोपदेश रागनी झंझोटी वतौर इस रागनीके गाई जायगी।

राजा बन्शीने डेरे कहां डालेरे, कहां डालेरे। हे कहां डालेरे, मेरे प्यारेने डेरे कहां डालेरे ।टेक।

राजा जोड़ मैं ढूँगी अनोरों तले तेरे दुल्हन जो बैठी चंमेली तलै, राजा बन्शीने डेरे ॥१॥

इस चालमें, अथ भजन।

सारे जीवोंकी भैया दया पालो रे, हे दया पालो रे, अदया टालो रे, सारे जीवोंकी भैया दया पालो रे ।टेक।

भैया काया न खण्डो न जिह्वा विदारो, नाकमें ... मती डालो रे; सारे जीवोंकी भैया हे दया० ॥१॥ भैया आंखें न फोड़ो न त्योंडी चढ़ावो, केई वचनके न घा घालो रे, सारे जीवोंकी हे दया० अदया० ॥२॥ भैया भोजन ... दो पिला दोजी पानी, रोगीकूं औषध बैठा दो रे, सारे जीवोंकी भैया हे दया० अदया० ॥३॥ ज्ञानी बना दो अज्ञानीके चौरन, करके अभै सबके मेटालो रे, सारे हे अदया० ॥४॥ भैया पा लागोगे अज्ञातो होंगे नयनसुख, सुन ... जिनेश्वरके मतवालो रे। सारे जीवोंकी भैया दया पालो रे हे दया० सारे० ॥५॥

अथ संगतराय ननौते वालेनें एक पद सुकगिरी रागमें, चेतनकूं समझावनेके वास्ते बनाया था जिसका नमूना यह है।

चेतोजी चेतनने थारे काम आऊंगी, मैंने चेतनकी तरफमें सुमतीके ज्रुबानमें नह पद बनाया है। रागनी सेकु नट है, इस रागनीके धीम्धी पर।

सैयां तोरी गोदीमें गेंदा बन जाऊंगी टेक।

जो मेरे सैयांकु भूखें लगेगी, न्दू जलेबी छोटी बरफी बन जाऊंगी। सैयां तोरी गोदीमें गेंदा बन जाऊंगी।

अथ मेरा बनाया उत्तर यह है—

चेतूंगा जब ही तू वेदन मिटावेगी, मैं चेतूंगा जब ही तू वेदन मिटावेगी टेक।

मैं तो अनादी प्रमादी हूं प्यारी, व्याधि मिटा दे फिर कब काम आवेगी; चेतूंगा जब ही तू वेदना मिटावेगी। मैं चेतूंगा० ॥१॥ मैं हूं नशेमें चूर, तूं तो फिरे दूर दूर। पोसीकुं तारेगी दोसी कहावेगी, चेतूंगा जब ही तू वेदन मिटावेगी चेतूंगा मैं० ॥२॥ जो है तू प्यारी पतिव्रता नारी, मुझे समझावेगी तो मेरे मन भावेगी। चेतूंगा० ॥३॥ चेतन कहे सुन सुमति सुहागन, पियाकुं निभावेगी तो नैनानन्द पावेगी। चेतूंगा जब ही तू वेदन मिटावेगी। मैं चेतूंगा ॥४॥ इति।

अथ रागनी जंगला कुमरी चेतना प्रति सुमति कृत धर्मोपदेशमें। चाल यह है।

देखो मलनीया ऐसी चमोरे जैसी गेंद हजारे फूल टेक।

सोनेकी थालीमें जीमना परोसूं, खाना मलनिया आ जा प्यारी हो जा प्याले निवालेश मूल। पियारी हो जा प्याले निवालेश मूल, ए तो देखो मलनियां ऐसी चमोरे जैसी गेंदे हजारेके फूल ॥१॥

इस चालमें अथ भजन ।

अब तो चेतों पियरवा, चेतन चतुर प्यारे । मेटो अनादी ए भूल, अब तो चेतो ।टेक।

हाथों सुमरनी बगलमें, ए तौ कुमतिका ऐसी बनाई । जैसी ओढे रजाईमें सूल, पिया प्यारे जैसी होवे रजाईमें सूल । अब तो० । चेतों पियरवा चेतन चतुर प्यारे, मेटो० ॥१॥ धारो दया पर पीड़ा बिसारो बोलो बचन सनबाढ़ा. कहोजी डारो चोरीके माथेमें धूल: । मेरे प्यारे डारो चोरीके० । अब तो चेतों पियरवा० ॥२॥ मन ना करो पर नारीकी बांछा रघु बीर बसारो, ऐसी गिनौंजी जैसी माता बहन समतूल । पियार जैसी माता । अब तो० । चेतों पियरवा । चेतन चतुर प्यारे । मेटो० ॥३॥ त्यागो परिग्रहकी तृष्णा नयनसुख, भाखे सुमति सत राखे कुमति भाई बोलो ना कांटे बबूल । पिया प्यारे अब बोवो ना कांटे बबूल अब तो चेतो पियरवा, चेतन चतुर प्यारे मेटो अनादी ए भूल ॥४॥

ठुमरी देश संतोटी सेरठी ।

हमें नहि पाए हमें नहि पाए, अरे टोपीवारे हमें नहि पाए ।टेक।

जब मेरे दिन भले आवैंगे सजनीरी, बिना बुलाए दरस थाए हमें नहि पाए ॥१॥ इस चालमें ।

अथ भजन—जनम मत खोवै, जनम मत० अरे मेरे प्यारे जनम मत खोवै, अरे मेरे प्यारे जनम मत खोवै ।टेक।

नतकूं खोवै तू परम रतनकूं, मत भव सिंधु डबोवै । जनम मत० ॥१॥ चंदन भोजन धूप भरे गजके, मत नहि स्नान होवै । जनम मत० ॥२॥ मन चाहे पत्र जल ही करके, अमृतसेता पग धोवै । जनम मत० ॥३॥ मन चाहे अमिरत ला

लपेटी, मत मूली चढ़ सोवै। जनम मत० ॥४॥ मल मधु विधु विवेकके कारन, मगमें काटे बोवे। जनम मत० ॥५॥ श्री अरहन्त पन्थमें परले, ज्यों नयनानन्द होवे। जनमत० ॥६॥ इति।

अथ कलकत्ता नगर निवासी सकल पंच श्वेतांबर जैन मतीयोंका फर्मायशके अनुसार कलकत्तेमें धर्मनाथ तीर्थंकरकी रथजात्राकी लावणी गर्ता नयनानन्द दिगम्बरी कृत संवत १९४६ कार्तिक सुदी १५ की जात्रामें बनाकर कलकत्ते भेजी ताकी नकल।

अथ मंगलाचरनम् ख्याल लगडी रंगतका।

वन्दूं धर्मनाथ तीर्थंकर धर्मतीर्थके कर्तारा, भर्म अविद्या मिटाके सकल जगतको निस्तारा ॥टेक॥

मिथ्यामतके हेत जगतजन पड़े थे भवदधि मझधारा, पचपापमें। करे थे जनम मरन वारंवार ॥१॥ हिंसक जन जीवोंको हनें थे डरे भान ही कोई हत्यारा, असत्यवादी। असतमें धर्म समझते थे प्यारा ॥२॥ चुरा चुराके द्रव्य पराया देते थे संकट भारी, कुष्ट कुशील। थपे थे अपना मत न्यारा न्यारा ॥३॥ तृष्णावन्त मन्द पापोंको करे थे निभय अविचार, पड़के नरकमें सड़े थे न भी था हां कुछ आधार ॥४॥ जान अनाथ हाथ गहि काढ़े, दयाका मारग विस्तारा। भर्म अविद्या वन्दूं धर्म०। धर्म० ॥५॥

अथ कथा प्रबन्ध—सुनरी सखी इक बात नवेली आज नगरमें बरसें रतन, चल कलकत्ते। चलै जहां शीतल मन्द सुगन्ध पवन ॥१॥ धर्मनाथ भगवत्की जातरा करेंगे यहां सब जैनीजन, दान बटेगा। चतुर्विध मचौजी जै जै लुटेंगे धरन ॥२॥ आए देश देशके श्रावककरन परम गुरु गुरुके

दर्शन, कर ले जातरा। तेरा दिल हो जावेगा अति परसन ॥३॥ पूजा सम सखिका जन दूजा इससे होगा उद्धारा। भर्म० अविद्या ॥४॥

भाग जगे इस नगरके आली सुफल भई ए आज भरन. घर घर मंगल बधाई बटैं रटैं जस च्यार बरन ॥१॥ चल जल्दी मत देर लगावै गए भव्य भवसिंधु तिरन. तिरे तो तिरले। अरी तेरा छुट जावेगा जन्म मरण ॥२॥ अभीर लाल अरुण पारे लाल गन्धर्वोंके सुननेको भजन. चली जान है अजायो दौड़ी जिसें जाय हिरन ॥३॥ तू भी चलके सुनले तान भगवतके सुजस्की इकबारा। भरम०। अविद्या०। वन्दूं० भरम० ॥४॥

पंडितजन जिनवेद उचारे सुनके होगा मोह शमन. क्रोध मान छल। लोभकी हो जावेगी शांत अगन ॥१॥ हुई मर्यादा जिनमन्दिरसे बीच बजा रहो रहे जशन. कादियान सब। खड़े अंग्रेज बहादुर हुए मगन ॥२॥ दादाजीकी निर्मोप चलके करेंगे सब जन रे नवसन, पूरनवासी। मान कालिगको खिलेगा आजहु सम ॥३॥ अघहन वदि एकमको निर्रोजीका होगा पूजन अति भारा। भर्म अविद्या। वन्दूं० ॥ भर्म० ॥४॥

श्री जिन हर्षसूरि सतगुरुके पूजेंगे सब चलके चरन. कुशलसूरिके। चरनकी लेवेंगे सब सन्त सरन ॥१॥ गुरु परम जती भरा जगमें है भक्तोंको यही कथन। जल जंगलमें, जहां तहां किए भक्तोंके कष्ट हरन ॥२॥ सिंह स्याल सम किए लिये जिन घेर भक्त जन निर्जन वन दुष्ट भूखको, तोपके रोके मुख छुड़या दिए जन ॥३॥ यहै सैनकुवरनाम खास है नगर कांधला मेरा वतन, जन्म थिर कुल। नगर है जिन मत जती ग्रहस्थीपन ॥४॥ वैद्य मिनुनपिल्ला पद पाया जैन धरमका है आधारा, भर्म अविद्या० वन्दूं। भर्म० ॥५॥

जिले मुजफ्फर नगरमें रहते आराधे भगवन्त चरन, मुल्क मुल्कमें । हमारे रचित भविजन गावें भजन ॥१॥ नयनानन्द कहें कोई हमको नैनचैन कोई करे रटन, मुल राहत । कहै कोई द्रिगानन्द द्रिग सुख सजन ॥२॥ सुनियों कलकत्तेके ज्यों श्री जिन धर्म शरन, सब धर्मोंमें अर्जा है सुख धरम यह दया रतन ॥३॥ बिना दया धरमोंसे जगतमें वही, प्रभुने उचारा । धर्म अविरुद्ध० । वंदूं० धर्म० ॥४॥ ॥इति॥

अथ मुतफर्रिकातपद उमदा उमदा चालके हर तरहके लिखते. तत्रादौ राजुलजीका जीव भीलनी भीलमें उस वक्त कर रही है जबकी मुनिकी घातसे टरि कर भील भयातुर हुवा । दादरा पूर्वी चाल ॥

मत कर प्यारा जी अज्ञान जिया थोरारे. मत कर प्यारा जी ॥टेक॥

आय बनी अति कठिन पियरवा ए मुनि तू पिया मोरारे. अपन जिया थोरारे । मत करि० ॥१॥ मौन धरत है यह ननमुनिनजन, जनम बिगरि जाय तोरारे । अपन मन थोरारे, मत कर० ॥२॥ ए ज्ञानीगुरु जगत जननके, तू पीतम अति भोरारे । अपन मन० ॥३॥ उदर निमित्त मुनि हनन निरखी तोहि, मैं कर पकरि मरोरे । अपन मन० ॥४॥ तजि तकसीर छीमाय मुनि नमन, द्रिग सुख करिके निहारा रे ॥५॥ ॥इति॥

अथ राजुलजी श्री नेमिनाथजीके संजम धारणके अवसरमें आप भी संजम ले हैं, माता पितादि परिवारकूं सिद्धांत उपदेश करे हैं । रागनी खम्माचकी ठुमरी ॥

हमारे पिया मुकतिवरन गएरी, हमारे पिया मुक० । एमें साची कहुँ तो सूं, वे जिताय गए मोसूं री । हमारे पिया मुकतिवरन गएरी ॥टेक॥

या भवमें कछु सार न साईरी, या मैं सार है तपस्या

सच झूठी है तपस्या। वे तो प्यारी दिक्षा जिनकी धरन गएरी। हमारे० ॥१॥ दोहा मतला, चौरासी लख जोनिमें धार अनंतानंत। जो दुख देखे जीवने, समझा गए भगवंत। अहो तृष्णासे प्यारी दुख पावे जीव भारी ऐसे प्यारी मोहिन्यारि कई तिरन गएरी। हमारे० ॥२॥ तृष्णा वस पशु दुखित निहारेजी, उनके बन्धन छुटाए। कंगन तोरिके धराएरी, वे मौडजौड जोगकू धरन गएरी। हमारे० ॥३॥ दोहा मतला, स्वारथ वस जिस जीवने। परमारथ दियो खोय, जिस नैया भव सिंधुमें। नरभव दियो डबोय, मैं तो संजम धरूंगी। ए सिंगार क्या करूंगीरी, पियाके संग आली अब रण गएरी। हमारे० ॥४॥ दोहा। नैनचैन राजुल कहै, छिमा करो सब जीव। सतियनके संसारमें, धर्म ही शरण सदीव। ए म्हों भाई मेरा गहना, कीज्यो छिमा भाई भैनारी। मैंने स्वामीने नेमके चरण गहेरी, हमारे पिया मुकति वरन गएरी। ए मैं साची कहूं तो सूंवे जिताय गए मोसूंरी। हमारे० ॥५॥ इति।

चाल नगर वसाया बेगभर हो तेरा राजपद बाहरा ॥टेक॥

तोपूंसे फिरंगी लडते, तीरोंसे नवाब, नैनोंसे ए हैगम लडती। बडी है खराब, नगर वसाया बेगम रहो मेरा राज। इस चालमें जानना।

राग पीलू अब भजन शुरू करते हैं।

ले लेरे शरनसे ले सिरी भगवान, ले लेरे सरनमें ले सिरी ॥टेक॥

खेलेरे तैं खेल घनेरे, पेलेरे पलान। मेले भोगे मेले जीव पापके समान, ले लेरे शरनमें ले सिरी। भ० ॥१॥ लोलीरे तों छाती लेले जीवनके प्राण, खोसेरे तैं पर धन सोसे बेईमान। ले लेरे सर० ॥२॥ दे लेरे अनाथों अपने हाथोंसे तू दान। जावोगे अकेले, कागा लावैगे समान। ले लेरे

सरन० ॥३॥ ए लेरे तू छिन सुखदाई शिक्षा बुधिवान, येलेका न लेगा को काया थिदान । ले लेरे० ॥४॥ इति।

अथ पद अध्यात्मोपदेश । राग जंगला झंझौटी ।

अरे मन मान मेरी कही, तजि पाप येति सही संसारमें तेरा कौन है क्यों मूढ़ पक्ष गही । अरे मन० ॥टेक॥

है परम ब्रह्म तुही, सर्वज्ञ ज्ञानमई । सम्यक्त बिन भयो भ्रष्ट तू, चिरकाल विपत सही । अरे मन० ॥१॥ स्वर्गादि विभव मई, तृष्णा तऊ न गई । तौ आस समनर भोगतें यह रोग जाय नहीं । अरे मन० ॥२॥ किन सोख तोहि दई, मति खाक चतु सुजान । यह बहवार भोगि लई, अरे मन० ॥३॥ है सगरे मीत यहीं, तजि भोग ए विरही । कहै नैनसुख रह विमुख इनसें सीख सुगुरुकी कही, अरे मनमानि मेरी कही ॥ ४ ॥

अथ राजुलके बिवाहकी वधाई राजुल प्रतियतीर सहरेके रागदेश । राग स्याम कल्याण ।

सखीरी तू बाटले पीव बधाई, सखीरी नेम नवल तोहि ब्याहन आए प्यारी ॥टेक॥

है हर्षित खबर सुनावन आए द्वार खड़े बाम्हण नाई, सखीरी तेरे द्वार खड़े बाह्मण नाई । सखीरी नेम नवल तोहि ब्याहन आए, तू तौ बांट ले० ॥१॥ हे घोरी चढ्यो मुख रोरी लगी जाक; देख ले देत दिखाई सखीरी तू देखले देत दिखाई, सखीरी नेम नवल तोहि ब्याहन आए ॥२॥ हरि बलिभद्र चंवर जापै ढारे, छत्र फरे जदुराई । सखीरी नेम नवल०, बाटले पीव० ॥ ३ ॥ धन धन समुद्र विजेन्द पनागर, धन जिनजायो ये माई । सखीरी धन जिन जायो ये माई, सखीरी नेम नवल तोहि ॥४॥ बंट रहे दान निरख ले सुन्दर, भूख न भूख

मिटाई। सखीरी भूख न भूख मिटाई, सखीरी नेम० ॥७॥ पुष्प रतन सुर नर बरसावे, सम्पत्ति अतुल लुटाई। सखीरी नेम नवल० ॥८॥ निरख तने न चैन भयो राजुल, फूली तन न समाई। सखीरी फूली तन न समाई, सखीरी नेम नवल तोहि, ध्यारी बांट ले० ॥९॥ इति।

राग समन्दर भजन उपदेशी राग खम्माचकी धुन।

तेरी नवका लगी है सुघाट किनारे लागी मनना डबोवोजी ॥ टेक ॥

हर कर्म धर्म धरम परम मिथ्या तम रगने छाय उठा, चिरकाल जगतमें दुख भरे जिस भांत चले ले पिंड छुटा भाभाव अनित्य अशर्ण सदा। संसार हरट सा चलता है; एकत्व दशा समझो अपनी यह वत्वसे क्यों नहिं टहलता है। तुम अशुचि अंगके संग शुद्धता अपनी ना खोवोजी, तेरी नवका लगी है सुघाट किनारे लागी मनना डबोवोजी ॥१॥ ये आश्रव वाटमें सवर डाट प्रकाश महाबल कर्म न्यारा। ये पुन्यपाका रहे कारागर तू फन्द पड़ा है यात सपरा है दुर्लभ बोध ले सोध जरा जिन धर्मकी प्राप्ति दुर्लभ है ले तत्व अतत्व विचार हिये इस वक्त तुझे सब सुलभ है। तें पाई नर परजाय अगामी मत कांटे बोवोजी। तेरी नवका० ॥२॥ ए भोग भुजंग भयानक है क्रोधादि अगन नहीं जलती है। तुम जलते हो न संभलते हो ए मार कर्मी ये जलती है। जो इनकूं त्यागि बनें बनमें ये मुक्ति वरांग नें वरते हैं। निर्बाध अचल सुख पाते हैं। ये जन्म मरण दुख हरते हैं, तू धरले सम्यक्‌दृष्टि नैनसुख निज हिय संवोजी। तेरी नवका० ॥ इति ॥

श्री नैनानन्द यतिकृत भजन विलास संग्रह तोटा सर्व संग्रह नामा वीसवां अध्याय सम्पूर्णम्।

अध्याय इक्कीसवाँ

श्रीवीतरागाय नमः। ॐ नमः सिद्धेभ्य।

अथ इक्कीसवां अध्याय लिख्यते।

अथ लब्धिसार सिद्धांत आगमानुसारेसा सम्यक्तके अनाधिकारी वा अधिकारी व सम्यक्तके उपजनेका क्रम वा सम्यक्तोंके भेद वा सम्यग्दर्शनके घातक २५ दोष वा सात कर्म प्रकृति वा पंच लब्धियोंका किंचित स्वरूप रत्नकरण्ड श्रावकाचारमें लिखा देखिकर यति नयनानन्दने याद करने भव्य जीवोंके ख्याल लंगी रगतके संवत १९४१ में बनाए सो लिखिये हैं। तहाँ सम्यक्तके अनाधिकारीके लक्षण। अर्थात ऐसी दशामें सम्यक्त न उपजे छन्द ख्याल लंगी रगतका बतौर कलंगी तुर्रेके लिख्यते।

लब्धिसार अनुसार यार इक बात मेरी सुनना चाहिए, समकित किनको न उपजे तिसको अब सुनना चाहिये ॥टेक॥

अपर्याप्त अमनस्क भव्य अरु तीव्र कषाई हठधारी गुण दोषके ज्ञानसे मूरखहिरद अरु अविचारी ॥१॥ तजि साकर ग्यान उपयोग अरु दर्शन उपयोगी भारी निराकारमें। मगन हो तत्वारथ परणति हारी ॥२॥ सनमूर्छन अथवा हो सूता सुण मारक दाँव न भिखारी, च्यार लब्धिबल। पापके वर्तों नित स्वेच्छा चारी ॥३॥ प्रथम लब्धि क्षय उपशम कहिये द्वितीय विशुद्धी सुखकारी। तृतीय देशना, चतुर्थी प्रायोपगमन छजी ॥४॥ तो भी भव्य अभव्य एकसे करण विना गुन्ना चाहिये। समकित किसको न उपजे तिसको अब सुनना चाहिये ॥५॥ लब्धि सार०। समकित किसको०। न उपजे तिसको अब० ॥६॥

अथ कैसे कैसे लक्षणों युक्त, कैसे कैसे योग मिलनेसे कब सम्यक्त उपजे अरु कौन सम्यक्त्वका निश्चय करनेके अधिकारी है। अर्थात सम्यक्त कब किसको किस प्रकार हो सकता है।

लब्धिसार अनुसार यार इक बात मेरी सुनना चाहिये। समकित किसको कौन विधि उपजे सो सुनना चाहिये ॥टेक॥

पंचेंद्री समनस्क तथा पर्याप्त जीव होना चाहिये. मंदकषाई। भव्य भग उपयोगी होना चाहिये ॥१॥ देखे ग्यानी पास दोषगुण अवग्राही होना चाहिये, मनसे मेरे। दोष तजि गुणग्राही होना चाहिये ॥२॥ लब्धि संयमके त्रिकर्णमें अन्तकरण होना चाहिये. सबसे उत्तम जिसे अनि वर्तकरण कहना चाहिये ॥३॥ तिसके अंत समयमें जब इतना होना चाहिये। प्रगट पचीसों दोष तजि अ... होना चाहिये ॥४॥ आगे अंत समय अनिवर्तक... होना चाहिये। उपसम सम्यक, और काहूके ... होना चाहिये ॥५॥ मणि करडमें साख है पारो निर्ख ... चाहिये, समकित किसको। कौन विधि उपजे ... चाहिये ॥६॥

अथ सम्यक् दर्शनके घातक पचीस दोष तथा सात ... प्रकृतिनोंका वर्णन खयाल छन्द लंगडी ... नाई है॥

जानें जाहर दोष पच्चीसे रहे ... अभिमानी। तिनको ग्यानी कहत हैं शुद्ध दृष्टि कबहु न मानी ॥टेक॥

मूढ त्रिकामद अष्टा अष्ट संकादि ... पट अनाय तन। ग्यान के दोष पचीसूं ... ॥१॥ तीन प्रकृत दर्शन मोहिनि की हैं तिनकी ऐसी जानी. ... मिथ्याती। जिनोंनें शुद्ध दृष्टि जिनवाणी पानी ॥२॥ ... है

मिथ्यात दूसरी सम्यग मिथ्यात न साथी, और तीसरी। कही सम्यक्त नाम अति उत्पाति ॥३॥ पुनि चतुष्क चारित्र मोहको अननानुबन्धी जाती, जिनने मचाती, क्रोध मानादि जियाको आराती ॥४॥ इनका उपसम क्षयोपशम विना न होंगे श्रद्धानी, तिनको ज्ञानी। कहत हैं शुद्ध दृष्टि कबहु न आनी ॥५॥ जानें०। तिनको० ॥

अथ सम्यक्त तीनि भांति है, उपशम १ क्षयोपशम अर्थात वेदक २ क्षायिक ३ पहले उपशम ही होते है। जिसके प्रथम प्रथम ही उपशम है उसकूं प्रथमोपशम सम्यक कहते हैं और च्यारू गतिमें सब सम्यक्त यथा योग्य हो सकते हैं अर्थात जैसे परणाम तैसा सम्यक्त विशुद्ध तागेल बात है॥ ख्याल लंगड़ा ॥

उपशम करि उपशम सम्यक्तो क्षयोपसम जिनके थाए, सो क्षयोपशम! समकिती क्षयतें क्षायिक कहलावे ॥१॥ जिस अनादि मिथ्या दृष्टिके उपशम शमिक उदय आए। प्रथम प्रथम ही। सोई जन प्रथम उपशमिक कहलाए ॥२॥ सबसें पहले यही होत है यही मुनुन कहते आए, क्षयोप सम्यक। भावकूं वेदक फर्माते आए ॥३॥ उपशम श्रेणीकी जुआदि में क्षयोपसम्यक्ती थाए, तिनके उपशम। होय तो द्विती उपशमिक बतलाए ॥४॥ च्यारों गतिमें उपजें सब ही जिसनें व्रातिक ले हाए, जैसी जिसनें करी तैसे ही तिसनें फल पाए ॥५॥ विन समकित रहो अष्ट रसायन न्यायक भतेरोंने छानी। तिन०। जानें जाहर। तिनको० ॥६॥ इति।

अथ सम्यक्तकी उद्योतक पंचलब्धियोंका पृथक् पृथक् लक्षण सो इस प्रयोजनके अर्थ कहे हैं कि च्यार लब्धि तक तो अभव्यके, भी हो जाती हैं। परन्तु करणलब्धि विना भव्यके भी सम्यक्त नहीं उपजता है। तातें पांचूं ही लब्धि

हो तो सम्यक्त उपजै नहीं तो न उपजै यह नेम है। पुनः आदिकी चार लब्धि हुए विना पांचवीं होय नहीं यह भी नेम है।

अथ पंचलब्धियोंके नाम और महिमा वर्णनके अर्थ मंगलाचरण तत्रादौ पांचूंके समूदायकी सूचना।

दोहा—लब्धिसार आगम नमूं, वन्दूं रत्नकरण्ड; पंचलब्धि वर्णन करूं, सम्यक हेतु अखण्ड ॥१॥ क्षयोपशमलब्धि प्रथम, द्वितिय विशुद्धि विचार; तृतिय देसना सुखकरण. प्रायुपगमनो च्यार ॥२॥ पंचमकरण महाशुभग, जो समकितको मूल; जा प्रशाद आवें उदय, संजम अरु शिवफूल ॥३॥

अथ जिनेन्द्र इश्तहार विज्ञापन लिख्यते. मयदान पूर्वो किसमका लगे लदनेको ल्यों ललटवास बरेली :

कहूं पंचलब्धिका रूप न्यारा न्यारा. जिनके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा ॥टेक॥

सम्यक नाम है शांत भाव करनेका. पच्चीस दोष अरु सप्त प्रकिति हरनेका, जब जगे भेद विज्ञान शांति तब आवै. हो शीतल परणति तब सम्यक्त कहावे।१। बिन शांति न हो कर्माग्नि शांति सुनि प्यारा, तातै है परमानन्दक सम्यक धारा. सो पंच लब्धि शांति अवस्था आवे, तिनका स्वरूप जिन आगम यों समझावे।२। भाई चार लब्धि तो भव्य अभव्य दोऊ पावें. बिनकरण लब्धि सम्यक्त भाव नहीं आवें. बिन च्यार लब्धि उपजै न पांचमी प्यारा है यह भी निश्चय नेम समझ ले सारा।३। जो नर अवश्य सम्यक धरनहारा है. अरु निश्चय करि चारित्र धरनहारा है। तिनहीके होय करण लब्धि सुनि बिरा, कियो नयिकरण्डमें नेम कहा मुनि धीरा।४। यों नाम तथा महिमादि सूचना गाई. [illegible]-

हार न स्कृ विदित सुखदाई, रही उसे नाय सुरलेगा सुर-
गनहारा, जिसके विन सम्यक्त होय न हो निस्तारा ।४। कहूँ
पंचलब्धि सरूप न्यारा न्यारा । जिसके विन सम्यक्त० इति ।
अथ क्षयोपशम नामा प्रथम लब्धि लक्षण माह ख्याल पूर्वोक्त ।

भाई प्रथमलब्धि क्षय उपशम नाम कहावे, तिसका सरूप गणिकरण्ड यों सनझावे, जिस कालमें ऐसा जोग जुड़े सेरे प्यारा, ज्ञानावरनादि अप्रशस्त प्रकृत बलमारा ॥१॥ सो समैं समैं प्रति अनन्त गुण बल घटता, अनुक्रमसे आवे उदै लब्धिकुं बड़ता, सो उदय पूर्व बलसे मिलान मिलावे, है ताका भाग अनन्त गलसमगों पावे ॥२॥ तहां देश घातिया नाम स्पर्द्धक पावे, जो ता अवसरमें उदै अनुक्रम आवे तिन उदै होय भांति नहीं भाग समाने, सो सर्व घातिया कर्म स्पर्द्धक माने ॥३॥ जिनका हो उदय अभाव सोई क्षय जानो, रहे शेष सर्व घाती ने यों परमानो, वै सत्तामांहि अवस्थित प्रगट कहे हैं, पर उदय अवस्थाकुं नहीं प्राप्त भए हैं ॥४॥ ऐसा क्षय उपशजोग लब्धि करि पावे सो क्षयउपशम लब्धि जिन, आगम गावे, यों मणिकरण्डमें लक्षण मूल उचारा, जिसके विन सम्यक होय न हो निस्तारा कहूँ पंचलब्धिका० जिसके विन ।५। इति ।

अथ विशुद्धि नाम द्वितीय लब्धि लक्षण माह ख्याल पूर्वोक्त ।

अब लब्धि दूसरीका स्वरूप सुनि ज्ञानी, जिसका विशुद्धि है नाम कहो जिनवानी । पूर्वोक्त लब्धि क्षय उपशम करि वह भाग., भए भव्यजीव धर्मामृतके अनुरागी ॥१॥ तब समतादिक शुभ प्रकृत बन्धके कारण, किया शुभ परणतिको जिन जीवोंनो धरणा । जिस काल प्राप्ति शुभ परिणामोंकी पावो, सो लब्धि दूसरी विशुद्धि आगम गावे ॥२॥ जब अशुभ कर्म

रस देमेंसे हट जावै, हैं न्याय यहीं सकलेश भाव मिट जावै. जब मिटै कलेश डर शांत अधि उपजावैं. सुद्धि विशुद्धि लब्धि उदैमें आवै ॥३॥ कही लब्धि दूसरी [illegible] अनुसारा, जिसके बिन सम्यक होय न [illegible]। [illegible] पंच०। जिसके बिन० ॥४॥ इति।

अथ देशना नामा उपदेश लब्धि तीसरी ताका लक्षण, ख्याल पूर्वोक्त।

अब लब्धिदेशन तीजी सुनों भ्रतार्है, [illegible] जिसमें तीन व्यवस्था षटद्रव्य तथा नव पदार्थके [illegible]. गुरुदेव मिलें अरु समझावें जिनवानी. [illegible] धारणका शक्ति धरे प्रारब्धी, तिस काल तीसरी [illegible] देशनालब्धी. [illegible] दिकमें आचार्य काहांते आवें. तहां दो प्रकार गुरुदेव [illegible] गावें, सुरनर पशुकूं सुरनर सम्यक उपजावे. [illegible] सुरधारवत सिद्ध हुय आवै. तहां पूर्वभव [illegible] सरकारा। जिसके बिन सम्यक्त। जिसके० ॥१॥

अथ प्रायोपगमनामा चौथी लब्धिका लक्षण [illegible]। ख्याल पूर्वोक्त।

प्रायोपगमन चौथीको अब बतलावे. [illegible] बिना नव थान सुनावे। यदि कोई [illegible] अनुसार. पाकर विशुद्धिकी वृद्धि कर [illegible] ॥१॥ [illegible] कम सातोंकी थितिकूं तोडै, अन्तः [illegible] छोडै। तिस काल विषै वो ऐसी लब्धी धरै है. [illegible] इक कांडक छेद करै है ॥२॥ फिर तिस [illegible] लेवै। अब शेष रही थितीमें जितना [illegible] है मुनिज्ञानी। जैसें कोई कष्ट सकल [illegible] भस्मतकूं बिन भक्तिनके एकत्र करै है. [illegible] वो जीव धरै है। तिसका सिद्धांत खुलासा [illegible]

करम तो रह्या काट लतावत मानों ॥४॥ पर हालाहल समरस विधु सकरि डारा, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा। कहूँ पंच०। जिसके बिन० ॥५॥ इति।

अथ प्रायोपगमनलब्धिका भावार्थ खुलासा लिख्यते। ख्याल पूर्वोक्त।

अब आगे इसका और तत्व सुनि ग्यानी, भावार्थ कहूँ करि साफ समझ ज्यों प्रानी, पूरब रस मांहि अनन्तका भागहि डारो, जितने हों तिनमेंसे बहुभाग निकारो ॥१॥ तत्तुल्य तहां अनुभाग भया विक्षेपण, शेषानुभागमें शेष भये निक्षेपण, इस भांत कार्य करनेकी योग्यता पावें, प्रायोग्य नाम सोचौ शोललब्धि कहावें ॥२॥ है भव्य अभव्य दो उनके यह इक सारा, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा, कहूँ पंचलब्धि० जिसके बिन० ॥३॥ इति।

चतुर्थलब्धि समाप्तम्।

अथ संक्लेश परिणामी सैनी पर्याप्तके भी प्रथमोपशम सम्यक्त न हो ऐसा नेमरूप दूजा जैनेन्द्र इश्तहारका विज्ञापन ख्याल पूर्वोक्त।

जिसके हिरदै क्लेशभाव रहै वीरा, तिसकै सम्यक्त कभी नहीं उपजै धीरा, यदि हो संगी समनस्क और पर्याप्त. उत्कृष्ट स्थित अनुभाग प्रदेशकूं प्राप्त ॥१॥ तदपि तु क्लेशित परणामी नहीं गहते हैं, प्रथमा उपशम सम्यक्त सतगुर कहते हैं, पुनि जो विशुद्धि क्षपक श्रेणीमें चढ़िये, ऐसा जघन्य थित बन्ध भी उसके कहिये। २। अरु जघन्य थित अनुभाग प्रदेश भी पावें, तदपि तु प्रथमा सम्यक्त न उसके आवे, कह्या मणि करण्डमें लब्धिसार अनुसार, जिसके बिन सम्यक्त होय न हो निस्तारा। कहुँ पंचल०। जिसके०। ३। इति।

अथ पूर्वोक्त चतुर्थी लब्धिके प्रारम्भ समयका नेम।

अब अन्तर मुहूर्त पर्यंत आगेके समयोंकी समानताका नेम, दिखावे हैं कि इस लब्धिमें प्रथमोपशम सम्यक्तके सनमुख भया जो जीवसो आयु कर्मकी।

स्थितकूं छोड बाकीके सात कर्मोंकी स्थितिका बन्धापसर्पण प्रति समें किस क्रमसे करे है। क्यान्ह पूर्वोक्त।

अब सुनके समझि ल्यों भविजन याने सारी, सम्यकके उपजनेकी है आगे तैयारी। जिनके उपजेते यथा क्या काज करे हैं, किस किस अवसरमें क्या क्या दशा धरे हैं॥१॥ प्रथमोपशमिक सम्यकके सन्मुख वर्त, जे जीव विशुद्धता वृद्धी करते सन्त। प्रायोग लब्धिके प्रथम समैमें [illegible]. [illegible] स्थितिके संख्यात भाग परवानी॥२॥ अन्तः कोडाकोडी सागर [illegible], बांधे आयुप विन सप्त करम तिथि [illegible]। फिर [illegible] वन्धते पल्यका भाग संख्यातम घटता थिति बन्ध [illegible] भांत यो आतम॥३॥ अन्तमुहूर्त पर्यंत [illegible], [illegible] है जिनागममें यो वर्णन कीए फिर क्रमसें [illegible] धरिके, संख्यात स्थिति बंधापसर्पण जकरिके॥४॥ [illegible] सागर घटनेसें पहला, वेनिझन [illegible] [illegible]। जहां प्रथक्तसौं सागरकी कथनी आवें, तहां [illegible] सागर प्रमित कहावें॥५॥

इस ही क्रमसें इतना थिति बन्ध घटाए [illegible] अस्थान जिनागम गाए। ऐसें प्रकृति बन्धापसर्पणके [illegible], होवें चौतीस स्थान कहो जिन धीरा॥६॥ [illegible] प्रथमोपशम सम्यक तक, नहिं होय बन्ध [illegible] [illegible]तक। यदि चौंतीसों बन्धापसरण उचरियौं, तो [illegible] बहुत बढ़ जाय इसी सौं डरियौं॥७॥ सो [illegible] [illegible]

घना मेरे प्यारो, गोमटसार वा लब्धिसार पढ़िज्यो । प्रायोग लब्धिके वर्णनकूं पढ़िलीज्यो, अपने चित्तकी सब भ्रांति दूर करलीज्यो । करि लब्धि चतुर्थो गणिकरण्ड अनुसारा, जिसको बिन सम्यक होय न हो निस्तारा । कहूं पञ्च० त्रिलके० ॥८॥ इति ॥

अथ सम्यक्त भाव जनक कर्ण लब्धि पचमीका स्वरूप वर्ण्यते । ख्याल पूर्वोक्त ॥

अब करण लब्धि पांचमीको सुनल्यो प्राणी, जो भव्य नहींके हो समकितकी श्रानी, समकित चारित हो जिनके आवनहारा । निश्चैकरि उनका करती है उपगारा ॥१॥ जहां मंद कषाय न करि विशुद्धता आवै, पर रागमनतें सो करण हि नाम कहावै । सो मंद कषाय विशुद्ध प्रणाम न हेरे, हैं दरजे तीन त्रिकर्ण रूप मुनि टेरे ॥२॥ भाई पहला दरजा अधकरण कहलावै, दूजेको अपूर्वकरण जिनागम गावै । अनिवर्त करण है तीजा शांत अवस्था । सुनो तीनोंकी कालादि समस्त व्यवस्था ॥३॥ कहूं पंच० । जिसके बीन सम्यक० । कहूं पंच० ॥४॥

अथ त्रिकर्णमें तृतिय करणकूं प्रधान करि तीनों करणकी स्थितिका काल लिख्यते ॥ ख्याल पूर्वोक्त ॥

तीजा है अन्तरमुहूर्त परमाना, जिसका सबसें लघु काल जिनेन्द्र बखाना । पुनि अधकरण इस तें संख्यात गुण है, तिसका भी अंतरमुहूर्त काल भरण है ॥५॥ अंतमुहूर्तके भेद असंख्याते हैं, सो सब मुहूर्त ही के अन्तर पाते हैं ॥

अथ अधः करण व्याख्यास्याम ॥

पुनि अधः प्रकृति समये तिहुं कालनके हैं । नाना जीवन संबंधी भाव जुके हैं ॥५॥ सो असंख्यात लोक प्रमाण हैं

प्राणी। सो ताके जेते सम हैं तिनमें प्रानी, सारे समान वृद्धिकूं लीए हुए हैं। प्रति समें है वृद्धि स्वरूप जिनेन्द्र कहे हैं ॥६॥ यां निचले समें सब बधी परिणामनकी, सख्यात विशुद्धि है जैसी कुछ तिनकी, सो उस समय परिवर्तककाट्र-जीके, परिणमोंसें मिलती है कदाचित्कौसीके ॥७॥

तातैं यौं अधः प्रकति करण कहलावै, इस भांत जिनागम सार्थक अर्थ बतावै, याके परिणामनकी संख्यात विशुद्धि, गोमटसारमें देखौ तुम सदबुद्धि ॥८॥ अथवा तुम देखो लब्धिसार दे दृष्टि, लौकिक दृष्टांतन अलौकिक सदृष्टि पुनि अधःकरण परणामनके परभावें: हों च्यार बात आवश्यक निर्मैं सुनावें ॥९॥ हैं च्यारूं अधःकरणहिंके फल प्यारा, जिनके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा, कहूं प० जिनके० ॥१० इति॥

अथ अधःकरणमें च्यार बात आवश्यकनिके हो तिनका वर्णन, एक तो प्रति समय अनन्त गुणी विशुद्धि हो ।१। दूजे स्थिति बन्धावसर्पण हो ।२। तीजे हर एक प्रशस्त प्रकृतियोंका शांति प्रद अनुभाग बन्ध सातारूप हो अर च्यार स्थान लिए हो ।३। चौथे अप्रस्त प्रकृतिनका असातारूप रस प्रति समय अनन्त गुणा घटता जाय ।४। तिनका वरणन स्वगान।

इक तो कही समय समय अनन्त गुण सुद्धी, दूजे स्थिति बन्धावसर्पण हो सदबुद्धी, जेता प्रमाण ले कर्म बन्ध होता था, तिस हेत पड़ा परमाद ध्रिजे सोता था ।१। [illegible] तिस प्रमाणसें घटता बन्ध करै है, तिन दिन [illegible] संख्यात कंपाय [illegible] करै है, तीजे साता वेदनी आदि दे प्यारे, हर इक प्रशस्त प्रकृती हर समय मंझारे ।२। बढ बढ अनन्त गुन करै साताकी दाता। जैसें गुड़खांड मिश्री अमृत स्वाता, [illegible]

चतुस्थानोंकूं लिए मेरे भाई, अनुभाग बन्ध होता मैं शांति कराई ।३।

चौथे जु असाता अप्रशस्त प्रकृतिनका रस अनन्त गुण, हर समय घटे है तिनका सोनीव तथा कांजी रस वत हो जावै, द्विस्थान लिए अनुभाग बन्ध ह्यां पावै ।४। विषरूप तथा हालाहल शक्ति हरै है. यों अधकरण च्यारों आवश्य करै है, यों करण लब्धिका पहला करण उचारया, जिसके बिन सम्यक होय न हो निरधारा, कहूँ पंच० । जिसके० ।५। होता।

अथ द्वितीय अपूर्वकरणके अपूर्व अपूर्व परिणामोंकी व्याख्याका क्रम, ख्याल पूर्वोक्त ।

भाई, अधःकरण अनन्तमुहूर्तके वीत्यां, फिर आवै दूजी अपूर्वकर्ण निजरीतां, अधःकरणके परिणामनतें याके घणे हैं । सो असंख्य'तलोकां परिमाण भणे हैं ॥१॥ है नाना जीव अपेक्षा कथनी जानों इक जीव अपेक्षा एक समै इक मानों, पुनि एक जीवकी यावत सुनल्यों प्यारे, अन्तरमुहूर्तके जेते समैं उचारे ॥२॥ ते ते परिणाम अपूर्वकरणके जानो. ऐसे ही अधकरणके भी परमानों. इक जीवके एक समे में एक ही पावे, नानाकी अपेक्षा सतगुरु यों समझावें ३॥

इक समैं जोग्या परिणाम असंखे गाएं. फिर मध्यकरणकी कथनी पर हम आए, याके परणाम जु पूरव सकल उचारो, सो समय समय प्रति वर्द्धमान हैं सारे ॥४॥ निचले समयों-वर्तीसे मेल न पावे, यों सत्य अपूरवकरण नाम कहलावे, जो प्रथम समय उत्किष्ट विशुद्धि भणी है, दूजेकी तिसतें जघन अनन्तगुणी है ॥५॥ ऐसे परिनामनका अपूर्वपन पावे, यों दूजा सत्य अपूर्वकरण कहलावे, पुनि अपूर्वकरणके प्रथम समैं तैं लेकर, अरु अन्त समैं तक सोच लयो ग्यानमें देकर । ६ ।

अपने जघन्यतें, अपने जे उत्किष्टे, अरु पूर्व समय उत्किष्टसे आगे तिष्टो, उतर समयोंके जे जे जघन पियारे, क्रमतें अनन्तगुण लिए हैं सुद्धि सारे। ७। सो सर्व चाल चत कही जिनेश्वरवानी, समझे सर्द्दैगे तिनकूं सम्यग्ज्ञानी, ज्यों सर्व चालमें पीछे टेढ घनेरा, आगे कछु सीधा आगे सीधा भतेरा। ८। ताकी गतिमें अनुक्रिष्टपना मत जानों, अर्थात एकसा टेटा सब मत जानों, जहांसे पतला तहां पेट घना खाता है ज्यों ज्यों मोटा त्यों त्यों सीधा जाता है। ९। यों करपूर वसं अपूर्व सु द्वीप्पारा, हो ऐसें काज अपूर्व-करण मंझारा, लखि मणिकरण्ड छमने प्रबन्ध रचि तारा, जिसके बिन सम्यक्त होय न हो निरतारा। कहूं पंच०। १०।

अथ अपूर्वकरणके पहले समयते लेकर सम्य० मिश्र मोहिनी प्रकृतियोंका जेता काल है। सम्पूर्ण कालमें जीव गुण संक्रमण करता है तिस कालके अन्त समय पर्यंत च्यार काज अवश्य हैय हैं तिनके नाम मात्र कहै हैं, ख्याल पूर्वोक्त।

अथ अपूर्वकरणके प्रथम समैसे यारो, सम्यक्त मिश्र मोह-नियोंका काल विचारो, सारेमें गुण संक्रमण हुआ करता है, मिथ्यातको समकित मोहि निमई करता है। १। तिस कालके अन्त समय पर्यंत पियारे, हों च्यार आवश्यक काज सुनल्यो सारे, पहला कारज गुण श्रेणीजाने विज्ञानी, दूजा है गुण संक्रमण कहां जिनवानी। २। तीजा स्थिति खण्डन नाम विचारो वीरा, चौथा अनुभागका खण्डन जानों धीरा। पुनि थिति बन्धावसर्पण जो हम कह दीना, सो अपूर्वकरणके प्रथम समैं ते लीना॥३॥ तिसके गुणका संक्रमण पूर्ण होने तक माना है तिसका लखन महोने तम यद्यपि प्राचीन लखि

ते शुद्ध बताया, तदपि यहां समकित होना नेमन गाया, तातें नहिं काल प्रशा मुनि आगे ग्यानी, थिति बन्धाव-सर्पण कालकी शेष कहानी, यह अरु थिति कांडोत्करणका काल पियारे, दोनूं समा अन्तमुहूर्तनुचारे ॥४॥ अब गुणश्रेणी आदिक अवश्य चारकें, कहूँ भेद सुनूं बच मणिकरण्ड धारकें, यह है अपूर्व ही कर्णका फल प्यारा, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा। कहूँ पंच०। जिसके० ॥५॥

अथ अपूर्वकरणमें एक आवश्यक कार्य तो गुण श्रेणी निर्जरा होय है ताका स्वरूप, ख्याल पूर्वोक्त।

बांधे जे पूरव कर्म अणु इसजीनें, ते द्रव्यरूप करी सत्तामें भरि लीनी, तिस द्रव्य मांहि तें पहले समैं मंझारा, कछु द्रव्य काट जो करे निर्जरा प्यारा। १। तिसतें असंख्य गुण दूजे समैं विग्यानी, काटिकर निर्जरा करे जहां कोई प्राणी, तिसतें असंख्यगुण तीजेस समैं निकारे, अरु करे संगके संग निर्जरा प्यारे। २। इस ही क्रमसे प्रति समय काटना हरना, जब होय तहां भगवानने ऐसा वरना, वो गुण श्रेणी निर्जरा कहावे प्यारा, जहां पंक्ति बन्ध निर्जरा हो यह हरचारा कहूँ०। जिसके०। ३। इति।

अथ अपूर्वकरणमें दूजा अवश्य कार्य गुण संक्रमण अर्थात गुणका पलट देना होय है ताका स्वरूप, ख्याल पूर्वोक्त।

पुनि जितनो जितनी गुणाकार क्रमकरिके, काढी जो पूरव कर्म प्रकृति बल फुरिके, तिनके परमानु पलटि करि जबके तब ही, प्रति समय अन्य प्रकृतिकूं धारे सब ही। १। ऐसे गुणकार अनुक्रम पलटा खावे, तहां कहें गुरु गुणका संक्रमण कहावे, यह है दूजी आवश्य अपूर्वकरणकी, सो है मानौ शूचक सम्यक धरणकी। २।

अथ अपूर्वकरणमें तीजा कार्य थिति खण्डन अवश्य होय है ताका स्वरूप, ख्याल पूर्वोक्त।

पुनि पूर्वबन्ध सतामें तिष्ठन हारी, जो कर्मप्रकृति तिनकी जो थिति दुखकारी; तिसका घटना तिस काल जिनों मन पावै तातैं थिति खण्डन नाम यथार्थ कहावै ॥३॥ पुनः।

अपूर्वकरणमें चौथा कार्य अनुभाग खण्डन अवश्य होय है। ताका स्वरूप, ख्याल पूर्वोक्त।

पुनि पूर्वबन्ध करि सतामें तिष्ठाए, ऐसे ज अशुभ अनुभाग प्रकृतिके गाए, तिसका घटना तिस काल जिनों मन पावे, सो जिन मतमें खण्डन अनुभाग कहावे ॥४॥

अथ च्यारूं अवश्य कार्योंके होनेसे अपूर्वकरण धारे जीवोंके आदि अन्तके समोंमें अनुभागका तफावत वरनन करे है ख्याल पूर्वोक्त।

यों करे अपूरव करण च्यार आवश्यक, अब सुनो इसीका साफ कथन सावश्यक; जो अपूरव करणके प्रथम समेमें प्यारा, हैं प्रशस्त प्रकृति तिनके जो फल सारे। १। तिनका जो कछु अनुभाग सत्व है स्यानो, सोही है अन्त समयका केता प्राणी; है प्रशस्त प्रकृतिनका अनन्तगुण बढ़ता, अरु अप्रशस्तका है अनन्तगुण घटना। २। प्रति समें अनन्तगुण विशुद्धताके कारण, है प्रशस्तका फल अनन्त-गुण विस्तारा, अनुभाग कांड घातके माहात्म करि प्यारे, है भाग अनन्तम अप्रशस्त कायारो। ३।

इस भांति अपूरवके आदि अन्त समयोंका, अनुभाग तफावत समझल्यो सब शमियोंका; इमने प्रकर्णके इसके वरणन कीना, संक्षेप मात्र मतरबको समापन कीना। ४। विस्तार रूप है लब्धि सारमें प्यारे, थितिबन्धादिक सब जो हैं न्यारे न्यारे, अनिवृत्ति करण जो तीजा करण कहाया,

थिति खण्डादिकनामें भी जिनेश्वर गाया।५। तामें तिनका प्रारंभ और विधि जानों, इतना विशेष अनिवृत्ति अपूर्वमें मानों; अनिवृत्तिके सब समयोंमें उन जीवोंके जिनम होवे यह करण बहुत जीवोंके।६।

होइ सबके परणाम फर्क नहिं पावे, जहां हो सजातिता सो इक ही कहलावे, तातें यह सिद्ध भई सुनले विज्ञानी, प्रति समय जुदाता जीवों परणति ठानी।७। तिस अवसरतें सब समान परणति धारे, होय इपि बहुत तथपि हैं एकसे सारे, तातें अनिवृत्तिके अन्त महूरत भीतर, हैं जे ते समय तिते परणाम हैं मितर।८। इक इक ही समय इक इक परिणाम कहा है, नाना जीवनका एक ही भाव लिया है, यहां थितिखण्ड रु अनुभाग खण्ड नहिं गावे, है और भांति हम पहले भी कहि गाए।९। तातें यहां अपूर्व करण सम्बन्धी सारे, थिति खण्डादिककी हुई समापति प्यारे, यहां अन्तरकरणादिककी विधि वरणी हैं, सो लब्धिसार पढि सीखो सुखकरणी है।१०। हमकूं थी जिनकी चाह तिता उचारा, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा, कहूं पंच०। जिसके बिन०।११।

अथ सम्यक उद्योतक अनिवृतकरणका अन्त समयकी ध्यान, जामैं सम्यककी घातक सात ७ प्रकृतियोंका उपशम कैसे होय है सो कहे हैं।

दोहा—अब भाखूं अनिवृत्तिके, अन्त समयकी बात।
जामैं सातों प्रकृतिका, होवे उपशम भ्रात॥१॥

खयाल लंगडी रंगतका।

तीनूं दर्शन मोहिनि यारो अरु चारित्र मोहिनी च्यारूं, समकित हरणी, सप्त प्रकृतिनका उपशम उचारूं। टेक।

इन प्रकृतिके स्थिति प्रदेश अनुभागका बिलकुल पाता है,

उदय अनागम, तिसीतैं उपशम यहां कहलाता है।१। तिसतैं तत्वारथ श्रद्धा करि सम्यग्दर्शन आता है, परन्तु पहले, उपशमिक सम्यग ही उपजाता है।२। प्रथम समय अरु द्वितीय स्थितिमें तिहि मिथ्यातको डाता है, इसी रीतीसे तीन तरियोंका द्रव्य कराता है।३। थिति कांडक अनुभाग कांडके घात, थिना खुरझाता है, भाग संक्रमण लगाकर तीन भाग करवाता है।४। प्रथम मिथ्यात द्वितीय सम्यक मिथ्यात दशामें आता है तथा तीसरी तहां सम्यक मोह रस भाता है।५। अब तिसका भावार्थ खुलासा ज्योंका त्यों यहां उच्चरूं, समकित हरणी, सात प्रकृतिनका उपशम उचारूं।६। तीनों दर्शन मोहिन चारो अरु चारित मोहिनि ख्यात, समकित हरणति सात प्रकृतिनका उपशम उचारूं।७।

अथ त्रिकर्णक सिद्धांत फल सम्यकधारा है सो अनिवृत्ति करणके अन्त समयमें किस भांतिसे।

दर्शन मोहिनीके द्रव्यकूं तेरा तीन बारा बांट करके उपशम सम्यक्तीके।

शांति भई ख्याल।

था अनादिका दर्शन मोहन एक रूप द्रव्य जु प्यारा, तीन करणके जोगसे तीन भांतिका कर डारा।१। तहां तीनोंकी शक्ति विपद्र रस वर्णन है न्यारा न्यारा, ज्यों शत्रुनके झुण्डकूं तोडि किसीने मन फाडा।२। अब ऐसा कोई करे मूरमात हांकते सूचे प्यारा भगवानका, दरो है करता विजयका नकारा।।३।। यों मिथ्यादृष्टिके उपजे है उपशम सम्यक धारा, पंचलब्धिके, योगतैं नजिकतरपनमें उचारा।।४।। इस उपशमका काल जघन्य तथा उत्कृष्ट मुहूर्त प्यारा श्री जिनेन्द्रने। कथा है अन्तरमुहूर्त सारा।।५।। इसी बिद उपशम तिष्टे है तदनन्तर मुनि विस्तारा, तीनों दर्शन,

मोहमें एक उदय आवै प्यारा ॥६॥ तिसका वर्णन आगे एमें जैन वचन ले विस्तारू, समकित करणी। सात प्रकृतिनका उपशम उचारू ॥७॥

अथ उपशम सम्यक्तका अन्तरमुहूरत काल बीते उपरांत मुहूरत पूर्ण होते संते जीवके च्यार भांति परणतिमें कोईसी परणति होय तिन परणतियोंका विस्तार वर्णन करिये हैं। तहांहो वेदक समकितकी मीमांसा कथ्यंते ॥

दोहा—अन्तरमुहूर्त एक लग, उपशम समकित होय।
तदनंतर परिणति जिसी होत जु सुनियों सोय ॥१॥
दर्शन मोहिनिकी प्रकृति, तीनोंमें ते एक।
उदय होय निश्चय थकी, यहां लब्धिकी टेक ॥२॥

गीत छन्द।

सम्यक मोहनिका उदय होवे तो उपसम छोडिके. सम्यक हो वेदक तहां तत क्षण, महामद तोडिके. तिस प्रकृतिके परभाव चलमल शिथलताकूं आदरे सत्यार्थको श्रद्धान अचल सरूप नाहीं आचरे ॥३॥ श्रद्धानमें हो चलपणामल अतीचार लगायके, ढीलो रहे तत्त्वार्थ श्रद्धा यही वेदक भाव ले, इसहीकूं क्षय उपशमिक सम्यक कह्यो श्री जिनदेवने, तिसके विषे इस जीव जीवके इस भांतिकी परणति बने ॥४॥ थे सर्व घाती जे सपर्द्धकरूप मोहिनीके तहां, तिनके उदयका है अनागम यही क्षय मान्यों यहां, पुनि देश घाती जे सपर्द्धक रूप समकित प्रकृति है। तिसका उदय होते तहां सम्यक मोहनि विदित है ॥५॥

तिसकासमें जो वर्तमान तना निषेक जुगाइये, तिससे अगाडीके निषेक उदय जहां नहिं पाइयो, तिनके सपर्द्धकका अब स्थित जहां सत्तामें मिले, सोलेहु उपशमथों उपशम समकित है भले ॥६॥ सम्यक्त प्रकृतिके उदयका अनुभवन वेदन

जहां, तातैं इसीकूं कहत हैं सम्यक्त वेदक जिन नाही।
इस भांति समकित मोहनीके उदयका फल संचरे. अब सुनों तुम सम्यक्त मिथ्यातन जुदो तो क्या करे ॥५॥

अथ मिश्र गुण स्थानी होनेका कारण । दोहा।

जो सम्यक्त मिथ्यातनी, उपशम पर आ जाय, मिश्र गुण स्थानी करे, तत्व अतत्व सहाय ॥१॥

अथ मिथ्यातमें जा पडनेका कारण । दोहा।

आ आवे मिथ्यातही. उदय करम वशनीत, तो मिथ्यादृष्टि करे, सर्द्दे सब विपरीत ॥२॥ ज्यों ज्वर पीडित प्राणकूं, रुचै न मिष्ट अहार। त्यों तत्वार्थ सरूप सत, अनेकांत [illegible] ॥३॥ रत्नत्रै शिव पन्थते, भगै कुबुद्धी दूर. स्वपर दया [illegible]. धर्मरू जैन हि मूर ॥४॥

अथ उपशम सम्यक्तका अन्तमुहूर्त काल पूर्ण होनेमें जो कुछ थोडी घणी कसर रह जाय तो ता अवसरमें जीवके कैसी परणत होय ताका वर्णन । दोहा—

एक समें छ आवली, रहे जघन्युतकिष्ट. अनन्तानुबन्धी कोई, आनि करे जो मिष्ट ॥१॥ क्रोधमान छल लोभमें. जो कोई कूदे आय, तो समकित ते छूटिके, सासादनमें आय ॥२॥

अथ उपशम सम्यक्तका अन्तरमुहूर्त कालमें एक समें वा छ आवलीकी कसर रह्यां पर जो अनन्तानुबन्धीका उदयसों जीवसासादन दशामें आ जाय तो किस सादनमें कैते काल तिष्ट करि फिर कहां जाय। दोहा—

पुनि जघन्य इक समय रहि. छ आवलि उतकिष्ट. [illegible] अवसरमें करे, मिथ्याती महा भ्रष्ट ॥३॥ ऐसे उपशम समकित पाई, अन्तमुहूरतबाद, क्षयार मार्ग है जीवके. [illegible] भविजन पान।

अथ खुलासा कथन । दोहा—

सम्यक मोहिनिके उदय, क्षयोपशम सम्यक, मिश्र प्रकृतके उदयमें, मिश्र गुणी हो सत्य ।३। जो आवे मिथ्यातका, उदय जीवके मीत, निश्चय मिथ्याती थरै, सर्द्धै सब विपरीत ।४। अनन्तानुबन्धी विषें जो को उदावे आय, तो सासादन नाम गहि, मिथ्याती हो जाय ।५।

अथ क्षायिक सम्यक होनेका नियम रूप अधिकार वर्णन । दोहा—

अब क्षायिक सम्यक्तको, नेम सुनो भवि लोय: दर्शन मोह खपायके क्षायिक समकित होय ।१। देव नारकी पशुनमें, क्षायिकका प्रारम्भ, सबके नाही होत है, कहै सु मूरख दम्भ ।२। कर्म भूमिका मनुष ही, दर्शन मोह खपात, भोग भूमियनके कहै, सो जानो मिथ्यात ।३। कर्म भूमिका मनुष ही तीर्थंकर पद पास, अन्य केवली निकटता, करै मोहका नाश ।४। दर्शन मोहनिकूं तहां, आरम्भी क्षयरूप, वाश्रुत केवलिके निकट, कह्यो जैन शिव भूप ।५। अन्य ठौर उपजे नही, ऐसी परम विशुद्धि, यह आगम आज्ञा भविक, धारो हिरदय सुबुद्ध ।६। तिस विशुद्धसें प्रथम जिन, जोगति बांधी होय तहां जाय पूरी करै, या मैं फेर न कोय ।७।

अथ विशेष दृढ़ताके वास्ते दर्शन मोहकी क्षपणका स्थापक ।

जो निष्ठापकजी वहै सो कौन था, और क्षपणका प्रारम्भ किस समय और किस ठौर किया था, और मिथ्यात तथा मिश्र मोहनी जो दर्शनमोहिनी रूप है, तिनका संक्रमण करि सम्यक्तरूप करनेकी हृदके ते कालकी है, और ताकू कहां कहां पूरी कर सके हैं, और तदनन्तर क्षायिकसम्यक्कूं कहां कहां वर सके हैं, अरु निष्ठापकताका मंडन केवली श्रुत-

केवलिके पादमूलकी निकटता बिना, अन्य ठौर भी कर सके हैं कि नाही, पुनः देवकरिके मनुष्य करे कि, पशु क्षायिक सम्यक्तकी निष्टापकताका मंडण थापे, ताका यथार्थ स्वरूप जाननेके लिये विशेष आगे कहै हैं। पुन क्यों कर जानी गई कि निष्टापकता धम्मा नकेमें जाय पूरी करे है।

खुलासा सवैय्या ॥३१॥

भाई अधःकरणके प्रथम समैसे लेय जौंलों जीव मिथ्यातके भाव पलटावे है, अरु मिश्र मोहनीके दरबकूं तोड़ि फोड़ि सम्यक प्रकृति रूप शुद्धतामें ल्यावे हैं, ऐसे संक्रमण स्वरूप काज करे तौलों दर्श मोह पक्षपणाकी थापना भरावे है। अन्तरमुहूरतमें करे ताहि पूरी जौलों कह्या भगवान निष्टापक कहावे ॥१॥

तातै यह सिद्ध भई जैन औ नमांहि क्षायिक नमितकै ग्रहणका जो समैं है, ताके पहले ही तौ कहावे निष्टापक सो जहां किया प्रारम्भ तहांसे संगरमें है। कर्मभूमीका नर प्रारम्भ करे है फिर बन्धी हुई पूर्व गति अनुसार जावे है; कल्प कल्पातीत अहमेन्द्र भोगभू मनुष्य पशु तथा घम्मा नर्क जाय पूरीपमें है।२।

दोहा—यों भी ज्यों तिहुं लोकमें, क्षायिकका उद्योत।
केवली श्रुतकेवली निकट, निष्टापक सो होत॥

उत्तर सवैया ३१

पहले जानैं बांधी आयु ऐसो जीव कृतकृत्य वेदक क्षायिक वाला च्यारों गति जावे है; तहां क्षपणकूं करैं पूरन सु इस भांति रही सही घातिकूं खपावे है; अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ अरु मिथ्यातम सम्यक मिथ्यातकूं मिटावे है; पुनि सम्यक्तकूं खपाय सातोंकूं हटावे, क्षायिक सम्यक पुनि ऐसे कहलावै है।३।

अथ क्षायिक सम्यक्तपणांकूं दिखावनेके अर्थ।

दर्शन मोहकी क्षपणाकी पूर्णता नर्कादिकमें जाय क्योंकर करें हैं: ताका स्वरूप दिखावनेकूं वेदक सम्यग्दृष्टी है सो; निष्ठापक अवस्थामें अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ सम्बन्धी उदयावलीमें याका तिष्ठे। समस्त निषेकनिकूं किस भांति संयोजन करे हैं इकठा करे है अर्थात-अनिवृत्तकरणके अन्तके समय विषें: समस्त अनन्तानुबन्धीके द्रव्यकूं द्वादश कषाय अरु नव कषाय रूप कैसे परिणमावें है। ताका वर्णनके अर्थ वेदकवालेके अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनका वर्णन करि है।

अथ वेदक सम्यग्दृष्टीके अनन्तानुबन्धी चतुष्क विसंयोजन करनेका वर्णन।

दोहा—अनन्तानुबन्धी चतुष्क, सम्बन्धी यह ठौर।
करि विसंयोजन तना, क्षायिक कारण और॥

सवैया ३१—कोऊ नर वेदक शमिक हो; असंजत वा देश-संजमी वा परमत दशा धरे हैं; अप्रमत्त होइ वा इनहींमें काहू एकमादि निष्ट तीन करणकी विधितें यों करें हैं। अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभके निषेक उदयावलीमें तिष्ठे छोडि और हैं, तहां वो अनोदय निषेकनकूं खैंची खैंची उदय भयो सैला कषायरूप परे है॥१॥

अनिवृत्तकरणोके समेंमें ऐसे सकल अनन्त अनुबन्धीके दरबकूं द्वादश कषाय अरु नव नोकषाय रूप तहां परिणवें ताको दरनि सबकूं; छांपे या संयोजनमें गुण श्रेणी थित कांड घातादिक विधि कर तजे है सरबकूं। अन्तरमुहूरत लौं करे विसराम तहां; फेरि उठि धावे मिथ्याभावकी चरबकूं।२।

अथ अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनके पीछे अन्तमुहूरत लौं निर्विकल्प रूप विश्राम करि क्षायिक सम्यक्तके निकटवर्ती ऐसा

कर्मभूमिका वेदक सम्यग्दृष्टिवाला निष्टापक मनुष्य एवं बांधी गत्यानुकूल यथा—

जोग्य गतिमें वा संयत वा देश संयत वा प्रमत्त वा अप्रमत्त इन च्यार गुणस्थानोंमेंसे: एक कोईमें गुणस्थानमें तिष्ठता। अनिवृत करणके काल विषें ताके अन्तसमैंमें पहले समय तांई: निष्टापक अवस्थाकी पूर्णता नन्त मिथ्यात मिश्र सम्यक्त मोहनीकूं। क्षायिक सम्यक्तके प्रारम्भ समयमें पहलां: जिस क्रमसें ताकी सर्वथा शक्तिका नाश करै है, सो क्रम लब्धिसारमें बहुत गम्भीर विस्तारसे है। और यह केवलज्ञान गम्य कथनी है तथा पिताकी किंचित सूचना मात्र वर्णन करिके, क्षायिक सम्यक्तके उत्पन्न होनेका भेद बतावे हैं।

सवैया ॥२१॥—फेर करै तीनों ही करणको नत्व विधि अनिवृतकरणके कालकूं बखाने हैं, मिथ्यातम मिश्रसम्यक्त मोहनीकूं नासैं, क्रम क्रम घाती सत्यानन्दकूं [illegible] हैं। अन्तमांहि पावै यो तो क्षायिक अटल भायमो सो करणन-मांहि जो जो विधि ठाने हैं, [illegible] लब्धिसार सो गुरु बारबार जैन बैन सत्य कहै सो एसो नाम जाने है।

दोहा—ऐसे सातों प्रकृतिकों, करि क्रम हो विधि नाश,
अन्त समय अनिवृत्तिके, क्षायिक होय प्रकाश ॥४॥
बुध थोरी कथनी कही, आगम ज्ञान अपार;
तदपि कह्यौ संक्षेपसूं, मतिजनका अनुसार ॥५॥

अथ जैन आगम।

धारा प्रवाह रूप है जाका सन्तादि [illegible] महा पापनाशन है। और सकलोपरि केवलज्ञान गम्य है। ताका एकोदेश लब्धिसार शास्त्र है ताका एकोदेश [illegible] श्रावकाचार है, ता में पंचलब्धि अरु सम्यक्तके भेदोंका [illegible]

आया है। ताके अनुसार कविरानें यह परम्परा पूर्वक कथनी कृपाल ग्रन्थ छन्दोंमें रचा है, ताका प्रमाणार्थ।

सवैय्या ॥३१॥—तीसरी अनन्त तीर्थराज हिमवन्तनमूं गणधर मुख कुण्डपर विस्तरी है, सप्तभंग जोरसे मिथ्यात नग तोर फोर धाराधारी सप्त ज्ञान सागरमें परी रहै, जाको साधनादि ध्रुव शासन सरूप सत्य मुनिभिरुपासित पवित्र सुरस वारी है। जाको ज्ञान जे तो तिन पायो सार ते तो महे तो रत्नकरण्ड देखि रचना यो करी है।

पुनः कविताकी तरफसे विज्ञापन सवैय्या

प्रथम विचारी भागूं पंच लब्धि सारी पर छोटीसी बनाऊं जामुं याद करे सबही, थोरीसी बनाई तांन आई सुद्ध कथनीमें पापसे प्रकंपिके विचार कियो जबही।१।सबही कथन लीजे छन्दनमें जोरि दीजे छोडि मन अक्षर अरथ सब तब ही, अन अधिकारी अधिकारी पंच लब्धि सारी तनो समकितको सरूप काढ़ो तब ही ॥२॥

अथ कविता का देश नगर धर्म पेशा जात अरु नाम तथा वर्तमान राजाके राज्यका नाम सहित रचनाके फलकी भावना सहित व्याख्या होतो।

सवैया ॥३१॥—देश कुरु जांगलमें कांधला नगरनामी जाकी करतूत छाय रही जगमें, धर्मको निवास जिनमतको प्रकाश जहां, जीवदया भाय रही सबहीके मनमें, मलके विक्टूरियाका राज्य अंगरेजी तपे नौकरी करूं हूँ ताकी बैठा वैश्यगणमें, भूधरजतीके नन्दन नैनानन्द रचे छन्द दीज्यो समकीत ज्यों भ्रमूं न भववनमें।

अथ सम्वंत मिती सहित कवि ताकी सन्त पुरुषों प्रति प्रार्थना।

सवैय्या ३१—दो हजार मांहि ते घटाय साति एक याहि विक्रमको सम्वत् १९४१ विचारिके धरत हूं, भादवा शुक्ल दूजवार जानि देव पूज्य अहंनिशा मांहि याहि पूरण करत हुं ॥इति॥

श्री पंचलब्धि समकित की समृद्ध रचिके पवित्र नैन आनन्द भरत हूँ, ज्ञानवन्त करो शुद्ध जानि मेरी, बाल बुद्धि दोपपे न रोष करो पायन परत हुं ॥४॥

अथ इस पंच लब्धिके प्रबन्धके छन्दोका प्रणम नआदी लगड़े खयालोका प्रमाण।

सवैय्या ॥३१॥ लंगडे खयालनके छन्द दो दो कलियोंके जोडिये तें, अत तीस हैं सिलोक सबही। ताके अग चौक साढ़ेनो तथापि ऐसो क्रमनि भयोना कथन भंग सोच भयो जबही, कोई चौंक छोटोकोऊ बडे कियो मैं नियारी कलनीको क्रम भंग कियो नाहि कब ही। त्यों ही भव्य जीव याही परचा सिद्धान्त जानि कीज्यो मत भंग त्यों संभारो जब तब ही ॥१॥

अथवा सब रेलीके ख्याल तथा दोहे तथा गीत छन्द तथा सवैय्या ॥ इकतीसेके ने हैं तिनका वर्णन।

सवैय्या इकतीसा—ताही भांति छोटे बडे चौकनपे सोच ठारि यांस वरेलीके ख्याल रचडारे हैं, च्यार च्यार कलि-योंके अरसी हैं सकल छन्द ताके चौक बांधिवे तो दोसके संभारे हैं।

दोहे-इकतीस जान गीता छन्द पांच मान इकतीस अक्षरके सवैय्ये जो उचारे हैं द्वादशमें ए हैं सब न्यहाक जोड़ तब एकसो छियासठि सिलोक याने सारे हैं ॥२॥

अथ अंगभंग कथनके अपराध ॥दोहा॥

गुन्नीमे कुना बनें एक बिंदु बिन मीत, अंग भंग सिद्धांतमें। होय महा विपरीत ॥१॥ मणिकरण्ड सिद्धांतमें, चुनि चुनि काटें रतन, रचि पचि मणिमाला रची। धरियो उर करि जतन ॥२॥ अति अगाध चर्चा जलधि, सुगुरु सहारा पाय। त्यागौं सम्यक त्रिविधि कवि, काढि सुधा सुखदाय ॥३॥

अथाशीर्वादः।

दोहा--जब लग हैं षट द्रव्य थिर। आप्त शब्द जिन धर्म तब लग भवि पीयो वरो, पंच लब्धि शिव सर्म ॥इति॥

श्रीमत यति नयनानन्द कवि विरचिते मणिकरण्ड श्रावकाचार अनुशासने लब्धिसार सिद्धांतोपदेशात पंच लब्धि सहित त्रिविध सम्यक्त रत्नमाला समाप्त ॥

इति श्री नयनानन्द यति कृत भजन विलास संग्रहे पंचलब्धि स्वरूप वर्णनो नाम एकत्रिंशतमोऽध्याय सम्पूर्णम् ॥

अध्याय बावीसवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ बावीसवाँ अध्याय लिख्यते।

अथ जैन मतानुसार तत्त्वार्थ अधिगम मोक्ष शास्त्रको प्रथम अध्यायके अनुकूल ख्यालछंद तथा मरहटी लंगडी रंगतको उपदेश रूप लिख्यते। तत्रादौ। त्रैकाल्यं द्रव्य षट्कं। इस श्लोककी भाषा मरहटी लंगडी।

अर्हन्तादि त्रिलोकपतिन कर जिन भ्यारह यानें जानी, सत्रनिलके। धरें चित्त सोई हैं सचे सरधानी ॥टेक॥

तीन काल षट्द्रव्य नवोंपद अरु षट्कायाके प्राणी, लेश्या आठ षट। तथा पंचास्तिकाय जिनने जानी ॥१॥

द्वादश व्रत अरु सुमति पंचगति ज्ञान जिनोंने पहचानी। ज्ञान चरणके समताकर भेद मनपर परणति ठानी ॥२॥

यही मोक्षका मूल इसे नित मूल कहौ सत्गुरु ज्ञानी। शिव सुख कारण दर्शना धर्मनी धारण सुखदानी ॥३॥

मिटे दृष्टि तेरी कष्ट मिथ्यात्व अरु कषाय मिथ्यात्व। सत्श्रद्धानके, धरें चित्त सोई हैं सचे सरधानी ॥४॥

अर्हन्तादि त्रिलोक० सत्रनिलके।

अथ मंगलाचरणका व्याख्यान।

जे मोक्षमार्गकी प्राप्ति करणहारे हैं, अरु कर्म भूभृतके भेदणहारे हैं। जे समस्त तत्त्वका ज्ञान करणहारे हैं। ते वंदूं तद्गुण लब्धि करणहारे हैं ॥टेक॥

भाई सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण जिन धरल्यो। है यही मोक्षका मार्ग इसीमें परल्यो, जिन जिन शिव सत्यार्थे श्रद्धा करल्यो। है सम्यग्दर्शन यही इसीकूं करल्यो ॥१॥ क्

१९

तत्वारथका मतलब अब कैसे है, भाई तत्व तो जो जैसे है सो तैसे है। अरु अर्थ शब्दका अर्थ यही समझाया, निश्चय करिये सोई तत्वारथ बतलाया ॥२॥ भाई तत्वारथ श्रद्धान है सम्यग्दर्शन, जब उपजे निजपर बोध जीव हो परसन। सो दो प्रकारसे उपजत हैं सुनी प्राणी, इक तो सु भावसे कह्यो निसर्गज ज्ञानी ॥३॥

जो उपजे देव गुरु आगम श्रवानी, सो उपदेशज अधिगमज कह्यो जिनवानी। जहां प्रसम और संवेग दया आस्तिकता, सो सराग समकित अब सुनि भेद अधिकता ॥४॥ जहां केवल आत्मस्वरूपकी होय विशुद्धि, सो वितराग समकित सुनले सद्बुद्धि। अब तत्वकहा हैं तिनका वर्णन सुनले, करि याद जिन बैन मनमें गुन ले ॥५॥ भाई जीव अजीवरु आश्रव बन्ध चितारो, संवरकूं समझि निर्जरादि मोक्ष विचारो। इन तत्वनमें तुमको न जुदा कर डारो, फिर तजि पदार्थ निकारो ॥६॥ प्रभु भव समुद्रसे पार करणहारे हैं, ते वन्दूं तद्गुणलब्धि भरणहारे हैं। जो सकल तत्वका ज्ञान धरणहारे हैं ॥ ते वन्दूं तद्गुणलब्धि० ॥

ते नाम थापना द्रव्य भाव करि जानों, इन च्यारूं निक्षेपोंसे उन्हें पहचानों, बिन लक्ष्य वस्तुके लक्षण किसका ठानों। तातें ऐसा धनसाध्य वस्तुके मानों ॥१॥ पुनि दो प्रमाण अरु सप्त नयन करि साधो, जातें हो अर्थ अनर्थ विचार अबाधो। फिर पांच भेद विधि थापि उन्हें आराधो, निर्देशत था स्वामित्वके पैर जमा दो ॥२॥ पुनि साधन अरु अधिकरण स्थिति भेदोंसे, करो पूर्व कथित सब सिद्ध छुटो खेदोंसे। सत्संख्या क्षेत्र स्पर्शन उद्योगोंसे, समझो कालांतर भाव जैन वेदोंसे ॥३॥

तुजकूं तो साध्य है शिव सम्पति अविनाशी, जो परतें

पर कैवल्य ग्यानमैं भासी । हे त्रिगानन्द परमार्थकी सिद्ध जहांसी, तू जायौ चाहै तहां तोहि भव फांसी ॥४॥ ए अन्य बहुत अज्ञानहरण हारे हैं, ते वन्दूं तद्गुणलब्धिभरण हारे हैं । जे सकल तत्वका ग्यान ॥ ते वन्दूं त० ॥५॥

अब मेरे ऐसा विकल्प उपजै है सम्यग्दर्शन १ सम्यग्ज्ञान २ सम्यक्चारित्र ३ रूपमोक्षमार्ग धर्म १ तथा मोक्ष ए दो जीवके परम अर्थ हैं इनकूं साध्य कहा है परन्तु इनकी सिद्धि जीवादिक तत्वोंके तत्वार्थकी सिद्धि बिना होय नहीं । तातैं पहले जीवादिक तत्वोंका यथार्थ स्वरूप जान्या चाहिये । पुन प्रगट हो कि जीवादिक तत्वोंके तत्वार्थ बोधकी सिद्धिके साधन रूपते ईस कायदे हैं तिनमैं निक्षेप ४ प्रमाण २ सप्तनय ७ पांच विधान ५ पांच प्रत्येक ढंग ५ एवं २३ सो ए साधन अत्यन्त उपगारी जानि इनका स्वरूप जुदा जुदा वर्णन करूं हूं । किस वास्तै कि यह [illegible] सम्बन्धी चर्चा है । इनके समझनेकूं इनके कानूनकी आवश्यकता है ।

अब च्यार निक्षेपोंका स्वरूप छन्द ख्याल प्रश्नोत्तर ।

तत्वार्थ सिद्धके साधन जे गुरु गाये, सम्यक्के हेत तिनके यों अर्थ बताए ॥टेक॥

प्रभु साध्य कह्यो रत्नत्रय [illegible], अरु साध्य बताई मोक्ष सदा सुख धामी । बिन [illegible] सिद्धी होय नहीं सिद्धी, तातैं ये साधन [illegible] सब सिद्धि ॥१॥ ये उमास्वामीको प्रगट [illegible] गाथा, [illegible] गुण गाथा । कोई कहै कहां ज्यौं [illegible], [illegible] नाम धरै बिन [illegible] ॥२॥ [illegible] तदाकार [illegible], [illegible] और [illegible] । इस [illegible] क्यों [illegible], बिन [illegible] थापै किसको भाई ॥३॥

थापे बिन नहि वस्तुत्व सिद्ध हो ग्यानी, तातें थापो कोई वस्तु तदाकृत थानी। क्या भावका है परभावभाव क्या जैहै, कर नाम स्थापना वस्तु जिसी जैसै है ॥४॥ जैसी जड़ अजड़ सरूप सुखदुख दाता, हो जैसा रंगढंग तिसी मानि मेरे भ्राता। मत कहै सांपकूं रज्जु रज्जुकूं भोगी भोगीकूं कहै मत मित्र मृलकर जोगी ॥५॥ मत माटीके पिंडकूं गणेश बतावे, मत काठ धातु पाषाणकूं श्रीजिन गावे। मत कहै जड़कूं चैतन्य धरमकूं अधरम, मत कहै नभकूं तू काल पापकूं सु करम ॥६॥

जिस भांति द्रव्य पर्याय नाम गुण जाके, तिस भांति थापि कर भाव समझ त्यों ताके। विभ्रमतैं जीव दुर्गतिमें जाय पर हैं, सतसंम्यकमैं शिवरमणी जाय वरैं है ॥७॥ ए च्यार प्रथम ही साधन मूल जताए, सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए। तत्वार्थ सिद्धिके साधन मूल जताए। सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए ॥८॥

अथ च्यारों निक्षेपोंकी दृढता हेत भव्योंको द्रिष्टांतरूप उपदेश ख्याल दूजा।

ए सुन सबै अरथ चित धुन ले मुकतिके दूला, ए च्यारों है तेरे ब्याहके मंगल मूला। इस कथनी पर दृष्टांतर एक सुनाऊं, निक्षेपोंकी द्रिढता तुमको करवाऊं ॥१॥ बिन बरकन्याके नाम न होय सगाई, बिन दोनूं गावें किसके गीत लुगाई। यदि हैं दोनूं अतदाकृत तो क्या करिए, भए इष्ट अनिष्ट संज्ञा मत भ्रमित जरिए ॥२॥ अथवा तैसा संजोग करमवश पावें, सब भाव समझि कर ग्यानी तद्वत गावैं। इन तत्वनिमें तेरा जीव नाम है दूला, यदि भव्य जीव है जैन धरम अनुकूला ॥३॥

तौ मोक्ष वरांगका तू है अधिकारी, हो होउ नत सब जानत हैं नरनारी । नहीं अतदाकृत तुम थाऊ नाम मुनिये, सो साधक साम्य रूप यही उर गुणिये ॥ ४ ॥ तुम सिद्ध तुम्हीमें सिद्धि तुर्दामत जानो, मत नारी पुरुषवत जैन साध सरधानो । जब अष्ट गुणनकी पूरणता तुम पावो, तुम ही जिन सिद्ध सरूप अनूप कहावो ॥५॥ तुम निर्जीवादिक स्थापन रूपकूं त्यागो, जिनमें अतदाकृत जानि दूर ही भागो । तुम कौन दरवमें कौन कहां अन्तर है, निक्षेपन करि ज्यों नाभि महां तन्तर है ॥६॥

अथवा तिनके जिन भाव समझ ज्यों लैने, अरु समझ ज्यों अपना भाव आप हो फैलै । धरि नाम शुद्ध फिर थापि शुद्ध सदबुद्धि, करि द्रव्य शुद्ध नयभावकी धर है शुद्धि ॥ ७ ॥ जिन सोधे निजपर व्याक भंतेरी ध्यानी, ताही सब रसायन सिद्धी सबोंकी कारणी । कहै नैनसुख भवि समझेंगे समझाए, सम्यक्के हेत तिनिके यों अर्थ बताए ॥८॥

इति च्यार निक्षेपार्थ सम्पूर्णम् ।

अथ ज्ञान भेद विज्ञानार्थ पुच्छ. प्रमाण वर्णनम् गाथा ऐसा अभिप्राय है ज्ञानके दो प्रमाण हैं—एक स्वार्थ प्रमाण ज्ञान है १, दूजा परार्थ प्रमाण ज्ञान है २ । अर्थात् एक स्वाभाविक ज्ञान है, २ दूजा द्रव्य कृतोत्पन्न जो उपदेश वा निसर्गज पदार्थ है ॥३॥ तिनका वर्णन व्याख्यान ।

तत्वार्थसिद्धके साधन जे गुरु गाए, स्वपरार्थ ज्ञ [illegible] यों अर्थ बताए ॥ टेक ॥

मैं स्वभावज्ञानी पद्कमल [illegible] धारूं, अरु श्रवणमें परार्थ प्रमाणका भेद उचारूं । जे प्रमाणका अर्थ नहीं [illegible] भागी, है ज्ञानके दो परमाण परम अनुरागी ॥१॥ जिन तत्वारथकूं स्वार्थ प्रमाण बताया, स्वाभाविक ज्ञान स्वरूप

सिरी जिन गाया। सो है प्रमाण स्वतरूप उसीके कारण, पर तत्व कहे हैं साधक तदपि निवारण ॥२॥ सो परतत्वार्थ पदार्थ प्रमाण है दूजा, यह असद्भूत लखित जो करो मत पूजा। निजमें निज मानों परमें पर मेरे धीरा, सम्यक पाय शिव जाय वसोगे भीरा ॥३॥ इस भांति नैनसुख दोष त्राण सिखाये, सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए। तत्वार्थ सिद्धके० सम्यकके हेत० ॥४॥

अथ नयैरधिगमः कहिये सप्तनयों करि तत्वार्थ ज्ञान होना है तातें सप्तनयोंका स्वरूप कर वरणन करे हैं यहां सप्तभंग स्याद्वाद स्वरूप जैनका जयवन्त अखण्ड झण्डा है इस हीके बल करि जैन लोक तिहुंकालमें शुद्ध अविरुद्ध सर्वोत्तम मत विजयवन्त हैं तातें भव्य जीवोंको इस स्याद्वादका तथा सप्तभंगका तथा नयका अर्थ सहित नाम गुण स्वरूप याद करना चाहिये। जिसमें अनन्त धर्मावस्तुका स्वरूप सिद्ध करनेमें आलाप करना आ जावे अरु एकान्तवादीके कवि तुण्डावादका खण्डण अरु स्याद्वादसे अनन्त धर्मावस्तुके स्वरूपका मण्डण हो सके, नहीं तो तत्वार्थ अधिगम होना हांसीखेल नहीं है अनर्थ मण्डण हो जायगा। छन्द खयाल।

तत्वार्थ सिद्धके साधन जे गुरु गाए, सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए ॥टेक॥

जय स्याद्वाद सर्वांग जिनागम गंगे, तू सुख मण्डण भ्रम खण्डण विमल तरंगे। मैं उस स्वामी सतगुरुकूं सीस नमाऊं, अब सप्तभंग साधनकी रीति बतलाऊँ ॥१॥ कोई पूछे नय क्या वस्तु हमें समझाइये, भाई वचन भेदकूं आगममें नय कहिये। मैं दोकूं भङ्ग अरु सहते हैं तरज कलामो, तिनके जुगपत कहैं अर्हन् अन्तरजामी ॥२॥

जहां हठ निहठ दोऊ पक्ष दोऊका त्यागन, है सफल भाव करि युक्त वस्तुका साधन। अर्थात उलटि अरु पलटि वचन उचारें, थापें उत्थापें वस्तु सुभाव विचारें ॥३॥ है स्याद्वाद मत याका नाम पियारा, तातें है सन्मत जैन जगतमें न्यारा। एकांत मती जे थापें वाद वितुण्डा, करे खण्ड खण्ड यह विजयवन्त बल बन्डा। घट पट पदार्थ सब दृष्टान्तक दिखाए, सम्यक० तत्वार्थ० ॥४॥ इति।

सब वस्तु अनन्ता धर्म भावकूं धारें, हठग्राही पापी एक ही भाव उचारें। जिनके वचनोंमें प्रगट दोष प्रति भासे, यह सप्तभंग करे निर्मल दोष निकासे ॥१॥ इनकी तो है वीरण जगमें अकथ कहानी, जिन जिते त्रिभुवनके सब ही अभिमानी। इसकी तो शक्तिका पार नहीं मुनि ज्ञानी, है प्रभुके अतुल बलकी यह मूल निशानी ॥२॥ गौतमसे महाबली सिर आनि झुकाए, सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए। तत्वार्थ सिद्धके साधन जे गुरु गाए, सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए ॥३॥

स्याद्वादकी सप्तनय या सप्तभङ्गका वर्णना स्थान।

तत्वार्थ सिद्धिके साधन जे गुरु गाए, सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए ॥टेक॥

अब स्याद्वादको ऐसे थापन करिये, स्यांतो आदिक स्यात शब्दकूं धरिये। यह स्यात शब्दका अर्थ होय कथंचित, है यों भी यों भी तहां लगावे है भाई ॥१॥ भाई वचन भेद है सात तिन्हें नय कहिये, ज्यों सप्त भाव सों सप्तभङ्ग रस गहिये, सो सप्तभङ्ग इस भांतिसे है सुनो लोगों जिन वचनोंका स्याद्वाद प्रथम गुण लीजो ॥२॥

अब सप्त नय भंगानि आलाप स्यादस्त्येव स्यात् सर्व ॥१॥

भाई अस्ति वचनका है स्याद्वाद बताया।

स्यात नास्ति ॥२॥

अरु नास्ति वचनका नही है यों समझाया ।

स्याद अस्ति कथन्चित वक्तव्य ॥३॥

फिर अस्ति कथन्चित कहि वक्तव्य सुज्ञानी, है किसी भांति कहनेके जोग्य हम जानी ।

स्यात अस्ति कथन्चित अवक्तव्य ॥४॥

फिर अस्ति कथन्चित अवक्तव्य गुण धारै । है किसी भांति पर है न कहनकी सारै ॥४॥

नास्ति कथन्चित वक्तव्य ॥५॥

फिर नास्ति कथन्चित कहि वक्तव्य विवेकी, नहि है काहू विधि कथन जोग्य है देखी ।

नास्ति कथन्चित अवक्तव्य ॥६॥

फिर नास्ति कथन्चित अवक्तव्य सुनो वीरा, नहि है काहू विधि अवचनीय है धीरा । हैं अस्ति नास्ति रस रूप तन्द गत न्यारे, हैं अवचनीय सब ही अलापसे न्यारे ॥६॥

अथ सप्त भंगके अर्थोंकी परस्पर विरुद्धताका सूचक खयाल ।

तत्वार्थ सिद्धके साधन जे गुरु गाए । सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए ॥टेक॥

अब सप्त भंगकी प्रगट परस्पर खटपट, समझावें सत गुरु समझ ज्यों मिटत झटपट । मैं तजिके सातूं शब्द अर्थ कहि डारया, इन रत्नोंको परखेगा परखन हारा ॥१॥ भाई है पर नहि है पर कहनें लायक, है पर कहनेके जोग्य नही है वायक । नहि है पर कहनेके जोग्य जानकर कहिये, नहि है यूं अकथ विचारी मौन गहि रहियै ॥२॥ हा है पर नहि है यहि सिद्धि भई वीरा, तब अवक्तव्य भई सकल व्यवस्था धीरा । जब कही अणकही वात एकसी होवे, तब मौन

ग्रहण करि वृथा काल क्यों खोवे ॥३॥ नयादिक पर ए सातों भंग लगाए । सम्यक० ॥

अथ अवचनीय वस्तु व्यवस्था आम्नान होने पर मौना- वलंबी पुरुषकूं क्या करतव्य ॥ और तत्वादिकथा [illegible] सर्वांग अखण्ड मण्डण कैसें होय है ताकी रीत तथा एकांतका खण्डण होतो स्याद्वादी वा एकांत प्रतिवादीका संवाद लिख्यते । छन्द ख्याल ॥

तत्वार्थ सिद्धिके साधन जे गुरु गाए, सम्यकके [illegible] यौं अर्थ वताए ॥टेक॥

भाई मौनीकूं है कौन ग्रहणकी आशा, ये [illegible] मनमांहि धरो परगाश । सातौं नयके संग है ऐसा [illegible], हुवा अग्नि सर्वथा सिद्ध टरै नहि टारा ॥१॥ है जिन [illegible] तत्व, तिसो विधि है मुनि प्यारा । है अवचनीय [illegible] अलापसैं न्यारे, अग्नि नाग्निसैं है [illegible] पावै । [illegible] वस्तु यों है किसकूं जितलावै ॥२॥ एकांत [illegible] हमैं दिखलावो, तुम [illegible] हमैं समझावो । [illegible] प्रतिवादी पूछन [illegible] है । तू है सो कहो [illegible] उत्तर देहूं ॥३॥

यदि वर्तमान भव रूप है मेरा, [illegible] क्या तेरा मेरा । यौं ता भव नरके अंग [illegible], तिनमें है कौन सातू हमकूं समझावो ॥४॥ तू [illegible] कहो हाथ धरि तापै, है तेरा कौन स्वरूप [illegible] । तुम सप्त धातुमें कौन धातु हो प्यारे, [illegible] वैक्रिय तन धारे ॥५॥ [illegible] लिया स्याद्वादने फेर बहुत [illegible] । [illegible] पूछन हारे, तुम हो [illegible] एक हो [illegible] कहै विभ्रमवादी मैं क्या [illegible] । [illegible]

उलट गए लेकूं आई, घोल्यो सट क्या तेरे नैनतिमिरनें छाए। सम्यक० । तत्वार्थ । सम्यक० ॥४॥

अथ एकांत अनेकांत मत संचर्षण तत्रादौ एकांतवादी नास्तिक वचनम् ॥ख्याल॥

मैं प्रगट खड़ा क्या तुमकूं दीखत नाही, दीखत है मुती तुम हमकूं दीखत नाही। कहै वादी मैं हूं पंचभूत समुदाई। पांचूं से भया बिना पांच रहूँगा नाही ॥१॥ कहै स्याद्वाद बिन पांचन थे अब थीरा। थे नास्ति फेर क्यों अस्ति रूप भए थीरा। भई अस्ति नास्ति दोऊ सिद्ध तुम्ही में प्रानी। एकांतवाद भया खण्डण सुनि अभिमानी ॥२॥ पुनि पंचभूतके विरल नाश भया तेरा। तुम हो तो कौन होय ही वाद है मेरा, यदि नास्तिक हो तो हूं मैं यों मत भाखो। हो अचल तो अपना वचन। अचल ही रखो ॥३॥

मैं हूं मैं हूं मत करै रूप कछु अपना, है कौन भांति किस अंगमें तेरी थपना। हो अचल तो अपना वचन अचल ही राखो। तब कहै वादी प्रत्यक्ष देखल्यो मैं हूं, भया पंचभूतमें जो कछु सोकछु मैं हूं। तब स्याद्वादवादी पांचूं लेआए। सम्यक० तत० ॥४॥

अथ पंचभूत संग्रह करि स्याद्वादवादी एकांत मती नास्तिकका खण्डण करै है ॥ख्याल॥

उन पंचभूतका यों समुदाय मिलाया घटके अकाशमें सुन्दर जल भरवाया। चूल्हेपे चढ़ाकर नीचै अगन जलाई, पंखेकी पवनसें खूब उसे धंधकाई ॥१॥ माटी आकाश जल अगन पवन सब ल्याकर, वादीने कही तू दे अपना साधनाकर। बोला वादी यह कुदरत हमसें नहीं है। है ईश्वर मैं उस शक्ति किसीमें नहीं है ॥२॥ उसकी लीलाका नहीं कोई जानन हारा, कहै स्याद्वादवादी सुन ले मेरे प्यारा। तेरा

नास्तिक मत भया नष्ट कष्टकूं छोडो, अब ईश्वर अरु जीवका सो कथनकूं जोडो ॥३॥

नास्तिकसे भए तुम आस्तिक ईश्वरवादी, तुम हो अनादि अकसादि कसादि अनादी। कैसा ईश्वर अरु कैसी है उनकी माया, उसने किस विधि किस भांतिका तुझे बनाया ॥४॥ तू अपना हमकूं सारा हाल बतावो, वादि है हमसे कौन हमें समझावो। सुन स्याद्वादके प्रश्न मूढ [illegible], [illegible] तत्वार्थ ॥ ५ ॥

अथ ईश्वरवादी एकांतमती वचनन् ज्वाल जनमें [illegible] संघर्षण ॥

तब उठ बोल्या वाचाल क्रोधभरि ज्वाला, मुझे परम ब्रह्म परमेश्वरने उपजाया। मैं हूँ आनादिसे उन भगवन्तका चेरा, है उनका मेरा सब भांति मोक्षसे डेरा ॥६॥ वो निर्गुण निरंजन अज अखण्ड अविनाशी, सब शक्तिमान सब ठौर सदाप्रकाशी। सर्वज्ञ अलख अरु दीन दयाल कहावे, उनकी मायाका पार न कोई पावे ॥७॥ रचि रचि पचि पचि हारि गए भेद नहीं पाया, मैं उनके हुकमसे सब बन्धनमें आया। उन्हीके अंशका अंश अणु मई मैं हूं। विभ्रम करि दोनों भिन्न जोवो सो मैं हूं, अन तू अतमें अन कोई और कहीं है। है विश्वरूप वही एक ए बात सही है, सुनि हठ धर्मीके कुट वादका मण्डण। निर्हठवादी करे स्याद्वादसे खण्डण ॥८॥

सुनि वादी मेरे वचन चित थिर करिके, मत भाखे वचन विरुद्ध न बोल अकडिके। तू है अनादिसे तो मत कह उपजाया, उपजाया तो तू अस्ति नास्तिमें आया। भया [illegible] द्वैत वाद खण्डण, एकांत नया भया स्याद्वादका मण्डण। यदि मोक्ष विषे थावो स्वामी तू चाकर, तो ठाकरका [illegible]

यहांके है ठाकुर ॥५॥ तू मोक्ष होय कर जैसे दास कहाया, तो यहां हाल तेरे परमेश्वरका पाया। तो मोक्षमई निहुं काल महा दुखदाई, जहां पराधीन संसार अवस्था पाई। धिक धिक जिन पापिन भोरेजन बहकाए, सम्यक० । तत्त्वार्थके० ॥३॥

पुन्यः एकान्त खण्डण ॥३॥

है मुक्तिनका जो नाथ हमें बतलाओ, तुम आप कहांसे यहांका हाल सुना दो सब दोषन ते अविरुद्ध शुद्ध कहो बानी। मैं प्रश्न करूं तू दे उत्तर विज्ञानी ॥१॥ तू परमेश्वरकू निर्गुण तो बतलावे। फिर वचन पक्ष करि ऐसा दोष लगावे, मुक्तनकूं भव बन्धनके दुख दिखावे। हा हा धिक धिक तोहि आपन लाज न आवे ॥२॥ तू कहै ईश्वर चैतन्य चेतनारूपी अरु कहै जड़को तद्जन्य तथा तद्रूपी, तू पंडित है एक है कोई शेखी पद्द। दिखला तो हमें कहूं लगत नीयके कहूं। तू माने अज अरु जनम मरण बतलावे, अपना भी जन्म उसहीके अंशसे गावे। तू पंडित है एक स्वांग भरा है भाई, तुझे किसने नशा मिथ्यातकी भांग पिलाई ॥३॥ तू कहि अखण्ड खण्ड कर गावे, कोई शिव कोई संसारी बतलावे। कोई शिष्य कोई गुरु सुखी दुखी फरमावे, क्या आप ही स्वामी सेवक आप कहावे ॥४॥ धिग धिग भांडोंसे भांडमती भरमाए, सम्यक० । तत्त्वार्थ० ॥४॥

तू अविनाशी थापे अरु फिर उत्थापे, कहै मुक्तनकूं भव पतन असत आलापे हाहा कुबुद्ध एक वलग धरोगे। कब लो अनन्त समान्दे दुख भरोगे ॥१॥ सब शक्तिमान सब ठौर चराचर भासी, तेरी कुबुद्ध क्यों हरी न आकर हांसी। कहां गई चराचर अब लोकनकी शक्ती, तू अंश वही तू भक्त तुही है भक्ती ॥२॥ सर्वज्ञ अलख अरु दीनदयाल कहावे, सब जाने देखे क्यों तोहि दया न आवे। तेरी छतीताती कुटिल

कुवाती भारी। मिथ्याती निज परघाती पापकारी ॥[illegible]॥ उसकी मायाका यदि कोई पार न पावे निजकूं [illegible] वो क्यों न छुटावे, यदि उसके [illegible] [illegible] तू है। [illegible] अन तू अन और अगरयो है ॥४॥ है [illegible] [illegible] और नहीं है, मुजमें तुजमें सबमें [illegible] नहीं है। तो [illegible] संग अद्वैत वाद क्यों मांडा. क्यों [illegible] [illegible] [illegible] खाडा। विज्ञान विना वर पापी [illegible] [illegible] ॥[illegible]॥

क्यों वात कहे अज्ञान रूप [illegible] [illegible]. तू [illegible] अपडित मूरख भगली। मेरा [illegible] तुझे क्यों [illegible] न [illegible] कित गई शक्ति कित गई भक्ति विज्ञानी ॥१॥ मैं तू [illegible] उस अखण्डके अंशी, अलमें अन तू है [illegible] [illegible] फिर क्यों विवाद तू करे यता जड बुद्धि. [illegible] है यह कौन कुबुद्धि ॥२॥ यदि मैं [illegible] तो [illegible] मिटावो, अविरुद्ध रूप अपना स्वरूप [illegible] तो तज दो मान बडाई, [illegible] [illegible] भाई ॥३॥ यदि मैं तुम दोउ [illegible] [illegible] भरमाया जगत [illegible] सठसो है [illegible] भरमाया। निज निज परार्थके [illegible] ॥४॥ [illegible] तजि [illegible] पक्षपात रूप [illegible] अपना, [illegible] सार तत्वको [illegible]। [illegible] कोई सेवक [illegible] ॥५॥ [illegible] धर्मशास्त्रका सारा, विज्ञान [illegible] [illegible] [illegible] यानें [illegible] [illegible] ॥[illegible]॥

पुनः एकांतवाद [illegible]। [illegible]

तू कौन द्रव्य है क्यों न [illegible] [illegible] तो [illegible] परगट [illegible] दिखावे। यदि [illegible] [illegible] बात बनावे, [illegible] [illegible] ॥१॥

करि धर्माधर्म विचार जीव सुख पावै, तेरे चितकूं क्यै विश्राम नांक नहिं आवै। कहीं तीनों फांक टांक भर केरी, हो जैसा तीनका आंक तिणकसी टेरी ॥२॥ मत घरे लंकपर स्वरूप जले मत तनमें, तू मानी सुगुरुकी सीख दया धरि मनमें। तब वादी भये अबोल वचन नहीं आवे, बिन जानें अपना रूप कहा बतलावे ॥३॥

तब स्याद्वाद करुणा करियों समझावें, तुम तजो मूढ हठज्यों शिवमारग पावे। कहै नैनसुख जो मने तो इतनी करले, तू उमास्वामी सतगुरुके चरण पकरले ॥४॥ तुम सम्यग्दर्शन ज्ञानचरण आराधो, है यही मोक्षका मार्ग इसीकूं साधो। तत्वारथ अधिगम मोक्ष शास्त्र गुरु गाया, तिसमें शिवपथका साधन सब बतलाया। ५॥ तहां तीन बीस साधनकी रीति बताई, पहले पहली अध्याय बहुत क्यों गाई। मैं सप्तभंगके शब्दारथ यों गावे, नहीं समझे बालक तिनकूं बिन समझाए ॥६॥ एकांत मतिनकूं तिनकी शक्ति दिखाई, अद्वैतवाद खण्डणकी रीत बताई। है स्याद्वाद सर्वांग शुद्ध जिनवानी, इसके प्रताप तिर गये अनन्ते प्राणी ॥७॥ अद्वैत-वाद बकवादने जग भरमाए। सम्यकके०। तत्वार्थ०।

अब वादी वादकूं तजि अनुकूल भया शरल व्रतसे तत्व व्यवस्था पूछे हैं अरु यह कहे हैं तुम ही मोहि बतावो मेरा क्या सरूप है, मैं कौन हूँ और मैं तत्व व्यवस्था कैसे जानूं।

छन्द खयाल—कहै भव्य गुरु मोहिं मेरा नाम बतावो, मेरा स्वरूप क्या मुझको सब समझावो। हूँ मैहलका एक भारी नरम गुंसाई, एक हूँ कठोर एक तना शीतलताई। चिकना कि खदेरा खट्टा मीठा स्वामी, कडवा कि चर्चरा खारी अन्तरजामी। एक हूँ कसैल दुर्गंध सुगन्धोंवाला, एक

पीत पद्म एक धौला गोरा काला। नीला कि सब रंगा तेरा भेद बतावो, धूवां कि धूप छायासा हूँ समझावो। आकाश प्रकाश कि दिनसा दीप समाना। माटी जल पावक पवन बनासपति नाना, हूं लंबा गोल मंझोल कि तिरछा सीधा। चौकोर दुकोर कि तीनको गुण अकलीदा, पसरा छिपा कि खडा ऊंधा एक बैठा। चलता हलता कि जागता सूता लेटा, बहता दहता कि बन्धा कि खुला हूँ। सुनता पतला मैला उजला कि धुलाहूँ, देव कि मानुष तिरजंच कि नारकवासी। पंडित पाठकस्वामी सेवक अककामी, नारी कि नपुंसक अरु पुल्लिंग बतावो, सबसे उत्तम कि बुरा सबसे समझावो। चेतन कि अचेतन नर चितक सदा अनादी, हूं निरजोग [illegible] कि सिद्ध समाधी। हूं धर्म अधर्म अकाशक काल स्वरूपी, चेतन कि अचेतन पापक पुन्य अरूपी। कर्ता कि अकर्ता सब ही सब समझावो. मैं कौन कहांका कहां जाऊं समझावो। किस भांति करूं किस भांत अचल सुख पाऊं. कहीं [illegible] प्रभु तत्व व्यवस्था पाऊं। सतगुरु दयालने ऐसे भरम निवारे. सम्यक्क्षे० ॥ तत्वार्थ० ॥

अब एकांतवादी जब निरुत्तर होय [illegible] चुपका हो रहा अरु उसके आत्मस्वरूपके जानने की [illegible] उपजी तब स्याद्वाद् विद्यापीठ आर्य देवजी [illegible] आत्मस्वरूपका निर्णय कराते हैं कि भाई तेरे इस [illegible] स्वीकार है कि मैं अपने स्वरूपकूं नहीं जानता हूं [illegible] विचार कर देख ॥ स्यात् अस्ति ॥१॥ स्यात् नास्ति ॥२॥

ऐसी जिज्ञासा तेरी सिद्ध भई [illegible] [illegible] जहां हूं कहनेसे ही तेरा अस्तित्व सिद्ध भया ॥१॥ अर नहीं हूं कहनेसे तेरा नास्तित्व सिद्ध भया। तथा किसीहूं [illegible] कहनेसे भी तेरा हूंपना। अर्थात् अस्तित्व है। सिद्ध भया

किया करूं अपने स्वरूपकूं नहीं जानता हूं । इनने तेरह अक्षरोंमेंसे मध्यके ११ अक्षर छोड़ आदि अन्तके अक्षर दोन् ओङ्कार विचार कि बाकीमें हूं के सिवाय कया रहा । अरु जब तू है तो हूं ऐसा कहनेवाला तो चैतन्य द्रव्य ही है । अचैतन्य नांही सो ज्ञानी द्रव्य है अरु ज्ञान ५ प्रकारके हैं । सोई कहिये है ।

अथ सुज्ञानके पंच भेदोंका वर्णन मरहटी लंगडी ।

परमारथ हित हेत परम गुरु दया भाव विस्तारे हैं । ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ निस्तारे हैं ॥टेक॥

मति श्रुत अवधित था मनःपर्यय पुनि केवल्य समझ प्राणी । तत्प्रमाण दो असन्मुख सन्मुख भाखे जिनवानी । परमारथ हित हेत परम० ॥१॥ मति श्रुत दोय परोक्ष बताये तीन कहे परत्यक्ष ज्ञानी. अब पांचनकी कहूं मीमांसा सबकूं सुखदानी । परमारथ हित हेत परम गुरु दया० ॥२॥ मतिके नाम हैं पांच पांचका अर्थ भेद नहीं जिनवानी, और न कहियो न करियो मतिका अर्थान्तर प्राणी । परमारथ हित हेत० ॥३॥ मति स्मृती अरु संज्ञाचिता अभि निवोधक है गुरु ज्ञानी, ऐसो पांचों नाम कहत उमास्वामी जैसे मानी । परमारथ हित हेत०, ज्ञान सुधारस० ॥४॥ तैसे उनके अर्थ अनुक्रम सतगुरु यों उचारे हैं, ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ निस्तारे हैं । परमारथ हित हेत०, ज्ञान सुधारस० ॥५॥

अथ मतिज्ञानके पांच भेदोंके जुदे जुदे सकोच विस्तार रूप अर्थ जिसको सामान्य लक्षण तथा विशेष लक्षण कहना चाहिये ।

अथ सामान्य अर्थ मरहटी लंगडी ।

प्रथम विचारण द्वितीय समरण तृतीय नाम संज्ञा करिये । भावी चितवन चतुर्थी पंचममें सब भरिये ॥१॥

अथ मति ज्ञान विशेष लक्षण।

करे विचार जहां कोई ऐसा चल फिरूं एक सो पढिये। सुखी दुखी हूं इसीकूं मति विचार उरमें धरिये ॥१॥ भूली बात करे जो समरण तिनकूं ही स्मृति उचरिये। संज्ञा कहिये नाम सुनि वस्तु बोध जो कछु करिये ॥२॥ चिन्ता कहिये कालमें इसकूं क्या भावी है क्या करिये। किस विधि करिये कौनके हत हाथ कौनके संग करिये ॥३॥ अभिनिबोधमें ये सब गर्भित और बात कछु मत धरये। सम्पूर्ण मति नाम है उसीका सुनकर मत डरये ॥४॥ ऐसे मतिके पांच भेद सब-गुरुने सच विस्तारे हैं। ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ निस्तारे हैं। परमारथ हित ति परम गुरु दयाभाव विस्तारे हैं। ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ विसारे हैं ॥५॥ प्रथम विचार०।

॥ इतिश्री मतिज्ञानके पंच भेद समाप्त ॥ सम्पूर्ण ॥

अथ पंच भेद रूपी मति ज्ञानके निमित्त कारण कहा है। पुनः तीन कारणोंका ग्रहण करना कहा है। जिससे यह जाना जाय कि मति ज्ञान रूपी कार्य है, और तिसके सर्व कारण ए हैं जिससे यह भी जाना जाय कि ये सर्व इन कारणोंके आधीन है तातें परोक्ष कहा है।

मरहठी रंगती।

मतिज्ञानके अन्तर कारणों निमित्त सम्बन्धी जानना। यह भी जिनका कथन है तासूं मति नामे जिनका ॥१॥ है पञ्चकारणके [illegible], सुनो जिनें [illegible]। [illegible] है इन्द्रियका। ज्ञानसुधारस

पिलाके० ॥२॥ इन कारजका नाम अवग्रह, यही ग्रहण कारज तिनका । तिन लब्धिनका अवग्रह ज्ञान छटा ज्ञानी मनका, ज्ञान सुधारस० ॥३॥

तामैं गर्भित कही अवग्रह लब्धि बोध इन्द्री मनका, ईहा कहिये चाहना ताकी सो भी है मनका । ज्ञान सुधारस० ॥४॥ ता लब्धिको निश्चय करना सो अवाय भी मनका. कालांतर लौं याद रखना धिधारना है मनका । ज्ञान सुधारस० ॥५॥ यौं मतिके पट कारण तिनके कारज पट कहे सारे हैं । ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ निस्तारे हैं ॥ परमारथ हित हेत परम गुरु दया भाव विस्तारे हैं । ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ निस्तारे हैं ॥६॥

अथ इन्द्री मनकूं मुख्य करि इहां कहिये इच्छाका स्वरूप वर्णन यह मनमें उपजती है । मरहठी लंगडी ।

इहां मनकी बहुत बहुत प्रविध लक्षि सुभावी वरणी है । रहै चलाचल सदा अध्रवजगमें ले परनी है ॥१॥ पुनि अनिसृता तथा अनुक्ता प्रकृत हमेशा धरनी है । विना निकासे उचारे वच मनसे अवतरणी है ॥२॥ सदा अमंगलमें हित राखे मंगलमें कट मरणी है । यारे उदंगल शुभ सम्यककी मूलक तरणी है ॥३॥ यौं इच्छाका रूप कह्या अब चर्चा और उचरणी है । क्योंकि ध्रुवाणां सेतराणांकी व्यवस्था करनी है ॥४॥ यह रंडा जगमांहि डबोवे है ध्रुव चर्चा ले तरणी है । रहै चलाचल सदा ध्रुव जगमें ले परणी है ॥५॥

इति समाप्तः ॥ सम्पूर्णम् । शुभं भूयात् । ॐ नमः सिद्धेभ्यः अर्हद्भक्तिभ्यो नमः ॥

अथ ध्रुवाणां सेतराणां इनके परिच्छेदका अर्थ यह कि अवग्रह ज्ञान इन्द्रियों अरु मनके आधीन है तातैं भी अध्रुव है अरु ध्रुव ज्ञान इससे न्यारा है, और अवग्रहके भेद अर्थावग्रह तथा व्यंजनावग्रह ए दो हैं तिनके भेदोंकी संख्या ख्याल ॥१॥

ध्रुव ज्ञान सिरी भगवानने और उचारे. उन छहों अवग्रह लब्धि बोधसें न्यारे ॥टेक॥

दोसें अठाणवें अर्थ अवग्रह जानों. ईहासे पहले सूत्रके भेद बखानों ॥१॥ तिनसें इन्द्रिय मनकी सहायता मानों. पर व्यंजनसें चक्षु मनको मत मानों ॥२॥ व्यंजनके अड़तालीस भेद कहे आलाली. अब श्रुतज्ञानके भेदकी चर्चा चाली ॥३॥ है श्रुतज्ञानमें पूरवगतिका मण्डाण। मत करियो कमक् इसके कोई खण्डण ॥४॥ है दो अनेक द्वादश विधि श्रुत मनका न्यारे। उन छहों अवग्रह लब्धि बोधसें न्यारे ॥५॥ ध्रुव ज्ञान सिरी भगवानने और उचारे। उन छहों अवग्रह लब्धि बोधसें न्यारे ॥६॥

अथ अब यह कहे है कि श्रुतज्ञान दो विधि वा अनेक विधि वा द्वादश विधि क्योंकर है. ख्याल।

अब सुनों भव्य श्रुतज्ञान कथा सुख कैसे। दो विधि अनेक विधि द्वादश विधि है जैसे ॥१॥ अङ्ग प्रविष्ट अन बाह्य अङ्ग करि दो है। उत्तराध्ययनादिक संतान करि ... है ॥२॥ पुनि द्वादशांग करि द्वादश भेद उचारे। सो द्वादशांग श्रुत सुनो न्यारे न्यारे ॥३॥ पहले सो सूत्र सुनो आचारांग बखाना है। ताके पदनका ठारा सहस्र प्रमाना ॥४॥ दूजा सूत्र कृतांग नाम उचारा। छत्तीस हजार पदोंसे सो विस्तारा ॥५॥ ठाणांगके पद व्यालीस हजार उचारे। उन छहों अवग्रह लब्धि बोधसें न्यारे ॥ ज्ञान० ध्रुव० ॥६॥

है चौथा समवायांग सुधाका सागर। एक लाख सहस्र चौंसठ पद्गांहि उजागर ॥१॥ व्याख्या प्रज्ञप्ति पंचम अङ्ग सतारे। सो अरध अठाइस सहस कहें पद् ताके ॥२॥ है ज्ञाता धर्म कथा षष्टम श्रुत हीरा। ताके पद छप्पन सहस पांच लख धीरा ॥३॥ है सप्तम अङ्ग उपासकादि अध्ययना। ग्यारह लख सत्तर सहस पदोंका अयना ॥४॥ है अष्टम अङ्ग दशांत कृतसु विचारे। लख तेईस ठाईस सहस कहे पद सारे ॥५॥ उन छहों अवग्रह लब्धि बोधसे० ॥६॥ ध्रुव ज्ञान। उन छहों अवग्रह लब्धि० ॥७॥

है नवम अनुत्तर दशनामांग सुज्ञानी। बाणव लख सहस चंवालीस पदमें प्राणी ॥१॥ है दशम प्रश्न व्याकरण महा बलधारी। सो तीन एक छहत्रिवङ्क पदोंका धारी ॥२॥ एका-दशमां है विपाक सूत्र सुखभासी। इक कोटि चौरासी लाख पदों करि नामी ॥३॥ पुनि च्यार कोडि लख पन्द्रह युगल हजारा। इन ग्यारहका सतगुरु कह जोड उचारा ॥४॥ द्वादशम अङ्ग है दृष्टिवाद पण भेदम्। एकसौ किरोड वसु कोडि जोडि गत छेदम्। अठसठि लख छप्पन सहस पांच धरि तापे। इतने पदका धरि जोड जु आवे नापे ॥५॥ ए ज्ञानामृत करि पूह सूत्र हैं प्यारे। ए श्रुतज्ञानके अङ्ग हरे दुख सारे। ए श्रुतज्ञान० ॥६॥

इस भांति किया प्रत्येक अङ्गका वर्णन अब सबके पदोंका जोड धरो निज कर्णन ॥१॥ सौ कोडिपै द्वादश कोडि तिरासी लख धर। अरु सहस अठावन पांच मिला करि चमकर ॥२॥ ए द्वादश सर्वांगके पद उचारे। हम ध्यानत कृत श्रुतपूजा देखि निकारे ॥ ३ ॥ अब मुनि इक पदका तूल एक चित्त

करिके। इक्यावन सहस्र किरोड़ आठ लाख धरिके ॥४॥ फिर चौरासी हजार पैंछसैं धर ल्यों। तापै आठ [illegible] मिलाय सुमरि ल्यों ॥५॥

इक इक पदके इतने श्लोक बनाए। तिन श्लोकोंमें जिन चरित्र वही ठेराए। धन धन वे सतगुरु परम दयाके धारी, डूबत भवसागर पकड़ी बांहि हमारी ॥६॥ जिन द्वादशांग ग्रोहण दे हमें उभारा, सो जनम जनम तिनकूं परनाम हमारा ॥७॥ कहो नैनसुख हम आए शरण तुम्हारे, ए अंग-ज्ञानके अंग हरैं दुख म्हारे ॥८॥ शुद्ध ज्ञान [illegible] भगवानके और हमारे। उन कहीं अवग्रह [illegible] बोधमें म्हारे ॥९॥

अथ द्वादशांग रूप जैन वेद धुनको ज्ञानांगकी [illegible] ख्याल कवितामें लिख्यते।

तुम द्वादशांगके धर क्यों लोप भये म्हारे, ए [illegible] अङ्ग हरैं दुख सारे। टेक।

ए [illegible] विश्व [illegible] हैं [illegible]। हैं [illegible] भव परतके [illegible] ॥१॥ हैं आप [illegible] ए धारा। भव [illegible] धोग [illegible] ॥२॥ काल दोष करि जगमें भरम पर्यो है। [illegible] यह दोष भये हैं ॥३॥

तिनके तौ कथनका कुछ नाहीं ठीक ठिकाना। [illegible] विचारमें दोष भये हैं नाना ॥४॥ [illegible] सु सुनावै, तौ पतन सुनत [illegible]। ए द्वादश धारा रूप अनादि [illegible], [illegible] ॥५॥ जिनवरने [illegible]

श्रुतज्ञानके अंग हरै दुख सारे। तुम द्वादशांगके करल्यौ तीर्थ मेरे प्यारे, ए श्रुतज्ञानके अंग हरै दुख सारे ॥६॥

ए परम पूज्य हैं जैन वेद मुनि प्राणी। हिंसा गर्भित है वेद महा दुखदानी ॥१॥ इनकूं आराधैं सन्त बड़े सद्ज्ञानी। उनकूं आराधै हिंसक अरु अभिमानी ॥२॥ ला रही जगनमें एकानन्त विध्वंसन। बिन श्रुतज्ञान नहि सुखदायक अवलम्बन ॥३॥ यह वीर हिमाचलसैं जिन गंग ढरी है। सो गौतमादि गुरुके घटमें पसरी है ॥४॥ सप्तांग सुधारससैं सर्वांग भरी है। जड़तादिक जगकी बाधा सकल हरी है ॥५॥ पाखण्ड महावनके जिन पैर उखारे। ए श्रुतज्ञानके तुम द्वादशांगके, ए श्रुत० ॥२॥

इन तोटे भ्रम गजदन्त पन्थ सब खोवे। दिग मोह मरुस्थल फेंकि अधर्मी धोवे ॥१॥ प्रक्षाले जग जनमन कलंक सब यातें। तातें सन्तन करि सेव्य सुरादिक मानें ॥२॥ है मुनि भी रूपासित तीरथ तारणहारी। है सदा काल जैवन्त जगतकूं प्यारी ॥३॥ याकूं तजिकें मनमैं मति कुमति विचारो। नदियाँ हूबिकर मत जीवनकूं मारो ॥४॥ इस ज्ञानगंग जलसैं मनकूं धोडारो। नहि अवसर वारंवार समझल्यौं यारो ॥५॥ मत भव समुद्रमें आत्मरतनकूं डारो। ए उसहीके हैं अंग उसीकूं उजारो ॥६॥ तुम द्वादशांगके ॥ ए श्रुतज्ञान० ॥३॥

एकांत बैठि इस जलका भाव विचारो। तुजहीमें बसें यह गंग तु ही घटवारो ॥१॥ तेरे ही रतन ए द्वादश तुजमें भरे हैं। है तू ही साहु तू ही चोर तुजीमें धरे हैं ॥२॥ है तू ही नाव तू ही प्रेरक तू ही तरवैय्या। तेरी ही अटक रही थेय तू ही अटकैय्या ॥३॥

तू अपनी खेपकूं आप ही पार करैगा । घाटैगा गिरा नीं बेशक पार तिरैगा ॥४॥ तू उमास्वामि कृत तत्वारथकूं पढ़िले । तू भवसमुद्रसे वेगी वेगी कढ़िले ॥५॥ कहै दास नैनसुख मनि पुरुषारथ हारे । ए श्रुतज्ञानके अंग हरै दुख सारे ॥६॥ तुम तुम द्वादशांगके करल्यो तीरथ प्यारे । ए श्रुतज्ञानके अंग हरै दुख सारे ॥७॥ ॥१॥

इतिश्री नयनानन्द यति कृत भजनविलास संग्रहे तत्वार्थ
अधिगम मोक्षशास्त्रके प्रथम अध्यायानुसार
बाईसवां अध्याय सम्पूर्णम् ।

इसमें ३४ चौंतीस ख्याल हैं ॥ २२ ॥

॥ इति ॥